CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५३. आँखें चार हुईं.......................................आकाशकुसुम था। ३८
५४. शुद्ध और रोचक.......................................सुना देतीं। ३९
५५. वह भले ही.......................................कर लेती थीं। ३९
५६. अध्यक्षीय भाषण किसी.......................................सिद्ध होता था। ४०
५७. ईर्ष्या का यही.......................................भोगनी पड़ती है। ४०
५८. ईर्ष्या के बड़ी.......................................दिया जाऊँगा। ४१
५९. ईर्ष्या मनुष्य का.......................................योग्य ही न हों। ४२
६०. आप कहेंगे कि.......................................आनन्द होता है। ४२
६१. ईर्ष्या का सम्बन्ध.......................................हरकुलिस से। ४३

गद्यसंकलन—परिचयात्मक भाग

१. प्रतापनारायण मिश्र जी का साहित्यिक जीवन-परिचय लिखिए। ४४
२. श्यामसुन्दर दास जी का साहित्यिक जीवन-परिचय लिखिए। ४५
३. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का साहित्यिक जीवन-परिचय लिखिए। ४७
४. मुंशी प्रेमचन्द जी का साहित्यिक जीवन-परिचय लिखिए। ४८
५. वियोगी हरि के साहित्यिक जीवन का संक्षिप्त परिचय दीजिए। ४९
६. हरिभाऊ उपाध्याय का साहित्यिक जीवन संक्षेप में लिखिये। ५०
७. जयशंकर प्रसाद के साहित्यिक जीवन के विषय में संक्षेप में लिखें। ५२
८. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के साहित्यिक जीवन के विषय में लिखें। ५३
९. श्री गुलाबराय जी के साहित्यिक जीवन का परिचय दीजिए। ५३
१०. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का साहित्यिक जीवन लिखिए। ५४
११. श्री विनोवा भावे के साहित्यिक जीवन के विषय में संक्षेप में लिखें। ५५
१२. हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक जीवन को संक्षेप में लिखें। ५६
१३. सुश्री महादेवी वर्मा का संक्षेप में साहित्यिक जीवन परिचय लिखिए। ५८
१४. श्री रामवृक्ष बेनीपुरी जी का संक्षेप में साहित्यिक जीवन-परिचय अपने शब्दों में लिखिए। ५९
१५. श्रीराम शर्मा के साहित्यिक जीवन का संक्षेप में परिचय दीजिए। ६०
१६. काका क़ालेलकर के साहित्यिक जीवन-परिचय का संक्षेप में अपने शब्दों में उल्लेख कीजिए। ६१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१७. विनयमोहन शर्मा के साहित्यिक जीवन के विषय में संक्षेप में लिखें। ६२
१८. श्री रामधारी सिंह दिनकर के साहित्यिक जीवन के विषय में संक्षेप से लिखें। ६३
१९. श्री भगवतशरण उपाध्याय के साहित्यिक जीवन के विषय में संक्षेप में लिखें। ६४
२०. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय के साहित्यिक जीवन के विषय में संक्षेप में लिखें। ६५
२१. श्री धर्मवीर भारती के साहित्यिक जीवन के विषय में संक्षेप में अपने शब्दों में लिखें। ६५
२२. श्री जयप्रकाश भारती के साहित्यिक जीवन का संक्षेप में परिचय दीजिए। ६६

हिन्दी साहित्य का इतिहास

१. हिन्दी के निर्गुण भक्तिकाव्य का संक्षिप्त परिचय दीजिये। ६८
२. हिन्दी साहित्य के सगुण भक्तिकाव्य-धारा का परिचय दीजिये। ६९
३. हिन्दी साहित्य के भारतेन्दु युग का परिचय तथा महत्त्व बतलाइये। ७०
४. हिन्दी साहित्य की द्विवेदी-युगीन काव्यधारा को निरूपित कीजिए ? ७०
५. हिन्दी साहित्य के संस्मरण नामक गद्यविधा के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए ? ७१
६. संस्मरण विधा की विशेषताओं को बतलाते हुए उसका आत्मकथा से अन्तर बताइये ? ७३
७. हिन्दी साहित्य के रेखाचित्रनामक गद्यविधा का संक्षिप्त परिचय दीजिये ? ७३
८. हिन्दी गद्य के रेडियो-नाटक के स्वरूप का वर्णन कीजिए ? ७४
९. हिन्दी गद्य के रिपोर्ताज नामक विधा का संक्षिप्त परिचय दीजिए ? ७४
१०. हिन्दी साहित्य के इण्टरव्यू विधा का निरूपण कीजिए ? ७५
११. हिन्दी साहित्य की जीवनी विधा का परिचय दीजिए ? ७६
१२. हिन्दी साहित्य के डायरी गद्य विधा का निरूपण कीजिए ? ७७
१३. हिन्दी सांहित्य के यात्रा-साहित्य का निरूपण कीजिये ? ७८
१४. हिंदी गद्यसाहित्य के पत्र-साहित्य की स्थिति बतलाइये ? ८०
१५. हिन्दी में आत्मकथा गद्य-विधा का अवदान बतलाइये ? ८१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१६. हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का अवदान बतलाइये ? ८२
१७. आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में अवदान बतलाइये ? ८२
१८. हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का अवदान बतलाइये ? ८४
१९. हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में आचार्य नगेन्द्र का अवदान बतलाइये ? ८४
२०. छायावाद के नामकरण की समीक्षा कीजिए ? ८५
२१. हिन्दी के प्रगतिवाद का परिचय दीजिए ? ८६
२२. हिन्दी साहित्य के प्रयोगवाद का परिचय दीजिए ? ८७
२३. हिन्दी की नयी कविता का परिचय दीजिए ? ८८
२४. साठोत्तरी कविता के विभिन्न रूपों का विश्लेषण कीजिए ? ८९
२५. हिन्दी की प्रथम कहानी के विषय में अपनी राय लिखिए ? ९१
२६. हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द के अवदान का मूल्यांकन कीजिये ? ९१
२७. हिन्दी कहानी का इतिहास बतलाइये ? ९१
२८. हिन्दी नाट्य के विकास के क्रम का उल्लेख कीजिए ? ९२
२९. हिन्दी के निबन्ध-साहित्य के विकासक्रम को संक्षेप में लिखिये ? ९२
३०. हिन्दी एकांकी के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिये ? ९२
३१. आधुनिक हिन्दी गद्य के विकास की संक्षेप में रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए ? ९५

रक्तरेखा

१. रक्तरेखा नाटक के 'दाहर' नामक पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए ? ९४
२. रक्तरेखा के 'क्षपाकर' नामक पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए ? ९५
३. रक्तरेखा नाटक के पात्र 'जयसिंह' का चरित्र-चित्रण कीजिए ? ९७
४. रक्तरेखा नाटक के नारीपात्र 'सूर्यदेवी' का चरित्रांकन अपने शब्दों में कीजिए ? ९८
५. रक्तरेखा नाटक की नारीपात्र 'परमाल' का चरित्रांकन कीजिए ? ९९

काव्यसंकलन—व्याख्यात्मक भाग

१. सत् गुरु...सब अंग १

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. रामनाम के पटतरे..मन माँहि १
३. ज्ञान प्रकास्या..मिलिया जाइ २
४. माया दीपक..उबरत २
५. गुरु गोविन्द तो एक हैं..करतार ३
६. भगति भजन हरि..सुमिरण सार ३
७. कबीर चित्त चमंकिया.. लेहु बुझाइ ४
८. अंखड़िया झाईं..पुकारि-पुकारि ४
९. सुखिया सब संसार..अरु रोवे ५
१०. जब मैं था तब हरि नहीं..माँहि ६
११. यह तन कांचा कुंभ..आया हाथ ६
१२. ऐसी बानी बोलिए..सुख होय ६
१३. जिहिं घर साधु.. तिन माँहि ७
१४. कस्तूरी कुण्डलि..देखै नाहि ७
१५. हरि जननी मैं बालक तेरा..महतारी ८
१६. का माँगू कछु.. जुबारी ८
१७. डगमग छाड़ि रे मन.. चढ़ि ऊँचा ९
१८. चरन कमल बंदौ..तिहिं पाइ १०
१९. अविगत गति.. सगुन पद गावै १०
२०. किलकत कान्ह..पियावत ११
२१. जसुदा कहाँ लौ.. काढ़त पानि १२
२२. सांवरेहि वरजति क्यों.. फिरति वही १२
२३. मैं अपनी सब.. प्रात जान मैं दैहौं १३
२४. मैया हौं न चरैहौं गाई..ताहि रिंगाई १४
२५. स्याम कर मुरली..मुनि सब मोहति १४
२६. सखी री मुरली लीजै.. राग की डोरि १५
२७. कहत कान्ह जननी..मोहि लगौ बजाई १६
२८. संदेशो देवकी सो..ह्वैहें करंत संकोच १६
२९. उधौ मन न भये..नहीं जगदीस १७
३०. उधौ मन नहीं.. कही करेंगी सोई १८

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१. उधौ जाहु तुमहिं हम..नेकहुं मुसुकाने १८
३२. निरगुन कौन देस..मति नासी १९
३३. यह गोकुल गोपाल..गुनरासी १९
३४. ब्रज के विरही लोग दुखारे..ज्यों तारे २०
३५. उधौ मोहि ब्रज..जदु तात २०
३६. मुनि पद कमल बंदि..सकल सुदेश २०
३७. देखन नगरु भूप सुत..सत काम २१
३८. कहहु सखी अब को तनु..हरषीं सब नारि २२
३९. देखि राम छबि कोउ एक कहई..पुन्य पुराकृत भूरि २२
४०. बोली अपर कहे सखि नीका..परमानंद २३
४१. मन पछितैहैं अवसर बीते..विषयभोग बहु धीते २४
४२. ऐसो को उदार जग मांही..कृपानिधि तेरो २५
४३. जाऊँ कहाँ तजि चरन तिहारे..अपनपौ हारे २५
४४. पुर ते निकसी रघुवीर वधू..चलीं जल च्वै २६
४५. जल को गये लक्खन हैं..वारि विलोचन बाढै २६
४६. साँवरे गोरे सलोने..सकुचात हियो है २७
४७. रानी मैं जानी अयानी..बनवास दियो है २७
४८. सीस जटा उर बाहु..रावरे को है २८
४९. सुनि सुन्दर बैन..मंजुल कंज कली २९
५०. बसो मेरे नैनन में..वच्छल गोपाल २९
५१. पायो जी म्हैं तो..हरख जग गायो २९
५२. माई री मैं तो लिया..पूरब जन्म को कौल ३०
५३. हरी तुम हरौ जन की भीर..कँवर पै सिर ३०
५४. हेरी मैं तो प्रेम दिवाणी..संवलिया होय ३१
५५. मेरो तो गिरधर गोपाल..तारो अब मोई ३१
५६. नहीं ऐसो जनम..जीवणा दिन चारि ३२
५७. सिच्छक हौं सिगरे जग को..केवल भिक्षा ३३
५८. कोदो सवाँ जुरतो भर..फूटी कठौती ३३
५९. द्वारका जाहुँ जू..चारि न चाँवरि मेरे ३४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६०. सीस पगा न झगा तन में............................आपनो नाम सुदामा ३५
६१. बोल्यो द्वारपालक सुदामा नाम.........................दीनन सो माने को ३५
६२. ऐसो बेहाल बेवाइन सों पग...........................जल सों पग धोए ३६
६३. हांथ गह्यो प्रभु की कमला...................................होन भिखारी ३६
६४. जो रहीम उत्तम प्रकृति..भुजंग ३७
६५. टूटे सुजन सराहिए......................................टूटे मुक्ताहार ३७
६६. रहिमन अंसुआ...भेद कहि देइ ३७
६७. रहिमन निज मन की..कोय ३७
६८. रहिमन धागा प्रेम.....................................गाँठ पारि जाय ३८
६९. रहिमन रहिला की भली..............................मैदा जरि जाय ३८
७०. तरुवर फल नहीं...सचहि सुजान ३८
७१. यों रहीम सुख होत..............................आँखनि को सुख होइ ३८
७२. रहिमन वे नर मर..नाँहिं ३९
७३. रहिमन ओछे नरन ते..................................भाँति विपरीत ३९
७४. मानुष हौं तो वही....................................कदम्ब की डारन ३९
७५. धूरि भरे अति सोभित...................................माखन रोटी ४०
७६. जा दिन तो वह नंद का.................................बिकाइ गयो है ४०
७७. कान्ह भये बस बाँसुरि...................................बाँसुरी रहिहैं ४१
७८. मोर पंखा सिर ऊपर...................................अधरा न धरौंगी ४१
७९. मेरी भव बाधा हरौ...दुति होय ४२
८०. सोहत ओढै पीत पट.....................................पर्‌यो प्रभात ४२
८१. अधर धरत हरि के परंत.........................इन्द्र धनुष रंग होति ४२
८२. या अनुरागी चित्त की...................................उज्जलु होइ ४२
८३. जगत् जनायो जिहिं...देखी जाहिं ४३
८४. सीस मुकुट कटि काछनी...................................बिहारी लाल ४३
८५. जप माला छापा तिलक...............................साँचे राँचे राम ४३
८६. चटक न छाड़त घटत......................................चोल रंग चीर ४४
८७. दुसह दुराज प्रजानु की...रवि-चंदु ४४
८८. संगति सुमति न.......................................न होइ सुगन्ध ४४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८९. नर की अरु नल नीर...ऊँचो होय ४४
९०. जो चाहत चटक न घटै...नेह चीकने चित्त ४५
९१. कहै यहै श्रुति सुमत्यौ..राजा रोग ४५
९२. गंधी गंध गुलाब की...गाहकु कौनु ४५
९३. यह संग मैं लागियै...नहीं मानती हैं ४६
९४. पहिले बहु भाँति भरोसो.......................................आपुहि धावति हैं ४६
९५. उधौ जु सूधो गहौ...माँग परी है ४७
९६. निज भाषा उन्नति अहै...हिय को सूल ४७
९७. इक भाषा इक जीव...सोग ४७
९८. प्रकृति यहाँ...तन मन वारति ४८
९९. सजति सजावति...बनि ठनि ४८
१००. मधुर मंजु छवि...तरुवर तृन ४८
१०१. जेठ के दारुण का घमण्ड...चलौ तो भलौ ४९
१०२. काली घटा का घमण्ड.......................................समलंकृत कैसे भले ४९
१०३. जब हुए..गोकुल ग्राम को ४९
१०४. ककुभ सोभित गोरज...नलिनीश हैं ५०
१०५. अतसि पुष्प अलंकृत..कलकान्ति थी ५०
१०६. अति समुन्नत अंग..प्रतिबिम्बित हो रही ५०
१०७. विलसता कटि में..स्कंध था ५१
१०८. मकरकेतन के कलकेतु...अलकावली ५१
१०९. छलकती मुख की छवि.................................क्षणदा कर कान्ति सी ५१
११०. चारु चन्द्र की चंचल.......................................पवन के झोंकों से ५२
१११. पञ्चवटी की छाया में......................................दृष्टिगत होता है ५२
११२. किस व्रत में है व्रती..जीवन है ५२
११३. मर्त्यलोक मालिन्य...माया ठहरी ५३
११४. क्या ही स्वच्छ चाँदनी.......................................शान्त और चुपचाप ५३
११५. है बिखेर देती वसुन्धरा.......................................रूप झलकता है ५३
११६. हिमाद्रि तुंग शृंग से.......................................बढ़े चलो बढ़े चलो ५४
११७. असंख्य कीर्ति रश्मियाँ.......................................बढ़े चलो बढ़े चलो ५४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११८. परिश्रम करता हूँ दिन रात.. वसन्त ५५
११९. मैंने झुक नीचे को देखा.. श्रेष्ठ मानव ५५
१२०. तोड़ती पत्थर..मैं तोड़ती पत्थर ५६
१२१. हे चिर महान्... पर रागहीन ५७
१२२. नभ में गर्वित....................................... कितने कठिन प्राण ५७
१२३. टूटी है तेरी कब समाधि...................................दुख में समान ५८
१२४. रूपसि तेरा घन केशपाश.................................घन केशपाश ५८
१२५. सौरभ झीना गीला.. घन केशपाश ५९
१२६. उच्छ्वसित वक्ष पर...घन केशपाश ५९
१२७. इन स्निग्ध लटों से...घन केशपाश ५९
१२८. अरे निर्जन के.. खोजते हो वन-वन ६०
१२९. विरह में अश्रु बहाकर..गति खोकर ६०
१३०. लघुं लहरों से कम्पित...कातर निर्झर ६०
१३१. प्रियतम भूले मैं..क्या गाऊँ ६१
१३२. चाह नहीं मैं सुरबाला के.. वीर अनेक ६१
१३३. प्राण अन्तर में लिए..उठ री जवानी ६२
१३४. श्वान के सिर हो..मस्तानी जवानी ६३
१३५. कोटि-कोटि कण्ठों से.................................हिन्दूस्तान हमारा है ६३
१३६. सतलज व्यास चिनाव................................हिन्दूस्तान हमारा है ६४
१३७. है आसन्नभूत अति उज्ज्वल.......................... हिन्दूस्तान हमारा है ६४
१३८. गरज उठे चालीस कोटि जन..........................हिन्दूस्तान हमारा है ६४

काव्यसंकलन—परिचयात्मक भाग

१. कबीरदास का संक्षिप्त जीवन-परिचय प्रस्तुत करते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए। ६५

२. जायसी का संक्षिप्त जीवन-परिचय प्रस्तुत करते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

जायसी के जीवन, व्यक्तित्व और कृतियों पर प्रकाश डालिए। ६८

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३. महात्मा सूरदास का संक्षिप्त जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

सूरदास के व्यक्तित्व एवं कृतियों पर प्रकाश डालिए । ७०

४. तुलसीदास का संक्षिप्त जीवन-परिचय बताइये ।

अथवा

तुलसी के जीवनवृत्त पर प्रकाश डालिए । ७२

५. मीराबाई का संक्षिप्त जीवन-परिचय लिखिए । ७५

६. सुदामाचरित के प्रणेता नरोत्तमदास जी का जीवन-परिचय लिखिए । ७६

७. रहीम का जीवनवृत्त लिखिए । ७६

८. रसखान का साहित्यिक जीवन-परिचय लिखिए । ७७

९. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन-परिचय लिखिए । ७८

१०. श्रीधर पाठक का साहित्यिक जीवन-परिचय लिखिए । ७९

११. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का साहित्यिक जीवन-परिचय लिखिए । ७९

१२. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का साहित्यिक जीवन-परिचय लिखिए । ८०

१३. श्री जयशंकर 'प्रसाद' का साहित्यिक जीवन-परिचय लिखिए । ८१

१४. श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का साहित्यिक जीवन-परिचय अपने शब्दों में दीजिए । ८२

१५. श्री सुमित्रानन्दन पन्त का साहित्यिक जीवन-परिचय लिखिये । ८३

१६. सुश्री महादेवी वर्मा का साहित्यिक जीवन-परिचय लिखें । ८४

१७. श्री रामकुमार वर्मा का साहित्यिक जीवन-परिचय लिखें । ८४

१८. श्री रामनरेश त्रिपाठी जी का साहित्यिक जीवन-परिचय लिखिए । ८५

१९. श्री माखनलाल चतुर्वेदी जी का साहित्यिक जीवन-परिचय अपने शब्दों में लिखिये । ८६

लघु-अतिलघु प्रश्नोत्तर

***

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सफलता सोपान

गद्य संकलन व्याख्यात्मक भाग

बात

(१) सच पूछिए तो इस बात-------------------बात की बड़ी बात है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह गद्यांश गद्यसंकलन के 'बात शीषर्क से उद्धृत है। इसके लेखक श्री प्रतापनारायण मिश्रजी हैं। इस शीर्षक में मिश्रजी ने बात के विषय में विस्तृत चर्चा की।

व्याख्या— बात का अर्थ है वाणी। वाणी के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए इस गद्यांश में श्री मिश्रजी कहते हैं कि संसार के जितने भी जीव हैं उन सबों में मानव का सबसे अधिक महत्त्व इसलिए है कि वह सार्थक वाणी बोलना जानता है। जो पुरुष जितनी ही सार्थक वाणी बोलता है, उसका उतना ही अधिक महत्त्व होता है। वाणी के ही प्रभाव से मनुष्य बड़ा विद्वान्, वक्ता तथा श्रेष्ठ समझा जाता है। बड़े-बड़े नेताओं की वाणी का समाज पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। सारी प्रतिष्ठाओं का मूल वाणी है। लेखक बतलाते हैं कि शुक, सारिका आदि भी कुछ सार्थक बातों को बोलते हैं, इसीलिए उन पक्षियों का महत्त्व अन्य पक्षियों की अपेक्षा अधिक स्वीकार किया जाता है। इसीलिए सबों को बात का महत्त्व स्वीकार करना चाहिए।

साहित्यिक विशेषताएँ— इस गद्यांश के वाक्य मुहावरेदार तथा अनुप्रास की छटा से परिपूर्ण हैं।

(२) हाँ बात की बात इतनी बड़ी है कि---मनाने पर कटिबद्ध रहते हैं।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह गद्यांश गद्यसंकलन के 'बात' शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक श्री प्रतापनारायण मिश्र जी हैं।

व्याख्या— इस गद्यांश में बात के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए श्री मिश्र जी बतलाते हैं कि विभिन्न धर्मावलम्बी भी बात का महत्त्व देते हैं। यदि वे बात के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महत्त्व को नहीं स्वीकार करें तो सम्भवतः वे अपनी मान्यता की प्रतिष्ठा भी समाज में नहीं कर सकते। विभिन्न धर्मावलम्बी इस बात को स्वीकार करते हैं कि ईश्वर निराकार है, उसका कोई भी आकार नहीं है। कुछ मुस्लिम तथा इसाई सब के सब ईश्वर को निराकार मानते हैं। किन्तु निराकारवादी हिन्दू कहते हैं कि वेद ईश्वर का वचन है। अतएव उसमें बतलाए गये समस्त अर्थों को स्वीकार करना चाहिए। मुसलमानों का कहना है कि कुरान शरीफ अल्ला का कलाम है। इसाइयों का मानना है कि पवित्र बाइबिल गॉड का वर्ड है।

मिश्रजी कहते हैं कि बर्ड, कलाम तथा वचन ये सब के सब बात के ही पर्याय हैं। बात उसी की हो सकती है जो बोल सके। बोल तो वही सकता है जिसका मुख हो। मुखवाले को निराकार कैसे कहा जा सकता है? तो इस पर कुछ लोगों का कहना है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है। वह बिना वाणी (जीभ) के ही सबसे बड़ा वक्ता है। अतएव ईश्वर या अल्ला या गॉड का बात से संबन्ध है। वह बोलता है।

इन धार्मिकों की बातों को यदि कोई अस्वीकार करना चाहता है तो वे अनेक प्रकार की बातें बनाते हैं और उससे अपनी बात मनवाने की कोशिश करते हैं। अतएव बात के महत्त्व का कोई भी अपलाप नहीं कर सकता है।

(३) यहाँ तक कि प्रेमसिद्धान्ती---------अपने को वंचित न रहने देंगे।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह गद्यांशगद्य संकलन के 'बात' शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक श्री प्रतापनारायण मिश्रजी हैं।

व्याख्या— बात के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए लेखक इस गद्यांश में सगुण साकार वादियों पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि जो लोग प्रेमसिद्धान्ती हैं; उन लोगों के अनुसार ईश्वर निर्गुण नहीं अपितु सगुण साकार है। उसके एक-एक अंगों के समक्ष करोड़ों कामदेव की शोभी फीकी है। **'अंग-अंग पर वारई, कोटि-कोटि सत काम।'** उनका ईश्वर **'कोटि मनोज लजावनि हारे'** है। वे कहते हैं हम लूले लंगड़े ईश्वर को नहीं स्वीकारते। ईश्वर तो सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक है।

निराकार का अर्थ श्याम वर्ण का शालग्राम है। अतएव निराकार शब्द भी ईश्वर की श्यामता को ही घोषित करता है। कहने का अभिप्राय यह है कि जो ईश्वर रूप रंग से रहित है उसको भी वे सम्पूर्ण रूपों से सम्पन्न बतलाते हैं। उस परमात्मा की प्रेम रस-से परिपूर्ण वाणी उन प्रेमियों को आप्यायित करती है तथा उनके हृदय को आनन्द से परिपूर्ण बना देती है। वे सभी प्रेम सिद्धान्ती परमात्मा की बात, अथवा उसकी वाणी वेदं के पीछे पागल हैं। अतएव बात की पहुँच बड़ी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लम्बी है। वेद परमात्मा की बात है। यदि बात न हो तो सम्भवतः परमात्मा की भी सत्ता स्वीकारना मुश्किल होगा। महर्षि वादरायण ने कहा भी **'शास्त्रयोनित्वात्;** अर्थात् परमात्मा है इसमें प्रमाण शास्त्र है। शास्त्र से ही परमात्मा को सिद्ध किया जा सकता है। वेद शास्त्र भी तो वाणी (बात) स्वरूप ही है। अतएव बात का महत्त्व बहुत ही अधिक है।।

(४) जब परमेश्वर तक बात का------------इत्यादि सब बात ही तो हैं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के **'बात'** शीर्षक से उद्धृत है। इसके लेखक श्री प्रतापनारायण मिश्रजी हैं।

व्याख्या— इस गद्यांश में लेखक इस बात का प्रतिपादन करते हैं कि बात की महत्ता सर्वव्यापक है। बात के बिना कोई बात हो ही नहीं सकती है। साक्षात् ईश्वर भी बात के प्रभाव में है। हम मनुष्यों की तो कोई बात ही नहीं है। यदि देखा जाय तो बात की ईश्वर से बिलकुल समानता है। ईश्वर निराकार है तो बात भी निराकार है। उसका कोई भी रूपरंग नही है। ईश्वर के अनेक रूप बतलाये जाते हैं, तो बात के भी अनेक रूप हैं। वेद, शास्त्र, काव्य, कोश इत्यादि सब के सब बात के ही रूप माने जाते हैं। ऐसे भी अच्छी बात, बुरी बात, टेढ़ी बात, सीधी बात इत्यादि बात के विविध रूप लोक में पाये जाते हैं।

बात की इस व्यापकता को शास्त्रकारों ने बहुत पहले ही पहचान लिया था। वैयाकरणों ने इसीलिए शब्दब्रह्म की स्थापना की है। उनका स्फोट सिद्धान्त इसी पर टिका हुआ है। ध्वनिवादियों की भी प्रायः इसी तरह की मान्यता है। भर्तृहरिने तो वाक्यपदीयम् में शब्दब्रह्म से ही सम्पूर्ण जगत् की सृष्टि का प्रतिपादन किया है। अतएव शब्द अथवा बात की व्यापकता एवं विविधरूपता के विषय में किसी का भी मतभेद नहीं होना चाहिए।

(५) बात के काम भी इसी भाँति-----------कुराही इत्यादि बन जाते हैं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह गद्यांश 'गद्यसंकलन' के **'बात'** शीर्षक से उद्धृत किया गया है। इसके लेखक श्री प्रतापनारायण मिश्रजी हैं।

व्याख्या— लेखक का अभिप्राय है कि बात के द्वारा अनेक प्रकार के काम होते हैं। किसी के मन में प्रेम या बैर की भावना? वह सुखी है या दुखी? उसकी किसी के प्रति श्रद्धा की भावना है अथवा घृणा की? वह किसी भी कार्य को सम्पादित करने के लिए उत्साहित है अथवा अनुत्साहित? इत्यादि समस्त बातों का पता बात से ही चलता है। किसी काम को करना उत्तम अथवा अधम है इस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बात को बात के ही द्वारा जाना जा सकता है। स्वयम् बात को इस बात के ही द्वा जाना जा सकता है। बात को छोड़कर यदि किसी दूसरे माध्यम से इन सभी बा का पता लगाने का प्रयास किया जाय तो उतनी सुविधा नहीं हो सकती है, जित सुविधा से इन समस्त बातों का पता बात के माध्यम से ही लगाया जा सकता हम चिट्ठी के माध्यम से अथवा सम्बाद प्रेषण के माध्यम से तार से घर बैठे सुदूर देश के समाचारं को जान लेते हैं। तार अथवा पत्र भी तो लेखनी से निस् बात के ही दूसरे रूप हैं।

इसी प्रकार से बात का अनेक प्रकार की क्रियाओं से भी संबंन्ध होता उसी के कारण कभी बात बन जाती है, कभी बात बिगड़ जाती है, कभी ब उखड़ जाती है तो कभी बात जम जाती है। इसी तरह हम सभी लोगों के स प्रकार के काम भी बात पर ही निर्भर करते हैं। बात के ही प्रभाव में आकर पर लोग भी अपने बन जाते हैं। वे बैर को छोड़कर स्नेह करने लगते हैं।

किसी की बात को ही सुनकर हम उसके स्वभाव का पता लगा पाते हैं। जान पाते हैं कि अमुक आदमी युद्धोत्साही है अथवा कायर? वह उदार है अथ कंजूस? वह सन्मार्गगामी है अथवा कुमार्गगामी?

(६) बात का तत्त्व समझना हर एक---------- की बात का असर न

सन्दर्भ एवं प्रंसग— यह गद्यांश 'गद्यसंकलन' के **'बात'** शीर्षक से उद् है। इसके लेखक श्री प्रतापनारायण मिश्रजी हैं।

व्याख्या— इस गद्यांश में लेखक बतलाते हैं कि किसी के भी किसी बात क्या अभिप्राय है, इस बात को सभी लोग नहीं समझ पाते हैं। बात के अभिप्र को ठीक ठीक समझ पाना तो किसी बड़े ही विज्ञ पुरुष का काम हो सकता यही नहीं कुछ लोग अपने बात को इतने प्रभावकारी ढ़ंग से प्रस्तुत करते हैं कि अपने श्रोताओं के विचारों पर अमिट छाप छोड़ जाते हैं। बड़े-बड़े विद्वान् अ बहुत समय इसी में बिता देते हैं कि किसी महान् कवि का क्या अभिप्राय है? सहृदय व्यक्ति जब अपनी मीठी-मीठी बात कहता है तो उसकी बातों के सा सारे संसार की वस्तुएँ तुच्छ लगने लगती हैं।

ऐसा कोई देवता या पशु ही हो सकता है जिसके हृदय पर बालकों तोतली बातों का, सुन्दरियों की रसीली और मीठी बातों का, किसी तार्कि वक्ता की बातों का प्रभाव न होता हो। सामान्य पुरुष के अन्तःकरण पर तो लोगों की बातों का अमिट प्रभाव होता है। सामान्यतः कुत्ते तथा बिल्ली भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषा को समझते हैं और स्नेह-पूर्वक बोलने वाले के प्रति अपना स्नेह र्शित करते हैं। जब पशुओं पर भी बातों का असर देखा जाता है तो मनुष्य के पर बातों की असर न हो वह मनुष्य तो पशुओं से भी गया गुजरा है।

कर्त्तव्य और सत्यता

(१) हम लोगों का जीवन सदा----------------------कोई चिन्ता नहीं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश गद्यसंकलन के 'कर्त्तव्य और सत्यता' क से अवतीर्ण है। इस शीर्षक के लेखक श्री श्याम सुन्दर दास' जी हैं। इस श में लेखक इस बात पर बल देते हैं कि हम सब लोगों को किसी भी कार्य को े से पहले इस बात को निश्चित कर लेना चाहिए कि हम जिस कार्य को करने रहे हैं वह कार्य धर्मानुकूल है या नहीं हमें कभी भी धर्म के प्रतिकूल कार्यों को करना चाहिए।

व्याख्या— लेखक कहते हैं कि हम सभी लोगों को जीवन में कार्यों को करने व्यस्तता बनी रहती है। सारा जीवन विभिन्न प्रकार के कार्यों को करते-करते जाता है। हम जिन कार्यों को करते हैं वे कार्य दो प्रकार के होते हैं, धार्मिक अधार्मिक। अतएव हम लोगों को सदा उन्हीं कार्यों को करना चाहिए जो नुकूलत हो। धर्मानुकूल कार्यों को करने में यदि किसी प्रकार की कठिनाई है तो भी, उससे घबराना नहीं चाहिए। धर्मानुकूल कार्यों को करने में यदि की आहुति भी देनी पड़े तो उसकी परवाह नहीं करनी चाहिए। अपने धर्म मर मिटना लोक एवं परलोक दोनों के लिए कल्याणकारी होता है।

भगवान् श्री कृष्ण ने भी गीता में कहा भी है—

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।'

अर्थात् अपने धर्म पर मर मिटना कल्याणकारी होता है। पर धर्म को नाना भयप्रद होता है।

(२) धर्मपालन करने के मार्ग में----------------------भय न रहेगा।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह गद्यांश 'गद्यसंकलन' के 'कर्त्तव्य और सत्यता' क से अवतीर्ण है। इस शीर्षक के लेखक श्री श्यामसुन्दर दास जी हैं। इस श में लेखक धर्मपालन के मार्ग में आने वाली बाधाओं और उनसे बचने के नों की चर्चा करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्याख्या— इस गद्यांश में लेखक कहते हैं कि धर्मपालन के मार्ग में अनेक प्रक की बाधाएं आती हैं इनमें चित्त की चंचलता, मन की निर्बलता और उद्देश्य अस्थिरता आदि प्रधान हैं। मनुष्य के कर्तव्य के मार्ग में मानव के दो तरह मानसिक स्थिति बनती है। भले एवं बुरे कर्मों का ज्ञान, तथा आत्मकल्याण के साध का ज्ञान तो एक तरफ काम करता है। इससे मनुष्य अपने कर्मों का पालन करने लिए उत्सुक होता है, किन्तु दूसरी ओर आलस्य और स्वार्थपरायणता की भावना मन में आती है। इसी के कारण मनुष्य अपने कर्त्तव्य पालन के पथ से हटता है। मनु इन्हीं दोनों प्रकार की भावनाओं के बीच में घिरा रहता है। जब उसका मन आत्मकल्या के लिए पक्का हो जाता है तो वह निःस्वार्थ भावना से अपने कर्त्तव्य के पालन में प्रवृ हो जाता है। यदि उसकी भावना स्वार्थपरायणता की ओर गयी तो वह अपने आचर से ही अपने चरित्र को घृणास्पद बना लेता है।

अतएव आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी आत्मा की पुकार सुनें। स्वार्थपरायणता के वशीभूत न हों। आत्मकल्याणकारी कर्त्तव्य के पथ प्रवृत्त हों। शुभ कार्यों को करने में शीघ्रता न करें। ऐसा करते-करते जब हमा आत्मकल्याणकारी कार्यों को करने की आदत बन जायेगी तब हम कभी कुमार्गगामी नहीं होंगे और न तो किसी की घृणा के पात्र बनेंगे।

(३) बहुत से लोग नीति और------के पाप से किसी प्रकार कम नहीं

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के **'कर्तव्य और सत्य** शीर्षक से उद्धृत है। इस गद्यांश में लेखक बतला रहे हैं कि झूठ की रक्षा कर झूठ बोलने से कम पापजनक नहीं है।

व्याख्या— लेखक कहते हैं कि कुछ लोग स्वयं झूठ न बोलकर झूठ की र करने का प्रयास नीति और आवश्यकता के बहाने करते हैं। वे लोग अपने प्रय के समर्थन में कहते हैं कि इस झूठ की रक्षा करना नीति के अनुकूल है। अथवा यह कहते हैं कि इस समय इस झूठ की रक्षा करने की आवश्यकता है। अतः इस को या तो किसी के समक्ष प्रकाशित नहीं किया जाय अथवा इसका बदलकर समाज के समक्ष उपस्थित किया जाय यही उचित है। कुछ लोग उस को ही सत्य बलताने लगते हैं। उनके ऐसा करने में अभिप्राय यह रहता है लोग इस झूठ को ही सत्य मानने लग जायँ ओर इसके विपरीत जो बात है, वस्तुतः सत्य है, उसी को झूठ मानने लग जायँ।

लेखक का कहना है कि आवश्यकता अथवा नीति के तकाजे पर झूठ की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकार, उसको समाज के समक्ष नहीं आने देना, अथवा उसका रूप बदलकर समाज के समक्ष उपस्थित करना, अथवा झूठ को ही सत्य बतलाना ये सब के सब उतने ही बड़े पाप हैं जितना बड़ा पाप झूठ बोलना होता है। अतएव मनुष्य को चाहिए कि वह कभी सत्य का अपलाप न करे और न तो झूठ की सुरक्षा ही करे।

(४) संसार में बहुत से ऐसे नीच और-----------और कुत्सित कर्म हैं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के **'कर्त्तव्य और सत्यता'** नामक शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक श्री श्यामसुन्दर दास जी हैं। प्रस्तुत गद्यांश में लेखक इस बात का प्रतिपादन करते हैं कि जो लोग झूठ के सहारे किसी को धोखा देते हैं, ऐसे लोगों का समाज पर बहुत बुरा असर पड़ता है।

व्याख्या— संसार में ऐसे अनेक नीच और निन्दित प्रवृत्ति के लोग पाए जाते जो झूठ बोलने में ही अपनी चतुराई समझते हैं। झूठ बोलकर ऐसे लोग सत्य का अपलाप करने का काम करते हैं और अपने ऊपर आने वाली विपदा से बचने का प्रयास करते हैं। दूसरों को धोखा देने में वे अपना गौरव समझते हैं। वे समझते हैं कि मैं सबसे अधिक चालाक ओर गौरव सम्पन्न व्यक्ति हूँ। किन्तु इस तरह के व्यवहार वाले लोगों का समाज पर बहुत बुरा असर पड़ता है। ऐसे लोगों से समाज में दुःख एवं संताप का सञ्चार होता है। लोगों में झूठ बोलने की प्रवृत्ति बढ़ती है। वे लोग किसी भी बात को सच-सच न कहकर झूठ-झूठ की बातें बनाते हैं किन्तु ऐसा करना बड़ा ही निन्दित कार्य है। ऐसा करने वाले वस्तुतः न तो अपना ही उपकार कर पाते हैं, और न तो वे किसी दूसरे की ही भलाई कर पाने में समर्थ होते हैं।

(५) इसीलिए हम सब लोगों का यह परम धर्म---------सुखी बने रहेंगे।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के **'कर्त्तव्य और सत्यता'** शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक डॉ० श्याम सुन्दर दास जी हैं। इस अनुच्छेद में लेखक इस बात पर बल देते हैं कि यद्यपि सत्य बोलने में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है फिर भी हमें सत्य का त्याग नहीं करना चाहिए।

व्याख्या— लेखक कहते हैं कि असत्य भाषण चूकि समस्त अनर्थों का मूल है, असत्यभाषी समाज में निन्दित हो जाता है, सब लोग उससे घृणा करने लग जाते हैं। अतएव हमें सत्यभाषण को सर्वाधिक महत्त्व देना चाहिए। चाहे सत्य बोलने के लिए कितने ही कष्ट उठाना पड़े फिर भी हमें झूठ नहीं बोलना चाहिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो लोग सत्यभाषी हैं, उनका समाज समादर करता है और अन्त समय त
लोग आनन्दपूर्वक अपना समय बिताते हैं। उसे सब लोग चाहते हैं, कोई भी
बोलने वाले व्यक्ति से घृणा नहीं करता है। जो सत्यभाषण को ही अपना
मानते हैं, ऐसे लोगों को अपने कर्त्तव्य का पालन करने में किसी भी प्रका
कष्ट नहीं होता है। वे लोग अपनी छोटी सी ही कमाई में सदा सन्तुष्ट रहा
हैं और सन्तोष ही सुख की प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन है। जो सन्तुष्ट नहीं
उसे कभी भी सुख शान्ति एवं समृद्धि की प्राप्ति नहीं होती। अतएव म
प्राप्त करने के लिए हमें सत्यभाषण करना चाहिए, और अपने कर्तव्य का
करना चाहिए।

मित्रता

(१) मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता-----------------------चाहे

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के 'मित्रता' शी
उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक आचार्य रामचन्द्रशुक्ल जी हैं। इस ग
लेखक इस बात की चर्चा कर रहे हैं कि हमें अपने मित्रों के चयन में
सावधान होना चाहिए। मित्रों की संगति का गुप्त प्रभाव मानव के चरित्र प
रहता है।

व्याख्या— इस गद्यांश में लेखक का कहना है कि विशेष रूप से
बाल्यकाल में मित्रों का चयन करते हैं उस समय हमें मित्रों के चुनाव की उप
पर सर्वाधिक ध्यान देना चाहिए। उसी पर हमारे जीवन की सफलता तथा
निर्भर होती है। मित्रों की संगति का गुप्तप्रभाव हमारे आचरण पर पड़ता
हमलोग समाज में प्रवेश करते हैं, उस समय हमारा जीवन मृत्पिण्ड के
होता है। जिसे अपनी इच्छा के अनुसार कुम्भकार कोई भी रूप प्रदान क
इस तरह प्रारम्भिक काल की संगति हमारे जीवन पर अपना अमिट प्रभ
जाती है। इस अवस्था का मित्र यदि सन्मार्गगामी हुआ तो वह हमें देव
सकता है। यदि वह उन्मार्गगामी हुआ तो हमें वह राक्षस बना सकता है। ब
की मैत्री के प्रभाव से मनुष्य समाज सुधारक बनाया जा सकता है। वह
एक नयी दिशा प्रदान कर सकता है, किन्तु यदि वह किसी उन्मार्गगामी
में पड़ गया तो वह समाज का शत्रु बन जा सकता है। उससे समाज

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपकार की आशा नहीं कर सकता।

(२) विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी-----------तब हमें उत्साहित करेंगे।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के **'मित्रता'** शीर्षक से उद्धृत हे। इसके लेखक आचार्य रामचन्द्रशुक्ल हैं। इस गद्यांश में लेखक विश्वास पात्र मित्र से होने वाले लाभ की चर्चा करते हैं।

व्याख्या— इस अनुच्छेद में लेखक एक विश्वासपात्र मित्र के गुणों की चर्चा करते हैं। वे बतलाते हैं कि किसी प्राचीन विद्वान् का कहना है कि विश्वासपात्र मित्र से बहुत बड़ी रक्षा होती है।

यदि किसी को किसी विश्वासपात्र मित्र की प्राप्ति हो गयी तो समझो उसे बहुत बड़े खजाने की प्राप्ति हो गयी। विश्वासपात्र मित्र उसी तरह से कल्याणकारी होता है, जिस तरह से औषधियाँ मानव के लिए कल्याणकारिणी होती हैं। हमें अपने मित्रों से इस बात की आशा रखनी चाहिए कि हमारा मित्र हमारे उत्तम संकल्पों में हमें सुदृढ़ बनायेगा। वह हमें ऐसे कार्यों को करने में प्रोत्साहन प्रदान करेगा। वह हमें गलतियों से बचायेगा, बुरा कार्य करने से रोकेगा। इस मित्र से हमारे सत्य, पवित्रता तथा मर्यादा के प्रति प्रेम-भाव सम्पुष्ट होंगे। यदि हम किसी भी प्रकार से उन्मार्ग-गामी हो जायेंगे। यदि किसी भी अच्छे कार्य को करने में हम हतोत्साहित हो जायेंगे तो हमारा मित्र हमें उस कार्य को करने के लिए प्रोत्साहित करेगा हमें निराश नहीं होने देगा।

अतएव मनुष्य को सर्वदा किसी विश्वासपात्र तथा सन्मार्गगामी मित्र को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

(३) मित्र केवल उसे नहीं कहते-----------दूसरा अपना हानि-लाभ समझे।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के **'मित्रता'** शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। इस अनुच्छेद में आचार्य इस अर्थ का प्रतिपादन कर रहे हैं कि-मित्र किसे कहा जा सकता है?

व्याख्या— लेखक का कहना है कि हम उस आदमी को अपना मित्र नहीं कह सकते हैं जिस व्यक्ति के गुणों की तो हम प्रशंसा करें, किन्तु उससे स्नेह नहीं कर सकें। जिससे हमारे छोटे-मोटे काम तो निकल जायँ किन्तु हम भीतर ही भीतर उस आदमी से घृणा करते रहें। मित्र को तो श्रद्धास्पद तथा स्नेहास्पद होना चाहिए। मित्र तो वह अच्छा होता है जो वस्तुतः पथप्रदर्शक हो। जिस पर पूरा-पूरा विश्वास किया जा सके। जिससे कभी भी किसी भी प्रकार की हानि होने की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संभावना न हो। मित्र किसी भी भाई से कम नहीं होता। सच्चा मित्र अपने मित्र की होने वाली क्षति और लाभ को ही अपनी क्षति एवं लाभ समझता है। उसका अपने मित्र से तादात्म्य होता है।

(४) मित्रता के लिए यह-------------------ही मित्रता हो सकती है।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के 'मित्रता' शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। इस गद्यांश में लेखक बतला रहे हैं कि यह कोई आवश्यक नहीं है कि दो मित्रों का स्वभाव तथा कार्यक्षेत्र एक समान हो। इतिहास के ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिससे इस बात की सिद्धि होती है कि भिन्न स्वभाव वाले तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्य करने वाले लोगों में प्रगाढ़ मैत्री थी।

व्याख्या– लेखक इस अनुच्छेद में इस अर्थ का प्रतिपादन कर रहे हैं कि सामान्यतः लोगों की ऐसी धारणा होती है कि दो समान स्वभाव वाले तथा एक समान कार्य करने वाले लोगों में ही प्रगाढ़ मैत्री पायी जाती है। मित्रता के लिए प्रकृति तथा स्वभाव की समानता अनावश्यक है। इतिहास बतलाता है कि भिन्न प्रकृति तथा भिन्न आचरण वाले लोगों में भी मित्रता होती है। उदाहरणार्थ इतिहास के श्रीराम लक्ष्मण की मित्रता देखी जा सकती है। श्रीराम धीर और शान्त प्रकृति के पुरुष थे और लक्ष्मण उग्र प्रकृति के पुरुष। किन्तु दोनों में अपार स्नेह था। दोनों एक दूसरे को प्राण से भी प्रिय समझते थे। श्रीराम के लिए लक्ष्मण ने अपने जीवन के सम्पूर्ण सुख-सुविधाओं का उत्सर्ग कर दिया। इसी तरह से दुर्योधन और कर्ण की भी मित्रता का उदाहरण लिया जा सकता है। कर्ण एक उच्च आशयों वाला महापुरुष था उसकी मित्रता लोभी स्वभाव वाले उन्मार्गगामी दुर्योधन से थी। दोनों की मित्रता में किसी भी प्रकार की न्यूनता कभी नहीं आयी। दुर्योधन के लिए महात्मा कर्ण ने अपने जीवन का उत्सर्ग कर दिया।

अतएव मित्रता में स्वभाव, आचरण अथवा प्रकृति की भिन्नता को बाधक रूप से नहीं स्वीकार किया जा सकता है।

(५) मित्र का कर्त्तव्य इस प्रकार बतलाया-------प्रकार का धोखा न होगा।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के 'मित्रता' शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। इस अनुच्छेद में लेखक बतला रहे हैं कि किसी भी मित्र का कर्त्तव्य क्या होता है? उसमें कौन-कौन से गुण अपेक्षित होते हैं?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्याख्या— इस अनुच्छेद में लेखक यह बतला रहे हैं कि जो सच्चा मित्र होता है वह अपने मित्र को अच्छे कार्यों में इतनी सहायता करता है कि वह अपने सामर्थ्य से भी अधिक कार्यों को कर जाता है। ऐसा मित्र वही हो सकता है जो दृढ़ संकल्प हो। उसका अन्तःकरण शुद्ध हो। अतएव हमें ऐसे मित्र का अन्वेषण करना चाहिए जिसमें हमारी अपेक्षा अधिक आत्मबल हो, वह अधिक मित्रनिष्ठ और सत्यसंकल्प हो। जो कभी भी मित्र के प्रति दूषित अन्तःकरण वाला न बने। उदाहरण के लिए श्रीराम और सुग्रीव की मित्रता। श्रीराम शुद्ध अन्तःकरण वाले ऐसे मित्र हैं, जिनके प्रोत्साहन को प्राप्त कर सुग्रीव बालि जैसे वीर से युद्ध करता है, अपना खोया हुआ साम्राज्य प्राप्त करता है, और अपने वानर वीरों को प्रेषित कर सीताजी का पता लगाता है। श्रीराम सुग्रीव की अपेक्षा अधिक आत्मबल वाले, और दृढ़ संकल्प वाले हैं। वे सुप्रतिष्ठित, शुद्ध हृदय वाले, मृदुस्वभाव वाले, पुरुषार्थी, शिष्ट और विश्वासपात्र मित्र हैं। हमें भी इसी प्रकार के सन्मित्र का अन्वेषण करना चाहिए।

(६) उनके लिए फूल पत्तियों में——————————साधन करना चाहिए।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के **'मित्रता'** शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। इस अनुच्छेद में श्री शुक्ल बतला रहे हैं कि आजकल जिन शोहदों की संख्या बहुत अधिक बढ़ रही है, उन लोगों को तो कभी भूलकर भी अपना मित्र नहीं बनाना चाहिए।

व्याख्या— लेखक इस अनुच्छेद में बतला रहे हैं कि आजकल के शोहदों के जीवन का कोई भी लक्ष्य नहीं रह गया है, वे अमीरों की बुराइयों का नकल करते हैं। अहर्निश उनका समय बनाव और शृंगार में बितता जाता है। महफिलों में ओहो हो हो करना, गलियों में ठट्ठा मारना, और सिगरेट का धुआँ उड़ाते चलना, ही उनका काम है। ऐसे लोगों का जीवन शून्य और निस्सार होता है। साधु-सन्त महात्माओं , वक्ताओं, महाकवियों, वीरों, तथा ग्रन्थकारों से उनका कोई भी सरोकार नहीं होता। उनको प्राकृतिक सौन्दर्य से कोई भी परिचय नहीं। उनके लिए फूल पत्तियों के सौन्दर्य, झरनों की कल-कल ध्वनि, तथा अनन्त सागर के अहर्निश गम्भीर घोष का कोई भी आकर्षण नहीं है। उनको अपने जीवन में सच्चे प्रयत्न और पुरुषार्थ को प्राप्त करने का अवसर ही नहीं मिलता है। उनको न तो कभी सच्ची प्रीति मिलती है, और न तो वास्तविक शान्ति ही। उन्होंने सच्चे सुख का कभी अनुभव ही नहीं किया। उनका सारा समय विषयोपभोग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का ही अनुभव करने में व्यतीत हो जाता है। उनका हृदय दूषित विचारों और निन्दित आशयों से कलुषित होता है। उनका प्रतिदिन पतन ही होता है, वे उन्नति के दरवाजे को कभी देख भी नहीं पाते हैं। अतएव ये नये युग के शोहदे वस्तुतः शोचनीय हैं। इनका भविष्य घोर अन्धकार में है।

कल्याणकामी मनुष्य को ऐसे मित्रों की संगति से सदा बचते रहना चाहिए। उनका साथ कभी भी नहीं करना चाहिए। ये स्वयम् तो विनष्ट होते ही हैं, जो लोग ऐसे लोगों के सम्पर्क में आ जाते हैं, उन लोगों के भी जीवन को ऐसे लोग बर्बाद कर देते हैं। ।

(७) कुसंग का ज्वर सबसे भयानक------------------उठाती जायेगी।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के 'मित्रता' शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं। इस अनुच्छेद में श्री शुक्ल जी कुसंग से होने वाली हानियों की चर्चा करते हैं। कुसंगति सम्पूर्ण अवनतियों का साधन है और सत्संगति सभी प्रकार की उन्नतियों का साधन है। इसी अर्थ का प्रतिपादन श्री शुक्ल जी इस अनुच्छेद में करते हैं।

व्याख्या— इस अनुच्छेद में लेखक कहते हैं कि कुसंगति से मानव को एक प्रकार का ज्वर हो जाता है। इस ज्वर से मनुष्य की नीति, सद्विचार, तथा सद्बुद्धि का नाश हो जाता है। इस ज्वर से मनुष्य बुरे संग को प्राप्त कर लेता है तो उसकी अनेक प्रकार की अवनति होती है। यदि उसकी संगति अच्छी हुई तो वह दिन प्रतिदिन विकास की ओर अग्रसर होता है। सत्संगति मनुष्य को सहारा देने वाली एक भुजा के समान होती है, जबकि कुसंगति पतन के गड्ढ़े में गिरा देने वाली पैर में बंधी चक्की के समान होती है। अतएव मनुष्य को सदा संगति के विषय में सावधान रहना चाहिए। उसे इस विषय में संग करने से पहले सोचना चाहिए कि वह जिससे मित्रता कर रहा है, वह आदमी कहीं ऐसा तो नहीं है, जिससे उसके पतन के मार्ग ही प्रशस्त हों, उन्नति उसकी समाप्त तो नहीं हो जायेगी।

मंत्र

(१) संसार में ऐसे मनुष्य भी होते हैं------------सदैव तैयार रहते थे।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के 'मंत्र' शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक मुन्शी प्रेमचन्द जी हैं। इस गद्यांश में श्री प्रेमचन्द जी ने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राचीन एवं नवीन विचारधाराओं का सजीव चित्रण किया है।

व्याख्या— इस गद्यांश में लेखक ने स्पष्ट किया है कि एक दीन-हीन बूढ़ा व्यक्ति तत्कालीन प्रख्यात डाक्टर चड्ढ़ा से अपने इकलौते बेटे की दवा कराने के लिए आया। लड़के की हालत अत्यन्त खराब थी; किन्तु उस समय डाक्टर के खेलने का समय हो गया था। बूढ़े ने बहुत प्रार्थना की कि डाक्टर उसके बेटे को देख ले, किन्तु डाक्टर उसकी एक भी नहीं सुना। उसकी ओर देखा भी नहीं। वह खेलने के लिए चला गया।

उस समय की उस बूढ़े की मानसिक भावना का वर्णन करते हुए लेखक कह रहे हैं कि इस संसार में ऐसे भी लोग रहते हैं, जो लोग अपने आमोद-प्रमोद के सामने किसी की जान की भी परवाह नहीं करते हैं। आज का यह संसार इतना निर्मम और कठोर है, इसका अनुभव इस बूढ़े के जीवन में कभी नहीं हुआ था।

वह स्वयं उस जमाने का जीव था जिस जमाने के लोग लगी हुई आग को बुझाने में, मुर्दे को मरघट तक पहुँचाने में, किसी के छप्पर को उठवाकर उसकी सहायता करने में और किसी कलह को शान्त करने में दिलचस्पी रखते थे।

उसने जीवन में पहली बार इतनी कठोरता डाक्टर चड्ढ़ा की देखी थी और उसका दुष्परिणाम हुआ कि उसी रात इस बूढ़े का सात साल का इकलौता बच्चा काल कवलित हो गया। उसका एकमात्र जीवन का सहारा समाप्त हो गया।

(२) वही हरा-भरा मैदान था---------------------अश्रुप्रवाह था।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के 'मंत्र' शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक श्री प्रेमचन्द जी हैं। इस शीर्षक में मुन्शी प्रेमचन्द ने आधुनिक सभ्य समाज की नीचाशय से युक्त मनोवृत्ति का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है। इस अनुच्छेद में लेखक क्षण भर में बदलते हुए एक दृश्य का मार्मिक चित्रण करते हैं।

व्याख्या— लेखक इस अनुच्छेद में बतला रहे हैं कि अभी कुछ देर पहले जहाँ डाक्टर चड्ढा के घर पर आये हुए मेहमान डाक्टर के इकलौते बेटे कैलाश की बीसवीं वर्ष-गाँठ मना रहे थे। किन्तु साँपों के पालने के शौकिन कैलाश अपनी प्रेयसी मृणालिनी के आग्रह के वशीभूत होकर अपने मित्रों को साँपों की करामात दिखाते दिखाते किसी गेहुँअन साँप के काट लेने से मर सा गया। फलतः सारी खुशी खौफ में बदल गयी। सारा आनन्द शोक में परिवर्तित हो गया। अब भी वही हरा भरा मैदान था जहाँ लोग कुछ देर पहले अनेक प्रकार से अपने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आनन्द की अभिव्यक्ति कर रहे थे। सुनहरी चाँदनी का आनन्द उठा रहे थे। किन्तु अब यहाँ पर न तो कोई आनन्दाभिव्यक्ति है और न तो कोई संगीत। नीरवता और उदासी का यहाँ साम्राज्य था। कैलाश का मित्र समाज शोक सागर में डूब रहा था और मनोरंजन के सारे समान निस्तब्ध थे। यदि आ रही थी तो वहाँ करुण क्रन्दन की हृदयविदारक ध्वनि, बह रहा था आँसुओं का प्रवाह।

(३) मैं नहीं जाता मेरी बला जाय-------------------कई लड़के हैं?

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्य संकलन' के **'मंत्र'** शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक मुन्शी प्रेमन्द जी हैं। प्रस्तुत अनुच्छेद में लेखक ने उस बूढ़े व्यक्ति के प्रतिकार की भावना को अभिव्यक्ति प्रदान की है, जिसके इकलौते मरणासन्न बेटे को डाक्टर चड्ढा ने लाख प्रार्थना करने पर भी नहीं देखा था, और खेलने के लिए चले गए थे। आज उन्हीं का बेटा साँप काटने से मर गया है और साँप के मंत्र को जानने वाला वह बूढा व्यक्ति अपनी प्रतिकार की भाषा में कह रहा है।

व्याख्या— बूढे भगत ने जब किसी के कहने पर यह जाना कि आज डाक्टर चड्ढा के लड़के को साँप ने काट लिया है, और हो सकता है कि उसके झाड़ने से वह ठीक हो जाय तो उसके हृदय में प्रतिशोध की भावना भड़क उठी। उसने कहा कि मैं उसके यहाँ नहीं जा सकता हूँ; यह वही चड्ढा है जिसने मेरे इकलौते मरणासन्न बेटे को नहीं देखा था। मेरी प्रार्थना सुनकर भी उसे दया नहीं आयी थी और वह खेलने के लिए चला गया था। उस समय मेरी बात भगवान सुन रहे थे। आज परमात्मा ने चड्ढा को उचित फल दियां है।

आज उन्हें मालूम पड़ता होगा कि पुत्र के मरने का शोक कैसा होता है ? कितना हृदयविदारक होता है वह कष्ट। उनके तो कई लड़के होंगे; हमारा तो इकलौता बेटा था। अब मैं उनके लड़के को देखने के लिए उनके घर नहीं जा सकता हूँ।

(४) पर उसके मन की-------------एक-एक पल का विलम्ब घातक था।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह गद्यांश 'गद्यसंकलन' के **'मंत्र'** शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक मुन्शी प्रेमचन्द जी हैं। इस अनुच्छेद में लेखक ने साँप के मंत्र के जानकार उस बूढे की मानसिक स्थित का चित्रण किया है जिसने जीवन में किसी का अनुपकार नहीं कियो, जिसने जिन्दगी में सबों की भलाई ही की। कभी किसी की बुराई नहीं की।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्याख्या— लेखक ने इस अनुच्छेद में बतलाया है कि बूढे भगत के मन में एक ओर तो चड्ढा की अतीत-कालिक निष्ठुरता की कसक थी तो दूसरी ओर उसके मन में कर्तव्य की भावना; उसे उचित कार्य करने के लिए प्रेरित कर रही थी। उस समय उसकी दशा श्रोता की थी जो उपदेशक के उपदेश सुनते हुए भी बाजे की आवाज सुनकर सहसा मन से उस आवाज की ओर आकर्षित हो जाता है। उसका मन बाजे की आवाज की ओर भले ही आकर्षित हो जाता है, किन्तु शर्म के मारे वह उपदेशक के उपदेश को सुनना छोड़कर बाजा सुनने के लिए नहीं जाता है। उसके मन में होता है कि यदि मैं उपदेश सुनना छोड़कर बाजा सुनने चला जाऊँ तो लोग मुझे क्या कहेंगे ? इसी तरह उस बूढे की मानसिक स्थिति थी। प्रतिशोध की भावना उसके लिए उपदेश के समान थी, किन्तु उस बूढे का मन उस नवयुवक की ओर लगा था। वह मन से चाहता था कि कोई भी न जाने और वह शीघ्र अपने मन्त्र की शक्ति से उस नवयुवक की जान बचा दे।

विश्व-मन्दिर

(१) वहाँ अनेक धर्मग्रन्थों——————————एकता की झलक दिखायेंगे।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह अनुच्छेद 'गद्यसंकलन' के **'विश्व-मन्दिर'** शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक श्री वियोगी हरि हैं। आपने इस शीर्षक में विश्ववन्धुत्व की भावना को उजागर किया है। आपके अनुसार संसार के सभी धर्मों, सभी धार्मिक ग्रन्थों की भावना और लक्ष्य एक हैं। आवश्यकता है सबों में समन्वय करने की।

व्याख्या— श्रीवियोगी हरि जी बतला रहे हैं कि आज आवश्यकता है एक ऐसे विश्व मन्दिर के निर्माण की जिसमें विश्व के सभी मन्दिरों की विशेषताओं का समाहार हो। उसमें सभी धर्मगन्थों के समन्वयात्मक वाक्यों का अंकन होना आवश्यक है। इस मन्दिर में वेदों के मन्त्र, कुरान की आयतें, अवेस्ता की गाथाएँ, बौद्धों के सुत्त, इंजिल के सरमन, कनफ्यूसियस के सुन्दर वाक्य, कबीर के सबद तथा सूर के भजन का भी अंकन होना आवश्यक है। ऐसे विश्वमन्दिर में आकर संसार के सभी जीवों को शान्ति मिलेगी। उसमें ऊँच-नीच, गरीब-अमीर तथा पुण्यात्मा एवं पापी का कोई भी भेद-भाव नहीं होगा। सब लोग उस मन्दिर में प्रवेश करने के अधिकारी होंगे। सबों को उस मन्दिर में शान्ति मिलेगी। इस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन्दिर में अनेकता में एकता की झलक मिलेगी। यहाँ पर सबों का समान रूप से समादर होगा। किसी को भी यहाँ निराशा नहीं मिलेगी।

(२) वहाँ की उपासना में पूर्व----------------की कुर्बानी भी की जायेगी।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के 'विश्व मन्दिर' शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक 'श्री वियोगी हरि' हैं। इस शीर्षक में लेखक ने एक ऐसे विश्वमन्दिर के निर्माण की बात की है, जिसमें विश्व के सभी मानवों का मन शान्ति प्राप्त कर सके। जहाँ दुनिया के सभी धार्मिक आकर अपने मनोनुकूल उपासना के साधनों को प्राप्त कर सकें। जिसमें सबों का अपनत्व हो। सब लोग जिसको अपना मन्दिर समझें।

व्याख्या— लेखक इस अनुच्छेद में बतला रहें हैं कि इस मन्दिर में पूर्व एवं पश्चिम का कोई भी विवाद नहीं होगा। सम्पूर्ण जगत् की सृष्टि करने वाला परमात्मा तो सर्वत्र व्याप्त है। वह सभी दिशाओं में है। उसकी उपासना प्रत्येक दिशा में की जा सकती है। उसी का सारा संसार है। उससे न तो कोई पृथक् है और न हो सकता है। इस विश्व मन्दिर में प्रत्येक पत्थर में तथा प्रत्येक ईंट में प्रेम का सन्देश होगा। उस मन्दिर में आकर सब धार्मिक अपनी-अपनी धारणा के अनुसार उसका समादर करेंगे। कोई उसके प्रत्येक पत्थर को चूमेगा तो कोई उसके प्रत्येक पत्थर को आनन्दमय होकर दण्डवत् प्रणाम करेगा। वहाँ सबों को एक साथ प्रेम का प्रसाद मिलेगा। किसी के साथ कोई भी भेद-भाव नहीं बरता जायेगा। सबों में सबों के प्रति समर्पण की भावना होगी। सब एक दूसरे से असीम स्नेह करेंगे।

(३) उस महान् समन्वय मन्दिर--------------------वही-वही होगा

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'गद्यसंकलन' के 'विश्व मन्दिर' शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक श्री वियोगी हरि जी हैं। इस अनुच्छेद लेखक अपने मनोभिलाषित विश्व मन्दिर के स्वरूप का निरूपण करते हैं।

व्याख्या— लेखक इस अनुच्छेद में बतलातें हैं कि यह जो विश्वमन्दिर होगा उसमें विश्व के सभी पूजास्थलों के चिह्न होंगे। सबों के अनुकूल मूर्तियाँ एवं वाक्य होंगे। लेखक का विश्वास है कि ईस विश्वमन्दिर में आकर सभी साधक लोकसेवा तथा विश्वप्रेम का सन्देश प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ पर किसी भी प्रकार का झगड़ा नहीं होगा। यहाँ पर किसी मजहब विशेष को महत्त्व नहीं दिया जायेगा मजहब

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झगड़ों से घबराये लोग यहाँ शान्ति का अनुभव कर सकेंगे। यहाँ पर सबों को दिव्य प्रेम की साधना के साधनों की प्राप्ति होगी। यहाँ पर बैठ कर सभी लोग अपने मनोनुकूल ढंग से अपने प्रिय परमात्मा की आराधना करेंगे तथा शान्ति एवं सन्तोष का अनुभव कर सकेंगे। सब लोग यही अनुभव करेंगे कि इस मन्दिर में उसी परमात्मा की प्रतिष्ठा है जिसकी मैं आराधना करता हूँ। सबों में वही परमात्मा व्याप्त है जिसकी मैं आराधना करता हूँ।

ममता

१. उसका यौवन शोण के समान....................कहाँ अन्त था।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यसंकलन के 'ममता' शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक श्री जयशंकर प्रसाद जी हैं। इस गद्यांश में उन्होंने एक भारतीय युवती विधवा का सजीव चित्रण किया है।

व्याख्या— शोण नदी के तट पर अवस्थित रोहतास दुर्ग के स्वामी के मंत्री चूड़ामणि की पुत्री ममता विधवा थी। उसकी जवानी भरी अवस्था केवल दुःखों का साम्राज्य थी। उसका अन्तःकरण वेदना से आक्रान्त था। उसके लिए सम्पूर्ण संसार तुच्छ था। अपने वैधव्य जीवन के विषय में सोचते ही उसकी आँखों में आँसुओं की बरसात उमड़ पड़ती थी। उसके लिए सुख के सम्पूर्ण साधन कण्टक पूर्ण शय्या के समान दुःखद थे। वह उन साधनों से सुख नहीं केवल दुःख का ही अनुभव करती थी। उसके लिए साधनों का कभी अभाव नहीं हुआ, किन्तु सब कुछ के बावजूद वह विधवा थी।

भारतीय हिन्दू समाज में विधवा नारी को निराश्रित माना जाता है। उसका सम्पूर्ण सौभाग्य अपने पति के दिवंगत होने के साथ ही समाप्त हो जाता है। सब लोग उस को अशुभ मानते हैं और उसकी उपेक्षा करते हैं, क्योंकि वह अपने धव (पति) से रहित होती है। ऐसी स्थिति में उस युवती दुर्गाधिपति के आमात्य की इकलौती पुत्री सुख के सम्पूर्ण साधनों के बीच भी दुखी थी। उसके दुख का कोई अन्त नहीं था। उसके दुख का अन्त तो उसके जीवन के अन्त के साथ ही संभव था।

विशेष— इस गद्यांश में लेखक ने भारतीय विधवा के दुःखमय जीवन का सजीव वर्णन किया है। (२) इस गद्यांश में तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है (३) उमड़ती हुई जवानी की शोण से समानता बतलाये जाने के कारण उपमा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अलंकार है। (४) सुख के साधनों को कन्टक की शय्या बतलाया गया है, अतएव विरोधाभास अलंकार है।

२. तो क्या आपने..............................लेकर क्या करेंगे ?।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश गद्यसंकलन के श्री जयशंकर प्रसाद लिखित **'ममता'** शीर्षक कहानी से उद्धृत है। इसमें लेखक ने भारतीय रमणी के स्वाभिमान का सजीव वर्णन किया है।

व्याख्या– रोहतास दुर्ग के मंत्री चूड़ामणि ने जान लिया था कि भविष्य में शेरशाह का आधिपत्य रोहतास दुर्ग पर होने वाला है। शेरशाह चूड़ामणि की इकलौती पुत्री को अपनी अंकशायिनी बनाना चाहता था। इसी उद्देश्य से उसने ममता के लिए सुवर्ण का विपुल उपहार भेजा था। चूड़ामणि ने उसे लेकर ममता के समक्ष रख दिये। सारी परिस्थिति जानकर ममता ने कहा–

पिता जी ! आपने मेरे लिए म्लेच्छ शेरशाह का उत्कोच स्वीकार किया है, यह आपने अर्थ नहीं लिया है यह अर्थ भयंकर अनर्थकारी है। इससे तो भारतीय ललना की उज्ज्वल संस्कृति पर अमिट कलंक का धब्बा लग जायेगा। आपने अपनी संस्कृति और जाति के महत्त्व को न देखकर मेरी सुरक्षा और समृद्ध भविष्य की कामना की; यही महा अनर्थ है। हम सब ब्राह्मण हैं। विपन्नता में ही जीना ब्राह्मणों का वैभव होता है। इतने सोने का हमारे यहाँ कोई उपयोग नहीं है

विशेष– (१) इस अनुच्छेद में लेखक ने भारतीय ललना के गौरव और उसकी उदारवृत्ति का वर्णन किया है। (२) भाषा संस्कृतनिष्ठ एवं ओजस्विनी है

३. हे भगवान् ! तब के लिए.....................अंधा बना रही है

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण गद्यसंकलन के श्री जयशंकर प्रसाद लिखित **'ममता'** शीर्षक से उद्धृत है। इस अनुच्छेद में रोहतास दुर्ग के आमात्य चूड़ामणि की युवती और विधवा पुत्री ममता के विचारों का वर्णन किया गया है

व्याख्या– ममता अपने को भाग्य एवं परमात्मा के सहारे छोड़ देने में सन्तोष करने वाली एक भारतीय नारी है। वह जानती है कि विपत्ति में परमात्मा सबकी सहायता करता है। वह अपने पिता से कहती है कि आने वाली विपत्ति के भय से आप इतने आशंकित हैं कि आप उत्कोच के मूल्य पर मुझे म्लेच्छ के हाथ में सौंप देना चाहते हैं। मेरे सतीत्व पर धब्बा लगाने का यह उपक्रम। इसमें आपकी ममता ही प्रधान कारण है। किन्तु परमात्मा की इच्छा के विपरीत कुछ नहीं होता। अतएव ऐसा साहस आप न करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो जाय शेरशाह का यहाँ आधिपत्य, किन्तु इतने मात्र से पृथिवी के समस्त हिन्दू तो नहीं विनष्ट हो जायेंगे। कोई तो बचा ही रहेगा, जो ब्राह्मण को भीख दे सकेगा। मैं परमात्मा की इच्छाओं पर अधिक आश्वस्त हूँ। आप इस समस्त उत्कोच राशि को लौटा दीजिए। इस सुवर्ण राशि की चमक मेरी आँखों को अच्छी नहीं लगती, अपितु इसकी चमक तो मेरी आँखों को दुःख दे रही है। मुझे नहीं चाहिए म्लेच्छ का यह अनर्थ भरा स्वर्ण राशि का उपहार।

विशेष— (१) इस अनुच्छेद में लेखक ने ममता के भाग्यवादी विचारों का सफल चित्रण किया है। (२) भाषा तत्सम शब्दनिष्ठ है।

४. ममता तो फिर मैं...............................करना है। तब ?

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत अनुच्छेद श्री जयशंकर प्रसाद प्रणीत गद्य संकलन के 'ममता' शीर्षक से उद्धृत है। इस अनुच्छेद में लेखक ने भारतीय संस्कृति की गरिमा और उसका एक नारी द्वारा पालन किए जाने का वर्णन किया है।

व्याख्या— चौसा के युद्ध में हुमायूँ शेरशाह से परास्त हो गया था। वह अपनी जान बचाने के लिए अश्व पर सवार होकर भगा था। दिनभर की यात्रा के पश्चात् वह काशी के मृगदाव तक पहुँच सका था, जहाँ भग्नावशेषों में ममता अपना भिक्षु जीवन व्यतीत कर रही थी। दिनभर का थका हुआ हुमायूँ अब खड़ा होने में भी असमर्थ था। उसने रातभर सोने के लिए ममता से शरण माँगा, किन्तु उसे मुगल जानकर ममता एक बार सहम गयी। उसने देखा कि यह अतिथि है। भारतीय संस्कृति की सर्वोत्तम निधि है, अतिथि सेवा। शिक्षा बल्ली कहती है– **'अतिथ देवो भव।'** निस्सन्देह मुगल दया के पात्र नहीं है। आततायी शेरशाह ने मेरे पिता को मार दिया था। वह भी मुगल ही था। यह भी अपने को मुगल बतलाता है। किन्तु उसने जब यह कहा कि माँ क्या मैं यहाँ से जाऊँ, तो ममता की ममता उमड़ पड़ी उसने ईश्वर पर भरोसा किया। अपने कर्तव्य पालन को उसने सर्वोत्तम समझा। उसने निश्चित किया, अतिथि मुगल को मुझे शरण देनी ही चाहिए।

विशेष— (१) इस अनुच्छेद में **'अतिथ देवो भव'** इस भारतीय संस्कृति की प्रधानता बतलायी गयी है।

५. जाओ भीतर..................................छोड़ दूँ ?

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह गद्यांश गद्यसंकलन के श्री जयशंकर प्रसाद लिखित **'ममता'** शीर्षक कहानी से संकलित है। इस गद्यांश में भारतीय नारी की आत्म

सं० पू०द्वि०-२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का विशद विवेचन है।

व्याख्या— ममता जान गयी थी कि मेरे यहाँ आश्रय पाने के लिए परेशा पुरुष मुगल है। मुगलों ने मेरे पिता की हत्या कर दी थी। वे आततायी हैं। उन कञ्चन एवं कामिनी को पाने की हवस अपार है। उन्हें किसी प्रकार से अ चाहिए। किन्तु मैं जहाँ हूँ वह तो प्राचीर है। इस भग्नावशेष को पाने का प्रया कौन करेगा ? यह पथिक श्रान्त एवं भयभीत है। अब यह चल सकने में असमर्थ है। अतएव इसको रातभर विश्राम करने के लिए मुझे आश्रय अवश्यक देना चाहिए। उसने उस श्रान्त अतिथि से कहा- तुम थके हुए हो और भयभी हो। तुम्हें विश्राम करना चाहिए। मैं अपने धर्म का परित्याग नहीं कर सकती हूँ तुम कुटिया के भीतर जाओ और विश्राम करो। सब लोग भले ही अपना धर्म छो दें किन्तु मेरा तो एक मात्र सहारा धर्म ही है। मैं अपने धर्म को नहीं छोड़ सकती तुम विश्राम करो।

विशेष— (१) इस गद्यांश में ममता की भारतीय संस्कृति और धर्म के प्र लगाव का मनोहर वर्णन किया गया है। (२)इसमें **'त्याज्यो न धर्मोऽपि विप काले।' 'धर्मो रक्षति रक्षितः' 'अतिथि देवो भव'** इत्यादि भारतीय संस्कृति सूक्तियों के सन्देश पालन के लिए दृढ़ संकल्प का निर्देश किया गया है।

६. अश्वारोही ही पास आया..........................में जाती हूँ

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश गद्यसंकलन के श्री जयशंकर प्रसा लिखित **'ममता'** शीर्षक से उद्‌धृत है। इस गद्यांश में ममता जो अपने जीवन अंतिम क्षणों को गुजार रही थी, उसने अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है।

व्याख्या- मुगल बादशाह हुमायूँ ने एक दिन 'ममता' की कुटिया में विश्रा प्राप्त किया था। उसने अपने मिरजा को आदेश दिया था कि बुढ़िया की कुटिया मैंने विश्राम किया था, उसका मकान तुम बनवा देना। बहुत दिन बिता जाने कारण अश्वारोही उस स्थान का पता नहीं लगा पा रहे थे, जहाँ पर हुमायूँ शरण प्राप्त की थी। अश्वारोही' उस स्थान के अन्वेषण के लिए बातें कर रहे ममता ने उसे बुलाया और उससे पूछा। इसके पश्चात् ममता ने अपनी अन्ति श्वांसों को गिनते हुए कहा कि- जिस मुगल ने एक रात्रि को मेरी इस कुटिया विश्राम किया था, मैं नहीं जानती हूँ कि वह शाहंशाह था अथवा सामान्य मुगल किन्तु उसने एक दिन इसी झोपड़ी में निवास किया था। मैंने यह भी सुना है उसने मेरा घर बनवाने का आदेश दिया है। मैं जिन्दगी भर अपनी झोप

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खोदवाने के भय से भयभीत रही। सोचती थी कहीं उसके अनुचर आकर मेरी इस झोंपड़ी को उजाड़ न दें और यहाँ पर मेरे लिए भवन बनवाने लगें। अब मेरी चिन्ता समाप्त हो चुकी है। मैं आज इस झोपड़ी को छोड़कर अपने चिर विश्राम गृह में जा रही हूँ। अब तुम लोग स्वतंत्र हो। अपनी मर्जी के अनुसार घर अथवा महल कुछ भी बनवा सकते हो। मेरा उससे कोई मतलब नहीं। जब तक मैं जीवित थी तब तक मेरी झोपड़ी सुरक्षित रही, यही मेरे जीवन की उपलब्धि थी।

मैं क्या लिखूँ ?

१. लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति.............विषय नहीं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह गद्यांश गद्यसंकलन के 'मैं क्या लिखूँ' शीर्षक से उद्धृत हैफ। इस शीर्षक के लेखक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी' जी हैं। इस वाक्य को उन्होंने अपने निबन्धों में उदाहरण के रूप में उद्धृत किया। इन वाक्यों के मूल उद्भावक अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबन्ध लेखक ए० जी० गार्डिनर हैं।

व्याख्या— ए० जी० गार्डिनर का मानना है कि लिखने के लिए विषयों के चयन अथवा निर्धारण की कोइ आवश्यकता नहीं होती है, अपितु आवश्यकता होती हैं, उस उत्साह की जिस उत्साह के उमंग में मनुष्य कुछ लिख डालने के लिए भावाविष्ट होता है। उस तरह की मानसिक स्थिति के बन जाने पर लेखक अवश्य लिखता है और सुन्दर लिखता है। वह उस समय लेख लिखने के लिए बाध्य होता है। नहीं लिखना चाहकर भी वह रुक नहीं सकता है। वह किसी भी विषय पर लिख सकता है। वह जिस विषय पर लिखता है, उसमें अपने भावों के रंग को अवश्य भर देता है।

अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए लेखक बतलाते हैं कि मान लिया जाय कि किसी को अपना हैट टाँगना है। उस हैट को टाँगने के लिए उसे खूँटी चाहिए। वह अपने हैट को किसी भी प्रकार खूँटी पर टाँग सकता है। हैट टाँगने के लिए किसी विशेष प्रकार की खूँटी की आवश्यकता नहीं होती। इसी तरह भावाविष्ट लेखक को अपने विचार रूपी हैट को टाँगने के लिए किसी विषय की आवश्यकता होती है। विषय कोई भी हो सकता है। विषय की प्रधानता नहीं होती है। प्रधानता होती है, विचारों की अभिव्यक्ति की। किसी भी विषय के विवेचना के माध्यम से लेखक अपने विचारों को अभिव्यक्ति कर सकता है; क्योंकि लेखक को तो अपने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन के भावों को सबों के समझ उपस्थिति करना होता है। वास्तविकता मानसि
भावों की ही होती है, विषय की नहीं।

२. जो तरुण संसार..............................बना रहता

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश गद्यसंकलन के पदुमलाल पुन्नालाल बख्
लिखित **'मैं क्या लिखूँ'** शीर्षक से उद्धृत है। इस गद्यांश में लेखक ने तरुणों
वृद्धों की मानसिक स्थिति की तुलना करते हुए बतला रहे हैं कि दोनों अ
वर्तमान के प्रति असन्तुष्ट रहते हैं; क्योंकि वर्तमान तो सदा सन्निकट में रहता
उसके प्रति असन्तोष स्वाभाविक होता है।

व्याख्या– लेखक बतला रहे हैं कि यह जो कहा जाता है कि दूर के ढ
सुहावन होते हैं। इसका समन्वय सर्वत्र देखा जाता है। मानव जीवन के दो का
का बड़ा ही महत्त्व होता है, तारुण्य काल और वार्द्धक्य काल। जीवन के ये द
काल परिपक्वता के काल माने जाते हैं। किन्तु इन दोनों कालों में मानव अ
वर्तमान के प्रति असन्तुष्ट रहता है। एक तरुण अपने उज्ज्वल भविष्य के प्र
लालायित रहता है। वह चाहता है कि उसका उज्ज्वल भविष्य का स्वप्न शीघ्रातिश
साकार हो जाय। वह उसकी बड़ी बेचैनी से प्रतीक्षा करता है। इस तरह एक
पुरुष जो अपने जीवन के दीर्घकाल को व्यतीत कर चुका होता है, वह अ
अतीत की गौरवगाथा सुनाता है। उसके सुखप्रदत्व को सोच-सोच कर चाहता
कि उसका अतीत फिर से लौट आये। इस तरह दोनों तरह के लोग अपने दू
कालीन परिस्थितियों के प्रति आश्वस्त होते हैं। वृद्ध का अतीत दूरस्थ होता
और तरुण का भविष्य। दूरस्थ के प्रति आकर्षण मानव का स्वभाव होता है
दोनों अपने वर्तमान को सुधारना चाहते हैं। लेखक का कहना है कि वर्त
हमेशा सुधार का काल होता है। समाज सुधारक इस वर्तमान को ही सुधारने
काम करते हैं। यह वर्तमान सुधारने की प्रक्रिया सुदीर्घ काल से चल रही है
सुदीर्घ काल तक चलती रहेगी। उसको सुधारने का एक मात्र उद्देश्य होता है
वर्तमान भी उसी तरह से आकर्षक प्रतीत हो; जैसा कि भविष्य और अतीत प्र
होता है।

३. मनुष्य जाति के काल में कोई...........प्रगतिशील माना गया

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अनुच्छेद गद्यसंकलन के **'क्या लिखू'** शीर्ष
उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्याख्या— इस अनुच्छेद में लेखक का कहना है कि सभी कालों में सुधारों ी आवश्यकता होती है। वर्तमान काल में जिस प्रचलन अथवा प्रथा को समाज ोष रूप से अनुभव करने लगता है, उसमें वह कुछ परिवर्तन करना चाहता है, थवा उसका बिल्कुल त्याग करना चाहता है। उसके लिए समाज के कुछ प्रबुद्ध ोग आते हैं और अपने अदम्य उत्साह तथा प्रभाव के बल पर चलती आ रही रानी प्रथा में परिवर्तन करने के लिए समाज में एक क्रान्ति लाते हैं। तरह ती-प्रथा कभी गुण था; किन्तु कालान्तर में वही चलकर कुरीति और दोष माना ाने लगा। उसके लिए अनेक सामाजिक सुधारकों ने काम किया और उस प्रथा ा समाज से उन्मूलन किया। यह समाज में सुधार दौर सुधारकों की सदा से ावश्यकता होती आयी है और होती रहेगी। इसीलिए बुद्ध, महावीर, नागार्जुन, हात्मा गाँधी ,राजा राममोहनराय आदि अनेक प्रख्यात समाज सुधारक हो चुके । ये प्रख्यात सुधारक हैं। इनसे भिन्न वे सुधारक हैं जो गावों में रहते हैं, उनकी ोई प्रसिद्धि नहीं है, फिर भी वे समाज सुधर के कार्यों में सक्रिय योगदान किया रते हैं। जीवन में हमेशा नये-नये अपेक्षित सुधार भी होते रहे हैं। दोष अनन्त और उन दोषो का सुधार भी अनन्त है। जब तक दोष रहेगा तब तक उनके धारक भी रहेंगे और उनका सुधार भी होता रहेगा। यही नहीं जो कभी सुधार हलाता है वही कालान्तर मे दोष कहलाने लगता है और उन प्राचीन सुधारों का वीन ढंग से पुनः सुधार होता है। यही जीवन की प्रगतिशीलता है। परिर्वतन का दूसरा नाम प्रगतिशीलता है।

विशेष— इस अनुच्छेद में लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि यह संसार नन्त है। उसके दोष भी अनन्त हैं और उन दोषों के सुधार भी अनन्त है। २. खक का मानना है कि कोई भी सुधार हमेशा सुधार नहीं होता है, वह कालान्तर दोष के रूप में भी परिणत हो जाता है। ३.इस अनुच्छेद में लेखक ने यह भी तलाया है कि सभी कालों में सुधारों की आवश्यकता होती है। कोई भी काल धार निरपेक्ष नहीं होता।

४. हिन्दी में ....सुहावन होते हैं।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत अनुच्छेद गद्य संकलन के 'मै क्या लिखूं' शीर्षक उद्धृत है। इसके लेखक पदुमलाल, पुन्नालाल बख्शी जी हैं।

व्याख्या— इस अनुच्छेद में उन्होंने बतलाया है कि आज कल हिन्दी साहित्य ी विधाओं में अनके परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तन कर्ताओं के मन में हिन्दी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साहित्य के उज्ज्वल भविष्य के स्वर्णिम आकर्षण का व्यामोह है। वे समझते हैं इससे हिन्दी साहित्य का भविष्य सुधारेगा । उसका गौरव बढेगा। किन्तु उन्हें भी सोचना चाहिए कि कुछ दिनों के पश्चात् उन निर्माताओं द्वारा किया सुधार भविष्य का गौरव न रहकर अतीत का गौरव बन जायेगा। आज जो भवि है कल वही वर्तमान होगा और उसके अगले दिन अतीत। किन्तु चाहे अतीत बात हो या भविष्य की। इन दोनों का आकर्षण व्यामोह मात्र है वास्तविक नहं

आज जो तरुण है, वही कल वृद्ध होगा और वही अपने स्वर्णिम अतीत स्वप्न देखेगा। अतीत के स्थान पर नवीन जो दल आयेगा वह वर्तमान-के निर्माता के समान भविष्य का स्वप्न देखेगा। अतीत की कल्पना और भविष्य के स इसलिए आकर्षक होते हैं कि वे दूरस्थ हैं। दूरस्थ के आकर्षण का समर्थन कहावत भी करती है-दूर का ढोल सुहावन होता है।।

नर से नारायण

१. यदि वे रीतिकालीन काव्यों की..................पुलकित हुआ

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश गद्यसंकलन के बाबू गुलाबराय लिखि 'नर से नारायण' शीर्षक से अवतीर्ण है। इसमें लेखक बतला रहे हैं कि सुख खेती को वर्षा की कितनी उपयोगिता होती है। किन्तु लेखक का मन बादलों सौन्दर्य के प्रति अधिक आकृष्ट है और उनकी उपयोगिता के प्रति कम।

व्याख्या— सितम्बर का महीना था वर्षा नहीं हो रही थी। किसानोंकी खे सूखती जा रही थी। लेखक भी अपनी गाढी कमायी के बीस रुपयों को खर्च के चरी बो रखा था। वह अपनी सूखती हुई चरी को देखकर कभी-कभी दो आँसू भी बहा लेता था। आँसुओं के माध्यम से जल तो निकलता था; किन्तु जल का लेखक की चरी सींचने में कोई भी उपयोग नहीं हो सकता था। इस प्र में लेखक को रीति कालीन कवियों के काव्यों मे आते हुए आँसुओं का प्रसंग आ जाता है। रीतिकालीन कवियों ने लिखा है कि श्रीकृष्ण की विरह से व्यथि गोपियों ने इतना रोया कि उससे समुद्र का सारा जल ही खारा हो गया। लेखक कहना है कि यदि मेरे आँसू विपुल मात्रा में होंते और खारे समुद्र के जल समान खारा भी होते तो भी उनसे सिंचाई का काम संभव नही था। लेखक ने दिन अचानक देखा कि आसमान मे काले-काले बादल उठे हुए हैं। उन बादलों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देखकर लेखक का मन-मयूर मत्त होकर नृत्य करने लगा। लेखक ने अनुभव कि परमात्मा ने गरीब किसानों की प्रार्थना सुन ली है। उन बादलों को देखकर संदेह होता है कि ये दिग्दाहों के धूम हैं अथवा काले-काले मेघ। वह निराश मन से सोचता कि इस वर्षा से अब क्या होने वाला है ? मेरी कृषि तो सुख चुकी है 'का बरखा जब कृषि सुखाने', किन्तु सबके बावजूद मेघों को देखकर लेखक का मन प्रसन्न था, वर्षा की नन्ही- नन्ही बूंदों के स्पर्श से उसको रोमांच होने लगा । वह बादलों की छटा निहारने के लिए घर से बाहर निकलकर घूम रहा था।

विशेष— १. समुद्र का पानी खारा हो गया। इस वाक्यांश में लेखक ने रीति कालीन काव्यों की कल्पनातिशयों की ओर संकेत किया है। उसने प्रसाद एवं कबीर की पंक्तियों की ओर भी संकेत अपने उदाहरण वाक्यों से किया है। मन मयूर मे रूपक अलंकार है। ३. इस गद्यांश मे व्यांयात्मक शैली का प्राचूर्य है। लोकोक्तियों तथा मुहावरों के प्रयोग से गद्य मे भी पद्य का सौन्दर्य दृष्टिगोचर होता है।

२. सायं काल तक..................................बनी हुई थी।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश गद्यसंकलन के श्री गुलाबराय द्वारा लिखित **'नर से नारायण'** शीर्षक से उद्धृत है। इसमें लेखक ने संयत तथा व्यंग्यात्मक शैली में देर से हो रही चिरकांक्षित विपुल वर्षा के दृश्य का वर्णन किया है।

व्याख्या— बहुत दिनों से अपनी सूखती खेती को देखकर किसान पानी के लिए त्राहि- त्राहि मचाये हुए थे। अचानक ही एक दिन वर्षा होने लगी। वर्षा एवं बादल को देखकर लेखक का मन प्रसन्न था। वर्षा होते-होते शाम हो गयीं। चारो ओर की जमीन पानी से प्लावित हो गयी। सारा वातावरण रसमय हो गया था। रसमय शब्दों का प्रयोग लेखक ने दो अर्थों में किया है। आन्नदमय और जलमय। रस शब्द का अर्थ आन्नद और जल दोनों ही होता है। वर्षा चिरप्रतीक्षित थी; अत एव सब लोग प्रसन्न थे। पानी देर से पड़ रहा था। चारो ओर वर्षा का जल भर गया था। अत एव सारा दृश्य जलमय हो गया था। पानी की मात्रा को बढते हुए देखकर लोगों के मन में संभाव्य अनिष्ट की भी आशंका बढने लग गयी थी। किन्तु सायंकाल तक इतना ही पानी पड़ा था कि सब लोग उसे सुखद ही समझते थे। लेखक तो तुलसी दास की पंक्तियों को ही याद कर रहा था—

सिमिट सिमिट जल भरहिं तलावा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा ।।

वर्षा का जल उसी तरह चारो ओर से लेखक के घर के सन्निकट जमा होने लगा था जिस तरह आधुनिक युग के बेकारों की अर्जियों से दफ्तर, प्रार्थनापत्र घर प्रतीत होने लगते हैं।

विशेष— १. इस गद्यांश में लेखक ने मुहावरेदार वाक्यों का प्रयोग किया है।

२. सिमिटि सिमिटि इत्यादि गोस्वामी जी के उद्धरण वाक्य में लोकोक्ति और उपमा लंकार का सदभाव है।

३. मै अपने तहखाने.............................उपस्थित हो गया।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह गद्यांश गद्यसंकलन के श्री बाबू गुलाब राय लिखित **'नर से नारायण'** शीर्षक से उद्धृत है। इस गद्यांश में लेखक ने अपने घर की झूठी प्रशंसा का वर्णन किया है।

व्याख्या— लेखक का कहना है कि उसके तहखाने में रोशनदान था। उस रोशनदान से मकान मे हवा आती जाती थी। रोशनदान के प्रकाश में बैठकर लेखक पढने-लिखने का भी काम किया करता था। कोई उसके मकान को देखने आता तो वह अपने स्वास्थ्य विज्ञान तथा अपने शान-शौकत का भी प्रदर्शन करता था। किन्तु यह सारा प्रदर्शन उसका दिखावा मात्र था। उसमें वास्तविकता बहुत कम थी; किन्तु उस दिन का दृश्य अनोखा था। पानी इतना बरसा कि तहखाने के रोशनदान से होकर पानी तहखाने मे आने लगा। इस समय लेखक की वर्षा की सौन्दर्य प्रियता समाप्त हो गयी थी। वह रोशनदान से गिरते हुए झरने के समान पानी की मोटी धार को भी वह प्रेम पूर्वक नही देख सका; क्योंकि उस समय एक बा एक बिजली भी चली गयी। लेखक का कहना है कि मैने सुना है कि कुछ लोग घर फूँक तमाशा देखते हैं। किन्तु उनको वह तमाशा देखने के लिए प्रकाश की कमी नहीं होती है। जलते हुए घर के प्रकाश मे वह तमाशा देखना चाहे तो खूब तमाशा देख ही सकता है, किन्तु लेखक के लिए तो यह भी संभव नहीं था। विद्युत् के अभाव में व्याप्त अन्धकार उपनिषद् की **असूर्या नाम ते लोकाः अन्धेन तमसावृताः** की सूक्ति को चरितार्थ कर रहा था। कुछ भी देख पाना असंभव था।

विशेष— इस गद्यांश की भाषा व्यंग्यात्मक है और इसमें मुहाबरों तथा उदाहरणों का प्रयोग किया गया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

५ मनु की भांति..................................नारायण बना।।

संदर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश गद्यसंकलन के श्री बाबू गूलाब राय द्वारा लिखित **'नर से नारायण'** शीर्षक से उद्धृत है। इस गद्यांश में लेखक ने उस प्रलयकालीन वर्षा के दृश्य के समान अपने समक्ष उपस्थित दृश्य का वर्णन किया है।

व्याख्या— सुदीर्घ काल के पश्चात् चिरप्रतीक्षित वर्षा हुई। इतनी वर्षा कि चारो ओर जल प्लावन हो गया; कोई भी स्थान खाली नहीं दिखता था। केवल पानी ही पानी दिखयी पड़ता था। चारो ओर पानी ही पानी था। घरों में पानी घुस गया था। लोग जलप्लावन की विभीषिक से त्रस्त हो गये थे। उसी समय लेखक अपने घर के चारो ओर एकत्रित जल को देखकर प्रलय काल की बेला की याद करने लगा। उसे याद आने लगी कामायनी की वह पंक्तिः—

नीचे जल था ऊपर हिम था एक सरल था एक सघन।
एक तत्त्व की ही प्रधनता कहो उसे जड़ या चेतन।।

अर्थात् प्रलय काल के पश्चात् हिमालय की ऊँची चोटी पर बैठकर अपने अश्रुपूरित नेत्रों से मनु प्रलय कालीन जल प्लावन को देख रहे थे। उनके नीचे तो प्रलय काल का चंचल समुद्र लहर रहा था ओर ऊपर हिमगिर की चोटियाँ हिमाच्छादित थीं। चाहे समुद्र का जल हो अथवा हिम दोनों में जल तत्व की ही प्रधानता थी। स्थिर हिम को जड़ भी कहा जा सकता है और चंचल समुद्र के जल को चेतन भी क्योंकि उसमें स्पन्दन था घोष था। चेतन में ही स्पन्दन और घोष सम्भव है।

लेखक भी आज इस जल प्लावन के दृश्य को देखकर मनु की ही मानसिक दशा को प्राप्त कर रहा था। किन्तु उसके नेत्र अश्रुपूरित नहीं थे अपितु उसमें एक करुण हँसी का सद्भाव था। वह अपने को कामायनी के मनु से भी अधिक उन्नत स्थिति में अनुभव करने लगा था। वह इस समय अपने को नारायण समझने लगा था। **'नारासु अयनं यस्य'** यह नारायण शब्द की व्युत्पत्ति है। नारा शब्द जल का वाचक है। मनुस्मृतिकार ने कहा है– आपो नारा इति प्रोक्ताः।' अर्थात् नारा शब्द और आप (जल) शब्द दोनों एक ही अर्थ के बोधक हैं। भगवान को इसलिए नारायण कहते हैं कि उनका निवास स्थान सागर के भीतर है। लेखक का निवास स्थान जल के बीच मे हो गया था। अत एव उसको भी नारायण कहा जा सकता था। इसके निवास के चारो ओर पानी ही पानी भरा था। लगता था वह सागर के बीच में बसा हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष— १- इस गद्यांश में लेखक ने प्रलय कालीन दृश्य की ओर संके किया है। २- वंह कांमायनी के मनु के जल प्लावन का संदर्भ निर्दिष्ट करता है ३-नारायण शब्द की यौगिक व्युत्पत्ति की ओर निर्देश किया है। ४- लेखक ने इ बात पर ध्यान नहीं दिया है कि नारायण शब्द में संज्ञा के ही अर्थ में पूर्वपदा संज्ञायामगः' सूत्र से'न' का 'ण' होता है। समाख्या मे न का ण नही हो सक है। यह लेखक की एक मोटी भूल है।

भारतीय संस्कृति

१-यह केवल एक.................................ही हो जाता है

संन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश गद्यसंकलन के डा० राजेन्द्र प्रसाद लिखि **'भारतीय संस्कृति'** शीर्षक से उद्धृत है। इस गद्यांश मे लेखक ने भारती संस्कृति का निरूपण करते हुए बतलाया है कि अनेकता में एकता ही भरती संस्कृति का वास्तविक स्वरूप है।

व्याख्या— भारत में यदि देखा जाय तो भाषा-भाव, बोली, रहन-सह पहनावा, खान-पान, मौसम आदि सर्बो में सर्वत्र भिन्नता पायी जाती है। कि यह सम्पूर्ण भिन्नता भारतीयता के नाम पर एक हो जाती है। जिस तरह भिन्न भिन्न स्थानों से निकलने वाली नदियाँ समुद्र मे मिलकर एक हो जाती हैं, उस तरह भारत में पाये जाने वाली समस्त विभिन्नताएँ भारतीय संस्कृति के विशा अन्तराल में एक हो जाती हैं। भारत के भिन्न- भिन्न प्रदेश की धरती भिन्न भिन्न प्रकार की वस्तुएँ पैदा करती है, किन्तु सर्वत्र उत्पन्न होने वाली वस्तु भारतीय होती हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि जातियों के धर्म परस्पर अलग- अलग हो कर भी भारतीय धर्म हैं। यहां पाये जाने वाले शैव, शाक वैष्णव, गाणपत्य, तथा सौर आदि सम्प्रदाय अन्ततोगत्वा भारतीय संस्कृत के अ है। शंकर, रामानुज, बुद्ध, महावीर, दयानन्द आदि अपनी भिन्न-भिन्न अवधरणा को अभिव्यक्त करने वाले महान् विचारक भारतीय संस्कृति के देदीप्यमान र हैं। भरतीय संस्कृति वह सुवर्ण तन्तु है, जो विभिन्न मणियों की अथवा विभि पुष्पों की मनोज्ञ माला बनाती है। भारतीय संस्कृति भी एक माला के समान जिसमें सभी पुष्पों की अलग-अलग सत्ता बरकरार रहकर भी समवेत सत्ता महत्ता होती है। यह कोई काव्य की कल्पना नहीं है, अपितु ऐतिहासिक सत्य है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२. जिन हालातों में..............................अधिक व्यापक है।

संन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश गद्यसंकलन के डॉ० राजेन्द्र प्रसाद लिखित 'भारतीय संस्कृति' शीर्षक से उद्धृत है। इस गद्यांश में लेखक ने भरतीय संस्कृति की सुदृढता का वर्णन किया है।

व्याख्या— भारतीय संस्कृति अत्यन्त प्रचीन संस्कृति है। इसने अपने अच्छे बुरे सब प्रकार के दिनों को देखा है। इसको विनष्ट करने के लिए अनेक प्रकार के प्रयास किए गये, किन्तु यह सुरक्षित रही । भारत में अनेक विदेशी प्रशासक आए। शक, हूण, मुगल, अंग्रेज आदि और सबों ने इस संस्कृति का समूलोन्मूलन करने का यथाशक्य प्रयास किया, किन्तु यह ज्यों की त्यों बनी रही। जिस बुरी परिस्थित में पड़कर संसार की संस्कृतियाँ विनष्ट हो गयीं उस परिस्थिति में भी पड़कर यह संस्कृति समुद्र के समान अक्षोभ्य और हिमालय के समान अडिग बनी रही। यहाँ के लोगों की धार्मिक, राजनैतिक, तथा वैचारिक सहिष्णुता के भाव बने रहे। यहाँ की सारी जातियाँ पूर्ववत् बनी रहीं और सबों का अपना गौरव भी सुरक्षित रहा।

लेखक का मानना है कि भारतीय संस्कृति की उस सुदृढ़ता का रहस्य है कि यह संस्कृति सामूहिक चेतना एवं नैतिकता के आधार पर टिकी हुई है। अनेक प्रकार की भिन्नता के पश्चात् भी भारत की समस्त जातियाँ, उनके व्यवहार, विचार,बोली, भाषा, मौसम, ऋतुएँ, नदियाँ, पर्वत आदि समस्त पदार्थ भारतीय हैं। भारतीय संस्कृति के धरोहर हैं, और इन सबों का समुचित संरक्षण प्रत्येक प्रबुद्ध भारतीय का कर्त्तव्य है। यही भावना इस संस्कृति को सुदृढ बनाये रखने में समर्थ रही है।।

चिर तारुण्य की साधना

१. खेल मे हम समभाव..............................होना चाहिए।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश गद्यसंकलन के 'विनोवा भावे' लिखित 'चिरतारुण्य की साधना' शीर्षक से उद्धृत है। इस गद्यांश में लेखक बतलाते हैं कि खेलों के अनेक उद्देश्य हैं। उनमें समभाव का स्थान प्रथम है।

व्याख्या— प्रायः सर्वत्र लोग खेल खेला करते हैं। उन खेलों का उद्देश्य शरीर को बलिष्ठ बनाना मात्र नहीं है। यह तो एक सामान्य उददेश्य है। इससे भिन्न ही

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके विशेष उद्देश्य हैं। वे हैं समभाव, शिष्टता इत्यादि। खेल मे ऊँच, तथा नीच जातियों के भी बच्चे आते हैं। खेल के मैदान में न तो कोई ऊँच होता है और न तो कोई नीच, न तो कोई धनी होता है और न तो कोई गरीब। न कोई स्पृश्य होता है और न तो कोई अस्पृश्य। सबों के प्रति सबों का समान भाव होता है। सब के सब एक अनुशासन में रहकर खेल खेलते हैं। लेखक का मानना है कि खेल की कोई गणना नहीं है। यदि खेल उत्पादक बन जाये तो वह उन खेलों से अच्छा है जो खेल केवल मनोरंजक होता है। एक खेल है खेत खोदने का खेल। इसे कोई खेल नहीं मानता है। किन्तु दस लोग मिलकर खेत खोदें और सबों की कुदालियाँ एक साथ ऊपर उठें और एक साथ जमीन में घुसें तो वह कितना सुन्दर दृश्य होगा ? यह खेल मनोरंजक उत्पादक दोनों हो सकता है। इसमें बुद्धि का भी प्रयोग हो सकता है। अतः एव यह खेल अन्य खेलों की अपेक्षा अधिक उपयोगी होगा। इसमें बल, बुद्धि, मनोरंजन और उत्पादन सबों का सन्निवेश होगा।

विशेष— इस अनुच्छेद मे बिनोवा भावे ने खेल का उद्देश्य समभाव और अनुशासन की भावना को बतलाया है।

२. उन्होंने कहा कि खेल का उद्देश्य केवल बल की ही वृद्धि नहीं, अपितु उत्पादन की भी वृद्धि होनी चाहिए।

३. इस अनुच्छेद की भाषा सरल एवं सुबोध है। ४. इस निबन्ध की शैली प्रवचनात्मक है।

२. यहाँ के खेलों..................................सहकारिता बढेगी।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश गद्यसंकलन के **'चिर तारुण्य की साधना'** शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक के लेखक आचार्य 'बिनोवा भावे' हैं। इस गद्यांश में लेखक ने खेलों से होने वाले वैयक्तिक एवं सामाजिक लाभों का निर्देश किया है।

व्याख्या— इस अनुच्छेद में आचार्य बिनोवा भावे ने खेल प्रेमियों को बताया है कि खेल से तुम लोगों को दूहरा लाभ होगा। तुम्हारी शक्ति की वृद्धि होगी और तुम लोगों में परस्पर में प्रेम भी बढ़ेगा। जब सब तरह के सभी जातियों के लड़के एक साथ जुट कर खेल खेलते हैं तो इससे परस्पर में प्रेम का विकास होता है। भविष्य में तुम ज़ब कभी भी एकत्र होओगे तो याद करोगे कि हम लोग एक साथ पढ़े थे, कुस्ती लड़े थे, शक्ति का अर्जन किए थे, इत्यादि- इत्यादि। इसी भावना के कारण तुम लोग एकत्रित होने का प्रयास करोगे और एक साथ मिलकर किसी भी काम को करने का प्रयास करोगे। इस तरह से तुम सबों के बीच सहकारिता की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावना बढेगी। किसी भी कार्य को तुम सब लोग मिलकर करने का प्रयास करोगे। जानते हो संघ में बहुत बड़ी शक्ति होती है।

विशेष— इस अनुच्छेद मे आचार्य बिनोवा भावे ने बतलाया है कि एक साथ खेलने वालों का कभी संघ बन जाता है। वे बड़ी ही आसानी से किसी भी कार्य को कर डालने में समर्थ होते हैं। २. इस अनुच्छेद की भाषा सरल एवं सुबोध है तथा शैली प्रवचनात्मक है।

३. शरीर स्वच्छ रखो उसी प्रकार..........चिरतारुण हैं चिरंजीव हैं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह गद्यांश गद्यसंकलन के श्री बिनोवा भावे लिखित **'चिरतारुण्य की साधना'** शीर्षक से लिया गया है।

व्याख्या— इस अनुच्छेद में लेखक बतलाते हैं कि खेलने वाले के शरीर एवं मन दोनों को निर्मल रखना होगा। खेल एक बाह्य क्रिया है, इसके द्वारा तो बाह्य शुचिता आती है। अत एव खेल के द्वारा शरीर निर्मल होता है। मन को निर्मल बनाने के लिए उपासना की आवश्यकता होती है। उपासना से आभ्यंतरिक शुचिता आती है। अत एव प्रत्येक खेल प्रेमी को आन्तर्बाह्य शुचि होना चाहिए। उदाहरण के लिए हनुमान जी को लेखक ने बतलाया। प्रत्येक अखाड़े पर खेल प्रेमी हनुमान जी की मूर्ति रखते हैं। क्यों ? इसलिए कि हनुमान जी खेल प्रेमी होने के कारण बलवान् हैं। वे साथ ही भक्तिमान् हैं। वे सदा अपने सेव्य की सेवा में तत्पर रहते हैं। तुम को भी भक्तिमान बलवान तथा सेवापरायण होना होगा। सेवा के लिए चपलता आवश्यक है। आलसी मनुष्य कभी सेवा नहीं कर सकता । जिस समय तुम्हारा मन किसी काम को सम्पादित करने के लिए सोचे उसके साथ ही उस कार्य को सम्पादित करने के लिए तुम्हारे शरीर को भी चंचल हो जाना चाहिए। शरीर में चपलता का सद्भाव बने रहना ही तारुण्य कहलाता है। यदि तरुण होकर भी तुम में आलस्य है, तो तुम तरुण्य नहीं बूढ़े हो तुम। सेवा करने लायक नहीं हो।

जिस मनुष्य के शरीर में वेग होता है; वही तरुण होता है। अवस्था से कुछ नहीं होता। यदि वृद्ध शरीर में भी वेग है तो वह वृद्ध व्यक्ति भी तरुण है। हनुमानजी को चिरंजीवी माना जाता है। उनके शरीर में आलस्य का नामो निशान भी नहीं था, हनुमान जी की आराधना करने वाले समस्त खेल प्रेमियों को चिर तरुण बनना होगा। वे चिरंजीव बनें यह आवश्यक है।

विशेष— इस अनुच्छेद में लेखक ने बतलाया है कि (१) जिस शरीर मे वेग है वही तरुण है, चाहे वह अवस्था से वृद्ध क्यों न हो। २. इस अनुच्छेद की भाषा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरल एवं सुबोध है। (३) शैली प्रवचनात्मक है। ४. अपने कथन को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण का सहारा लिया गया है।

गुरु नानक देव

१. गुरुनानक ने प्रेम..................................परम लक्ष्य है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखित **'गुरु नानकदेव'** शीर्षक से लिया गया है। इस शीर्षक में आचार्य द्विवेदी ने बतलाया है कि गुरु नानक देव ने सम्पूर्ण जनजीवन को प्रेम का सन्देश दिया है।

व्याख्या– लेखक बतलाते हैं कि गुरु नानक देव परमात्मा के पूर्ण प्रेम में मदमस्त रहने वाले एक सन्त थे। उन्होनें गुरुवाणी के माध्यम से जनता को प्रेम का संदेश दिया है। मानव जीवन के परम प्राप्य परमात्मा को स्वीकार किया जाता है। वह परमात्मा भी प्रेम स्वरूप है। जिससे वह प्रेम करता है, उसका जीवन धन्य हो जाता है। परमात्मा का स्वभाव प्रेम है, वह स्वभावतः अपने भक्तों से प्रेम करता है। शास्त्रों में परमात्मा की प्राप्ति के अनेक साधन बतलाये गये हैं, किन्तु वास्तविकता है कि परमात्मा को प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन प्रेम है। मीरा ने प्रेम के ही द्वारा परमात्मा को अपना चाकर बना लिया था। प्रेम के ही द्वारा गोपियों ने श्री कृष्ण को प्राप्त किया था। उपनिषदों की श्रुतियाँ भी कहती हैं **'यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः।'** किसी ने कहा भी है कि; **'परम प्रेम के पाले पड़कर प्रभु को नियम बदलते देखा'** जब मनुष्य परमात्मा से सच्चा प्रेम करने लगता है तब उसके अन्तः करण के मल, मान, अभिमान आदि नष्ट हो जाते हैं। जब तक मनुष्य अहंकार की भावना से ग्रस्त रहता है; तब तक उसकी छोटाई बनी रहती है। निरभिमानी मनुष्य सर्वोच्च हो जाता है। वह सबों के ऊपर परमात्मा को प्राप्त करने की स्थिति में पहुँच जाता है। प्रेम की सच्ची साधना करने वाले को शिवत्व की प्राप्ति होती है। वह परम मंगलमय हो जाता है। उसी सच्चे प्रेम की साधना मानव-जीवन का परम लक्ष्य है।

विशेष– इन पंक्तियों में आचार्य द्विवेदी जी ने (१) सच्चे प्रेम को ही मानव जीवन का सर्वस्व बतलाया है। २. उन्होंने बतलाया है कि सच्ची प्रेम की साधना करने वाले के जीवन में अहंकार की कोई भी भूमिका नही होती है। ३. इ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पंक्तियों की भाषा संस्कृतनिष्ठ है। ४. आचार्य शैली के माध्यम से अपने कथ्य को स्पष्ट किया गया है।

२. बाह्य आडम्बरों को..........................बन्धन के हेतु हैं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखित **'गुरुनानक देव'** शीर्षक से उद्धृत है।

व्याख्या— इन पंक्तियों में लेखक ने बतलाया है कि सामान्य रूप से मनुष्य धर्माभासों को धर्म मानने लगता है। उसे उन धर्माभासों का त्याग करके वास्तविक धर्म को अपनाने की आवश्यकता है। बहुत से लोग धर्माडम्बरों को ही धर्म मान लेते हैं। वे अपने मूल संस्कारो में ही आस्था रखकर ब्राह्मण-धर्म, क्षत्रिय-धर्म, वैष्णव-धर्म, शैव-धर्म, शाक्त-धर्म इत्यादि को धर्म मानने लगते हैं, किन्तु वास्तविकता यह है कि ये सब के सब धर्माभास अथवा प्राथमिक धर्म है। इन सबों के ऊपर है प्रेम धर्म। सबों से प्रेम, सबों में परमात्मकता की प्रतीति। **'वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः'**। सम्पूर्ण जगत में वही परमात्मा व्याप्त है, जो मेरी परम आत्मा है। 'श्रुति कहती है— **'यस्यात्मा शरीरम्'** आत्मा भी परमात्मा का शरीर है और परमात्मा उस आत्मा की भी आत्मा है, इसीलिए वह परम आत्मा कहलाता है। वह सबों के भीतर विराजमान है। गोस्वामी तुलसी दास ने कहा- **'सब महँ प्रभु देखत फिरऊँ कासन करऊँ विरोध।'** किसी से भी विरोध नहीं सबों से प्रेम करना, यही परम धर्म है। प्रेम के ही माध्यम से मनुष्य परमात्मा की शरण प्राप्ति का अधिकारी होता है।

अतएव गुरु नानक देव ने गुरुग्रन्थ साहब के माध्यम से सबों को प्रेम का सन्देश दिया है। उन्होंने कहा है कि अपने इस मिथ्याभिमान का त्याग करो। इससे तुम्हें मुक्ति नही मिल सकती। यह तो बन्धन का साधन है। यदि मुक्त होना है तो अभिमान का त्याग करो। निरभिमानी बनो। सबों का सुहृद् बनो। परमात्मा भी सबों का सुहृद् है। ऐसा करके तुम संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाओगे। तुम्हें शाश्वत शान्ति की प्राप्ति हो जायेगी। उसे ही मुक्ति कहते हैं।

३. भगवान जब अनुग्रह......................................कहते है।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के **'गुरुनानक देव'** शीर्षक से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों के लेखक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हैं। इस अनुच्छेद में लेखक बतला रहे हैं कि परमात्मा की कृपा से संसार में महापुरुषों का अवतार होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्याख्या— लेखक कह रहे हैं कि परमात्मा को जब संसारी जीवों पर कृ
करनी होती है तो वे अपनी दिव्य ज्योति को गुरुनानक जैसे सन्तों में उतार दे
हैं। परमात्मा की दिव्य ज्योति जब संसार में अवतीर्ण हो जाती है; तो वह चुपच
शान्त नहीं बैठती है । वह उन जीवों को भी परमात्मा के अनुग्रह योग्य बन
शुरू करती है। जो जीव संसार की वासना मे लिप्त रहते हैं। सांसारी ज
परमात्मा के अनुग्रह के योग्य स्वयम् नहीं होते, परमात्मा की दिव्य ज्योति
स्वयम् इस संसार में नीचे उतरती है और वह संसार के जीवों के ऊपर उठाने
काम करती है। उनके जीवन को समुन्नत बनाती है। परमात्मा की इस दि
ज्योति के अवतीर्ण होने और सांसारिक जीवों के जीवन समुन्नयन की प्रक्रिया
परिभाषित करते हुए लेखक कहते हैं कि एक ओर तो परमात्मा की दिव्य ज्यो
का सन्तों के रूप में अवतार होता है और दूसरी ओर सांसारी जीवों का उद्
होता है। लेखक कहते हैं कि अवतार एवं उद्धार की यह लीला परमात्मा के
को संकेतित करती है। परमात्मा अपनी अहैतुकी कृपा जीव पर जब करते हैं
वह संसार में सन्तो को अवतीर्ण करते हैं। इसी लीला को पुराने भक्तजन अनु
कहते हैं।

विशेष— इस अनुच्छेद में लेखक ने बतलाया है कि जब परमात्मा जीवों
अनुग्रह करता है तब वह अपने दिव्य ज्योति से सम्पन्न सन्तों को अवतीर्ण क
है। २. इस अनुच्छेद की भाषा संस्कृतनिष्ठ है और शैली शास्त्रीय है।

गिल्लू

१. सोनजुही में आज..............................प्राणी की खो

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के 'गिल्लू' शीर्षक से
गयी हैं। इस शीर्षक के लेखक महादेवी वर्मा जी हैं। इस शीर्षक में उन्होंने
गिलहरी का रेखाचित्र खींचा है।

व्याख्या— लेखिका के उद्यान में सोनजुही की लता लगी हुई है। उस
को देखकर लेखिका को एक छोटे प्राणी की याद आ जाती है। वह छोटा प्र
गिल्लू था। जब गिल्लू जीवित था, उस समय लेखिका को सोनजुही की कली
खोज रहती थी, किन्तु आज लेखिका ने सोनजुही की कली को देखा तो उसे
अतीत कालिक गिल्लू की याद आ गयी। वह गिल्लू इस सोनजुही की हरितिमा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छिपकर बैठता था और जब लेखिका उस लता के पास पहुँचती थी तो वह दौड़कर लेखिका के कन्धों पर चढ जाता था। लेखिका ने सोनजुही की कली को अवश्य देखा है, किन्तु आज वह उस कली को नहीं खोज रही है, वह उस गिल्लू नामक अत्यन्त लघु प्राणी को खोज रही है।।

अचानक एक दिन..................................अवमानित।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के 'गिल्लू' शीर्षक से अवतीर्ण हैं। इस शीर्षक की लेखिका श्री महादेवी वर्मा जी हैं।

व्याख्या— एक दिन लेखिका जब अपने कमरे से निकल कर बरामदे में आयी तो उसने दो कौओं को देखा। ये कौए गमले के चारो ओर अपनी चोंचों से छुवा-छुवौल जैसा कुछ खेल खेल रहे थे। उन कौओं को देखकर लेखिका का विचार शील मन काकत्व के विवेचन में व्यस्त हो गया। उन्होंने कौओं को काग भुसुण्डी शब्द से अभिहित किया। लेखिका ने सोचा यह काक भी एक विचित्र प्राणी है। किसी समय इसका सम्मान होता है तो कभी अपमान भी। यह समादर का भी पात्र बनता है और अनादर का भी। इस तरह इसमें परस्पर विरोधी गुण हैं। पितृपक्ष के समय लोग कौआ का समादर करते हैं; किन्तु जब अनुचित समय में उसकी कांव- कांव की कर्कश वाणी सुनायी देती है तो लोग उसको भगाना चाहते हैं। उसका अनादर और अपमान करते हैं।

३. हमारे बेचारे पुरुखे..............................प्रयुक्त करते हैं।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के 'गिल्लू' शीर्षक से ली गयी है। इस शीर्षक की लेखिका श्रीमती महादेवी वर्मा जी हैं। इन पंक्तियों में लेखिका काक पक्षी के विषय मे चर्चा कर रही हैं।

व्याख्या— लेखिका अपने कमरे से निकलकर बरामदे आयी। उसने दो पिशिताशी काक पक्षियों को कुछ क्रीड़ा करते देखा और उसका मन काक तत्व के विवेचन में व्यस्त हो गया। उसे याद आ गयी पितृपक्ष की। पितृपक्ष में लोग काक बलि दिया करते हैं। लेखिका ने सुन रखा है कि पितृपक्ष में मनुष्यों के पितृगण कौओं का रूप धारण करके आते हैं। लेखिका कहती है कि पक्षी तो अनेक है। गरुड, मयूर हंस आदि। किन्तु पितृगण इन रूपों में न आकर काक पक्षी के रूप में काक बलि स्वीकार करने के लिए आते हैं। अत एव काकों का यह रूप समादर के योग्य होता है। यही नहीं ऐसा भी माना जाता है; कि कौए अपनी कर्कश वाणी से ही हमारे प्रिय व्यक्तियों के आने का शुभ सन्देश देता है। ये तो कौओं के सम्माननीय रूप और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवसर हैं; किन्तु कौओं की कर्कश कावँ-कावँ की ध्वनि का तो हमलोग अपम
ही करते हैं। अतएव कौऐ समादृत भी होते हैं और अनादृत भी।

नींव की ईंट

१. देश का शायद.................................ध्यान दे

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के श्री राम वृक्ष वेनी पु लिखित **'नीव की ईंट'** से उद्धृत है। इस गद्यांश में लेखक ने स्पष्ट किया है हम प्रायः देश के उन लोगों को देखते हैं जिनकी प्रख्याति हो गयी है, किन्तु जि लोगों का सर्वधिक योगदान है देश के आजाद कराने में वे लोग अनाम ही च गये। आज उनको कोई जानता भी नहीं। हमें उनकी भी खोज करनी चाहि उनके भी प्रयास को प्रकाशित करना हमारा परम कर्तव्य है।

व्याख्या— जिस तरह कोई भी भवन अपनी नीव के ईंटों पर टिका हु होता है। उन ईटों के बल पर जो ईंट सर्वाधिक बलवान होते हैं। जिन ईंटों कोई देख भी नहीं पाता और जिन ईंटों की कोई सराहना नहीं करता। लोग भवन की भव्यता की सराहना करते हैं उसकी चमक - दमक को देखते रह ज हैं। उसी तरह इस देश को स्वतंत्र होने में उन लोगों का सर्वाधिक योगद समझना चाहिए जो लोग आजादी की लड़ाई में अपना बलिदान कर दिये। वे तो उन दधीचि के समान हैं; जिन्होंने देवासुर संग्राम में अपनी हड्डियों तक का कर दिया। स्वयं का बलिदान कर दिया,स्वर्ग की सत्ता सुख की देखने तक की लालसा नहीं की। परोपकार ही जिनके जीवन का सर्वस्व था। यदि उस दधीचि हड्डी का वज्र नहीं बनता तो इन्द्र किसी भी हालत मे वृत्रासुर का वध नहीं पाते; किन्तु इतिहासकारों ने इन्द्र को ही वृत्रासुर का विनाशक बतलाया। द की उपेक्षा कर दी।

इसी तरह इस विशल भारत वर्ष की आजादी की लड़ाई में उन लोगों ने सब कुछ नही किया है। जिन लोगों का इतिहास में अंकित है। दो दिन भी जाकर स्वतंत्रता सेनानी कहलाने लगे उनसे अधिक योगदान तो उन हुतात्म का है जो विना किसी लालच के, केवल देश की स्वतंत्रता के लिए विदेशी वृत्र से अपने देश को आजाद कराने के लिए मिट गए। ऐसे दधीचियों की सं असंख्य है, जो देश के कोने कोने से अपना निष्काम उत्सर्ग कर दिये जिनकी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र्चा भी नहीं करता, जिन्हें हम देख भी नहीं सके। किन्तु यदि हम सचमुच भक्त हैं तो उन लोगों का हमें अन्वेषण करना चाहिए। हमें सत्य की गवेषणा रनी होगीऔर ऐसे बलिदानियों के नाम और काम को सबों के समक्ष प्रकाशित रना होगा।

स्मृति

१. दृढ़ संकल्प से..............................पर निर्भर है।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— ये पंक्तियाँ गद्यसंकलन के 'श्री राम शर्मा' द्वारा लिखित मृति' शीर्षक से ली गयी है। इस गद्यांश में लेखक बतलाते हैं कि जब व्यक्ति सी काम को करने के लिए दृढ संकल्प कर लेता है; तो वह बड़ी आसानी से ा से बड़ा भी काम कर डालता है। आवश्यकता होती है उसके दृढ संकल्प की र दुविधा राहित्य की।

व्याख्या— इन पंक्तियो में लेखक अपने उन दिनों की चर्चा कर रहे हैं जब वे छोटे थे। अपने बड़े भाई के पत्रों को दूसरे गाँव में छोड़ने जाते समय बाल भ चपलता के कारण उनकी चिट्ठियाँ उस कुएँ में गिर गयी जिसमें भयंकर ला साँप पड़ा था। पहले तो लेखक किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये और अपने छोटे ई के साथ रो रहे थे, फिर उन्होंने दृढ़ निश्चय किया कि वे कुएँ में घुसकर ले साँप को मार देंगे और चिट्ठियाँ निकाल लायेंगे।

इस दृढ संकल्प के कारण लेखक की दुविधा समाप्त हो गयी। उनका वह कर निश्चय काल से ज़ूझने के समान था। कुएँ मे घुसकर साँप को मार कर ट्ठियों को निकाल लाने का निश्चय। लेखक का कहना है कि यदि कोई यह चय कर ले कि मुझे इस काम को करना ही है; चाहे इसके लिए मुझे मरना ही ं न पड़े तो ऐसा निश्चय करने वाला व्यक्ति बड़ा से बड़ा कार्य करने में सफल ा है। उसे मौत का भय नहीं सता पाता है। उसे अपने काम की धुन होती है। तरह का निश्चय चाहे मूर्खता पूर्ण हो अथवा बुद्धिमानी पूर्वक, किन्तु दृढ़ चय कर्ता को यह समस्त संशयों से रहित बनाकर उसे सफलता के मार्ग पर ने के लिए मार्ग प्रशस्त अवश्य कर देता है।

अब प्रश्न यह आता है कि साहसिक कार्यों में किये गये निश्चयों का परिणाभ कर भी हो सकता है। उसे विफलता भी मिल सकती है। तो उसके उत्तर में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेखक का कहना है कि फल तो अपने हाथ में है नही। फल तो किसी दूसरी श के हाथ में होता है। गीता मे भगवान् ने कहा कि—

कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन।

तुम्हारा कर्म करने में अधिकार है। दृढ निश्चय करके सफलता प्राप्ति लिए कर्म करो, फल मिलना और नही मिलना तो परमात्मा के हाथ में है। प्राप्ति पर तुम्हारा अधिकार नहीं है।

आँखें चार हुई..................................आकाशकुसुम थ

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के **'स्मृति'** शीर्षक से गयी हैं। इस शीर्षक के लेखक श्री राम शर्मा जी हैं।

व्याख्या— लेखक अपने भाई को विश्वास दिलाकर कुएँ में घुसे थे कि में पहुँचते ही वे पहले साँप को मार देंगे और उसके बाद चिट्ठियाँ उठा किन्तु कुएँ में जाकर उन्होंने उस भयंकर विषैले साँप को देखा तो किंकर्तव्यवि रह गये। उस कच्चे कुएँ के अन्दर न तो लाठी घुमाई जा सकती थी न तो सर्प अधिक दूर रहा जा सकता था क्योंकि वहाँ जगह बहुत कम थी। किसी तरह लेखक कुएँ में उतर गये और साँप ने अपने दुश्मन लेखक को देखा ओर ले ने सर्प को दोनों एक दूसरे को देख रहे थे।

लेखक कहते हैं कि साँप को चक्षुःश्रवा कहते हैं। इसलिए कि वह आँ ही सुनने का भी काम करता है, उसके कान नहीं होते। लेखक कहते हैं कि वे उस समय चक्षुःश्रवा हो गये थे। समस्त कार्यों को चक्षुरिन्द्रिय ही कर रही अन्य इन्द्रियों की भी उनकी आँखों को सहानुभूति पूर्वक शक्ति प्राप्त हो गयी लेखक बड़ी ही सावधनी से सर्प के फन की ओर देख रहे थे कि वह किस आक्रमण करता है। किन्तु सर्प संभवतः लेखक के आक्रमण की प्रतीक्षा कर था; उसने पहले आक्रमण नहीं किया।

सब कुछ के बावजूद लेखक की आशा पर मानो पानी फिरने वाला था। को कुएँ के भीतर मारना अत्यन्त कठिन कार्य था।

विशेषता— लेखक ने सर्प को चक्षुःश्रवा बतलाकर उसके आँखों सुनने की बात बतलायी है। २. आकाशकुसुम जैसे मुहावरेदार वाक्यों का किया गया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निष्ठामूर्ति कस्तूरबा

१. शुद्ध और रोचक..................................सुना देतीं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के काका कालेलकर लिखित 'निष्ठामूर्ति कस्तूर बा' शीर्षक से उद्धृत है। इस शीर्षक में लेखक ने राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की पत्नी की कर्तव्यनिष्ठा की चर्चा कुछ संस्मरणों के माध्यम से की है।

व्याख्या— लेखक का मानना है कि जगत् में सफल जीवन जीने के दो साधन हैं, शब्दज्ञान और कर्तव्यनिष्ठा। बहुत अधिक विद्वान् व्यक्ति शब्द शास्त्र में पारंगत हो सकता है, किन्तु कर्तव्यनिष्ठा में बहुत अधिक वैदुष्य अर्जन की अनिवार्यता नहीं होती है। उपनिषद् में भी कहा गया है— **'क्रियावान् ब्रह्मविदां वरिष्ठः'** अर्थात् अनुष्ठान परायण पुरुष ही सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानी होता है। केवल सिद्धान्त बघारने अथवा पर उपदेश कुशल होने मात्र से मनुष्य समाज को बहुत कुछ नही दे पाता है। साहित्य का अम्बार कर्तव्य परायणता के समक्ष फीका होता है। शास्त्रीय ज्ञान सम्पन्न व्यक्तियों को कर्त्तव्य का निश्चय नही होता है। उन्हें सन्देह ही बना रहता है। किन्तु कर्तव्य परायण व्यक्ति को इस प्रकार की विचिकित्सा नहीं सताती है। कस्तूर बा को अपने कर्तव्य का ठीक-ठीक ज्ञान था। वे एक कर्तव्यपरायण महिला थीं। किसी भी चर्चा में तथा किसी भी कार्य के सम्पादन के प्रसंग पर अपने संक्षिप्ततम निर्णय में वे यही कहती थीं 'मुझसे इतना ही होगा' इतना काम नहीं होगा। किन्तु उनका यह जो निर्णय होता था- ध्रुव होता था, उसमें प्रायः कोई कमीवेशी नहीं होती थी।

विशेष— १- इन पंक्तियों में लेखक ने शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा कर्तव्यनिष्ठा को अधिक महत्त्व दिया है।

२. उन्होंने बतलाया कि केवल ज्ञानी का संदेह, निवृत नहीं होता और कर्तव्यनिष्ठ को संदेह होता ही नहीं है।

३. इन पंक्तियो की भाषा सरल एवं सुबोध है। आबदार उर्दू के शब्द प्रयुक्त हैं।

२. वह भले ही..................................कर लेती थीं।।

संन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के काका कालेलकर लिखित 'निष्ठामूर्ति कस्तूर बा' से लिया गया है। इन पंक्तियों में लेखक ने कस्तूरबा की बुद्धि की तीव्रता की चर्चा की है।

व्याख्या— लेखक बतला रहें हैं कि कस्तूरबा बहुत कम पढ़ी लिखी महिला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थीं उनकी शिक्षा-दीक्षा नहीं के बराबर थी, किन्तु उनके संस्कार और खा
असर अत्यन्त प्रबल थे। उनमें लोकोत्तर प्रतिभा थी। कभी भी किसी संस्था
चलाने की महत्वकांक्षा उनमें उदित ही नहीं हुई। इतना होने पर भी वे दे
भीतर कहाँ पर क्या हो रहा है। कैसे हो रहा है इस बात तक की जानक
प्राप्त ही कर लेती थीं। इस जानकारी के लिए वे दो प्रकार के साधनों को
अपनाती थीं। (१) लोगों से बार बार प्रश्न पूछ कर जानना और (२) अखब
पन्नों को पढ़कर जानना। इन दोनों माध्यम से वे देश की सूक्ष्म से सूक्ष्म गां
ा को बडी आसानी से जान लेती थीं।

विशेषता— इन पंक्तियों में लेखक ने देश के भीतर घटने वाली घट
जानकारी के लिए कस्तूरबा द्वारा अपनाये जाने वाले दो साधनों की चर्चा
इन पंक्तियों की भाषा सरल एवं सुबोध है।

३. अध्यक्षीयभाषण किसी............................सिद्ध होता

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के काका कालेलकर
'निष्ठामूर्ति कस्तूर बा' शीर्षक से ली गयी हैं। इन पंक्तियों में कस्तूर बा के
किसी भी परिषद के उपसंहार भाषण की निपुणता की चर्चा की गयी है।

व्याख्या— कस्तूर बा एक अशिक्षित महिला थीं, वे गाँधी जी की ध
थीं। इसलिए जब कभी गाँधी जी जेल में होते थे उस समय कुछ परिष
अध्यक्षता कस्तूरबा को ही करना पड़ता था। अपना अध्यक्षीय भाषण तो
दूसरों से वे लिखवा लेती थीं, किन्तु भाषण का उपसंहार जो भाषण का
होता है; उसे तो वे स्वयं ही करती थीं। किसी भी भाषण कर्त्ता को भाष
उपसंहार अपने प्रत्युत्पन्नमतित्व पर निर्भर करता है। कस्तूरबा भी अपने
भाषण का उपसंहार अपने प्रत्युत्पन्नमत्ति के बल पर करती थीं। उस समय
भाषण की भाषा अत्यन्त सरल एवं सुबोध होती थी। पूरी सभा का सारांश
छोटे से भाषण में कह करके कस्तूरबा अपने उपसंहार भाषण को परिपूर्ण
थीं, उसमें कहीं भी किसी प्रकार की कमी नही प्रतीत होती थी।

ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से

१. इर्ष्या का यही...................................भोगनी पड़

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के **'ईर्ष्या तु न ग**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन से' शीर्षक से ली गयी है। इस शीर्षक के लेखक श्री रामधारी सिंह दिनकर हैं। इस शीर्षक में लेखक ने ईर्ष्या के स्वरूप आदि पर विचार किया है।

व्याख्या— ईर्ष्या मानव के अनेक धर्मों में से एक है। जिस तरह मनुष्य अपने ज्ञान, शक्ति, बल, ऐश्वर्य आदि के द्वारा कुछ प्राप्त करता है, उसी तरह ईर्ष्या नामक गुण से भी वह कुछ पाता है; किन्तु इस गुण से वह सुख नहीं दुःख प्राप्त करता है। उसे सुख के साधन भी दुख देने लग जाते हैं। जिस मनुष्य के अन्तः करण में ईर्ष्या अपना घर बना लेती है, वह आदमी अपने पास विद्यमान सुख प्राप्ति के साधनों से सुख नहीं प्राप्त कर पाता है। वह जिसके प्रति ईर्ष्या की भावना रखता है उस व्यक्ति के पास विद्यमान वस्तुओं को देख-देख कर जलता रहता है। वह दूसरे की वस्तुओं से दुःख प्राप्त करता है। वह अपनी तुलना दूसरे व्यक्ति से करता है और उस तुलना में उसके पास जिन-जिन वस्तुओं की कमी होती है, वह उस अभाव के द्वारा दुखी होता है। वे अभाव उसके हृदय को जलाने लगते हैं। यद्यपि इस तरह से ईर्ष्या के अभाव में जलते रहना अच्छी बात नहीं होती है, किन्तु समस्या इस बात की होती है वह व्यक्ति उसके विपरीत कुछ भी इसलिए नहीं कर पाता है कि उसका जलने का स्वभाव बन जाता है। वह अपनी आदत से लाचार रहता है और दुःख भोगता रहता है।

२. ईर्ष्या के बड़ी...................................दिया जाऊँगा।।

संन्दर्भ एवं प्रसंग— ये पंक्तियाँ गद्यसंकलन के श्री रामधारी सिंह दिनकर लिखित **'ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से'** शीर्षक से उद्धृत है। इन पंक्तियों में लेखक ने ईर्ष्या और निन्दा में घनिष्ठ संबन्ध बताकर यह बतलाया है कि ईर्ष्यालु मनुष्य ही घोर निन्दक होता है।

व्याख्या— इन पंक्तियों में लेखक ने बतलाया है कि यदि विचार किया जाय तो ईर्ष्या और निन्दा में माता एवं पुत्री का संबन्ध है। यदि ईर्ष्या माँ है तो निन्दा उसकी पुत्री। अर्थात् जब कोई व्यक्ति किसी से ईर्ष्या करता है तो वह उसकी कटु निन्दा करता है। उस निन्दक पुरुष का एक मात्र उद्देश्य यह होता है कि वह जिसकी निन्दा कर रहा है,वह व्यक्ति समाज कि दृष्टि में गिर जय। लोग उसकी निन्दा करने लग जायँ। उसकी मान-प्रतिष्ठा जो समाज मे बनी हुई है वह समाप्त हो जाय। लोग उसके स्थान पर मुझे मान लें। वह स्थान मैं प्राप्त करूँ। यह निन्दक व्यक्ति के निन्दा करने का लक्ष्य होता है। किन्तु उस ईर्ष्यालु व्यक्ति की ऐसी धरणा विलकुल गल्त होती है। किसी की निन्दा कर के कोई भी समाज में उन्नत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थान नहीं प्राप्त कर सकता है और न तो लोग उसकी इज्जत कर सकते हैं। स्वयम् विपरीत दिशा में सोचकर किसी भी व्यक्ति से ईर्ष्या कर सकता है।

३. ईर्ष्या मनुष्य का..............................योग्य ही न हों

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' लिखित **'ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से'** शीर्षक से उद्धृत है। इन पंक्तियों में लेखक ने बतलाया है कि ईर्ष्या मनुष्य के चारित्रिक दोष होने के साथ-साथ मनुष्य अनन्दानुभव करने में भी बाधक बनती है।

व्याख्या— लेखक कहते हैं ईर्ष्या को विषय में लोग मानते हैं कि वह मनु के चारित्रिक दोष स्वरूप है। वह ईर्ष्यालु व्यक्ति को निन्दक बनाकर लोगों दृष्टि से उसे गिरा देती है। उसके साथ-साथ ईर्ष्यालु मनुष्य अपने पास उपल वस्तुओं से सम्प्राप्य आनन्द के अनुभव में बाधा भी प्राप्त करता है। जिस मनु के हृदय में ईर्ष्या की आग जलने लग जाती है, वह अपने पास विद्यमान आन का भी बहुत कम अनुभव कर पाता है। वह तो ईर्ष्या की आग मे ही हमेशा जल रहता है। वह न तो पक्षियों के कलरव को सुनकर सुख की अनुभूति कर पाता और न तो वह विकसित पुष्पों के स्वाभाविक सौन्दर्य को देखकर खुश होता। वह फूलों को देखना भी नहीं चाहता है। उसको सुन्दर वस्तु भी कष्टप्रद प्रतीत होने लगती है।

४. आप कहेंगे कि..............................आनन्द होता

सन्दर्भ एवं प्रसंग— ये पंक्तियाँ गद्यसंकलन के रामधारी सिंह 'दिनकर' लिखित **'ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से'** शीर्षक से ली गयी है। इन पंक्तियों लेखक ने ईर्ष्यालु व्यक्ति को होने वाले आनन्द को निन्दनीय बतलाया है। उ आनन्द में और दैत्यों के आनन्द में कोई भी अन्तर नहीं होता। इर्ष्यालु म स्वभाव से इर्ष्यालु हो जाता है।

व्याख्या— इन पंक्तियों में लेखक ने बतलाया कि कोई यदि यह कहे ईर्ष्यालु व्यक्ति को भी आनन्द की अनुभूति होती है। जब वह व्यक्ति अपनी नि की बाणों से अपने ईर्ष्या के पात्र को बेध डालता है, उस समय उसको एक उद्द आनन्द की अनुभूति होती है। यह आनन्द की अनुभूति ही उसके लिए सबसे पुरस्कार होता है। तो इस तर्क का खण्डन करते हुए दिनकर जी कह रहें है निन्दा के माध्यम से अपने प्रतिद्वन्दी को परास्त करके आनन्द का अनुभव क वाले मनुष्य और किसी राक्षस में कोई भी विषमता नहीं होती है। वह भी राक्ष

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की कोटि में सन्निविष्ट हो जाता है। उसकी वह हँसी राक्षस की हँसी होती है और उसको प्राप्त होने वाला आनन्द किसी दैत्य का आनन्द होता है।

ईर्ष्या का संबन्ध....................................हरकुलिस से।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यसंकलन के श्री रामधारी सिंह दिनकर द्वारा लिखित है **'ईर्ष्या तु न गयी मेरे मन से'** शीर्षक से ली गयी है। इन पंक्तियों में लेखक ईर्ष्या के गुणात्मक पक्ष को उपन्यस्त करते हैं। वे कहते हैं कि ईर्ष्या यदि स्पर्धा का रूप धारण कर लेती है तो केवल हानिकारक ही न रह कर लाभ कारक भी हो सकती है।

व्याख्या— इस अनुच्छेद में लेखक बतलाते हैं कि ईर्ष्या का संम्बन्ध प्रतिद्वन्द्विता से होता है। जिस तरह एक प्रतिद्वन्द्वी अपने प्रयासों द्वारा अपने दूसरे प्रतिद्वन्द्वी से आगे बढ़ने की कोशिश करता है, उसी तरह ईर्ष्या करने वाला व्यक्ति यदि यह सोचता है कि मैं अपने जीवन में ऐसा प्रयास करूँ कि अपने प्रतिद्वन्द्वी से आगे निकल जाऊँ। वह वहीं का वहीं रह जाय और मुझे देखकर वह हक्का-बक्का रह जाय तो इस प्रकार की ईर्ष्या मनुष्य की उन्नति का साधन बनती है। उससे मनुष्य जलता बहुत कम है, और आगे बहुत अधिक बढ़ता है। उसका लक्ष्य ईर्ष्या पात्र की निन्दा करना अथवा उसके साधन सामग्री को देखकर जलना नहीं रहता है। उसका उद्देश्य होता है, ईर्ष्या के पात्र से आगे बढ़ जाने का। वह आगे बढ़ने का हर संभव प्रयास करता रहता है। उस भावना से उसका संसार-व्यापी सुयश बढ़ता है। रसेल के मतानुसार- मानव के भीतर स्पर्द्धा का होना अनिवार्य है। जिस मनुष्य के भीतर स्पर्धा की भावना नहीं होती है, वह यशस्वी नहीं हो सकता। नेपोलियन, सीजर, सिकन्दर आदि विश्व के प्रख्यात पुरुष अपने से बडे से हमेशा स्पर्धा रखे और उसी भावना के बल पर विश्व विख्यात बन गये। नेपोलियन ने सीजर को अपनी स्पर्धा का विषय बनाया फिर सीजर ने सिकन्दर को अपनी स्पर्धा का विषय बनाया और सिकन्दर ने हरकुलिस को। इस तरह की स्पर्धा की भावना मानव की अभ्युन्नति का साधन बनती है।

विषेष— १. इस अनुच्छेद में ईर्ष्या को प्रतिद्वन्द्विता से संवद्ध बतलाया गया है और उसके गुणात्मक पक्ष को उजागर किया गया है।

❑

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिचयात्मक भाग गद्य संकलन

प्रश्न १— प्रतापनारायण मिश्रजी का साहित्यिक जीवन परिचय लिखि

उत्तर— जीवन परिचय— हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान् श्री प्रतापनारा मिश्र हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान् श्री प्रताप नारायण मिश्रजी का सं० १ वि० में जिला उन्नाव के बैजे ग्राम में जन्म हुआ था। आपके पिता का नाम संकटाप्रसाद था। वे संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान् थे। उनकी इच्छा श्रीमिश्रजी ज्योतिष सिखाने की थी, किन्तु श्री मिश्रजी की ज्योतिष विद्या में रूचि नहीं अतः आप ज्योतिष न पढ़ सके। पिता के बहुत प्रयत्न करने पर भी आप स्व शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके। स्कूल के अध्यापक मिश्रजी से प्रायः नाराज रहा क थे, अतः अन्त में घर पर ही आपने हिन्दी, संस्कृत तथा फारसी भाषाओं समुचित ज्ञान प्राप्त किया। भारतेन्दुजी की 'कवि वचन सुधा नामक' पत्रिका आपके ऊपर अधिक प्रभाव पड़ा। समाचार पत्रों के भी पढ़ने का चाव अ था। किन्तु ठोस अध्ययन के अभाव में मिश्रजी की भावुकता का समुचित वि न हो सका। श्री मिश्रजी को एक विशेष प्रकार के छन्द हिन्दी लावनी से अ स्नेह था। इसी के सहारे आपको कविता में रूचि बढी। मिश्रजी ने 'ब्राह्म नामक एक मासिक-पत्रिका के सम्पादक भी किया। बाद में आप 'हिन्दुस् नामक पत्र के सम्पादक का कार्य किया किन्तु घाटे के कारण अन्त में उसको करना पड़ा। इस प्रकार साहित्य सेवा करते हुए आपका देहान्त ३८ वर्ष की में ही हो गया।

रचनायें— मिश्रजी की गणना अपने काल अच्छे साहित्यकारों में की जाती कुल मिलाकर आपने ४० पुस्तकें लिखी है। उन सबों का विवरण इस प्रकार है–

निबन्ध— समय, हठी हमीर, कलि प्रभाव इत्यादि।

अनुवाद— राजसिंह, पंचामृत इत्यादि।

नाटक— भारत दुर्दशा, गौ संकट, कलि कौतुक, आदि।

काव्य— मन की लहर, मानस, विनोद आदि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लावनी और प्रहसन संगीत-शकुन्तला, जुआरी इत्यादि।

इन रचनाओं के अतिरिक्त आपने कई विषयों पर अपनी लेखनी चलायी। जैसे स्वास्थ्य रक्षा साधन, शिशु विज्ञान इत्यादि। इस प्रकार आपने अनेक विषयों पर लिखने का कार्य किया है; परन्तु निबन्धकार के रूप में ही आपकी प्रख्याति है।

भाषा और शैली– मिश्रजी की भाषा में दुरूहता नहीं पायी जाती। आपने प्रयोग बड़े ही सरल तथा सुबोध रूप में किया है। उनकी भाषा में ग्रामीणता की मात्रा अधिक है। उनकी भाषा पर भारतेन्दु की भाषा के संस्कार स्पष्ट रूप से झलकते हैं, परन्तु नागरिकता से वह दूर रहा है। मिश्रजी की भाषा में घरेलू शब्दों, कहावतों एवं मुहावरों का प्रयोग बहुत खुलकर हुआ है। उनके कारण चयन में श्री मिश्रजी असंयत दिखाई पड़ते हैं। शब्दों को शुद्ध करके प्रयोग में लाने की बात आपने कभी नहीं सोचा। आपकी भाषा में अरबी-फारसी तथा अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, इस प्रकार वह बोल-चाल के अत्यन्त निकट की भाषा बन गयी है। आपकी भाषा चुटीलापन लेकर चलती है। उसका प्रभाव रोचक हो गया है। उदाहरण के लिए में कुछ शब्द देखे जा सकते हैं–

संस्कृत– अन्ततोगत्वा, प्रत्यक्षतंया आदि।

अंग्रेजी– ड्यूटी, नेचर, जैन्टिलमैन आदि।

मिश्रजी बड़े ही विनोदी स्वभाव के व्यक्ति हैं। हास्य उन्हें बड़ा ही प्रिय है। उनका विनोदी स्वभाव उनकी रचनाओं में पूर्ण रूप से परिलक्षित होता है। उनके निबन्धों में तीखे व्यंग्य तथा वक्रता का प्रयोग बड़ी अच्छी तरह से प्रयुक्त हुए हैं। गम्भीर निबन्ध बहुत कम है। इस प्रकार आपकी रचनाओं में विनोद पूर्ण व्यंग्य तथा गम्भीर शैलियों के दर्शन होते हैं। उदाहरणार्थ–

"डाकखाने अथवा तारघर के सहारे बात की बात में चाहे जिसकी जो बात हो जान सकतें हैं। इसके अतिरिक्त बात बनती है, बात बिगड़ती है, बात आ पड़ती है, बात खुलती है। बात पूजती है। बात चलती है।"

प्रश्न २– श्याम सुन्दर दास जी का साहित्यिक जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर– जीवन परिचय– वाराणसी की नागरि-प्रचारिणी सभा के संस्थापक डा० श्याम सुन्दर दास का जन्म १९३२ वि० में काशी के एक खत्री परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम देवी प्रसाद तथा माता का नाम श्रीमती देवकी देवी था। आपके पूर्वज लाहौर में रहते थे। यज्ञोपवीत संस्कार होने के बाद श्री श्याम सुन्दर दास जी ने संस्कृत व्याकरण तथा धर्मशास्त्र का विधिवत् अध्ययन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

किया तथा अंग्रेजी का समुचित ज्ञान प्राप्त किया। जब आप इण्टर कक्षा के छा थे तभी से आपकी रुचि हिन्दी के प्रति विशेष रूप से उन्मुख हो गयी। वि विख्यात हिन्दी संस्था काशी नागरी प्रचारिणी की स्थापना अपने कुछ सहयोगि के सहयोग से किया और अपना सारा जीवन उसके विकास के लिए सह समर्पित कर दिया। १८९८ में बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चा आर्थिक कठिनाई के कारण आप आगे पढ़ न सके। आपने सेन्ट्रल हिन्दू काले काशी में कुछ समय तक अध्यापन का कार्य भी किया और बाद में मालवीय जी सम्मति से हिन्दू विश्व विद्यालय काशी के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद को समलंकृ किया। वहीं रहकर आपने भाषाविज्ञान तथा साहित्य का इतिहास आदि महत्वपू ग्रन्थ लिखा। साहित्यिक सेवाओं के लिए आपको सरकार ने राय बहादुर उपाधि से सम्मानित किया। हिन्दू विश्वविद्यालय ने आपको डी० लिट्० की उपा भी प्रदान की।

रचनायँ— आपके अथक परिश्रम ने हिन्दी साहित्य को बहुत अधिक समृ किया। आपने लगभग १०० पुस्तकों का सम्पादन किया। दुर्लभ पुस्तकों की खो करना, उनको प्रकाशित करना आपका सर्वाधिक प्रिय कार्य था। मुख्य रूप निम्नलिखित है।

डॉ० श्यामसुन्दर दास जी ने रामचरित मानस, कबीरग्रंथावली, सतस हिन्दी शब्द सागर, भारतेन्दु नाटकावली, मेघदूत का सम्पादन किया तथा दीनदया गिरि ग्रन्थावली, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, परमाल रासो इत्यादि।

मेरी आत्म कहानी, साहित्यलोचन, भाषा विज्ञान, हिन्द भाषा का विका गद्य कुसुमावली, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, भाषा रहस्य, हिन्दी गद्य निर्माता आ आपकी मौलिक रचनाएँ हैं।

संकलित ग्रन्थ— भाषा सार संग्रह, संक्षिप्त रामायण, हिन्दी पत्र लेखन गद्य रत्नावली तथा हिन्दी गद्य-संग्रह इत्यादि आपके संग्रह ग्रन्थ हैं।

आप की रचना में यत्र-तत्र अरबी, फारसी, अंग्रेजी तथा उर्दू के शब्दों क अविकाल प्रयोग किया गया है, उनके रूप में परिवर्तन नहीं किया गया है। आपक भाषा पर संस्कृत का पूर्णरूप से प्रभाव है फिर भी वह कहीं भी दुरूह नहीं पायी हैं। आपकी भाषा पूर्णरूप से विषयानुकूल है। मुहावरों तथा कहावतों क अधिक प्रयोग नहीं है। विराम चिह्नों के प्रयोग में आपने सतर्कता नहीं बरती है आपकी भाषा शुद्ध साहित्यिक है। आपकी भाषा का गठन प्रशंसनीय है। गु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषयों के प्रतिपादन करने में आपकी भाषा गम्भीर प्रौढ़ तथा समर्थ है।

"जहाँ पहले भाव व्यजंना या विचारों के प्रत्यक्षीकरण पर विशेष ध्यान रहता था, वहाँ अब साहित्य शास्त्र से अंग प्रत्यंग पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा।"

"जब मानव मन किसी रागमयी कल्पना से उद्वेलित होकर अभिव्यक्त हो उठता है तब वह अभिव्यक्ति प्रायः गति रूप में हो जाता है।

आपकी शैली भी ही सरल तथा प्रभावित करने वाली है। विषयों को समझाने के लिए आपने एक ही बात को कई बार दुहराया है। आपकी शैली में गम्भीरता एवं साहित्यिकता का पुट है।

प्रश्न ३— आचार्य रामचन्द्रशुक्ल का साहित्यिक जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर— जीवन परिचय— हिन्दी साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् एवं प्रख्यात साहित्यकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अनोखी प्रतिभा के धनी हैं। आपका सं० १९४१ बिक्रमी में बस्ती जिले में जन्म हुआ था। आपके पिता श्री चन्द्रवली शुक्ल सुपरवाइजर कानूनगो थे। जब वे हमीरपुर जिले की राठ तहसील में थे, तभी से आपकी शिक्षा का कार्य प्रारम्भ हुआ। अपने प्रारम्भ में संस्कृत भाषा की शिक्षा ग्रहण की। अपने पिताजी की अनुमति से आपने ८ वीं कक्षा तक उर्दू और फारसी भी पढ़ा; किन्तु आपकी अभिरूचि हिन्दी की ओर थी। हिन्दी के ज्ञान की प्रबल अभिलाषा के कारण आप प्रातः उर्दू फारसी की कक्षायें छोड़कर हिन्दी की कक्षा में बैठ जाया करते थे। आपने मिशन स्कूल हमीरपुर से हाईस्कूल तथा इण्टर की परीक्षायें उत्तीर्ण की, तथा कानून की परीक्षा भी दी परन्तु उसमें अनुत्तीर्ण हो गये। श्री शुक्ल जी मिर्जापुर के मिशन स्कूल में कुछ समय के लिए अध्यापक हो गये। यहाँ से ही आपका साहित्यिक जीवन आरम्भ हुआ। आपके लेख तथा रचनायें पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे। कुछ दिनों बाद आपका साहित्यकार रूप उभरकर सामने आया। इसके पश्चात् आपने नागरी प्रचारिणी सभा हिन्दी के शब्दसागर कोष के सहायक सम्पादक बने और उसको बड़ी निष्ठा के साथ पूरा करवाये। अपनी योग्यता के बल पर आप हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रवक्ता तथा वहीं हिन्दी विभाग के पद पर भी रहे। इस सम्पूर्ण काल में आपने अत्यन्त ही तन्मयता से हिन्दी साहित्य की सराहनीय सेवा की। आपको श्वांस का रोग था। उसी के कारण हृदय की गति रुक जाने से सं० १९९७ में आपका देहावसान हो गया।

रचनायें— समर्थ रचनाओं के रूप में आपने हिन्दी साहित्य को अनुपम भेंट प्रदान की है। आपका 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' एक ठोस और गम्भीर ग्रन्थ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। तुलसीदास, चिन्तामणि, भ्रमर गीत सार काव्य में रहस्यवाद तथा जायसी ग्रन्थावली आपकी मौलिक एवं रचनायें हैं। निबन्ध आलोचना तथा ऐतिहासिक आधार पर आपने कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रस्तुत किया जो अपने आप में अमर हैं। सम्पादित ग्रन्थों के सम्पादन कार्य के साथ ही आपने उन पर अपनी टिप्पणियाँ भी की है। आपने ब्रजभाषा में बुद्ध चरित्र लिखा है।

भाषा और शैली– आपने विशुद्ध साहित्यिक हिन्दी में रचनायें की है। यद्यपि आपने ब्रजभाषा में भावपूर्ण कविताएँ लिखी है परन्तु इनसे आपका कवि रूप अधिक नहीं निखर पाया। उनके गद्य साहित्य में सर्वत्र तत्सम शब्दों के ही दर्शन होते हैं। आपकी रचनाओं में एक भी आवश्यक शब्द का मिलना कठिन है। वाक्यों के गठन में एक भी शब्द को इधर-उधर अथवा निकाला बढ़ाया नहीं जा सकता। आपकी भाषा में भावानुकूलता, सरलता तथा सुन्दर प्रवाह युक्तता सर्वत्र विराजमान है। उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग आपने नहीं के बराबर किया है। जहाँ कहीं ऐसे शब्द आये भी हैं वहाँ उनका कोई विशेष प्रयोजन ही रहा होगा। आपकी भाषा में व्याकरण एवं चिह्नों की सतर्कता सर्वत्र विद्यमान है।

शुक्लजी की शैली का उनके व्यक्तित्व से पूर्णरूपेण सम्बन्ध है। विषय के अनुसार उनमें परिवर्तनशीलता भी पायी जाती है। उनका सम्पूर्ण साहित्य आलोचनात्मक, भावात्मक तथा गवेषणात्मक है। शुक्लजी हृदय से कवि, मस्तिष्क से आलोचक तथा कर्म से अध्यापक हैं। कुल मिलाकर आपका आलोचक रूप ही सर्वाधिक समर्थ है। अतः उनकी आलोचनात्मक शैली बड़ी ही ठोस, गम्भीर तथा मर्यादित है। उनके आलोचनात्मक निबन्धों में विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। इनकी भाषा भी व्यावहारिक है। कहीं भी अश्लील साहित्य, हास्य अथवा व्यंग्य की विकृत चेष्टा उनके साहित्य में दिखाई नहीं देती।

प्रश्न ४– मुन्शी प्रेमचन्द जी का साहित्यिक जीवन परिचय लिखिए।

मुन्शी प्रेमचन्द का जन्म सन् १८८० में वाराणसी जिले के लमही ग्राम में हुआ था। आपके बचपन का नाम धनपत राय था। किन्तु वे अपनी कहानियाँ उर्दू में 'नवाबराय' के नाम से लिखते थे और हिन्दी में प्रेमचन्द के नाम से। गरीब परिवार में जन्म लेने और अल्पायु में ही पिता की मृत्यु हो जाने के कारण आपका बचपन बड़े कष्ट में बीता। फिर भी जिस साहस और परिश्रम से आपने अपना अध्ययन जारी रखा, वह साधनहीन तथा कुशाग्रबुद्धि आप छात्रों के लिए प्रेरणाप्रद है। प्रारम्भ में आप कुछ वर्षों तक अध्यापक रहे। बाद में आप शिक्षा विभाग में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सब-डिप्टी इंस्पेक्टर हो गये। असहयोग आन्दोलन में सहानुभूति रखने के कारण इन्होंने सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया और आजीवन साहित्य सेवा करते रहे। आपने कई पत्रिकाओं का सम्पादन किया, प्रेस खोला, और **हंस** नामक पत्रिका का प्रकाशन किया। आपकी मृत्यु सन् १९३६ में हुई।

प्रेमचन्द के प्रसिद्ध उपन्यास **सेवासदन, निर्मला, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन,** तथा **गोदान** आदि हैं। आपकी कहानियों का विशाल संग्रह आठ भागों में **मानसरोवर** नाम से प्रकाशित है जिनमें लगभग तीन सौ कहानियाँ संकलित हैं। **कर्बला, संग्राम** और **प्रेम की वेदी** आपके नाटक हैं। प्रेमचन्दजी के द्वारा प्रणीत **गोदान** हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है।

प्रेमचन्दजी ने हिन्दी कथा-साहित्य के क्षेत्र में एक नये युग को जन्म दिया। इनका साहित्य समाज-सुधार और राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित है। वह अपने समय की सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों का पूरा प्रतिनिधित्व करता है। इसमें किसानों की दुर्दशा सामाजिक बन्धनों में तड़पती नारियों की वेदना और वर्णव्यवस्था की कठोरता के भीतर संत्रस्त हरिजनों की पीड़ा का मार्मिक चित्रण मिलता है। भारत की दलित जनता, शोषित किसानों, मजदूरों और उपेक्षित नारियों के प्रति सहानुभूति रही है। सामयिकता के साथ ही आपके साहित्य में ऐसे भी तत्त्व विद्यमान हैं जो शाश्वत और स्थायी हैं। प्रेमचन्द जी अपने युग के उन सिद्धहस्त कलाकारों में हैं, जिन्होंने हिन्दी को नवीन युग की आशा एवं आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का सफल माध्यम बनाया।

प्रेमचन्द की हिन्दी में उर्दू के चुस्त लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग की प्रचुरता है। इनकी भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण, मुहवरेदार और प्रभावशाली है और उसमें अद्‌भुत व्यंजना-शक्ति भी विद्यमान है। **बड़े भाई साहब, नमक का दरोगा, पूस की रात** आदि इनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

मंत्र प्रेमचन्द की एक मर्मस्पर्शी कहानी है इसमें विरोधी घटनाओं, परिस्थितियों और भावनाओं का चित्रण करके इन्होंने कर्त्तव्य-बोध का अभीष्ट प्रभाव उत्पन्न किया है। पाठक मंत्र-मुग्ध होकर पूरी कहानी को पढ़ जाता है। भगत की अन्तर्द्वन्द्वपूर्ण मनोदशा वेदना एवं कर्त्तव्य-निष्ठा पाठकों के मर्म को छू लेती है।

प्रश्न ५– वियोगी हरि के साहित्यिक जीवन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर– वियोगी हरि का पूरा नाम हरिप्रसाद द्विवेदी है। इनका जन्म छतरपुर में कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बचपन में ही पिता की मृत्यु के कारण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनका लालन-पोषण ननिहाल में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। तत्कालीन छतरपुर की महारानी के विशेष कृपापात्र थे। राजर्षि टंडनजी के अनुरोध पर आपने कुछ समय तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रबन्ध संचालन किया तथा **सम्मेलन पत्रिका का भी संपादन किया।** आपने दिल्ली में हरिजन उद्योगशाला का संचालन किया।

श्री वियोगीहरि का सम्पूर्ण जीवन त्याग, संयम तथा सेवामय रहा है। इन्हें **वीर सतसई** पर मंगलाप्रसाद पारितोषक प्राप्त हुआ। सन् १९३२ में आप गाँधीजी के सम्पर्क में आये तथा हरिजनों तथा समाज के दलित वर्गों की सेवा का कार्य किया।

९ मई, १९८८ को इनका देहावसान हो गया। इनकी पचास से भी अधिक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें से निम्नलिखित विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं-

काव्यः- **प्रेम शतक, प्रेमांजलि, वीणा, प्रेम-पथिक, मेवाड़-केसरी, वीर सतसई इत्यादि।**

इनकी रचनाएँ उच्च माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों के लिए उपयोगी हैं। आपने अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन, प्राचीन कविताओं का संग्रह तथा संतों एवं योगियों की वाणियों का संकलन किया है।

इनकी सभी रचनाओं में सहृदयता तथा भावुकता के दर्शन होते हैं। इन्होंने व्रजभाषा तथा खड़ी बोली दोनों में साहित्य की रचना की है। इनकी रचना में संस्कृत की तत्सम शब्दावली का बाहुल्य है। व्यावहारिक भाषा में बोलचाल के शब्दों का अधिक प्रयोग है। इन्होंने गद्य काव्यों को भावात्मक शैली में लिखा है। गम्भीर विषयों में आपकी शैली विचारात्मक है। आपके लेखों तथा आपके निबन्धों में इनकी शैली की विशदता स्पष्ट झलकती है। इन्होंने दार्शनिक तथा सामाजिक विषयों पर भी निबन्ध लिखा है। **भावना तथा अन्तर्नाद** में आपकी भावात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

प्रस्तुत संग्रह में **विश्व-मंदिर** नामक निबन्ध इनकी पुस्तक उद्यान से लिया गया है। इस निबन्ध में लेखक ने एक विश्व-मंदिर की कल्पना की है तथा उसके स्वरूप एवं सर्वधर्म समन्वय के संबंध में अपने विचार प्रकट किया गया है। प्रस्तुत निबन्ध **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की उदात्त भावना से प्रेरित होकर लिखा गया है।

प्रश्न ६— हरिभाऊ उपाध्याय का साहित्यिक जीवन संक्षेप में लिखिये।

उत्तर— हरिभाऊ उपाध्याय का जन्म सन् १८९२ में उज्जैन जिले के भवरासा नामक ग्राम में हुआ था। आपको बचपन से ही साहित्य से प्रेम था। इसीलिए

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही अवस्था में ही आपने लिखना प्रारम्भ कर दिया था। आपका जीवन अध्यापन कार्य से प्रारम्भ हुआ। अध्ययनशील होने के कारण आपको हिन्दी के अतिरिक्त कई अन्य भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। अंग्रेजी, संस्कृत, एवं मराठी और गुजराती भाषाओं पर आपका अच्छा अधिकार था। लगभग आधे दर्जन पत्र-पत्रिकाओं का आपने बड़ी सफलतापूर्वक सम्पादन किया। आपके सम्पादन में प्रकाशित **त्याग भूमि** पत्रिका ने विशेष ख्याति प्राप्त की। १६१५ ई० में आप आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आये और उनके साथ ही **सरस्वती** में सहायक सम्पादक का कार्य किए। गाँधीजी के सम्पर्क में आने पर आपने **हिन्दी नवजीवन** का कार्य बड़ी कुशलता से किया। आप गाँधीवादी विचारधारा की ओर शुरू से ही आकृष्ट रहे। आपका सम्पूर्ण साहित्य और राजनीतिक जीवन गाँधी-दर्शन से प्रभावित रहा। राजनीति और साहित्य से सम्बन्धित विषयों पर आपकी एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित । गाँधी-साहित्य के प्रणेता प्रकाशक एवं प्रचारक सस्ता साहित्य मंडल के आप सक्रिय सदस्य रहे। आपने जवाहरलाल नेहरू की आत्मकथा **मेरी जीवनी** और सीतारमैया द्वारा लिखित **कांग्रेस का इतिहास** का हिन्दी रूपान्तर किया। अनुवाद करने में आपने इस बात का ध्यान रखा कि पुस्तक की भाषा लेखक की भाषा के अनुरूप हो। आपने स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और कई बार जेल-यात्रा की।

उपाध्यायजी की शैली के दो गुण हैं:- सरलता और प्रांजलता। गद्य के विषय में ये साधारण बोलचाल की भाषा के पक्ष में हैं। इनके लेखों को पढ़ते समय लगता है कि हम किसी की बात सुन रहे हैं। इनके स्वभाव की सादगी का प्रतिबिम्ब इनकी रचनाओं में स्पष्ट झलकता है।

उपाध्यायजी की मौलिक पुस्तकें हैं:- **बापू के आश्रम में, स्वतंत्रता की ओर, सर्वोदय की बुनियाद, साधना के पथ पर, और युगधर्म** इत्यादि।

आचार्य द्विवेदी जी एक संस्मरण है; इसमें उपाध्यायजी ने आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व और स्वभाव का वस्तुनिष्ठ चित्रण किया है। द्विवेदीजी पर लिखा गया यह संस्मरण कई स्थनों पर स्वयं आचार्य द्विवेदी द्वारा लिखित आत्मकथा की विशेषताओं की याद दिलाता है, साथ ही अपने सम्बन्ध में जिन बातों को स्वयं आचार्य द्विवेदी नहीं लिख सके उन्हें बड़ी सहजता से सामने यह संस्मरण रख देता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न ७— श्री जयशंकर प्रसाद के साहित्यिक जीवन के विषय में सं में लिखें।

उत्तर— जयशंकर 'प्रसाद' का जन्म वाराणसी के प्रसिद्ध सुँघनी साहू परि में सन् १८८६ में हुआ था। घर पर ही आपने संस्कृत, फारसी, तथा अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की। वेद, पुराण, इतिहास, साहित्य और दर्शनशास्त्र का अपने स्वाध्या किया। प्रसादजी में काव्य-प्रणयन के संस्कार बचपन से ही थे। इनकी प कविता नौ वर्ष की अवस्था में ही प्रकाश में आ गयी थी। प्रसादजी को पारिवा सुख नहीं प्राप्त था। माता, पिता, अनुज तथा पत्नी सभी इनकी युवावस्था पहले ही परलोक चले गये। आपका परिवार जो कभी वैभव के पालने पर झू था, वह ऋण के बोझ से दब गया। अतः आपको जीवन भर विषम परिस्थि से संघर्ष करना पड़ा, किन्तु आपने संघर्ष से हार नहीं माना। चिन्ताओं ने को जर्जर बना दिया और अन्ततः आप क्षय-रोग के शिकार हो गये। १५ नव सन् १९३७ को काशी में आपकी जीवन-लीला समाप्त हो गयी। माँ-भारती यह अमर गायक जीवन के केवल अड़तालिस वसन्त ही देख सका।

प्रसादजी चतुरस्त्र प्रतिभा के धनी थे। आप एक महान कवि, सफल नाटक श्रेष्ठ उपन्यासकार, कुशल कहानीकार, और गम्भीर निबंधकार थे। आपको भा संस्कृति और सभ्यता से अगाध स्नेह था। भारत के उज्जवल अतीत को अपने साहित्य के माध्यम से सफलतापूर्वक चित्रित किया है। आपके ना **चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, और अजातशत्रु** राष्ट्र के गौरवमय इतिहास का प्रस्तुत करते हैं। आपकी कामायनी **छायावाद** युग को ही नहीं, सम्पूर्ण आ काल की सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है। **इन्द्रजाल, आँधी** आदि आपके कहानी- हैं। आपकी **आकाशदीप** और **पुरंस्कार** नामकी कहानियों विशेष रूप से हैं। इनकी कहानियाँ और नाटकों में गम्भीर भावुकता के दर्शन होते हैं। ये में छायावादी काव्यधारा के जनक कवि माने जाते हैं।

प्रसादजी की भाषा संस्कृत-निष्ठ है। आपकी शब्दावली समृद्ध और है तथा शैली अलंकृत एवं चित्रात्मक। भावाविष्ट अवस्था में आपके ग काव्यात्मक हो जाते हैं।

ममता कहानी प्रसादजी की छोटी किन्तु अत्यन्त सशक्त कृति है। प्र नारी पात्र ममता के चरित्र के ताने-बाने से इसका कथानक निर्मित है। ने ममता के माध्यम से एक बाल विधवा की करुण कथा चित्रित की है,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारतीय नारी की गरिमा भी।

प्रश्न ८– पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के साहित्यिक जीवन के विषय में लिखें।

उत्तर– पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी का जन्म सन् १८९४ ई० में हुआ था। ये विद्यार्थी जीवन से ही कविताएँ लिखते थे। बी० ए० पास करते ही 'सरस्वती' के अतिरिक्त अन्य पत्रिकाओं में भी आपकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगी। आपकी कविताएँ स्वच्छन्दतावादी हैं जिन पर अंग्रेजी कवि वर्डस्वर्थ का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। बख्शीजी की प्रसिद्धि का मुख्य आधार आलोचना और निबंध लेखन है।

बख्शीजी की गणना द्विवेदी-युग के प्रमुख साहित्यकारों में होती है। **हिन्दी साहित्य विमर्श** और **विश्व साहित्य** आपकी दो आलोचनात्मक ग्रन्थ हैं। बख्शी जी विशेष रूप से अपने ललित निबन्धों के लिए स्मरण किये जाते हैं। आप एक विशेष शैलीकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। आपने जीवन, समाज, धर्म, संस्कृति और साहित्य आदि विषयों पर उच्चकोटि के निबन्ध लिखा है। यत्र-तत्र शिष्ट हास्य-व्यंग्य के कारण आपके निबन्ध अत्यन्त रोचक बन गये हैं। आपकी भाषा और शैली सरल एवं प्रवाहपूर्ण है। आपके निबन्ध संग्रह एवं **पंचपात्र, पदम् वन**, विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

बख्शीजी ने १९२० से २७ तक बड़ी कुशलता से 'सरस्वती' का सम्पादन किया। कुछ वर्षों तक आपने **छाया** नामकी मासिक पत्रिका का भी सम्पादन बड़ी कुशलतापूर्वक किया।

क्या लिखूँ ? आपका एक ललित निबन्ध है। इस निबन्ध के विषय-प्रतिपादन, प्रस्तुतीकरण एवं भाषा शैली में बख्शीजी की सभी विशेषताएँ सन्निविष्ट हैं। इस निबन्ध की उत्कृष्टता के दर्शन उस समन्वित रचना-कौशल में होते हैं, जिसके अन्तर्गत लेखक ने दो विषयों पर निबन्ध की विषय सामग्री, प्रस्तुति आदि का संकेत ही नहीं किया है अपितु संक्षेप में उन्हें प्रस्तुत कर दिया है।

प्रश्न ९– श्री गुलाबराय जी के साहित्यिक जीवन का परिचय दीजिए।

उत्तर– बाबू गुलाबराय का जन्म इटावा में सन् १८८८ ई० में हुआ। आपने दर्शनशास्त्र से एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की। बाद में एल-एल० बी० की परीक्षा भी आपने उत्तीर्ण की। साहित्य और दर्शन दोनों में आपकी समान रूप से गति थी। हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी आदि भाषाओं पर आपका अच्छा अधिकार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

था। कई वर्षों तक आप छतरपुर रियासत के महाराजा के सचिव रहे, उस पश्चात् आप आगरा के सेंट जांस कालेज में अध्यापन कार्य करते रहे। आप जीवन का अधिकांश समय आगरा में ही बीता। आपने **साहित्य संदेश** नाम पत्रिका का सफल संपादन किया। आगरा विश्वविद्यालय से आपने डी० लिट्० उपाधि प्राप्त की। १३ अप्रैल, १९६३ को आपका देहावसान हो गया।

आधुनिक हिन्दी गद्य के उन्नायकों में गुलाबरायजी भी प्रमुख हैं। आप हिन्दी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण अवदान है। आप साहित्यिक कृतियों के कई रूप हैं- काव्यशास्त्रकार, व्यावहारिक आलोचक, ल और गम्भीर निबंधकार, एवं शास्त्रकार आदि। इसके अतिरिक्त आप हिन्दी शुभचिन्तक थे और आपने बहुत से हिन्दी-लेखकों को न केवल प्रेरणा प्रोत्साहन दिया बल्कि सही अर्थों में उन्हें साहित्यकार भी बनाया।

गुलाबरायजी के कतिपय उल्लेखनीय कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

नवरस, सिद्धान्त और अध्ययन, काव्य के रूप, हिन्दी नाट्य विम हिन्दी-काव्य विमर्श, हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास, तथा अध्ययन आस्वाद, आदि।

काव्यशास्त्र-सम्बन्धी ग्रन्थों में आपका दृष्टिकोण समन्वयात्मक दिखायी है। व्यावहारिक समीक्षा-सम्बन्धी रचनाओं में विचार-विश्लेषण पर आपकी अ ध्यान की प्रवृत्ति पायी जाती है। काव्यशास्त्रकार और समीक्षक से अधिक निबन्धकार के रूप में विख्यात हैं। ललित निबन्धों में कुछ मधुर हास्य की सृष्टि साथ आप पाठक से आत्मीयता का सम्बन्ध स्थापित करते दिखायी देते हैं।

प्रश्न १०— डॉ० राजेन्द्रप्रसाद का साहित्यिक जीवन लिखिए।

उत्तर— देशरत्न डॉ० राजेन्द्रप्रसाद का जन्म सन् १८८४ में बिहार राज्य छपरा जिले के जीरादेई ग्राम में हुआ था। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आपने ए० और एम० एल० की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। आप बड़े मेधावी छात्र थे सभी परीक्षाओं में आपने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

मुजफ्फरपुर में एक कालेज में कुछ दिन अध्यापन का कार्य करने के प राजेन्द्र बाबू ने कलकत्ता तथा पटना हाईकोर्ट में वकालत की। किन्तु गाँधीजी आदर्शों, सिद्धान्तों तथा अन्दोलनों से प्रभावित होकर सन् १९२० में आ वकालत छोड़ दी और पूर्णरूपेण देश-सेवा के कार्य में लग गये।

भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस के आप तीन बार सभापति चुने गये और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१९६२ तक भारत गणराज्य के राष्ट्रपति रहे। सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, निर्भीकता, देशभक्ति, साधुता, और सादगी आपके रोम-रोम में व्याप्त थी। आप की मृत्यु सन् १९६३ ई० में हुई।

डॉ० राजेन्द्रप्रसाद एक कुशल लेखक थे। सामाजिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर आपके लेख प्रकाशित होते थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति पद को भी आपने सुशोभित किया। आपकी भाषा सरल तथा शैली रोचक है। **भारतीय शिक्षा, गाँधीजी की देन, साहित्य, शिक्षा और संस्कृति, आत्मकथा** आदि आपकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। हिन्दी के अतिरिक्त आप अंग्रजी में भी लिखते थे। आपके अनेक भाषण भी प्रकाशित हुए हैं जिनमें विचारों की क्रम-बद्धता और स्पष्टता, भाषा की सरलता और स्वाभाविकता एवं हृदय की संवेदन-शीलता और देशभक्ति के एक साथ दर्शन होते हैं।

प्रस्तुत पाठ **भारतीय संस्कृति** आपके एक भाषण का अंश है। इसमें आपने बतलाया है कि भारत जैसे विशाल देश में व्याप्त जीवन व रहन-सहन की विविधता में भी एकता के दर्शन होते हैं। विभिन्न भाषा, जाति व धर्म की मणियों को एकसूत्र में पिरोकर रखने वाली हमारी भारतीय संस्कृति विशिष्ट है। डॉ० राजेन्द्रप्रसाद के व्यक्तित्व की ही भाँति भाषा भी अत्यन्त सरल है।

प्रश्न ११— श्री विनोवा भावे के साहित्यिक जीवन के विषय में संक्षेप में लिखें।

उत्तर— आचार्य विनोवा भावे का जन्म ११ सितम्बर सन् १८९५ को महाराष्ट्र के कुलाबा जिले के गागोद ग्राम में हुआ था। आपका पूरा नाम विनायक राव भावे है! आप अत्यन्त मेधावी छात्र थे और गणित तथा संस्कृत आपके रूचि के विषय थे। आपने आई० एस-सी० की परीक्षा उत्तीर्ण थी, उसके प्रमाण पत्र को आपने निरर्थक समझकर फाड़ दिया। माता की प्रेरणा प्राप्त कर आपने आजीवन अविवाहित रहकर देशसेवा का व्रत लिया।

विनोवा जी प्राचीन भारत की ऋषि-परम्परा के महापुरुष हैं और आत्म-कल्याण के लिए नहीं बल्कि लोक-कल्याण के लिए साधन-रत रहे। आप शारीरिक श्रम, स्वावलम्बन, सदाचार, राष्ट्रप्रेम, त्याग तथा सेवा आदि की भावनाओं की ओर बचपन से ही आकर्षित रहे हैं। आपने अंग्रेजी शिक्षा को अनुपयुक्त समझकर बी० ए० से ही पढ़ाई छोड़ दी तथा स्वाध्याय तथा मनन में लीन हो गये। विभिन्न विषयों और भाषाओं का अध्ययन-मनन आपका व्यसन रहा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विनोवाजी बहुत दिनों तक साबरमती आश्रम में गाँधीजी के सम्पर्क में रहे। आपका सम्पूर्ण जीवन त्यागमय रहा है। गाँधी जी के ही तरह आपका जीवन सत्य औंर अहिंसामय रहा। गाँधी जी कहा करते थे कि सत्य और अहिंसा के विनोवा प्रतिरूप हैं। १६४० के व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए गाँधी जी ने विनोवा को पहला सत्याग्रही चुना था। विनोबाजी गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों को अमली रूप देने के लिए सतत प्रयत्नशील रहते थे। आपने सर्वोदय, बुनियादी शिक्षा और भूदान के द्वारा राष्ट्र को सही मार्ग-दर्शन प्रदान करने का प्रयत्न किया। आप प्राचीन संतों की भाँति पैदल यात्रा करके जन-जागृति की।

विनोबाजी मराठी-भाषी थे किन्तु हिन्दी से आपका अगाध स्नेह था। गंगा की धारा के समान हिन्दी को आप भारत के लिए उपयोगी मानते थे। बराबर हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानकर अधिकतर हिन्दी ही बोलते तथा लिखते रहे। विनोवाजी का अध्ययन एवं अनुभव विस्तृत तथा साधना-समृद्ध थी। आपके विचार हमेशा मौलिक होते थे। विनोवा जी के भाषणों का लगातार श्रवण करने वालों का कहना है कि इनके भाषणों में पुनरावृत्ति नहीं होती थी।

विनोवाजी प्रवचन शैली में ही लिखते भी थे। प्रवचन शैली में वक्ता की चेष्टा होती है कि वह अपने विचार श्रोताओं तक पहुँचा दे। वह भाषा की नहीं लगाता बल्कि एक-एक बिन्दु को सरल एवं सहज ढ़ंग से श्रोताओं के हृदय में उतारता चलता है। संस्कृत के गहन अध्ययन करने तथा बहु भाषा भाषी होने के कारण विनोबा जी का शब्द-भण्डार अत्यन्त समृद्ध था। आपकी 'वाणी में उन्मुक्त निस्पहृता थी जो कबीर की वाणी की याद दिलाती है।

विनोबाजी ने अनेक मौलिक ग्रन्थ लिखा है जिनमें गीता प्रवचन, विनोबा के विचार, जीवन और शिक्षण, आत्मज्ञान और विज्ञान, राजघाट की सन्निधि में, गाँव सुखी हम सुखी, भूदान-यज्ञ, स्थित-प्रज्ञ दर्शन आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

चिर तारुण्य की साधना विनोबाजी की पुस्तक जीवन और शिक्षण में संकलित है। स्वतन्त्र भारत के नवयुवकों के लिए चिर तरुण बने रहने के उपदेश की सार्थकता का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। विनोबाजी ने अपनी प्रवचन शैली में सुगम तर्क के माध्यम से कथ्य को अत्यन्त रोचक और प्रभावपूर्ण बनाया है।

प्रश्न १२— हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक जीवन को संक्षेप में लिखिए।

उत्तर— हिन्दी के गद्य लेखकों में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की गणना शीर्षस्थ रूप से की जाती है। आपका जन्म सन् १६०७ ई० में बलिया जिले के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का छपरा ग्राम में हुआ था। आपकी शिक्षा का प्रारम्भ संस्कृत भाषा से हुआ। आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् १९४० में आप हिन्दी एवं संस्कृत के अध्यापक के रूप से शान्तिनिकेतन गये। वहाँ अनेक वर्षों तक कार्य करते हुए आप कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ के निकट सम्पर्क में आ गये। उसके बाद आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में अध्यक्ष नियुक्त हुए। कुछ समय तक आपने पंजाब विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया।

गौरवपूर्ण साहित्य-सेवा के फलस्वरूप सन् १९४९ में लखनऊ विश्वविद्यालय ने आपको डी० लिट्० की मानद उपाधि से विभूषित किया और भारत सरकार ने आपको सन् १९५७ ई० में पद्मभूषण का अलंकरण प्रदान किया। आपको मंगला प्रसाद पारितोषक भी मिला था। आपकी साहित्य चेतना निरन्तर जागृत रही और आप आजीवन साहित्य सृजन में लगे रहे। सन् १९७९ में आपका देहावसान हो गया।

द्विवेदीजी उच्चकोटि के निबन्धकार, उपन्यसकार, आलोचक, चिन्तक तथा शोधकर्ता थे। कवीन्द्र रवीन्द्र के विचारों का आपके साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आपकी भाषा-शैली प्रांजल, मृदुल, एवं प्रवाहपूर्ण है। उसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों और पाण्डित्यपूर्ण वाक्य- खण्डों की प्रचुरता है। भाषा एवं वर्णनों में अलंकारों की अधिकता के कारण आपके सर्जनात्मक साहित्य में कोमलकान्त पदावली का प्राचुर्य है, जिससे उसको पढ़ने में काव्यात्मक आनन्द की उपलब्धि होती है।

द्विवेदीजी जहाँ विद्वत्तापूर्ण एवं शोधपूर्ण निबन्धकार हैं, वहाँ श्रेष्ठ भावात्मक तथा वैयक्तिक निबन्धकार भी हैं। आपके वैयक्तिक निबन्ध हिन्दी निबन्ध-साहित्य की मूल्यवान निधि हैं। आपके व्यक्तित्व में विद्वत्ता और सरसता, पाण्डित्य और विदग्धता, गाम्भीर्य और विनोदमयता, प्राचीनता और नवीनता का समन्वय है, 'नाखून क्यों बढ़ते हैं,' 'आम फिर बौरा गये,' 'अशोक के फूल,' 'एक कुत्ता और एक मैना,' 'कुटज' आदि निबन्धों में आपके गाम्भीर्यपूर्ण मौलिक विचार पाठकों के मन को मुग्ध कर देते हैं। आपके निबन्धों का सम्पूर्ण रसास्वादन करने के लिए जगह-जगह पर बिखरे हुए सांस्कृतिक साहित्य के संदर्भों को जानना बहुत आवश्यक है।

कबीर सूर साहित्य, हिन्दी साहित्य की भूमिका, नाथ सम्प्रदाय, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हिन्दी साहित्य आदि आपके प्रसिद्ध आलोचन ग्रन्थ हैं। **अशोक के फूल, विचार प्रवाह, कुटज, कल्पलता** आदि आपके निबन्ध संकलन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। **बाण भट्ट की आत्मकथा, चारु चन्द्र लेख** आदि आपके उपन्यास हैं।

गुरू नानकदेव में मानवतावादी मूल्यों का सहज सन्निवेश पाने के द्विवेदीजी भावाभिभूत हो गये हैं। 'गुरू नानकदेव' श्रद्धेय एवं-स्तुत्य हैं, उ निबन्ध की गिनायी गयी सारी विशेषताएँ अनुस्यूत हैं।

प्रश्न १३— सुश्री महादेवी वर्मा का संक्षेप में साहित्यिक जीवन परि लिखिए।

उत्तर— महादेवी वर्मा का जन्म फर्रूखाबाद जिले के एक सम्पन्न परिवा सन् १९०७ में हुआ था। इन्दौर में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करके आपने क्रायस्थ गर्ल्स कालेज इलाहाबाद में शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् प्रयाग विश्वविद्यालय संस्कृत में एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने दीर्घ काल तक प्रयाग म विद्यापीठ की प्रधानाचार्या के पद पर कार्य किया। इससे पूर्व आपने कुछ वर्ष पत्रिका का संपादन कुशलतापूर्वक किया था। इन्हें 'सेक्सरिया' एवं 'मंगला प्र पुरस्कार' से सम्मानित किया जा चुका है। भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण उपाधि से अलंकृत किया है। आप उत्तर प्रदेश की विधान परिषद् की सम्मा सदस्या भी रह चुकी हैं। आपका देहावसान ११ सितम्बर, १९८७ को प्रयाग हुआ।

नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्य-गीत और दीप शिखा। स्मृति की रेखा अतीत के चलचित्र, शृंखला की कड़ियाँ, विवेचानात्मक गद्य, पथ के सा क्षणदा, मेरा परिवार आदि महादेवी जी की प्रख्यात साहित्यिक कृतियाँ हैं।

महादेवीजी छयावादी कवियों के बृहत्-चतुष्टयी में से एक हैं। आपकी कविता में वेदना का स्वर प्रधान है और भाव, संगीत तथा चित्र का अपूर्व संगम है। य आपका **प्रमुख क्षेत्र** काव्य रहा है तथापि आपने उच्चकोटि की गद्य रचनायें की **यामा और दीप शिखा** की भूमिकाओं में आपने अपनी विशिष्ट साहित्यिक शैली गंभीर आलोचनाएँ लिखीं है। **पथ के साथी** में आपने कुछ प्रमुख साहित्यकारों **अतीत के चलचित्र** एवं **स्मृति की रेखाएँ** में समाज के उपेक्षित वर्ग तथा दास-द आदि के मार्मिक रेखाचित्र प्रस्तुत किया है। **मेरा परिवार** में कुछ पालतू-पशु-पक्षि के शब्द-चित्र बड़ी मार्मिक शैली में अंकित हैं।

महादेवीजी के रेखाचित्र में उनके गद्य का सर्वश्रेष्ठ रूप प्राप्त होता है। इ पीड़ित मानव तथा स्नेहिल पशुओं के सजीव चित्र प्रस्तुत हैं। इनमें आपकी ग करुण अनुभूति तथा काव्यात्मक अभिव्यक्ति के दर्शन होते हैं। इन रचनाओं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आपका गद्य प्रायः काव्यात्मक हो गया है जिसमें चित्रमयता तथा कल्पनाशीलता के प्रचुर दर्शन होते हैं। आपकी शैली में रस, आकर्षण तथा प्रभावोत्पादक तो है ही शब्द का चयन तथा वाक्य-विन्यास कलात्मक है। आपकी भाषा यद्यपि संस्कृत-निष्ठ है, फिर भी उसमें दूर्बोधता नहीं है। ये भावों की अभिव्यक्ति करने में पूर्णतया समर्थ हैं तथा विषय के अनुसार अपनी भाषा का परिवर्तन करती चलती हैं।

प्रश्न १४— श्री रामवृक्ष बेनीपुरी जी का संक्षेप में साहित्यिक जीवन परिचय अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर— रामवृक्ष बेनीपुरी जी का जन्म मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। बचपन में ही आपके माता-पिता का देहान्त हो गया। सन् १९२० में गाँधीजी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ होने पर आप अध्ययन छोड़कर स्वतंत्रता आन्दोलन में गाँधी जी के साथ हो लिए। बाद में आपने साहित्य सम्मेलन की विशारद परीक्षा उत्तीर्ण की और रामचरितमानस के पठन-पाठन से साहित्य की रचना की। साहित्य के क्षेत्र में आप पत्रकारिता के माध्यम से आये। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ही आप विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लिखने लगे थे। देश-सेवा के पुरस्कार स्वरूप आपको जीवन का एक बड़ा अंश कारागार में बिताना पड़ा। आपने **तरूण भारत, किसान मित्र, युवक,** आदि कई पत्र-पत्रिकाओं का सफल सम्पादन भी बड़ी कुशलता से किया।

बेनीपुरीजी चतुरस्त्र प्रतिभा के धनी थे। आपने कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, निबंध आदि गद्य की सभी प्रचलित विधाओं में साहित्य की रचना की है। बेनीपुरीजी ने अपने संगठनात्मक एवं प्रचारात्मक कार्यों द्वारा हिन्दी जनता की बड़ी सेवा की है। आपका नाम बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में लिया जाता है। आपका पूरा साहित्य **बेनीपुरी ग्रंथावली** के रूप में कई खण्डों में प्रकाशित हो चुका है। आपके कुछ प्रसिद्ध ग्रंथ हैं-**पतितों के देश में,** (उपन्यास) **चिता के फूल** (कहानी),**माटी की मूरतें** (रेखाचित्र), **अंबपाली** (नाटक), **गेहूँ और गुलाब** (निबंध और रेखाचित्र), **पैरों में पंख बाँधकर** (यात्रा वृतांत), **जंजीरें और दीवारें** (संस्मरण) आदि।

बेनीपुरीजी एक कर्मठ देश-भक्त थे। देश-भक्त और साहित्यकार दोनों ही रूपों में आपका विशिष्ट स्थान है।

बेनीपुरीजी की शैली में शब्दों का चमत्कार सभी रचनाओं में देखा जा सकता है, विशेषतः रेखाचित्रों में। भाषा की सरलता, सरसता और शैली में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रवाह की दृष्टि से आप हिन्दी के विशिष्ट शैलीकार हैं। शब्दों के तो आप जादू हैं। छोटे-छोटे वाक्यों में शब्दों का उपयुक्त प्रयोग आपकी निजी विशेषता है। इनकी भाषा-शैली रेखाचित्रों, संस्मरणों और गद्य-गीतों के विशेष अनुरूप है। सन् १९६८ में आपका देहान्त हो गया।

नींव की ईंट बेनीपुरीजी का सशक्त भावात्मक निबंध है इसमें आ स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में अनेक अज्ञात, विस्मृत सेनानियों के बलिदान सराहना की है, और स्वातंत्र्योत्तर भारत में कुर्सी के लिए होड़ की प्रवृत्ति भर्त्सना की है।

प्रश्न १५– श्रीराम शर्मा के साहित्यिक जीवन का संक्षेप में परि दीजिए।

उत्तर– श्रीराम शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में हुआ। इन्हें इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। ये शिकार साहि के सर्वाधिक प्रसिद्ध लेखक हैं। वास्तव में इनका लेखन इस दिशा में किया ग एक सफल प्रयास है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने **विशाल भारत** कुशलता-पूर्वक सम्पादन किया। साथ ही इन्होंने शिकार साहित्य, संस्मरण अ जीवनी लेखन की विधाओं में उल्लेखनीय कार्य किया है।

सन् बयालीस के संस्मरण और **सेवाग्राम की डायरी** आत्मकथा की शै में लिखी हुई इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भाग रहने के कारण इन कृतियों में उनकी झलकियाँ अनायास आ गयी हैं। शि साहित्य से सम्बन्धित लेखों में घटना-विस्तार के साथ-साथ पशुओं के मनोवि का सम्यक् परिचय देते हुए इन्होंने उन्हें पर्याप्त रोचक बनाने में सफलता प्र की है। इन्होंने ज्ञानवर्धक एवं विचारोत्तेजक भी निबन्ध लिखे हैं जो विभि पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं।

शर्माजी की भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण, एवं प्रभावशाली है। भाषा की दृष्टि इन्हें प्रेमचन्द का निकटवर्ती लेखक माना जा सकता है। किन्तु इनकी शैली विशेषता सर्वथा निजी है। इनकी शिकार सम्बन्धी प्रकाशित रचनाओं में शिक **प्राणों का सौदा, बोलती प्रतिमा, जंगल के जीव** विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

शिकार की प्रायः सभी कहानियाँ रोमांचक है। लंबी बीमारी के बाद १९६७ में इनका देहान्त हो गया। प्रस्तुत लेख इनकी शिकार पुस्तक से लिया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। इसमें लेखक ने बचपन के दिनों की एक रोमांचकारी घटना का वर्णन किया है। वर्णन इतना सजीव है कि पाठक का कुतूहल आद्यन्त बना रहता है। बाल-प्रकृति और बाल सुलभ चेष्टाओं का चित्रण स्मृति में विशेष रूप से द्रष्टव्य है।

प्रश्न १६— काका कालेलकर के साहित्यिक जीवन परिचय का संक्षेप में अपने शब्दों में उल्लेख कीजिए।

उत्तर— काका कालेलकर का जन्म सन् १८८५ में महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ था। मातृभाषा मराठी के अलावा हिन्दी, गुजराती, बँगला, अंग्रेजी आदि भाषाओं पर इनका सम्यक् अधिकार है। जिन राष्ट्रीय नेताओं तथा महापुरुषों की राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार कार्य में विशेष अभिरुचि की, उनकी प्रथम पंक्ति में काका कालेलकर का नाम आता है। इन्होंने राष्ट्रभाषा के प्रचार को राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत माना है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के सन् १९३८ के अधिवेशन में भाषण करते हुए कालेलकर ने कहा था- "हमारा राष्ट्रभाषा प्रचार एवं राष्ट्रीय कार्यक्रम है।" हिन्दी के अलावा गुजराती में भी आपने प्रशंसनीय कार्य किया है। इन्हें महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर और टंडनजी के निकट संपर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अगस्त २१, १९८७ को आपका स्वर्गवास हो गया।

काका कालेलकर उच्चो कोटि के विचारक तथा विद्वान् हैं। भाषा के प्रचारक होने के साथ-साथ इन्होंने हिन्दी और गुजराती में मौलिक रचनाएँ भी लिखी। सरल और ओजस्वी भाषा में विचारात्मक निबन्ध के अतिरिक्त पर्याप्त मात्रा में यात्रा-साहित्य लिखा। इनकी भाषा शैली सजीव और ओजस्विनी है। इनकी दृष्टि बड़ी पैनी है, इसीलिए इनकी लेखनी से प्रायः ऐसे सजीव चित्र बन पड़ते हैं। इनकी भाषा-शैली सरल होने के कारण स्वाभाविक एवं प्रवाहपूर्ण है और विचारों का बाहुल्य होने के साथ ही उसमें कल्पना की उड़ान है। इनकी रचनाओं में अधिक काव्यात्मक प्रसंग मिलते हैं। भारतीय संस्कृति के गंभीर अध्येता होने के कारण प्रचीन भारत की झलक इनकी रचनाओं में दिखायी पड़ती है। आप सिद्धहस्त लेखक थे। किसी भी सुन्दर दृश्य का वर्णन अथवा जटिल समस्या का सुगम विश्लेषण आपके लिए आनन्द का विषय था। मराठी-भाषी काका साहब ने अपनी अधिकतर रचनाएँ गुजराती में लिखी है। **संस्मरण, यात्रा, सर्वोदय, हिमालय प्रवास, लोकमाता, उस पार के पड़ोसी, जीवन लीला, बापू की झलकियाँ, जीवन का काव्य** आदि रचनाएँ विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निष्ठामूर्ति कस्तूरबा में राष्ट्रमाता कस्तूरबा के जीवन की ऐसी अं झाँकियाँ दी गयी हैं जो भारतीय नारी के गौरवपूर्ण रूप का सुन्दर चित्र प्रस्तुत करती हैं।

प्रश्न १७— विनयमोहन शर्मा के साहित्यिक जीवन के विषय में संक्षेप लिखें।

उत्तर— विनयमोहनशर्मा हिन्दी साहित्य के मान्य विद्वान् एवं प्रख्यात समालोचक हैं। इनका वास्तविक नाम शुकदेवप्रसाद तिवारी है। इनका जन्म १९०५ में मध्य प्रदेश के काकरबेल नामक कस्बे में हुआ थां। बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी में इन्होंने शिक्षा ग्रहण की। साहित्य में इनकी रूचि छात्र-जीवन से थी। इनकी कविताओं का संग्रह **भूले गीत** सन् १९४४ में प्रकाशित हुआ। साहित्य के विविध पक्षों पर ये सदा लिखते रहे हैं। ये शासकीय स्नातक कला-विज्ञान महाविद्यालय, रामगढ तथा महाकोसल महाविद्यालय, जबलपुर में प्राचार्य पद पर कार्य करने के बाद कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रोफेसर और अध्यक्ष नियुक्त हुए।

विनयमोहनशर्मा ने शोध, समीक्षा और रचना तीनों ही क्षेत्रों में समान रूप से कार्य किया। इनकी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

निबन्ध संग्रह-**दृष्टिकोण, साहित्यावलोकन, साहित्य शोध समीक्षा, भाषा-साहित्य-समीक्षा**। संस्मरण और रेखाचित्र-**रेखाएँ और रंग**। निबन्ध-**हिन्दी को मराठी संतों की देन**। शोध विज्ञान-**शोधप्रबिधि, व्यावहारिक समीक्षा, कवि प्रसाद का आँसू और अन्य कृतियाँ**। अनुवाद और रूपान्तर-**हिन्दी गीत गोबिन्द**।

शर्माजी के व्यक्तित्व में विवेकशील आलोचक, तथ्यान्वेषी शोधकर्ता और संवेदनशील रचनाकार तीनों का मणिकांचन संयोग है। इनके आलोचनात्मक निबन्ध इनके प्रौढ़ और विवेकपूर्ण निर्णय को सूचित करते हैं। ये सच्चे अर्थों में एक सहृदय समीक्षक हैं। इसीलिए इनकी आलोचना में नीरसता नहीं होती। इनके कुछ निबन्ध आत्माभिव्यंजक भी हैं। इनमें इन्होंने मुक्त-हृदय से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है। इनमें वस्तुओं और दृश्यों को अंकित करने की अच्छी क्षमता है। इसीलिए इनके वर्णन सजीव चल-चित्र से प्रतीत होते हैं।

इनकी भाषा सशक्त, प्रौढ़ और परिमार्जित है। सामान्यतः ये तत्सम शब्द

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का ही प्रयोग करते हैं, किन्तु विषय के अनुसार उसका रूप-परिवर्तन भी करते हैं। भाषा के शुद्ध प्रयोग पर ये बराबर ध्यान देते आये हैं। अभी इनके बहुत से निबन्ध अप्रकाशित हैं।

प्रस्तुत पाठ **दक्षिण भारत की एक झलक में** लेखक ने दक्षिण भारत के सुरम्य स्थलों, रीति-रिवाजों और दृश्यों का रोचक वर्णन करते हुए वहाँ की संस्कृति की सजीव झाँकियाँ प्रस्तुत की है। स्मरण रहे कि वर्णन आज से बहुत पूर्व का है; किन्तु राष्ट्रीय भावात्मक एकता के भाव का पोषण करने वाला यह यात्रा-वर्णन आज भी हमारे लिए सूचनाप्रद और रोचक है।

प्रश्न १८— श्री रामधारी सिंह दिनकर के साहित्यिक जीवन के विषय में संक्षेप से लिखें।

उत्तर— श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म सन् १६०८ ई० में बिहार राज्य के मुंगेर जिले के सिमरिया ग्राम में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। बी० ए० की परीक्षा पास करने के पश्चात् आपने कुछ दिनों के लिए उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक का कार्य सँभाला। उसके बाद आप सरकारी नौकरी में चले आये। आपकी सरकारी सेवा अवर-निबंधक के रूप में प्रारम्भ हुई। बाद में आप उपनिदेशक, प्रचार विभाग के पद पर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तक कार्य करते रहे। उसके बाद आपने कुछ समय तक बिहार विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया। सन् १६५२ में आप भारतीय संसद के सदस्य निर्वाचित हुए। कुछ समय तक आप भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी रहे। उसके बाद भारत सरकार के गृह-विभाग में आप हिन्दी सलाहकार के रूप में कुछ दिनों तक हिन्दी के संवर्धन एवं प्रचार प्रसार के लिए कार्यरत रहे। आपको ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। सन् १६६२ भारत सरकार ने दिनकरजी 'पद्मभूषण' के सम्मान से सम्मानित किया तथा सन् १६६२ में भागलपुर विश्वविद्यालय ने आपको डी० लिट्० की उपाधि प्रदान की। हिन्दी के प्रतिनिधि कवि व लेखक के रूप में दिनकर जी ने अनेक प्रतिनिधि मंडलों में रहकर विदेश यात्राएँ की। 'दिनकरजी' की असामयिक मृत्यु सन् १६४७ में हुई।

दिनकरजी की प्रसिद्धि का मुख्य आधार उनकी कविता है तथा देश और विदेश में आप मुख्यतः कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। लेकिन गद्य-लेखन में भी आप आगे रहे और अनेक प्रख्यात ग्रंथ लिखकर हिन्दी साहित्य की आपने समृद्धि की। इसका ज्वलंत उदाहरण **संस्कृत के चार अध्याय है** जो साहित्य अकादमी से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुरस्कृत है।

रेणुका, हुंकार, कुरूक्षेत्र, रश्मिरथी परशुराम की प्रतीक्षा (काव्य) **अर्धनारीश्वर, वट-पीपल, संस्कृति के चार अध्याय** (निबंध) **देश विदेश** (यात्रा) आदि आपकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

छायावादोत्तर हिन्दी काव्यधारा के प्रमुख कवि, आलोचक, विचारक और निबन्धकार के रूप में 'दिनकरजी' का विशिष्ट स्थान है।

प्रश्न १९— श्री भगवतशरण उपाध्याय के साहित्यिक जीवन के विषय में संक्षेप में लिखें।

उत्तर— डॉ० भगवतशरण उपाध्याय का जन्म सन् १९१० में बलिया जिले के उजियार ग्राम में हुआ था। इन्होंने बनारस विश्वविद्यालय से प्राचीन इतिहास विषय में एम० ए० परीक्षा पास किया। ये संस्कृत साहित्य तथा पुरातत्त्व के सफल अध्येता एवं हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध प्रचारक रहे हैं। भारत के प्राचीन इतिहास एवं भारतीय संस्कृति का आपने विशेष रूप से अध्ययन किया है। क्रमशः पुरातत्त्व विभाग, प्रयाग संग्रहालय एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के अध्यक्ष रहकर पिलानी में बिड़ला महाविद्यालय में प्राध्यापक पद पर कार्य किया। तत्पश्चात् ये विक्रम विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के प्रोफेसर एवं अध्यापक पद पर कार्य कर अवकाश ग्रहण किए।

उपाध्यायजी ने कई बार यूरोप, अमरीका, चीन आदि विदेशों का भी भ्रमण किया। उन देशों में इन्होंने भारतीय संस्कृति एवं साहित्य पर बहुत से महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दिये। सौ से भी अधिक पुस्तकें लिखकर आपने हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने का सार्थक प्रयास किया है। आपकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि प्राचीन भारत के प्रमुख अध्येता एवं व्याख्याकार होते हुए भी आप संवादिता एवं परम्रावादिता से ऊपर हैं। वस्तुतः उपाध्यायजी अपने मौलिक एवं स्वतंत्र लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं-**विश्व साहित्य की रूपरेखा, साहित्य और कला के छींटे, इतिहास के पन्नों पर, कलकत्ता से पीकिंग, कुछ फीचर कुछ एकांकी, इतिहास साक्षी है, ठूँठा आम, सागर की लहरों पर, विश्व को एशिया की देन** एवं **इंडिया इन कालिदास** आदि। इनकी पुस्तकें विदेशों में बड़ी रूचि के साथ पढ़ी जाती हैं।

संकलित पाठ **अजन्ता** पुरातत्त्व सम्बन्धी लेख है, जिसमें लेखक ने अजन्ता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की गुफाओं की चित्रकारी और शिल्प के इतिहास एवं सौंदर्य का ही वर्णन नहीं किया है बल्कि दर्शक के मन पर पड़ने वाले उनके भावों को भी अपनी मनोरम शैली में प्रस्तुत कर दिया है।

प्रश्न २०— लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय के साहित्यिक जीवन के विषय में संक्षेप से लिखें।

उत्तर— लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय का जन्म ११ अगस्त, १६१४ को अलीगढ़ में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा अलीगढ़ के धर्म समाज कालेज में हुई। वहाँ से इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण करके १६३३ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में बी० ए० के छात्र होकर आये और यहीं से बी० ए० एम० ए०, डी० फिल० और डी० लिट्० की उपाधियाँ इन्होंने प्राप्त की। सन् १६४४ में इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन-कार्य प्रारम्भ किया।

डा० वार्ष्णेय के अध्ययन और लेखन का विशेष क्षेत्र साहित्य, इतिहास और आलोचना रहा है। ईसा की उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के हिन्दी साहित्य का इन्होंने विशेष रूप से अध्ययन किया है। इनके लिखे हुए अनेक निबन्ध ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और बीसवीं शताब्दीः हिन्दी साहित्यः इनके** ये दो ग्रंथ उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत हुए हैं। आलोचना के क्षेत्र में वार्ष्णेयजी ऐतिहासिक तथा समाजशास्त्रीय आलोचना के विशेषज्ञ माने जाते हैं। डा० वार्ष्णेय द्वारा प्रणीत लगभग २० ग्रंथ हैं जिसमें से **आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका, आधुनिक हिन्दी साहित्य, हिन्दी साहित्य का इतिहास, फोर्ट विलियम कालेज, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बीसवीं शताब्दीः हिन्दी साहित्यः नये सन्दर्भ** आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। डॉ० वार्ष्णेय की लेखन-शैली सरल और सुबोध है। ये मुहाबरेदार और सरल हिन्दी लिखने में विश्वास करते हैं और तत्सम शब्दों के अत्यधिक मोह में नहीं पड़ते। इनके विचारों में स्पष्टता रहती है। भावों की प्राञ्जलता एवं व्यंग्यात्मकता इनके निबन्धों में पायी जाती है।

प्रस्तुत साहित्य शीर्षक निबन्ध से साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। यह निबन्ध इनकी सरल और सर्वग्रास्य शैली का उत्तम उदाहरण है।

प्रश्न २१— श्री धर्मवीर भारती के साहित्यिक जीवन के विषय में संक्षेप से अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर— धर्मवीर भारतीय का जन्म २५ दिसम्बर सन् १६२६ को इलाहाबाद में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय लेकर एम० ए० और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पी-एच-डी० की उपाधियाँ प्राप्त की। आपने कुछ वर्षों तक वहीं से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक पत्र 'संगम' का भी संपादन किया। कुछ समय तक आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक भी रहे। सन् १९५९ से ये बम्बई से प्रकाशित होने वाले हिन्दी के प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र 'धर्मयुग' के संपादक रहे।

धर्मवीर भारती एक प्रतिभाशाली कवि, कथाकार एवं नाटककार हैं। आपकी कविताओं में सामाजिक तत्त्व की रमणीयता के साथ बौद्धिक उत्कर्ष की आभा झलकती है। कहानियों और उपन्यासों में आपने सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं को उठाते हुए कुछ बड़े ही जीवन्त चरित्र प्रस्तुत किये हैं। साथ ही समाज की विद्रूपता पर व्यंग्य करने की विलक्षण क्षमता भारतीजी में है।

भारतीजी की उल्लेखनीय कृतियों में **कनुप्रिया, ठंडा लोहा, अंधायुग** और **सात गीत वर्ष** (काव्य), **गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा** (उपन्यास) **नदी प्यासी थी** (नाटक) **कहनी-अनकहनी, ठेले पर हिमालय, पश्यंती** (निबन्ध संग्रह) हैं।

इसके अतिरिक्त विश्व की कुछ प्रसिद्ध भाषाओं की कविताओं का आपके द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद भी देशान्तर के नाम से प्रकाशित हुआ है।

सन् १९७२ में भारत सरकार ने भारती को 'पद्मश्री' की उपाधि से अलंकृत किया।

प्रस्तुत निबन्ध **ठेले पर हिमालय** में हिमालय की रमणीय शोभा का वर्णन है। शीर्षक की विचित्रता के साथ नैनीताल से कौसानी की यात्रा का वर्णन बहुत रोचक है और शैली में नवीनता इसका मुख्य कारण है।

प्रश्न २२— श्री जयप्रकाश भारती के साहित्यिक जीवन का संक्षेप में परिचय दीजिए।

उत्तर— जयप्रकाश भारती युवा पत्रकार और उदीयमान लेखक हैं। हिन्दी की साहित्यिक उपलब्धि में विविध वैज्ञानिक लेख प्रस्तुत करने में आपको विशेष सफलता और ख्याति मिली है। भारतीजी का जन्म मेरठ में हुआ। आपके पिता श्री रघुनाथसहाय एडवोकेट मेरठ के पुराने काँग्रेसी और समाजसेवी पुरुष हैं। भारती जी ने मेरठ में ही बी० एस-सी० तक अध्ययन किया। आपने छात्र जीवन में ही अनेक समाजसेवी संगठनों में प्रमुख रूप से भाग लेना आरम्भ कर दिया था। मेरठ में साक्षरता प्रसार के कार्य में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा। तथा वर्षों तक आपने निःशुल्क प्रौढ़ रात्रि-पाठशाला का संचालन किया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आपने 'सम्पादन कला विशारद' 'दैनिक प्रभात' (मेरठ) तथा 'नवभारत टाइम्स में पत्रकारिता का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। साक्षरता निकेतन में नवसाक्षर के लेखन का आपने विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। हिन्दी के पत्रकारिता-जगत् और किशोरोपयोगी वैज्ञानिक साहित्य के क्षेत्र को आपसे बहुत आशाएँ हैं।

आपकी अनेक पुस्तकें यूनेस्कों एवं भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत हैं। जैसे— हिमालय की कार, अनन्त आकाश, अथाह सागर (यूनेस्को द्वारा पुरस्कृत), विज्ञान की विभूतियाँ, देश हमारा देश हमारा, चलो चाँद पर चलें (भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत)।

आपकी अन्य भी प्रकाशित पुस्तकें हैं:—

अनेक वर्षों तक आप साप्ताहिक हिन्दुस्तान में सह-सम्पादक रहे। कुछ समय आप प्रसिद्ध बाल-पत्रिका नंदन के सम्पादक रहे। आपके लेख कहानियां; रिपोर्ताज सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। रेडियो पर भी आपकी वार्ताओं तथा रूपकों का प्रसारण हुआ है।

भारतीजी की भाषा सरल तथा शैंली रोचक है। विज्ञान की जानकारी को साधारण जनता और किशोर मानस तक पहुँचाने के लिए आप वर्णन को रोचक और नाटकीय बनाते हैं। आवश्यकता के अनुसार यद्यपि विज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग भी आप अपने लेखों में करते हैं फिर भी जटिलता नहीं आने पाती है। आपकी शैली में वर्णनात्मकता और चित्रात्मकता का संयोग रहता है। भारतीजी वैज्ञानिक प्रसंगों का यथाशक्य विवरण भी अपने लेखों में प्रस्तुत करते हैं किन्तु गम्भीरता नहीं आने देते। कवित्व का पुट देकर आप अपने निबन्धों को सरल बनाते हैं, साथ ही विज्ञान की यथार्थता की रक्षा भी करते हैं। वैज्ञानिक विषयों को हिन्दी में ढ़ालने के लिए आपने एक मार्ग दिखलाया है।

प्रस्तुत निबन्ध पानी में चंदा और चाँद पर आदमी में विचार-सामग्री, विवरण और इतिहास के साथ एक रोमांचक कथा का आनंन्द प्राप्त होता है। लेखक ने पृथ्वी और चन्द्रमा की दूरी चन्द्रयात्र और उसको ले जाने वाले अन्तरिक्ष-यान तथा चन्द्र-तल के वातावरण का सजीव परिचय प्रस्तुत किया है तथा अन्तरिक्ष-यात्रा का संक्षिप्त इतिहास भी प्रस्तुत किया है।

❑

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी साहित्य का परिचय

प्रश्न १— हिन्दी के निर्गुण भक्तिकाव्य का संक्षिप्त परिचय दीजिये।

उत्तर— सन्त काव्य परम्परा की दो काव्यधाराएँ स्वीकार की जाती निर्गुण भक्तिकाव्य और सगुण भक्ति काव्य। 'सन्त' शब्द को 'सत' शब्द व्युत्पन्न माना जाता है। 'अस्तीति सत्' यह सत् शब्द की व्युत्पति मानी जाती अर्थात् शास्त्रों में प्रतिपादित किये गये अर्थ सत्य हैं, इस तरह की भावना को सत्य माना जाती है। उपनिषद् कहती है— **'अस्ति ब्रह्मेति चेद्वेद सन्तमेनं त विदुः।'** अर्थात् ब्रह्म है (सत्य है) इस तरह से जानने वाले व्यक्ति को सन्त क हैं। ब्रह्म ही परमार्थ सत् है। उसकी प्राप्ति को अपने जीवन का चरम लक्ष्य ब वाले पुरुष सन्त हैं। ये सन्त दो प्रकार के उपासक भेदों में विभक्त हैं- स ब्रह्मोपासक और निर्गुण ब्रह्मोपासक अर्थात् जो सन्त ब्रह्म को निर्गुण मान उसकी उपासना करते हैं वे निर्गुण बह्मोपासक सन्त है। ब्रह्म का वर्णन करने उपनिषदों में दो प्रकार की श्रुतियाँ मिलती हैं। सगुण श्रुतियाँ और निर्गुण श्रु ब्रह्म को निर्गुण बतलाने वाली श्रुतियाँ हैः **'निर्गुणम् निर्विकारम्'** इत्यादि। अ ब्रह्म निर्गुण है तथा उसमे कोई भी विकार नहीं है। **'तत्त्वमसि'** श्रुति जीव ब्रह्म की एकता का प्रतिपादन करती हुई उसे सन्मा है। **'सदेवसौम्ये आसीदेकमेवाद्वितीयम्'** ज्ञानमार्गी सन्त कवियों ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना प्रचार किया। इन कवियों ने इस अर्थ का प्रतिपादन किया कि ज्ञान ही एक मुक्तिमार्ग का साधन है। ज्ञान को हि मुक्ति का साधन मा नने के कारण इन कवियों को ज्ञानाश्रयी शाखा का कवि कहा जाता है।

हिन्दी साहित्य काव्यधारा के क्षेत्र में सन्त कबीर को निर्गुणोपासना प्रवर्तक माना जाता है। कबीर दास आचार्य रामानंद के शिष्य माने जाते इन्होंने नाथपंथियों की योग साधना से तथा सूफी सन्तों से प्रभावित होकर स्वतन्त्र मत की कल्पना की। इस मत के कवियों की लम्बी परम्परा है। उन प्रभावित नानक, दादू, रैदास, गुलाल आदि कवि हुए। इन समस्त कवियों के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को सन्त मत तथा उनके द्वारा प्रणीत काव्यों को सन्तकाव्य कहा जाता है।

सन्त काव्य की विशेषताएँ— इन काव्यों में प्रतिपादित अर्थों की अपनी विशेषताएँ कुछ इस प्रकार की हैं।

१. निर्गुण- ब्रह्मोपासना २. दिखावटीपन की निन्दा ३. मुक्ति का साधन शास्त्रज्ञान नहीं ४. हिंसा की निन्दा ५. ईश्वर की अपेक्षा गुरु की महिमा का आधिक्य और ६. संसार की असारता।

प्रश्न २— हिन्दी साहित्य के सगुण भक्ति काव्य- धारा का परिचय दीजिये।

उत्तर— आत्मज्ञान, मोक्षप्राप्ति, ब्रह्मज्ञान आदि को अपने जीवन का लक्ष्य मानकर ही सन्त कवियों की प्रवृत्ति देखी जाती है। उपनिषदों का यह उद्घोष है।

'इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति नो चेदिहावेदीन् महती विनष्टिः।'

अर्थात् मानव जीवन को प्राप्त करके मानव जीवन के लक्ष्य स्वरूप ब्रह्म के स्वरूप, प्राप्ता जीव के स्वरूप तथा प्राप्य ब्रह्म के स्वरूप, ब्रह्म की प्राप्ति के साधन, ब्रह्म की प्राप्ति के प्रतिबन्धक आदि का ज्ञान जिसने प्राप्त कर लिया है उसका ही जीवन सफल है, अन्यथा जीवन की सबसे बड़ी क्षति हो गयी। यही मानव जीवन का चरम लक्ष्य है। इसी भावना से भावित सगुण भक्ति काव्यधारा के प्रवर्तक सन्तों ने ब्रह्म के सगुण रूप को अपना उपास्य माना है।

उपनिषदों की अनेक श्रुतियाँ है जो ब्रह्म के सगुण रूप का प्रतिपादन करती हैं। वे श्रुतियाँ हैं- **'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।'** अर्थात ब्रह्म ज्ञान स्वरूप सत्य स्वरूप एवं अन्नत स्वरूप है। **'यः सर्वज्ञः सर्ववित्' परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञान बालक्रिया च।'** 'जो ब्रह्म सर्वज्ञ है सर्ववेत्ता है, उसकी अनेक प्रकार की परा शक्तियाँ सुनी जाती हैं। उसकी ज्ञान और बल की क्रियाएँ स्वाभाविक हैं।' ये सभी श्रुतियाँ ब्रह्म के सगुण रूप का प्रतिपादन करती हैं।

सगुण ब्रह्म की उपासना को ही अपने जीवन का चरम लक्ष्य बनाकर प्रवृत्त होने वाले भक्त कवियों की काव्यधारा को सगुणभक्ति काव्यधारा के नाम से अभिहित किया जाता है।

हिन्दी कविता की सगुण भक्ति- काव्य धारा दो काव्यधाराओं में प्रवाहित हुई 'रामभक्ति काव्य धारा तथा कृष्णभक्ति काव्य धारा। रामभक्ति काव्यधारा के प्रवर्तक हिन्दी भाषा के कवियों में गोस्वामी तुलसीदास का नाम शीर्ष स्थान पर है और कृष्णभक्ति काव्यधारा के प्रवर्तक सन्त कवियों में शीर्ष स्थान पर नाम सूरदास जी का है। सगुणभक्ति काव्यधारा की समालोचना करते हुए आचार्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं।

जिस समय समसामयिक निर्गुण भक्त संसार की नश्वरता का उपदेश रहे थे और कृष्णभक्त कवि अपने आराध्य के मधुर रूप का आलम्बन ग्रहण जीवन और जगत में व्याप्त नैराश्य को दूर करने का प्रयास कर रहे थे, उस मर्यादा-पुरुषोतम श्री राम के शील, शक्ति और सौन्दर्य से संवलित अद्भुत का गुणगान करते हुए तुलसीदास जी ने लोकमंगल की साधनावस्था के पथ प्रशस्त किया।

सगुण-भक्तिकाव्यधारा की अपनी विशेषताएँ हैं। वे विशेषताएँ निम्नां हैं—

१: उपास्य के सगुण रूप की उपासना २. उपास्य के माध्यम से लोकम के पालन का उपदेश ३. काव्य के सौन्दर्य का संयत निरूपण ४. उपास्य सौन्दर्य-वर्णन के प्रति ललक ५. उपास्य के शौर्य- वीर्य का प्रकाशन ६. उप की भावना का संस्मरण तथा ७. काव्यपद्धति का पालन।

प्रश्न ३— हिन्दी साहित्य के भारतेन्दु युग का परिचय तथा महत्त्व बतला

उत्तर— हिन्दी साहित्य के इतिहास में भारतेन्दु युग पुनर्जागरण के नाम जाना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भारतेन्दु-युग का समय संवत् १९ से संवत् १९५० तक स्वीकार किया है। भारतेन्दु-युग के प्रमुख साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, चौधरी प्रेमधन प्रतापनारायण मिश्र, पं० अम्बिकादत्त आदि के नाम प्रख्यात है। इन सभी साहित्यकारों के साहित्य में राष्ट्रीय चेतन भाव विद्यमान हैं। 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन के पहले के इन साहित्यकारों रचनाओं में व्रजभाषा ही अभिव्यक्ति के माध्यम रूप से स्वीकार की गयी सामाजिक रूढियों तथा कुरीतियों के प्रति इन साहित्यकारों ने देशवासियों के में एक भावना का साहित्य के माध्यम से उद्रेक किया।

भारतेन्दु-युग की कविताओं में पायी जाने वाली विशेषताओं को प्रकार से अभिव्यक्त किया जा सकता है:

१. राष्ट्रीय भवना काउद्रेक २. सामाजिक कुरीतियों पर तीखा व्यंग्य भक्तिभावना का प्रचार ४. श्रृंगारिक भावना का प्राचूर्य ५. हास्य-व्यंग्य के पु प्राकृतिक वर्णन तथा ७. कला-प्रेम।

प्रश्न ४— हिन्दी साहित्य की द्विवेदी-युगीन काव्य धारा को निरूपित की

उत्तर— १८७५ ई० के विद्रोह के पश्चात् महारानी विक्टोरिया ने दम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और कूटनीति का रास्ते को छोड़कर १८५८ ईस्वी में सहृदयतापूर्ण घोषणाएँ की और भारतीयों की दयनीय स्थिति में सुधार लाया। उसके इस कार्य से भारतेन्दु-युगीन कवि उनकी प्रशस्ति का गान करते रहे, किन्तु उसका यह सुधार-कार्यक्रम बहुत दिनों तक नहीं चल सका। पुनः काले कानून पास हुए। जनता यातना के कोल्हू मे पिसती रही, जनजीवन मे असंतोष व्याप्त हो गया

भारतेन्दु-युगीन कवि तो अँगरेजों का गुणगान करके चुप हो गये थे। भारत का सम्पूर्ण कच्चा माल ब्रिटेन जाता था और वहाँ से तैयार माल आकर भारत में बिकता था। फलतः भारत के सम्पूर्ण उद्योग धन्धे चौपट हो रहे थे। इन सारी परिस्थितयों से युक्त परिवेश में द्विवेदी युगीन काव्यधारा प्रवाहित हुई। सन् १९००ईस्वी में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इस युग के काव्यधारा का नाम रखा गया। इस युग में हिन्दी का परिमार्जन हुआ। भाषा के रूप में खड़ी बोली स्वीकार की गयी। यह पुराने साहित्यिक अनुशासन का युग था।

द्विवेदी-युग के प्रमुख कवि— इस युग के कवियों मे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, रामनरेश त्रिपाठी, लाला भगवान दीन, कामताप्रसाद गुरु और गिरिधर शर्मा के नाम प्रख्यात हैं।

द्विवेदी-युग की काव्यगत विशेषताएँ— द्विवेदी-युगीन काव्यधारा का प्रारम्भ हिन्दीभाषा के परिष्कार, समाज में व्याप्त अत्याचार-अनाचार, घूसखोरी, रूढिवादिता, कूपमण्डूकता आदि के विरोध से हुआ इस युग की काव्यधारा की निम्नांकित विशेषताएँ थीं।

१. राष्ट्रीयता २. आदर्श एवं नैतिकता पर बल ३. मानववादी दृष्टिकोण ४.प्रकृति के प्रति आकर्षण ५. भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण ६. पाश्चात् अनुकरण तथा दिखवटी पन पर व्यंग्य ७. अनेक काव्य रूपों का प्रयोग ८. भाषा-परिर्वतन तथा ९. छन्दो वैविध्य।

प्रश्न ५— हिन्दी साहित्य के संस्मरण नामक गद्य विधा के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए ?

उत्तर— परिचय— सम् नामक गद्य विधा उपसर्ग पूर्वक 'स्मृ' धातु से भाव के अर्थ मे 'ल्यूट्' प्रत्यय करके "युवोर्नाकौ"(अष्टा०६-९-९) सूत्र से यु का अन करके संस्मरण शब्द व्युत्पन्न होता है। संस्मरण शब्द का शाब्दिक अर्थ अच्छी तरह से किया गया स्मरण है। स्पष्ट है कि संस्मरण में पूर्वानुभूतियों का संस्कार मूल में बना रहता है। अर्थात् संस्मरण संस्कारज ज्ञानजन्य होता है और उन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कारों का उन्मेष सादृश्य, अदृष्ट,चिन्तन तथा साहचर्य से होता है।

सदृशादृष्टचिन्ताद्याः स्मृतिबीजस्य बोधकाः

आधुनिक गद्यसाहित्य की विधाओं में संस्मरण अन्यतम विधा है। इस की उत्कृष्टता और लालित्य को सभी समीक्षकों ने स्वीकार किया है।

संस्मरण की परिभाषाएँ— संस्मरण को परिभाषित करते हुए डा० कृ शर्मा कहते हैं कि- 'संस्मरण लिखने वाला शब्दों द्वारा जीवन कि विविध घट व्यक्तियों और दृश्यो का ऐसा सजीव चित्र उपस्थित करता है कि पाठ सम्मुख वह व्यक्ति, वातावरण या प्रसंग साकार हो उठता है। गद्य में लिखे उसी शब्द- चित्र को संस्मरण कहते है।"

संस्मरण विधा का विकास— संस्मरण आधुनिक-गद्य साहित्य की एक उ एवं ललित विधा है। संस्मरण विधा का सूत्रपात सर्वप्रथम बाबू बालमुकुन्द गु सन् १६०७ में पं० प्रतापनारायण मिश्र का संस्मरण' लिखकर किया। इसकी विकास यात्रा सन् १६२० के पश्चात् शुरू हुई। इस विकास या माधुरी' तथा 'विशालभारत' नामक पत्रिकाओं ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रेमचन्द युग— इस युग मे कई प्रख्यात संस्मरण लेखक हुए हैं- पं० लाल' (बालकृष्ण भट्ट से सम्बन्धित संस्मरण 'विशल भारत') 'श्री अमृ चतुर्वेदी' (मेरे प्रारम्भिक जीवन की स्मृतियाँ), 'श्रीनिवास शास्त्री' जीवन-स्मृतियाँ),'गोपालराम गहमरी'(साहित्यिक संस्मरण), 'राजा राधिक सिंह'(साहित्यिक संस्मरण)। इसके साथ ही कुछ अन्य लेखकों ने भी सं लिखे हैं वे हैं- प्रेमनारायण टण्डन,श्रीराम शर्मा,रामवृक्ष बेनीपुरी, श्रीमती शि प्रेमचन्द आदि।

आधुनिक युग— इस युग के लेखकों ने अत्यन्त उत्कृष्ट कोटि के सं का सृजन किया। वे हैं- 'महादेवी वर्मा' (पथ के साथी), 'पं०श्रीनारायण च (गुप्त का हास्य-व्यंग्य), आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी (मृत्युञ्ज्यरवीन्द्र नाथ)'श्री सिंह' (शेष स्मृतियाँ)' 'अज्ञेय' (अरे यायावर रहेगा याद) आदि। इन लेख साथ ही जो नयी-नयी प्रतिभाएँ हिन्दी साहित्य की इस महत्त्वपूर्ण विधा को का कार्य कर रही हैं- वे हैं- डॉ०- हरिवंश राय बच्चन, डॉ० प्रभाकर डॉ० रघुवंश, डॉ० विद्यानिवास मिश्र, डॉ० विष्णुकान्त शास्त्री आदि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न ६— संस्मरण विधा की विशेषताओं को बतलाते हुए उसका आत्मकथा से अन्तर बताइये ?

उत्तर— संस्मरण कि विशेषताएँ— (१) स्मृति के आधार पर किसी विषय अथवा व्यक्ति के विषय में लिखित रचना को संस्मरण कहते हैं। (२) इसमें वर्ण्य विषय के साथ-साथ लेखक स्वयं भी अंकित होता रहता है। (३) संस्मरण में लेखक की तटस्थता नहीं हो पाती है। (४) संस्मरण में लेखक की अनुभूतियाँ भी वर्ण्य विषय के साथ जुडी रहती हैं। (५) संस्मरण में वर्ण्य विषय सदा पुर्वानुभूत होता है। (६) संस्मरण के लेखक मे संस्कारजन्य ज्ञान की प्रेरणा होती है। (७) संस्मरण कीं शैली निबन्ध के सदृश होता है। (८) संस्मरण विवेचनात्मक अधिक होती है। (९) कुछ समीक्षक संस्मरण का जीवनी साहित्य में अन्तर्भाव करते हैं।

आत्मकथा और संस्मरण में अन्तर— सामान्य तौर पर संस्मरण और आत्मकथा दोनों का आधार एक ही है। इसके बाद भी संस्मरण और आत्मकथा में कुछ भिन्नता है, जो इस प्रकार है।

(१) जब लेखक किसी दुसरे के विषय में कुछ लिखता है तो उसे संस्मरण कहते हैं परन्तु आत्मकथा मे लेखक स्वयं के बारे में लिखता है।

(२) संस्मरण में लेखक किंसी विशेष घटना या विशेष क्षण का उल्लेख करता है, परन्तु आत्मकथा में लेखक अपने जीवन के सभी पहलुओं के बारें में लिखता है।

(३) आत्मकथा में घटनाएँ अपने से सम्बन्धित होती हैं, जबकि संस्मरण में घटनाएँ बाह्य जगत् से सम्बन्धित होती हैं।

(४) आत्मकथा में लेखक के सामने स्वयं के बारे में लिखने में कुछ कठिनाई होती है, परन्तु संस्मरण में ऐसा कुछ भी नहीं होता है।

प्रश्न ७— हिन्दी साहित्य के रेखाचित्र नामक गद्यविधा का संक्षिप्त परिचय दीजिये ?

उत्तर— विभिन्न प्रकार की रेखाओं के द्वारा बनाये जाने वाले चित्र को रेखाचित्र कहते हैं। यह शब्दों की चित्रकला है। साहित्य में रेखाओं के स्थान पर शब्द का प्रयोग किया जाता है, अतएव कुछ विद्वानों ने इसे शब्दचित्र के नाम से भी अभिहित किया है। गद्य साहित्य की इस विधा मे किसी वस्तु अथवा व्यक्ति की विशेषताओं को अंकित करने का काम किया जाता है। इसके माध्यम से वर्ण्य विषय अथवा व्यक्ति के रूप-सौन्दर्य एवं विभिन्न परिस्थितियों में उसके द्वारा की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गयी चेष्टाओं का संवेदनशील चित्रांकन होता है। रेखाचित्र का वर्ण्य विषय पूर्वानु नहीं, अपितु अनुभूयमान होता है। रेखाचित्रकार ऐसे कलात्मक शब्दों का प्रयो करता है कि वह वर्ण्य विषय का साक्षात् रूप-सा खड़ा कर देता है।

प्रश्न ८— हिन्दी गद्य के रेडियो-नाटक के स्वरूप का वर्णन कीजिए?

उत्तर— परिचय— रेडियो के प्रचार-प्रसार के साथ ही रेडियो नाटक का प्रचार- प्रसार हुआ। ये नाटक ऐसे होते हैं कि इन नाटकों को केवल सुना सकता है, देखा नहीं ज़ा सकता है। रेडियो नाटक एक अथवा अनेक दृश्यों होता है; किन्तु इसमें छोटे-छोटे अनेक दृश्यों का अन्तर्भाव एक ही दृश्य में जाता है। यह रंगमंचीय नाटक से भिन्न प्रकार का होता है। इसमें केवल वाचि अभिनय होता हैऔर यह श्रव्य होता है। इसका कथानक सरल, संक्षिप्त प्रभावपूर्ण होता है। इसमें प्रासंगिक कथाओं का सन्निवेश नहीं होता, के आधिकारिक कथा ही अबाध रूप से चलती है। इसका प्ररम्भ भी मधुर अथवा सम्भाषण-पूर्वक होने के कारण कुतूहल वर्धक होता है इसके पात्र चरित्र सघन तथा आकर्षणवर्धक होता है। रेडियो नाटक मे स्थान और समय सानिध्य का बंधन नहीं होता। इसकी कथा आकाश, पाताल, पर्वत, सागर, मृत्यु और स्वर्ग लोक की भी हो सकती है। वाद्ययन्त्रों की सहायता से दृश्यान्तर बड़ी ही आसानी से प्रस्तुत किया जा सकता है, अतएव इसमें दृश्य का भी बन्धन नहीं होता। पात्रों के प्रवेश, निर्गम आदि की अभिव्यक्ति वाद्य के सहारे की जाती है।

प्रश्न ९— हिन्दी गद्य के रिपोर्ताज नामक विधा का संक्षिप्त परिचय दीजि

उत्तर— परिचय— रिपोर्ताज को हिन्दी में सूचनिका कहते हैं, किन्तु रिपोर्ता शब्द अधिक प्रचलित है। डॉ० भगीरथमिश्र रिपोर्ताज का परिचय देते हुए क है- "किसी घटना या दृश्य का अत्यन्त विस्तारपूर्ण सूक्ष्म रोचक विवरण प्रकार दिया जाता है कि वह हमारी आँखों के सामने प्रत्यक्ष हो जाय और उससे प्रभावित हो उठें।" बाबू गुलाबराय रिपोर्ताज के स्वरूप के विषय में क हैं कि "रिपोर्ट की भाँति वह घटनाओं का वर्णन तो अवश्य होता है; किन्तु उ लेखक के हृदय का निजी उत्साह रहता है, जो वस्तुगत सत्य पर बिना कि प्रकार का आवरण डाले उसे प्रभावमय बना देता है।"

रिपोर्ताज का मूल रूपसे सम्बन्ध पत्र-जगत से होता है, किन्तु उ साहित्यिकता बनी रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रिपोर्ताज के रूप— मुख्य रूप से रिपोर्ताज के दो रूप पाये जाते हैं—

(१) जो पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होता है,(२) साहित्यिक विधा- सम्पन्न। पत्र पत्रिकाओं में रिपोर्ताज केवल तथ्य- कथन स्वरूप होता है, जब कि साहित्यिक विधा वाले रिपोर्ताज में कथात्मकता, तथ्यात्मकता और कलात्मकता अनिवार्य रूप से पायी जाती है।

रिपोतार्ज में लेखक संवेदनशील साहित्यिक रूचि से सम्पन्न और मानवतावादी होता है। डॉ० रामचन्द्र तिवारी कहते हैं- 'जब सफल पत्रकार या साहित्यकार वास्तविक घटना को अपने भीतर निहित मूल्यों के अनुसार एक विशेष दृष्टि को उपस्थित करके प्रभावपूर्ण बना देता है तब वह रिपोर्ताज की सृष्टि करता है।'

रिपोर्ताज के स्वरूप को निरूपित करती हुई महादेवी वर्मा कहती हैं- "किसी आँखो देखी घटना के विस्तृत विवरण के संक्षिप्त तथा सरल शैली में प्रस्तुतीकरण को रिपोर्ताज की संज्ञा दी जाती है।" डॉ० रामविलास शर्मा कहते हैं कि- " किसी घटना या घटनाओं का ऐसा वर्णन है कि वस्तुगत सत्य पाठक के हृदय को प्रभावित कर सके,'रिपोर्ताज कहलायेगा।"

प्रश्न १०— हिन्दी साहित्य के इण्टरव्यू विधा का निरूपण कीजिए ?

उत्तर— अभी हाल में ही विकसित यह साहित्यिक विधा भी प्रचलित हो रही है। इसका हिन्दी शब्द साक्षात्कार है। जब कोई संवाददाता अथवा साहित्यकार अपने मनोनुकूल कुछ प्रश्नों को तैयार करके, उनके उत्तर के विषय में किसी राजनेता, विद्वान्, अनुभवी पुरुष अथवा साहित्यकार से साक्षात्कार करके उनके विषय मे उनके विचारों को जानने का प्रयास करता है,तो उसे उनका इण्टरव्यू अथवा साक्षात्कार कहते हैं। आजकल दूरदर्शन पर इस विधा को बहुत अधिक दिखाया जा रहा है और आकाशवाणी से उसे सुनाया जा रहा है। पत्रिकाओं में भी बड़े-बड़े लोगों का साक्षात्कार प्रकाशित होता है।

साक्षत्कार में कला, साहित्य, राजनीति, दर्शन, अध्यात्म या विज्ञान विषय के प्रख्यात विशेषज्ञ से मिलकर उठाये गये प्रश्नों का समाधान जाना जा सकता है, किन्तु वर्तमान काल में राजनीतिज्ञों का ही साक्षात्कार अधिक प्रचलित है।

साक्षात्कार में भाषा और शैली उसी व्यक्ति के होते हैं जिसका साक्षात्कार किया जा सकता है, उसके लिए यह कोई आवश्यक नहीं है की वह सभी प्रश्नों का उत्तर दे ही, वह उसे टाल भी दे सकता है, अथवा मुस्कुराहट मात्र से प्रष्टा के अभिप्रेत अर्थ को सकार या नाकार भी सकता है। आकाशवाणी से आजकल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रायः प्रतिदिन एकाध साक्षात्कार सुनाए जाते हैं। टी० वी० (दूरदर्शन) पर इ पहले की अपेक्षा अधिक दिखाया जाता है। पत्र-पत्रिकाएँ भी साक्षात्कार को स्थ देने लगी हैं।

ग्रन्थों के रूप में भी कुछ वास्तविक और कुछ काल्पनिक इण्टरव्यू प्रकाशि हुए हैं- कमलेश ने 'मै इनसे मिला' नामक ग्रन्थ को दो भागों में प्रकाशित कि है। शरच्चन्द्र जैन के भी कुछ काल्पनिक साक्षात्कार प्रकाशित हुए हैं।

इस तरह यह साहित्यिक विधा नवीन तथा आकर्षक विधा है। इसके द्व पाठकों, दर्शकों तथा श्रोताओं को विभिन्न विषयों के बड़े-बड़े लोगों के वि पढ़ने, देखने और सुनने को मिल जाते हैं।

प्रश्न ११— हिन्दी साहित्य की जीवनी विधा का परिचय दीजिए?

उत्तर— जीवनी साहित्य की वह विधा है जिसमे लेखक तटस्थ भाव से कि महानुभाव या प्रख्यात पुरुष अथवा किसी राजनेता के जीवन पर प्रकाश डा है। जीवनी में लेखक अपनी भावनाओं का सम्मिश्रण नहीं करता, वह किसी व्यक्ति विशेष के जीवन की जन्म से लेकर मृत्यु तक की सभी प्रकार की घटना पर प्रकाश डालता है।

जीवनी पर प्रकाश डालते हुए डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत का कहना है कि "जीवन कथा वह साहित्यिक विधा है जिसमें भावुक कलाकार किसी व्यक्ति सम्पूर्ण जीवन का या उसके जीवन के किसी भाग का वर्णन परम सुपरिचित से इस प्रकार व्यक्त करता है कि उस व्यक्ति की सच्ची जीवन गाथा के साथ-स कलाकार-हृदय भी मुखरित हो उठता है।"

डॉ० भगवानूशरण भारद्वाज कहते है- "जीवनी-चरित्र व्यक्ति विशेष जीवन या अभिलेख या कलाकृति के रूप मे प्रणीत किसी व्यक्ति का सत्यता आलेख है, जिसमें जीवन के माध्यम से किसी आत्मा के जीवन का प्रामाणिक प्रस्तुत किया जाता है।"

जीवनी के तत्त्व— विद्वानों ने जीवनी को कहानी और उपन्यास के अ निकट की वस्तु स्वीकार किया है, अतः जो तत्त्व कहानी और उपन्यास आवश्यक होते हैं उन्ही तत्त्वों को जीवनी में भी होना चाहिए। जीवनी के तत्त्व माने गये हैं।

(१) घटना (२) चरित्र (३) देशकाल (४) उद्देश्य और (५) भाषा शैली।

जीवनी की विशेषताएँ— डॉ० भगवान शरण भारद्वाज ने जीवनी की निम्न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सात विषेशताओं का निर्देश किया है।

(१) ऐतिहासिक सत्यता (२) तटस्थता (३) वैज्ञानिकता (४) मनोदशा का विश्लेषण (५) साहित्यिकता (६) मानवीयता एवं (७) देशकाल।

जीवनी के भेद— वर्ण्य विषय तथ चरितनायक के आधार पर जीवनी को चार भागों में बाँटा गया है-

(१) धार्मिक महापुरुषों की जीवनी (२) राजनीतिक महापुरुषों की जीवनी (३) साहित्यिक महापुरुषों की जीवनी एवं (४) विदेशी महापुरुषों की जीवनियाँ।

प्रश्न १२— हिन्दी साहित्य के डायरी गद्य विधा का निरूपण कीजिए ?

उत्तर— 'डायरी' शब्द अगँरेजी के डायस शब्दसे बना है। डायरी किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत सम्पत्ति होती है, लेकिन जन मानस के सामने आ जाने पर अपने सार्वजनिक तत्त्व के कारण यह साहित्य की दुनिया की सम्पत्ति बन जाती है। डायरी- लेखक जितना ही अधिक प्रतिभाशाली और लोकविख्यात व्यक्ति होगा उसकी डायरी का मूल्य भी उतना ही अधिक होगा। डायरी में दिन, तिथि, सन् और संवत् के साथ- साथ जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन रहता है। सामान्य तौर पर तो सभी व्यक्तियों के जीवन मे कोई न कोई घटना होती रहती है। सामान्य व्यक्ति तो थोड़े समय बाद उसे भूल जाता है, परन्तु कलाकार तथा विवेकशील पुरुष एकान्त में उन घटनाओं के बारे में सोचता है और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए आतुर होजाता है। यही आतुरता की स्थिति डायरी लेखन की शैली को जन्म देती है। "किसी दैनिक घटना के सम्बन्ध में अपने मन के उधेड़बुन के व्यक्त करने के लिए 'डायरी' सर्वोत्तम माध्यम है। डायरी के द्वारा लेखक के व्यक्तित्व के बारे में आसानी से जाना जा सकता है। क्योंकि लेखक डायरी में अपने विचारों को स्वतन्त्र रूप से लिखता है।"

पाश्चात्य समीक्षकों ने डायरी के दो भेद बताये हैं (१) व्यक्तिनिष्ठ एवं (२) वस्तुनिष्ठ। व्यक्तिनिष्ठ डायरी में किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्त्व का चित्रण होता है और वस्तुनिष्ठ में मानव- जीवन के किसी विशेष समय या किसी वर्गविशेष का वर्णन रहता है। सामान्य रूप से डायरी के ये दोनों रूप परस्पर में मिलते-जुलते है व्यक्ति-प्रधान डायरी पूर्णतः घटना शून्य नहीं होता और घटना प्रधान डायरी में प्यक्ति पूर्णतः अनुपस्थित नहीं हो सकता।

डायरी गद्य-साहित्य की एक विधा है और अभिव्यक्ति की एक शैली है। जब डायरी में लेखक के निजी जीवन का वर्णन होता है तब वह एक विधा के रूप

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

में होती है। जब कोई काल्पनिक कहानी या उपन्यास डायरी शैली में लिखा जा है तब वह मात्र एक शैली होती है। लेखक घटनाओं को विश्वसनीय और प्रभावशा बनाने की दृष्टि से तिथि और स्थान का भी निर्देश करते हैं। उदाहरण के तौर डॉ० देवराज का 'अजय की डायरी' के नाम से डायरी शैली में लिखा ग उपन्यास उल्लेखनीय है।

डायरी आत्मकथा का ही बदला हुआ एक रूप है। आत्मकथा में लेख अपने बीते हुए काल पर अधिक परिपक्व व तटस्थ रूप से विचार करता है डायरी में खास तौर पर तात्कालिक घटनाओं को ही लिखा जाता है और कभी-क बीती हुई बातों का भी वर्णन किया जाता है। हिन्दी में स्वतन्त्र कृति के रूप डायरी का लेखन नाम मात्र भर हुआ है।

सुन्दरलाल कृत 'दैनन्दिनी'(१९४५ ई०), डॉ० धीरेन्द्र वर्मा कृत 'मे कालिज डायरी' (१९४५ई०), घनश्यामदास बिडला कृत'डायरी के पन्ने सियारामशरण गुप्त रचित 'दैनिकी' जैसी इनी-गिनी रचनाएँ ही उपलब्ध हैं। लेखकों में लक्ष्मीकान्त वर्मा, नरेश मेहता और अजित कुमार ने भी डायरि लिखी है। यदा-कदा- पत्र-पत्रिकाओं में किसी पुराने साहित्यकार की डायरी प्रमुख अंश भी प्रकाशित होते रहे हैं। हिन्दी की कुछ डायरियों को साहित्यक ने स्वयम् लिखकर गणमान्य व्यक्तियों की डायरी लिखी है। इस प्रकार के लेख के प्रेरणास्रोत महात्मा गाँधी थे। वे डायरी को पहरेदार मानते थे। गाँधी युग डायरी-लेखको में महादेव देशाई, जमनलाल बजाज, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, सुशी नायर, मनु बहन आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

हिन्दी में डायरी-विधा विकास के पथ पर अग्रसर होती जा रही है। इस के कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक हैं- पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी गजानन, माधवमुक्तिबोध, प्रभाकर माचवे, अमृतराय, धर्मवीर भारती, राजकम चौधरी, मोहन राकेश और अजित कुमार।

प्रश्न १३— हिन्दी साहित्य के यात्रा-साहित्य का निरूपण कीजिए ?

उत्तर— यात्रा शब्द या धातु से बना है। यात्रा का वास्तविक अर्थ एक स्था से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया है। यात्रा के कई उददेश्य होते हैं- मनोरंज तीर्थ-दर्शन, भ्रमण, प्रकृति-सौन्दर्य- निरीक्षण-मिलना जुलना तथा धर्म-साध आदि। इन्हीं उद्देश्यों से सम्बन्धित यात्राओं का लिखित रूप में वर्णन ही साहित्य कहलाता है। दूसरे शब्दों में भारतीय साहित्य में यात्रा वृत्तान्तों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिपिबद्ध साहित्यिक एवं कलामय वर्णन ही यात्रा साहित्य कहलाता है।

डॉ० रामचन्द्र तिवारी यात्रा साहित्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं- "यात्रा वृतान्तों में देश-विदेश के प्राकृतिक दृश्यों की रमणीयता, नर नारियों के विविध जीवन-सन्दर्भ, प्राचीन एवं नवीन सौन्दर्य चेतना की प्रतीक कला-कृतियों की भव्यता तथा मानवीय सभ्यता के विकास के द्योतक अनेक वस्तु-चित्र यायावर के मानस में रूपायित होकर वैयक्तिक रागात्मक ऊष्मा से दीप्त हो जाते हैं। लेखक अपने बिम्ब-विधयिनी कल्पना-शक्ति से उन्हें पुनः मूर्त करके पाठकों की जिज्ञासा-वृत्ति को तृप्त कर देता है।"

यात्रा साहित्य के भेद— भारतीय साहित्य के दृष्टि से यात्रा-साहित्य में कुछ तत्त्वों का होना अनिवार्य है। वे हैं- स्थानीयता, तथ्यात्मकता, आत्मीयता, वैयक्तिकता, रोचकता, काल्पनिकता तथा संवेदनशीलता आदि।

उद्देश्यों एवं लक्ष्यों के आधर पर डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत ने यात्रा साहित्य के पाँच भेदो को निर्देशित किया है। वे हैं—

१- सूचना एवं विवरण-प्रधान यात्रा-वृत्त
२- प्रकृति के संसर्ग से उद्भूत उल्लासाधृत यात्रा-वृत्त
३- जीवन-दर्शन का संकेत करने वाले यात्रा-वृत्त
४- डायरी के रूप में संस्करणात्मक यात्रा-वृत्त
५-व्यक्तिगत पत्रों के रूप में लिखे गये यात्रा-वृत्त।

हिन्दी यात्रा— साहित्य का उद्भव और विकास-हिन्दी यात्रा साहित्य के उद्भव और विकास के बारे में डॉ० पद्मसिंह शर्मा कमलेश का मत है कि- "जहाँ तक यात्रा-साहित्य का सम्बन्ध है, उसका उदय साहित्य की अन्य विधाओं के साथ अँगरेजी के पठन-पाठंन के साथ प्ररम्भ हुआ है। वैसे मध्य युग में यात्रा का उद्देश्य मात्र तिर्थ-दर्शन होता था। यह बात व्रजभाषा में उपलव्ध कुछ हस्तलिखित ग्रन्थों से सिद्ध होता है। ये सभी यात्राएँ चम्पू-शैली मे लिखी गयी है और उनकी शैली वर्णनात्मक है।

हिन्दी यात्रा साहित्य की विकास यात्रा को हम निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत देख सकते हैं।

१. भारतेन्दु युगीन यात्रा-साहित्य २. द्विवेदी-युगीन यात्रा-साहित्य ३. पूर्व-स्वातन्त्र्य-युगीन यात्रा-साहित्य ४. स्वातन्त्र्योत्तर-युगीन यात्रा-साहित्य।

निष्कर्ष— आधुनिक युग का लेखक यात्रा-साहित्य को अत्यन्त सहज रूप-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राग-रंग में रँगते हुए परिपक्वता की ओर अग्रसर करने का कार्य कर रहा है। यात्रा-साहित्य का भविष्य अत्यन्त उत्कृष्ट एवं विकसित है।

आधुनिक यात्रा— साहित्य का अध्ययन करने पर पाठक के अशेष आन… की अनुभूति होती है। आधुनिक यात्रा साहित्य हिन्दी की अत्यन्त उत्कृष्ट वि… है। सरसता एवं रोचकता की दृष्टि से आधुनिक यात्रा साहित्य प्रायः उपन्या… और कहानी के समकक्ष है।

प्रश्न १४— हिन्दी गद्य साहित्य के पत्र-साहित्य की स्थिति बतलाइये।

उत्तर— सामान्यतः पत्र एक ऐसा लेख है जो दूर रहने वाले किसी व्यक्ति… भेजा जाता है। अँगरेजी शब्दकोश में पत्र की परिभाषा इस प्रकार है- (दूर… व्यक्ति को वैयक्तिक वृत्तान्त लिखकर प्रेषित किया गया लेख ही पत्र कहलाता है।

हिन्दी साहित्य में सामान्य रूप में 'पत्र साहित्य' का आशय उन पत्रों से… जिन में साहित्यकार अपने दैनिक जीवन की समस्याओं, जीवन दर्शन आदि… समावेश करके लिखता है।

पत्र लिखने की प्रथा नयी नही है, परन्तु पत्र साहित्य हिन्दी गद्य साहित्य… नवीनतम विधाओं में से एक है। अखबारों तथा मैगजीन को समाचार प… पाक्षिक पत्र, मासिक पत्र कहा जाता है; क्योंकि इनमें भी बहुत सी बातों… सम्प्रेषण का भाव होता है:

पत्र साहित्य के भेद— साहित्य की दृष्टि से पत्र दो प्रकार के होते हैं:

१- प्रकाशनार्थ पत्र

२- अनौपचारिक पत्र

१- प्रकाशनार्थ पत्र— इस प्रकार के पत्रों में लेखक द्वारा प्रकाशन के उ… से पत्र- पत्रिकाओं के सम्पादकों को पत्र लिखे जाते हैं। इन पत्रिकाओं के … लोकवाणी 'सम्पादक के नाम पत्र' चिट्ठी मिली' आदि नाम से होते हैं, जि… पाठकों और साहित्यकारों के पत्र प्रकाशित होते हैं। वे पत्र पूरी तरह से वि… और प्रयास करके लिखे जाते हैं। इसलिए उन्हें औपचारिक पत्रों की श्रेणी… रखा जाता है। इसके अतिरिक्त इस श्रेणी में सम्पादक द्वारा पाठक और ले… दोनों को लिखे जाने वाले पत्र भी शामिल किये जाते हैं।

२-अनौपचारिक पत्र— अनौपचारिक पत्र पत्र- साहित्य के प्राण होते… इन पत्रों में पत्र लेखक को उसके द्वारा लिखे गये व्यक्तिगत पत्रों के प्रकाशन… आशय नही होता है। पुस्तक के रूप में छपे हुए निराला, पन्त आदि के पत्र…

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनौपचारिक हैं। निराला के पत्रों की महत्ता के सम्बन्ध में जानकी बल्लभ शास्त्री का मत है कि-"ये पत्र कोई लेख या किताब छापने के लिए प्रश्न पूछ-पूछकर अनौपचारिक प्रश्न के उत्तर में लिखवाये हुए नही हैं। अत्यधिक सहजता ही इनकी मौलिक विशेषता है। इनमें अविकल राग- विराग, हर्ष-विषाद, कठोरता-विह्वलता सब निराला की भिन्न- भिन्न मनः स्थितियों के निर्विकार- विकार, निश्चल-चाचंल्य, असाधारण-साधारण एवं अक्लिष्ट- ऋजुता के प्रतिमान है।

उपसंहार— निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि किसी व्यक्ति के जीवन और व्यक्तित्व को समझने के लिए उसके पत्र एक महत्त्वपूर्ण सूत्र हैं। इसलिए पत्र साहित्य का महत्त्व असंदिग्ध है। कुछ उपन्यास, निबन्ध, कहानियाँ आदि भी पत्र शैली में लिखी जाती हैं। बालमुकुन्द गुप्त के"शिवशम्भु के चिट्ठे' तथा विश्वम्भर शर्मा'कौशिक' की 'दुबेजी की चिट्ठी' पत्र- शैली मे रची रचनाएँ है। इस प्रकार हिन्दी की यह नवीनतम गद्य-विधा अब समृद्ध होने लगी है और इसका भविष्य उज्ज्वल है। विद्वानों और साहित्यकारों के पत्रों के संकलन और सम्पादन का और अधिक प्रयास करना आवश्यक है।

प्रश्न १५— हिन्दी में आत्मकथा गद्य-विधा का अवदान बतलाइये ?

उत्तर— संस्मरण और जीवनी के सदृश ही'आत्मकथा ' भी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। आत्मकथा का शाब्दिक अर्थ है- अपनी कथा। इसमें लेखक अपने जीवन का सिंहावलोकन करता है। अर्थात् जिस साहित्य-विधा में लेखक स्वयं हि अपना जीवनवृत्त प्रस्तुत करे, उसे' आत्मकथा' कहते हैं। जीवनी की अपेक्षा' आत्मकथा' अधिक व्यक्तिनिष्ठ और विषयनिष्ठ होती है।

आत्मकथा के उद्देश्य— आत्मकथा लिखने के प्रायः दो उद्देश्य होते हैं:-

लेखक द्वारा आत्मनिरक्षण करना और (२) अपने बीते हुए दिनों की यादों को कुरेदकर फिर से ताजा करना।

आत्मकथा के तत्त्व— डॉ० देवीशरण रस्तोगी ने आत्मकथा के चार आवश्यक तत्त्वो का निर्देश किया है।

१-तटस्थता २-मानवीय आस्था३- देशकाल- वातावरण की पकड़ ४-घटना की पकड़।

आत्मकथा के प्रकार— हिन्दी में आत्मकथा साहित्य का निर्माण अभी बहुत कम मात्रा में हुआ है, फिर भी उनका अभाव नहीं प्रतीत होता है। डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत ने आत्मकथा साहित्य को तीन भागों में विभक्त किया हैः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१- धार्मिक प्रवृत्ति– प्रधान आत्मकथाएँ २- राजनीति प्रवृत्ति–प्रधान आत्मकथाएँ और ३- कलाकारों की आत्मकथाएँ।

हिन्दी आत्मकथा का उद्भव और विकास– हिन्दी आत्मकथा साहित्य का जन्म लगभग ३०० वर्ष पहले हुआ। हिन्दी की सबसे प्राचीन और पहली आत्मकथा सन् १६४१ मे बनारसीदास जैन द्वारा रचित 'अर्द्ध-कथा' है। डाँ० रामचन्द्र तिवारी के मतानुसार यहीं से आत्मकथा-लेखन का कार्य प्रारम्भ हुआ। लेकिन अधिकांश विद्वान् आत्मकथा का विकास काल भारतेन्दुकाल से मानते हैं।

आत्मकथा के विकास को हम निम्न प्रकार से देख सकते है:

(१) भारतेन्दु-काल (२) पूर्व स्वातन्त्र्य युग (३) स्वातन्त्र्योत्तर युग

उपसंहार– आज हिन्दी आत्मकथा साहित्य के विकास की गति बड़ी तेजी से बढ़ रही है। आत्मकथा में व्यक्ति चाहते हुए भी अपने बारे में लिखने में संकोच करता है,फिर भी डाँ० राजेन्द्र प्रसाद,गुलाबराय, श्यामसुन्दरदास, हरिवंशराय बच्चन आदि आत्मकथाकारों ने आत्मकथाएँ लिखकर इस विधा को गतिशील बनाया है। आधुनिक युग में सर्वश्रेष्ठ आत्मकथा बच्चन जी की स्वीकारी जाती है।

प्रश्न १६– हिन्दी आलोचना के क्षेत्र मे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का अवदान बतलाइये ?

उत्तर– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में आने से पहले ही हिन्दी आलोचना अपनी जड़ जमाने लग गयी थी। हरिश्चन्द्र भारतेन्दु शास्त्रीय पद्धति से दूर हट कर नवीन नाटकों का निर्माण करने लग गये थे। की भावनाएँ और समस्याएँ बदल चुकी थीं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' नामक पत्रिका के माध्यम से हिन्दी आलोचना का मार्ग प्रशस्त कर रहे थे। उसके पश्चात् आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी वैदुष्यपूर्ण प्रतिभा समीक्षा के स्फीतालोक में समीक्षा के ध्वान्ताच्छन्न पथ को आलोकित किया। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं।–

"शुक्ल जी ने हिन्दी समीक्षा में क्रान्तिकारी परिर्वतन किया। वे नये युग के विधायक थे।"

आचार्य शुक्ल की समीक्षा को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है– सैद्धान्तिक समीक्षा एवं व्यावहारिक समीक्षा। इनकी सैद्धान्तिक समीक्षा की निम्नांकित विशेषताएँ है।

शुक्ल जी आलोचना का मानदण्ड भारतीय रसवाद को मानते हैं। नैतिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संयम एवं आदर्श पर उन्होंने विशेष रूप से बल दिया है। उनका रसवाद शिवत्व (लोक - कल्याण की भावना) से अनुप्राणित है। वे रस के अवयवों की व्याख्या में अपनी मौलिकता की छाप लगाते हैं। रस के अवयवीभूत विभावादिकों की व्याख्या वे अपने ढंग से करते है।

"शुक्ल जी की सबसे बडी विशेषता है समीक्षा के सब अंगो का समान रूप से विन्यास। अन्य प्रान्तीय भाषाओं में समीक्षा के किसी एक अंग को लेकर शुक्ल जी की टक्कर लेने वाले अथवा उनसे विशेषता रखने वाले समीक्षक मिल सकते हैं, पर सब अंगो का समान विकास उनका-सा कोई कर सकता है, मैं नहीं जानता। वे आलोचक या समीक्षक मात्र नहीं थे, सच्चे अर्थों में साहित्य के आचार्य थे।" डॉ० नगेन्द्र लिखते हैं- "आचार्य रामचन्द्रशुक्ल के विषय में कदाचित् यह कहना अत्युक्ति नही होगी कि उनके समान मेघावी आलोचक किसी भी आधुनिक भारतीय भाषा में नहीं है।" आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उनके समीक्षक रूप की विशेषता बतलाते हुए लिखा है "आचार्य शुक्ल उन महिमाशाली लेखकों में हैं जिनकी प्रत्येक पंक्ति आदर के साथ पढी जाती है। पं० रामचन्द्र शुक्ल सच्चे अर्थों मे आचार्य थे।"

प्रश्न १७— आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में अवदान बतलाइये?

उत्तर— आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का हिन्दी समालोचन के क्षेत्र मे पदार्पण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के पश्चात् हुआ। छायावादी काव्यधारा के यथार्थ मूल्यांकन का कार्य स्वच्छन्दतावादी समीक्षा पद्धति ने किया। इस पद्धति के प्रमुख समीक्षकों में वाजपेयी जी अन्यतम हैं। वाजपेयी जी ने आलोचना के लिए किसी पृथक् ग्रन्थ का निर्माण नही किया, अपितु उनके आलोचना विषयक विचार यत्र- तत्र विकीर्ण पड़े हैं। उनका मानना था कि पुर्वाग्रह और द्विवेदी-युगीन संस्कारों से संस्कृत आचार्य शुक्ल हिन्दी काव्य के साथ न्याय नहीं कर सके, अपितु इसके लिए आलोचना की नयी कसौटी होनी चाहिए। डॉ० भगवत्स्वरूप मिश्र इसी बात की ओर इंगित करते हैं-" वाजपेयी जी ने शुक्ल जी के प्रबन्ध- काव्यवाद तथा मर्यादावाद के कठोर नियन्त्रण से हिन्दी समीक्षा को मुक्ति दिलायी है।"

उपसंहार— आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी का हिन्दी समीक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा अवदान यह है कि उन्होंने हिन्दी साहित्य-मर्यादा को सुरक्षा प्रदान की और अतिवादों से बचते हुए भारतीय साहित्यशास्त्र की मान्यताओं को समुन्नत किया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न १८— हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का अवदान बतलाइये?

उत्तर— आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के प्रख्यात समीक्षकों में अन्यतम हैं। हिन्दी साहित्य समालोचना के क्षेत्र में आचार्य द्विवेदी का योगदान है। हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में इनका पदार्पण वाजपेयी जी के पश्चात् हुआ। आचार्य द्विवेदी कारयित्री तथा भावयित्री दोनों प्रतिभाओं के धनी थे। एक ही व्यक्ति में इन दोनों प्रतिभाओं का पाया जाना बड़ा ही कठिन होता है। यह देखा जाता है कि कोई साहित्य का स्रष्टा भी होता है और साहित्य समीक्षक भी। उनके 'साहित्य का धर्म' और 'साहित्य का साथी ' आदि ग्रन्थ यदि उनकी भावयित्री प्रतिभा के प्रमाण हैं तो कुटज, अशोक के फूल, बाणभट्ट की आत्मकथा आदि कृतियाँ उनकी कारयित्री प्रतिभा का प्रमाण हैं।

हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने एक नवीन कार्य किया कि उन्होंने हिन्दी काव्यरूप के विकास की विस्तृत विवेचना की। उनसे पूर्व किसी भी दूसरे आचार्य ने इस कार्य को नहीं किया था। उन्होंने हिन्दी साहित्य के साथ भारत की अन्य प्रान्तीय भाषाओं का भी संबन्ध जोड़ा और उनकी तुलनात्मक विवचेना की। कहना न होगा कि आचार्य द्विवेदी ने हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में अपनी चतुरस्र प्रतिभा का औदात्यपूर्ण भरपूर उपयोग किया।

प्रश्न १९— हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में आचार्य नगेन्द्र का अवदान बतलाइये?

उत्तर— हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में डॉ० नगेन्द्र के अनेक रूप दृष्टिगत होते हैं। वे कवि भी हैं और आलोचक भी तथा निबन्धकार भी। किन्तु सभी क्षेत्रों में उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। वे सर्वत्र अन्यों से पृथक् प्रतीत होते हैं। उनका सर्वप्रथम साहित्यिक जगत् से परिचय कवि के रूप में हुआ। उनका 'वनमाला' नामक कविताओं का संग्रह-ग्रन्थ सन् १९३७ में प्रकाशित हुआ। 'साहित्य-सन्देश' नामक पत्रिका में प्रकाशित अपने निबन्धों के कारण पाठकों का ध्यान डॉ० नगेन्द्र की ओर गया। उनकी 'सुमित्रानन्दन पन्त', 'साकेत-एक अध्ययन' तथा 'आधुनिक हिन्दी नाटक' ये तीन आलोचनात्मक कृतियाँ प्रकाशित हुईं। डॉ० नगेन्द्र अंग्रेजी के समालोचकों की कृतियों से बहुत प्रभावित हैं। 'साकेत-एक अध्ययन' नामक पुस्तक में उनकी इस मनोवृत्ति का स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है। वे अपनी कृतियों को उच्चस्तरीय समीक्षा-कृतियों के रूप में उपस्थापित करना चाहते थे।

डॉ० नगेन्द्र की 'आधुनिक हिन्दी नाटक' नामक कृति के अध्ययन से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है कि फ्रायड के मनोविश्लेषण के आधार पर डॉ० नगेन्द्र ने आधुनिक नाटकों एवं नाटककारों की समीक्षा की। इसके पश्चात् वे क्रोचे के फलस्वरूप सैद्धान्तिक आलोचना की ओर प्रवृत्त हुए। "रीति-काव्य की भूमिका तथा देव और उनकी कविता" अपने शोध-प्रबन्ध के भूमिका भाग में उन्होंने भारतीय काव्यशास्त्र का विस्तृत विचार किया। इस भाग में उन्होंने फ्रायड के मनोविश्लेषण शास्त्र से काफी सहायता प्राप्त की है।

प्रश्न २०— छायावाद के नामकरण की समीक्षा कीजिए।

उत्तर— छायावाद का नामकरण समीक्षकों की दृष्टि में— 'छायावाद' यह नाम, कहा जाता है कि, श्री मुकुटधर पाण्डेय का दिया हुआ है। समीक्षकों ने इस साहित्य के वाद की बड़ी चर्चा की है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मानना था कि "छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझाना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में..............छायावाद का दूसरा प्रयोग काव्यशैली या पद्धति के व्यापक अर्थ में है।" छायावाद की विशद विवेचना करते हुए आचार्य शुक्ल ने कहा- पुराने ईसाई सन्तों के छायाभास (फैंटासमेटा) तथा योरोपीय काव्य-क्षेत्र में प्रवर्तित आध्यात्मिक प्रतीकवाद के अनुकरण पर रची जाने के कारण बंगाल में ऐसी कविताएँ छायावाद कही जाने लगी थीं।

(क) हिन्दी के प्रख्यात विद्वान् डॉ० गुलाबराय के अनुसार, "छायावाद में द्विवेदी-युग की इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया हुई है।"

(ख) डॉ० नगेन्द्र के शब्दों में, "स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह छायावाद का आधार है। डॉ० रामविलास शर्मा के मतानुसार तो "छायावाद हिन्दी साहित्य के रोमांटिक धारा है। वह मूलतः रीतिकालीन परम्परा का विरोधी है। वह एक मानवतावादी धारा है, जिसका एक कमजोर पक्ष रहस्यवाद भी है।"

(ग) जयशंकर प्रसाद के अनुसार, "कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुन्दरी के वाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतियों की अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया।"

(घ) महादेवी वर्मा कहती हैं, "मनुष्य का हृदय अपनी अभिव्यक्ति के लिए आकुल उठा, तो स्वच्छन्द छन्द में चित्रित उन मानव-अनुभूतियों का नाम छायावाद उपयुक्त ही था और मुझे तो आज भी उपयुक्त लगता है।" एक जगह वे गद्य की विवेचना में कहती हैं, 'छायावाद प्रकृति के बीच में जीवन का उद्गीथ है।'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ङ) डॉ० रामसजन पाण्डेय का कहना है, "छायावाद द्विवेदी-युगीन कवि की स्थूलता के प्रति विद्रोह है। वह अनेक प्रकार की भावभूमियों और विचार-भूमि की सुन्दर स्थली है। उसमें लोक के उदात्त और मंगल-विधायक भावों का दर्श है और वह शिल्पगत अनेकानेक नव्य पटलों के उत्कलन से भी सम्पन्न है।"

छायावादी प्रमुख कवि— हिन्दी में छायावाद का काल द्विवेदी-युग के पश्च स्वीकार किया जाता है। इस वाद की कविताओं के प्रणेता कवियों में मुख्य रूप निम्नांकित कवियों का नाम लिया जाता है। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पन्त महाप्राण निराला, महादेवी वर्मा, भगवतीचरण वर्मा, रामकुमार वर्मा आदि हैं।

छायावाद की विशेषताएँ— छायावाद की कविता में सभी स्तरों पर विच की अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता देखने को मिलती है। इस वाद की कविताओं में निम्नांकित विशेषताओं को रेखाचित्र कह सकते हैं।

प्रश्न २१— हिन्दी के प्रगतिवाद का परिचय दीजिए।

उत्तर— प्रगति शब्द उन्नति का वाचक है। जिसके द्वारा वस्तु के गुण अथ परिमाण में वृद्धि हो उस प्रगति के आधान को प्रगति कहते हैं। प्रगतिवाद परम्परा मान्यताओं, रूढ़ियों अथवा नियमों आदि में विश्वास नहीं करता। वह सब देश, काल एवं परिस्थिति की कसौटी पर परख कर ही उसका हान अथ उपादान करना चाहता है। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा प्रगतिवाद का परिचय उपस्थि करते हुए हिन्दी साहित्य कोषः भाग एक में लिखते हैं-

"प्रगतिवाद का अभिप्राय उस साहित्यिक वाद से है जिसमें मानव उसकी यथार्थ दशा से अवगत करने के अनन्तर प्रगति अथवा उत्कर्ष की प्रे दी जाती है। इस प्रकार प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थवाद के नाम पर चलाया वह साहित्यिक आन्दोलन है जिसमें जीवन और यथार्थ के वस्तु-सत्य उत्तर-छायावाद-काल में प्रश्रय मिला और जिसने यथार्थवाद की ओर स साहित्यिक चेतना के अग्रसर होने की प्रेरणा दी।"

प्रगतिवाद की विशेषताएँ— साहित्यिक प्रगतिवाद ने एक नई आभा के समाज में पदार्पण किया। अपने 'महाजनी सभ्यता' नामक निबन्ध में प्रेमचन्द लिखा कि सभी कामों की गरज महज पैसा है। किसी भी देश में राज्य इस कहा जाता है कि पूँजीपतियों को अधिक से अधिक पैसों का लाभ हो। समाज दो भागों में विभक्त है: पूँजीपति वर्ग और निर्धन वर्ग। पूँजीपति निर्धन वर्ग के प्रति निष्ठुर है। उसके मन में किसी भी प्रकार की ममता नहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निर्धन वर्ग ही देश का सबसे बड़ा वर्ग है। पूँजीपति वर्ग की संख्या बहुत छोटी है किन्तु उसी का प्रशासन चलता है।

प्रश्न २२— हिन्दी साहित्य के प्रयोगवाद का परिचय दीजिए।

उत्तर— हिन्दी साहित्य के विकास की एक परम्परा है, जो उत्तरोत्तर अग्रसरित होती आयी है। भारतेन्दु-युग के पश्चात् द्विवेदी-युग आया, उसके पश्चात् छायावाद का प्रचार हुआ। उसके पश्चात् कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रभावित होकर प्रगतिवाद का पूर्ण प्रचार हुआ। राजनीति में साम्यवाद का यशोगान करने वाले प्रगतिवाद को अपना आधार बनाकर साहित्य के प्रांगण में प्रयोगवाद का आगमन हुआ। इस प्रयोगवाद का प्रारम्भ अज्ञेय द्वारा सम्पादित सन् १९४३ में प्रकाशित 'काव्य-संग्रह' 'तारसप्तक' से हुआ। इस वाद को प्रयोगवाद इसलिए कहा गया कि इसमें अज्ञेय ने बार-बार प्रयोग शब्द का प्रयोग किया। अज्ञेय स्वयं कहते हैं-

"प्रयोग सभी कालों के कवियों ने किया है। यद्यपि किसी विशेष दशा में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्वाभाविक ही है, किन्तु कवि क्रमशः अनुभव करता आया है, जिन क्षेत्रों में प्रयोग हुए हैं उनसे आगे बढ़कर अब उन क्षेत्रों का अन्वेषण करना चाहिए जिन्हें नहीं छुआ गया या अभेद्य मान लिया गया है।"

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार— "प्रयोगवादी साहित्यकार से साधारणतः उस व्यक्ति का बोध होता है, जिसकी रचना में कोई तात्त्विक अनुभूति, कोई स्वाभाविक क्रम-विकास, या कोई सुनिश्चित व्यक्तित्व न हो- स्रष्टा या संदेश-वाहक न होकर वह प्रणेता व प्रवक्ता मात्र होता है।'

डॉ० शम्भुनाथ सिंह कहते हैं— "प्रयोगवाद वह काव्य-साधना है, जिसके द्वारा कवि अपने पूर्व की समस्त ग्राह्य परम्परा को स्वीकार करता हुआ भी पूर्ववर्ती कविता से अपने को भिन्न रखे हुए उसमें नीवनता का पुट देता है।"

समीक्षकों का मानना है कि (१) प्रयोगवाद के मूल में जो वस्तु जैसी है, उसको उसी रूप में पाठकों तक पहुँचाने की प्रवृत्ति (२) बौद्धिकता का बाहुल्य (३) प्राचीन मान्यताओं की अवहेलना की भावना, उनके स्थान पर नवीन वस्तु एवं शिल्प की स्थापना, तथा (४) क्षणिक अनुभूतियों के सम्मान की भावना विद्यमान रहती है।

प्रयोगवाद के कवियों में सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन, 'अज्ञेय', डॉ० रामविलास शर्मा, नेमिचन्द्र जैन, डॉ० प्रभाकर माचवे तथा भारतभूषण अग्रवाल आदि कवियों के नाम प्रख्यात हैं। 'अज्ञेय' के 'तारसप्तक' को सुमित्रानन्दन पन्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने 'प्रयोगशील कविता का सर्वप्रथम संग्रह' कहा।

प्रश्न २३– हिन्दी की नयी कविता का परिचय दीजिए।

उत्तर– १६५० के लगभग कविता के क्षेत्र में प्रयोगवाद की छवि धूमिल हो लगी थी। १६५४ ई० के आते-आते लोगों ने तात्कालिक कविता की धारा का नाम बदल डाला और उसे नयी कविता के नाम से अभिहित करने लगे। इस नयी कविता के नामकरण के विषय में विचारकों के परस्पर विरोध दो तरह के विचार सामने आये। कुछ विचारकों का मानना था कि नयी कविता और प्रयोगवादी कविता दोनों एक ही काव्यधारा के नाम हैं। इस प्रकार की धारणाओं के विचारकों में अन्यतम डॉ० रमाशंकर तिवारी का कहना है कि "नयी कविता और प्रयोगवाद में किसी सर्वमान्य विभाजक रेखा का खींचना सम्भव नहीं है। प्रयोगवाद के अन्तर्गत कतिपय सूत्रों के अनुसार नयी कविताओं की कोटियाँ अवश्य निर्धारित की जाती हैं, और प्रयोगवादी काव्य की विकास-सरणियों का अनुसन्धान किया जा सकता है। किन्तु नयी कविता समझी जानने वाली कुछ विशिष्ट कविताओं तथा उनके कवियों को प्रयोग की शासन-सत्ता से पृथक् एवं सिद्ध करने का प्रयास समीचीन नहीं समझा जायेगा।"

किन्तु डॉ० शम्भुनाथ सिंह का मानना है कि प्रभावशाली कविता तथा नयी कविता पृथक्-पृथक् दो काव्य-धाराएँ हैं। उन दोनों को एक नहीं माना जा सकता है। वे दोनों का पार्थक्य सिद्ध करते हुए कहते हैं- "कुछ लोग नयी कविता को आज भी प्रयोगवादी कविता कहते हैं। किन्तु उनका यह भ्रम है। प्रयोगवाद और नयी कविता का संबन्ध वही है जो द्विवेदी-युगीन कविता और छायावाद का। प्रयोगवाद और नयी कविता में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि प्रयोगवाद द्वन्द्व और प्रतिक्रिया की कविता है, किन्तु नयी कविता संश्लेषण और सामंजस्य की कविता है। यद्यपि प्रयोगवाद की भाँति नयी कविता में भी क्रान्ति की दशा निर्धारित और निर्दिष्ट है।" नयी कविता की आधारभूत विशेषता यह है कि वह किसी दर्शन के साथ बँधी हुई नहीं है। वह वर्तमान जीवन में समस्त स्तरों के यथार्थ को नयी भाषा, नवीन अभिव्यंजना-विधान और नवीन अभिव्यक्ति-कला के साथ प्रकट करती है। प्रयोगवादी कविता के समान नयी कविता समस्त प्राचीन मूल्यों को अस्वीकार नहीं करती, अपितु वह उन्हें नवीन रूप में उपस्थापित करती है। उसमें लक्ष्यप्राप्ति जैसा स्थैर्य एवं संवेदना तथा शिल्प दोनों की नवीनता है। प्रयोगवादी कविता के समान भाव तथा शिल्प की जटिलता नहीं है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नयी कविता की सामान्य विशेषताएँ— जिस तरह प्रगतिवादी कविता की पृष्ठभूमि पर प्रयोगवादी कविता का सूत्रपात हुआ, उसी तरह प्रयागवादी कविता को अपना आधार बनाकर साहित्य के क्षेत्र में नयी कविता का प्रादुर्भाव हुआ। अतएव नयी कविता में अनेक ऐसी विशेषताएँ थीं जो प्रयोगवादी कविता में विद्यमान थी। नयी कविता की विशेषताओं को निम्नांकित शीर्षकों में विभक्त किया जा सकता है।

प्रश्न २४— साठोत्तरी कविता के विभिन्न रूपों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर— (१) अकविता— यह कविता साठोत्तरी कविता का सर्वाधिक प्रख्यात रूप है। इस कविता-रूप के प्रवर्तक डॉ० श्याम परमार हैं। यह प्रौढ़ मानसिकता तथा नैसर्गिक स्पन्दन से जन्य कविता का रूप है। इसमें पाये जाते हैं- अन्तर्विरोध ों की गवेषणा, विभाजित व्यक्तित्व के उन्मोचन आदि।

(२) अगीत— श्री रंगनाथ मिश्र 'सत्य' ने इस गीत को जन्म दिया। अगीत का विश्लेषण करते हुए लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय लिखते हैं- "उसकी दृष्टि में जीवन की मार्मिक पुकार है। वह अपने को किसी वाद के खूँटे से न बाँधकर विश्वपरिवार का एक सदस्य मानता है, किन्तु रूढ़ि के प्रति मोह न होने के कारण, उसमें अन्तर्द्वन्द्व और विद्रोह की भावना है।.......................वह स्वस्थ्य व्यक्ति में स्वस्थ्य मन और आधुनिकता के सभी स्वस्थ्य पक्षों के समर्थन का हामी है।"

(३) नवगीत— साठोत्तरी कविता के इस नाम के प्रवर्तक अज्ञेय हैं, इस बात को डॉ० शम्भुनाथ सिंह मानते हैं। डॉ० शम्भुनाथ चतुर्वेदी कहते हैं-- 'नवगीतकार गाने के लिए भावातिरेक के कारण और मन को बहलाने के लिए भी गीतों की रचना नहीं करता। वह चिंतन के लिए, विचार-स्तर पर अपनी प्रस्थापना के लिए और बुद्धि को कुरेदने के लिए गीतों की रचना करता है। उसके गीत न नींद की गोलियाँ हैं, और न क्लोरोफार्म या मार्फिया के इन्जेक्शन। उसके गीत तो यथार्थ को स्वीकारने वाले, विवेक को जागृत करने वाले, शारीरिक और मानसिक सामर्थ्य के प्रतीक कैप्सूल हैं।

(४) विचार-कविता— इस बौद्धिकता के युग में सभी बौद्धिक होने के लिए बाध्य हैं। सम्पूर्ण संसार के सम्पूर्ण छोटे-बड़े अवयव बौद्धिकता की ओर अग्रसर हैं। इस युग का कवि भी भावाभिभूत कम और बौद्धिक अधिक है। उसकी कविता भी विचार-प्रधान और दर्शन-बोझिल है। इसलिए यह कविता विचार-कविता कही जाती है। इस कविता में वैचारिकता की प्रधानता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(५) बीट कविता— अमरीकी बीटनिक प्रभाव से बीट कविता का उदय हुआ। इस कविता के प्रवर्तक प्रभाकर माचवे आदि हैं।

(६) ताज़ी कविता— साठोत्तरी कविता के युग के कुछ कवियों की धारणा थी कि नयी कविता तो यातयाम हो गयी है; उसमें कुछ भी नयापन रह ही नहीं गया है। नयी कविता की प्रतिस्थापन के रूप में ताजी कविता उदित हुई। इस काव्यान्दोलन का समर्थक लक्ष्मीकान्त वर्मा को स्वीकार किया जाता है।

(७) प्रतिबद्ध कविता— जनवादी मंच से सम्बद्ध कवियों ने पूँजीवाद के विरुद्ध जिस काव्यान्दोलन को प्रारम्भ किया उसकी अभिव्यक्ति साठोत्तरी कविता की प्रतिबद्ध कविता के रूप में हुई। इस कविता के प्रवर्तक परमानन्द श्रीवास्तव को स्वीकार किया जाता है। डॉ० श्रीवास्तव कहते हैं- 'जो लोग किसी किस्म की प्रतिबद्धता को स्वीकार नहीं करते, वे झूठा संघर्ष रचते हैं और उसमें मजा लेते हैं।" इस कविता का लक्ष्य पूँजीवादी व्यवस्था की अमानवीय भावना के विरुद्ध संघर्ष है।

(८) सहज कविता— साठोत्तरी कविता का एक काव्यरूप सहज कविता है। इस कविता के प्रवर्तक के रूप में डॉ० रवीन्द्र भ्रमर को स्वीकार किया जाता है। कविता को नये ढंग से गवेषणा जिसमें अनुभूति तथा अभिव्यक्ति दोनों में सहजता हो, सहज कविता है।

(९) अस्वीकृत कविता— साठोत्तरी कविता-शृंखला में यह एक ऐसी कविता है, जिसमें यौनविकृतियों का वर्चस्व है। इस कविता के प्रवर्तक श्रीराम शुक्ल हैं। उन्होंने जुलाई १९६६ में उत्कर्ष के अंक में 'मेरी हुई औरत के साथ सम्भोग' शीर्षक से एक लम्बी कविता प्रकाशित की। यहीं से अस्वीकृत कविता का प्रारम्भ हुआ। श्रीराम शुक्ल के अनुसार- "सत्य को सत्य न कह पाने की विषमता कभी न कभी अवरोध तोड़कर वह निकलती है और तभी अस्वीकृत कविता का जन्म होता है।"

(१०) युयुत्सावादी कविता— साठोत्तरी कविता के अनेक रूपों में युयुत्सावादी कविता अन्यतम है। इसका प्रवर्तक 'शलभ' श्रीराम सिंह को स्वीकार किया जाता है। 'योद्धुमिच्छा' अर्थात् युद्ध करने की इच्छा को ही युयुत्सा कहते हैं। यह इस नाम का व्युपत्तिलभ्य अर्थ है। इस कविता में संघर्ष अथवा प्रतिकार की भावना की प्रचलता है। डॉ० विमल पाण्डेय ने इसे 'एंग्री यंग मैन' से संबद्ध माना है।

(११) सनातन-सूर्योदयी कविता— जिस तरह सूर्योदय होते ही अन्धकार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विनष्ट हो जाता है, स्वच्छ प्रकाश का प्रसार होता है, उसी तरह से वर्तमान युग का मानव पतन, पराजय, कुण्ठा, आत्मपीड़ा आदि के अन्धतमस् में भटक रहा है। उसे आवश्यकता है प्रकाश की जिससे कि वह अपना मार्ग प्रशस्त कर सके। इसी भावना से अभिभूत होकर सन् १९६२ ई० के मार्च में 'भारती' के अंग द्वारा वीरेन्द्रकुमार जैन ने सनातन सूर्योदयी कविता का उद्घोष किया। उनका अभिप्राय है अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली कविता। उपनिषद् की 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' श्रुति से प्रभावित श्री जैन ने इस का अभिधान किया है। किन्तु उनके द्वारा कविता के नाम में सनातन पद का सन्निवेश कुछ अनमेल सा प्रतीत होता है यह भी संभव है कि शब्द-चमत्कार के व्यामोह में उन्होंने सनातन पद का प्रयोग कर दिया हो। किन्तु उसकी अन्विति नहीं बैठती है।

प्रश्न २५— हिन्दी की प्रथम कहानी के विषय में अपनी राय लिखिए।

उत्तर— हिन्दी की पहली कहानी के विषय में विचारकों का मतभेद है। कुछ आलोचक इन्साअल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' को हिन्दी की प्रथम कहानी मानते हैं और कुछ लोग किशोरी लाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' को हिन्दी की पहली कहानी मानते हैं। कुछ लोग रामचन्द्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' तथा जयशंकर प्रसाद की 'ग्राम्य जीवन' को हिन्दी की पहली कहानी मानते हैं।

प्रश्न २६— हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द के अवदान का मूल्यांकन कीजिये।

उत्तर— मुन्शी प्रेमचन्द को हिन्दी उपन्यास का सम्राट् कहा जाता है। उन्होंने उपन्यास के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान किया है। उनके द्वारा लिखित उपन्यासों में गबन, गोदान, रंगभूमि तथा कर्मभूमि आदि प्रख्यात हैं। इन उपन्यासों में मुन्शी प्रेमचन्द ने ग्राम्य जीवन का सफल चित्रण किया है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में यथार्थता के पुट सन्निहित रहते हैं।

प्रश्न २७— हिन्दी कहानी का इतिहास बतलाइये।

उत्तर— कहा जाता है कि हिन्दी कहानी का इतिहास उतना ही पुराना है जितना पुराना आदि मानव। यह भी निश्चित है कि सृष्टि के प्रारम्भ में भी कहानी किसी न किसी रूप में अवश्य रही होगी। संस्कृत साहित्य में कथासाहित्य का इतिहास बड़ा ही पुराना है। संस्कृत साहित्य के कथासरित्सागर और पंचतंत्र अत्यन्त प्राचीन कथा साहित्य के ग्रन्थ हैं।। उसी का विकास 'वेताल पच्चीसी' तथा 'सिंहासन बत्तीसी' के रूप में हुआ। इसके पश्चात् कहानी का विकास आज

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तक होता चला आ रहा है।

प्रश्न २८— हिन्दी नाट्य के विकास के क्रम का उल्लेख कीजिए।

उत्तर— यद्यपि संस्कृत साहित्य में नाट्य साहित्य की लम्बी तथा प्राचीन परम्परा है। नाट्य साहित्य को ही सुव्यवस्थित करने के लिए भरत मुनि नाट्यशास्त्र जैसे विशालकालय ग्रन्थ का निर्माण किया। हिन्दी साहित्य में नाट्य का प्रारम्भ भारतेन्दु युग से माना जाता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ही सर्व हिन्दी के मौलिक नाटकों का प्रणयन किया और दूसरों को भी नाटक लिखने लिए प्रेरित किया। कुछ समालोचकों का मानना है कि सर्वप्रथम भारतेन्दु हरिश्च के पिता ने नहुष नामक हिन्दी नाटक लिखा।

प्रश्न २९— हिन्दी के निबन्ध के साहित्य के विकासक्रम को संक्षेप लिखिये।

उत्तर— निबन्ध साहित्य की एक नवीन विधा है। इसके विकास का प्रा भारतेन्दु युग से होता है। भारतेन्दु युग के निबन्धकारों में बालकृष्णभट्ट, प्रतापनारा मिश्र आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। हिन्दी साहित्य के निबन्ध विधा का सम्पु विकास का काल, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के युग से आया है। इस का पूर्ण विकसित रूप आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के युग में हुआ। चिन्तामणि आचार्य शुक्ल के निबन्धों का नाम आज भी बड़े आदर के साथ लिया जाता

प्रश्न ३०— हिन्दी एकांकी के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिये।

उत्तर— हिन्दी एकांकी भी हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं के समान नवीन विधा है। इसका सूत्रपात यद्यपि भारतेन्दु युग में ही हो गया था उसका वास्तविक रूप सहृदयों के समक्ष प्रसाद प्रणीत 'एक घूंट' के रू उपस्थित हुआ। डॉ० रामकुमार वर्मा ने हिन्दी की इस विधा को पूर्णता प्रदान

हिन्दी एकांकीकारों में डॉ० रामकुमार वर्मा, जगदीश चन्द्र माथुर, भ चरण वर्मा आदि साहित्यकारों के नाम प्रमुख रूप से लिए जाते हैं। कुछ समी का मानना है कि डॉ० रामकुमार वर्मा ने सर्वप्रथम हिन्दी एकांकी का प्र किया।

प्रश्न ३१— आधुनिक हिन्दी गद्य के विकास की संक्षेप में रूपरेखा प्र कीजिए।

उत्तर— हिन्दी गद्य साहित्य के विकास को निम्नांकित नव चरणों में सम ने विभाजित किया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१) व्रजभाषा तथा राजस्थानी गद्य का युग— इस युग की हिन्दी में गद्य के प्राचीनतम रूप के दर्शन होते हैं। 'चौरासी वैष्णवों का वार्ता' तथा 'शृंगार रस मण्डल' हिन्दी के इसी युग की प्रख्यात रचनायें हैं।

(२) प्रारम्भिक हिन्दी युग— इस युग के हिन्दी गद्य में खड़ी बोली के पुट आने लगे थे। दौलतराम का पद्मपुराण इसी युग की हिन्दी गद्य रचना है।

(३) चतुःस्तम्भ युग— इस युग के हिन्दी गद्य के उन्नायकों में चार विद्वानों का नाम प्रधान रूप से लिया जाता है। इन्शा अल्ला खाँ, लल्लू लाल, सदल मिश्र तथा सदासुख लाल इस युग की हिन्दी के ये चार स्तम्भ माने जाते हैं।

(४) भारतेन्दु पूर्व युग— इस युग में राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द, एवं राजा लक्ष्मण सिंह जैसे राजाओं ने हिन्दी को आश्रय दिया। 'इतिहास तिमिर नाशक' राजा 'शिवप्रसाद सितारे' हिन्दी की रचना है। राजा लक्ष्मणसिंह ने 'अभिज्ञान शाकुन्तल' हिन्दी में लिखा।

(५) भारतेन्दु युग— भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने व्रजभाषा से अलग हटकर हिन्दी गद्य को नया रूप दिया। वस्तुतः इनके ही समय से हिन्दी गद्य विधा अपने वास्तविक रूप में उभड़ी।

(६) द्विवेदी युग— आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने उस खड़ी बोली के रूप को सजाया, सँवारा और स्थिर किया जिस हिन्दी को भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने खड़ी बोली का रूप दिया था। इस युग में खड़ी बोली की गद्यविधा का रूप स्थिर सा हो गया। इस युग के प्रधान गद्य-लेखकों में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू गुलाबराय, जयशंकर प्रसाद आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

(७) शुक्ल युग— आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के नाम पर हिन्दी के इस युग का नाम पड़ा। श्री शुक्ल जी ने हिन्दी को परिनिष्ठित रूप प्रदान किया। इस युग के प्रधान लेखकों में डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ० रामकुमार वर्मा तथा, महादेवी वर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

(८) शुक्लोत्तर युग— इस युग में हिन्दी की अनेक विधाएँ सामने आयीं संस्मरण, रेखाचित्र, डायरी-विधा, यात्रा-वृत्तान्त, आदि इसी युग के गद्य साहित्य की विधायें हैं।

(९) स्वातन्त्र्योत्तर युग— इस युग में हिन्दी गद्य साहित्य के क्षेत्र में अनेक प्रकार के परिवर्तन हुए। नयी कहानी, नयी आलोचना तथा प्रतीकात्मक साहित्य इसी युग की देन हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इस तरह स्पष्ट है कि हिन्दी गद्य-विधा अपना चरणबद्ध विकास करती आज अपने पूर्ण विकसित रूप में जन-सामान्य के समक्ष आयी है।

रक्तरेखा नाटक

प्रश्न १— रक्तरेखा नाटक के दाहर नामक पात्र का चरित्र-चित्रण कीजि

उत्तर— दाहर रक्तरेखा नाटक का एक महत्त्वपूर्ण पुरुष पात्र है। यह सिंध राजा और जाति का ब्राह्मण है। यह स्वभाव से धीर प्रशान्त नायक है। वह देश गौरव को बनाये रखना चाहता है उसके चरित्र की निम्नांकित विशेषताएँ हैं।

(१) प्रकृति-प्रेमी— दाहर सिंध राज्य का प्रशासक है। वह स्वभाव से प्रकृति- तथा काव्य प्रेमी है। वह मानता है की मनुष्य का राजा होना सौभाग्य नहीं अ दुर्भाग्य है। राजा होने पर उसका अपना अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। बनना सबके भाग्य में नहीं होता।

(२) भौतिकता से विरक्ति— दाहर की उक्तियों से प्रतीत होता है कि वैभव में विश्वास नहीं रखता। वह जानता है कि लक्ष्मी का नशा मानव को बना देता है। वह कहता है 'लक्ष्मी का मोह नशा है, पागलपन है, मूर्खता है।'

(३) सहृदयता— राजा स्वभावतः प्रकृति प्रिय एवं काव्य जगत् की मानसि से युक्त होने के कारण सहृदय हृदय है।

(४) समान्य जनता के प्रति सहानुभूति की भावना— राजा दाहर अ प्रजा के प्रति सहानुभूति रखता है। वह प्रजा के दुख को सुनकर दुःखी होता वह कहता है— 'मेरे प्राणों में मेरे राज्य की सम्पूर्ण प्रजा की भावनाएँ नि करती हैं— मैं भावनाओं से व्याकुल हो जाने वाले हृदय का दास हूँ।'

(५) देश की अखण्डता में विश्वास— दाहर यद्यपि एक राज्य का रा लेकिन वह हृदय से चाहता है कि सम्पूर्ण भारतवर्ष एक अखण्ड राज्य चाहिए। जिस तरह शरीर के सभी अंगों की स्वस्थता के साथ-साथ शरीर की स्वस्थता आवश्यक है, उसी तरह छोटे-छोटे राज्यों की दृढ़ता के साथ ही दे आखण्डता भी आवश्यक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(६) **युवा शक्ति का सम्मान**— दाहर मानता है कि देश को सुरक्षित रखने के लिए युवा शक्ति का सहयोग आवश्यक है। 'देश की तरुणाई की भुजाएँ फड़क रही हैं। हमें तरुणाई के मार्ग का रोड़ा नहीं बनना चाहिए, नहीं तो तरुणाई हमारे ही विरुद्ध विद्रोह करेगी।' उसकी यह उक्ति ही सिद्ध कर देती है कि राष्ट्र की उन्नति में युवा शक्ति का सहयोग बहुत आवश्यक मानता है।

(७) **गुणग्राहिता**— दाहर एक गुणज्ञ पुरुष है। वह शत्रुओं के भी गुणों की प्रसन्शा खुले मन से करता है। वह श्रीलंका के बन्दी से कहता है— 'मैं तुम्हारी दृढ़ता से प्रसन्न हूँ, यदि तुमने भारत में जन्म लिया होता, तो तुम्हारी दृढ़ता किसी भले काम में लगती।'

(८) **देशभक्त**— दाहर सिन्ध देश का राजा है, फिर भी उसमें राष्ट्र की भक्ति कूट-कूट कर भरी हुई है। वह अपने देश की संस्कृति और परम्परा का सम्मान करता है। वह कहता है— 'देश का गौरव ही मेरा गौरव है। मैं उसी के लिए जी रहा हूँ और उसी के लिए मरूँगा।'

(९) **कर्त्तव्यनिष्ठ**— दाहर अपने कर्त्तव्य के पालन में विश्वास करता है। वह अपराधी को दण्ड देना अपना कर्त्तव्य समझता है। वह कहता है— 'एक भारतीय भी यदि देश के लिए लोहा ले रहा है, तो समझो भारत लोहा ले रहा है। मेरे बन्धु! बलिदान व्यर्थ नहीं जाता।'

(१०) **नारी के प्रति सम्मान की भावना**— दाहर के हृदय में नारी जगत् के प्रति अगाध स्नेह और सम्मान की भावना है। वह उसे अपमानित होते हुए नहीं देख सकता। वह प्रत्येक भारतीय नारी को देवी का अवतार मानता है।

(११) **सभी धर्मों के प्रति सहानुभूति**— राजा दाहर अपने धर्म का तो सम्मान करता ही है। उसके अतिरिक्त अन्य धर्मों की भी अच्छाइयों का वह आदर करता है, वह कहता है— 'तुम्हारे जैसे नीच लोग ही संसार में इस्लाम को बदनाम करते हैं। संसार का कोई भी धर्म यह नहीं कहता की पुरुष स्त्रियों की इज्जत लूटता फिरे।'

प्रश्न २— रक्तरेखा के क्षपाकर नामक पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर— सिन्ध देश के राजा दाहर के मंत्री क्षपाकर के चरित्र की विशेषताओं को, निम्नांकित शीर्षकों के माध्यम से देखा जा सकता है—

(१) **निर्भीकता**— क्षपाकर राजा दाहर का एक निर्भीक मंत्री है। विचार-विर्मश के समय वह अपने पक्ष की पुष्टि पूर्ण निर्भीकता से करता है। वह राजा से कहता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

है कि– राजा को कवि नहीं, अपितु प्रशासक होना चाहिए। यदि राजा वैभव को पागलपन मानता है तो उसे अपने सिर पर राजमुकुट नहीं रखना चाहिए।

(२) उचित परिस्थिति का ज्ञान– क्षपाकर इस बात को अच्छी तरह जानता है कि किसी भी राजा को किसी परिस्थिति में शत्रु से युद्ध करना चाहिए और किस परिस्थिति में नहीं। वह बार-बार राजा को भी इस विषय में परामर्श देता है। वह कहता है– 'किन्तु यथार्थ से, वास्तविकता से हमे आँख नहीं मूंदनी चाहिए। परिस्थितियाँ हमारे प्रतिकूल हैं, वीरता में अप्रतिम होते हुए भी हम अरबों से संघर्ष और संग्राम करके विजय प्राप्त नहीं कर सकते हैं।'

(३) मर्यादा का पालक– क्षपाकर भारतीय संस्कृति एवं मर्यादा का ध्यान रखने वाला मंत्री है। वह चाहता है कि सभी लोग अपनी परम्परा और संस्कृति के अनुकूल अपना जीवन बितायें। वह कहता है– 'सबको अपने विश्वास, परम्परा और संस्कृति के अनुसार जीवन यापन करने का अधिकार है।'

(४) कर्त्तव्यनिष्ठा– क्षपाकर राजा का मंत्री और राजा का भक्त दोनों है। सदा राजा के कल्याण की चिन्ता करता था। वह कहता है– 'मैं तो कहूँगा अपना सिन्ध भी कहाँ अपने कर्त्तव्य को पूरी तरह से समझ पाता है ? राजा क्या सोचता है ? प्रजा क्या सोचती है ? सिन्ध का शासक ब्रह्मण है– यह यहाँ के बौद्धों को फूटी आखों भी नहीं सुहाता। वे विदेशियों की विजय की कामना करते हैं।'

(५) दूरदर्शिता– क्षपाकर एक दूरदर्शी मंत्री है वह किसी भी कार्य को करने से पहले सोच लेना आवश्यक समझता है वह राजा से कहता है 'भारत ज्ञान का दीपक लेकर विदेशों में गया है, तलवार लेकर नहीं।' वह आगे कहता है 'शान्ति और प्रेम से हम खलीफा को अपना मित्र बनाकर रख सकते थे'।

(६) राजा को उचित परामर्श देने वाला– क्षपाकर कभी भी राजा को अनुचित सलाह नहीं देता है वह राज्य के प्रत्येक व्यक्ति को उचित ही मार्ग बताता है। वह चाहता है कि किसी भी प्रकार देश और राज्य की अखण्डता बनी रहे। इसके लिए चाहे जो भी कीमत चुकानी पड़े।

इस तरह हम देखते है की क्षपाकर राजा दाहर का मंत्री 'जैन धर्म का अनुयायी परिस्थितियों का अभिज्ञ गुणों का ग्राहक, राज्य संचालन की शक्ति से सम्पन्न, अपराधी को दण्ड देने का पक्षपाती तथा स्वामी भक्त पात्र है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न ३— रक्तरेखा नाटक के पात्र जयसिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर— सिन्ध देश के राजा दाहर का पुत्र जयसिंह इस नाटक में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करने वाला पात्र है। उसके चरित्र की विशेषताओं को हम निम्नांकित शीर्षकों के माध्यम से देख सकते हैं।

(१) न्यायप्रिय राजकुमार— जयंसिह राजा का पुत्र एवं राज्य का उत्तराधिकारी राजकुमार है। वह राज्य को व्यवस्थित रूप से चलाने में अपने पिता का सहयोग करता है। वह कभी भी अनैतिकता को बरदाश्त नहीं करता।

(२) देशभक्त— जयंसिह अपने देश के प्रति पूर्ण रूप से अनुरक्त है। अपने देश के गौरव को बचाने के लिए वह मर मिटने के लिए तैयार रहता है। वह चाहता है कि उसे अपनी तथा सिन्ध राज्य दोनों की कुर्बानी भले ही देनी पड़े किन्तु उसके राष्ट्र भारत की अखण्डता और गौरव की सुरक्षा अवश्य होनी चाहिए।

(३) युद्धकुशल— सिन्ध प्रांत का राजकुमार जयसिंह एक उत्साह पूर्ण कुशल योद्धा है। जिस समय विदेशी स्त्रियों का अपहरण करके भाग रहे थे जयसिंह बड़ी आसानी से अपने युद्ध कौशल का परिचय देकर विदेशियों को बन्दी बना लेता है और उनको उचित दण्ड देने की राजा के समक्ष सिफारिश करता है।

(४) आज्ञाकारी पुत्र— जयसिंह राजा दाहर का एक आज्ञाकारी पुत्र है। वह अपने पिता की आज्ञा पालन करता है। उसके राज्य संचालन में सहयोग करता है और अपने मंत्री क्षपाकर को उचित सलाह देता है।

(५) स्नेहमयी भावना— जयंसिह सबों के साथ-साथ अपनी दोनों बहन सूर्यदेवी और परमाल का उचित आदर करता है और वह उन्हें कभी भी विपत्ति में फँसने नहीं देता। उसे अपने बहनों पर अटल विश्वास है। वह कहता है— 'मैं एक बार भगवान् पर विश्वास न करूँ पर अपनी बहनों पर मेरा विश्वास अटल है।'

(६) नारी जगत् के प्रति सम्मान की भावना— राजकुमार जयसिंह चाहता है कि हमारे देश की नारियों को क़भी भी अपमानित न होना पड़े। इसीलिए वह अपनी बहनों को हमेशा सुरक्षित रखने की कोशिश करता है। वह मानता है कि भारत की प्रत्येक नारी देवी का अवतार होती है। नारी का अपमान देश का अपमान होता है। अतएव किसी भी कीमत पर नारी के सम्मान की रक्षा आवश्यक हैं।

(७) व्यवहार कुशल एवं श्रद्धालु— जयसिंह अपने से बड़ों के प्रति श्रद्धा की भावना रखने वाला एक युवक है। उसके मन में व्यवहार की शिष्टता बनी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहती है। वह कहता है– 'मंत्री जी का कथन ठीक है हमारी शक्ति सीमित है' आगे वह कहता है– 'सूर्य ! मंत्री जी से बात करते समय शिष्टाचार को नहीं भूलना चाहिए।'

इस तरह जयंसिह एक युद्ध कुशल, पिता का आज्ञाकारी पुत्र तथा स्नेह की भावना से भूषित देशभक्त युवक है।

प्रश्न ४– रक्तरेखा नाटक के नारी पात्र सूर्यदेवी का चरित्रांकन अपने शब्दो में कीजिए।

उत्तर– सूर्यदेवी सिन्ध देश के राजा दाहर की बड़ी पुत्री है। वह उत्साह सम्पन्न युद्ध कलाकुशल तथा देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर देने वाली नारी पात्र के रूप में इस नाटक में अंकित की गयी है। उसके चरित्र की विशेषताओं को हम निन्नांकित बिन्दुओं के माध्यम से देख सकते हैं।

(१) साहस की मूर्त्ति– सूर्यदेवी राजा दाहर की धैर्य सम्पन्न और साहसी पुत्री है। वह अकेली ही अपने दो शत्रुओं पर टूट पड़ती है और उन्हें अपने युद्ध कौशल के द्वारा बन्दी बनाकर राजदरवार में उपस्थित करती है।

(२) स्ववीर्यगुप्ता– सूर्यदेवी अपने पराक्रम में विश्वास करती है, सुरक्षा व्यवस्था में नहीं। इसीलिए वह सदा पुरुष वेश में चलती है और हाथों में तलवार धारण करती हैं। अकेले कहीं भी जाने में भय का अनुभव नहीं करती वह जानती है की मैं अपनी रक्षा करने में स्वयं सक्षम हूँ।

(३) देशभक्ति की भावना– सूर्यदेवी जितना ही साहसी; पराक्रमी और निर्भीक है, उतना ही वह देश की भक्ता भी है। वह चाहती है कि देश कभी पराधीनता के शिकंजो में न जकड़े। वह देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग करने के लिए भीं उद्धत रहती है।

(४) निर्भय– राजकुमारी सुर्यदेवी एक निर्भीक नारी है। वह अपनी रक्षा की परवाह किये बिना शत्रुओं के राज्य में घुसकर उनके साथ घमासान युद्ध करने में नहीं हिचकती।

(५) शस्त्रकला प्रवीण– राजकुमारी सूर्यदेवी जिस तरह एक विचारशील महिला है। उसी तरह वह युद्धकला के भी मर्म को ठीक-ठीक जानती है। और इसी कला के बल पर वह अरब देश के आततादयों को बन्दी बनाने में समर्थ होती है और उन सबों को राजा के सामने अपराधी के रूप में उपस्थापित करती है।

(६) देश के गौरव की भावना के प्रति समर्पित– सूर्यदेवी जानती है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि देश की नारी जगत् के सम्मान की सुरक्षा के लिए अपना भी बलिदान करना पड़े तो कोई बात नहीं, वह देश की मार्यादा और संस्कृति की सुरक्षा के लिए अपने ही हाथों अपना बलिदान कर देती है। वह किसी भी हालत में अरब के खलीफा की दासी बनना पसन्द नहीं करती। वह कहती है कि— ' हमारा विवाह अरब के शासक खलीफा से नहीं बल्कि मृत्यु से होगा।'

प्रश्न ५— रक्तरेखा नाटक की नारी प्रात्र परमाल का चरित्रांकन कीजिए।

उत्तर— (१) परमाल रक्तरेखा नाटक के नारी पात्रों में अन्यतम है। वह सिन्ध देश के राजा दाहर की छोटी पुत्री है। उसमें अदम्य उत्साह और देश सेवा की भावना भरी हुई है। वह हमेशा पुरुष वेश में घूमती है और निर्भीक होकर शत्रुओं पर आक्रमण करने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करती।

(२) **वीर स्वभाव—** परमाल स्वभाव से ही पुरुष वीरों से भी बड़कर साहसी कार्यों के करने में हमेशा अग्रसर रहती है। वह ऐसे कार्यों में अपनी बड़ी बहन सूर्यदेवी का सदा साथ देती है। वह कहती है— 'बरबर हिंसक नर राक्षस के साथ विधि-विधान की बात करना पागलपन है।' वह आगे भी कहती है 'तुम पुरुष हो इसलिए नारियों को दुर्बल समझते हो। परमाल मृत्यु को अपनी माँ की गोद समझती है। इसीलिए किसी भी साहसिक कार्य से घबराती नहीं।

(३) **शस्त्रसंचालन में निपुणता—** परमाल शस्त्र संचालन की कला में एक सिद्धहस्त नारी है। वह अपनी इस कला पर स्वयं गर्व करती है और अन्य नारियों से भी इस कला को अपने हृदय से अपनाने का आग्रह करती है। वह कहती है 'यदि देश और नारी जगत् के सम्मान की रक्षा करनी है, तो शास्त्र संचालन की कला को अपनाना होगा।

(४) **देशभक्ति की भावना—** परमाल के मन में अपने देश के प्रति अथाह श्रद्धा और सम्मान की भावना है। वह अपने देश के लिए हर प्रकार से समर्पित है वह जानती है कि देश सेवा के सामने आमोद प्रमोद के साधनों में लिप्त रहना एक तुच्छ भावना है। वह कहती है— 'देश में चतुर्दिक आग लगी हुई है और हम आनन्द मनायें क्या यही हमारी मानवता है ? यह तो समय है सिर पर कफन बाँध कर निकल पड़ने का।'

(५) **अद्वितीय साहसी—** परमाल दुराचार के विरोध में लोहा लेने के लिए हर समय तैयार रहती है। गौरव और सम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि देने से भी वह नहीं घबराती। वह कहती है— 'अपना अपमान करने का यत्न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने वाले का मस्तक तुम्हें काटना होगा। तभी तुम अपनी और भारत की
रख सकोगी'।

(६) देश के लिए प्रांणोत्सर्ग— जिस समय परमाल अपनी बड़ी बहन सु
के साथ अरब के खलीफा की बन्दनी बन जाती है उस समय वह अपने ब
ही समान अपना प्राण त्याग करने का निश्चय करती है। उसने सोच लिया है
वह आत्महत्या कर लेगी; किन्तु अरब के खलीफा की पत्नी नहीं बनेगी। वह
के खलीफा से कहती है— 'प्रबन्ध कीजिए खुशियाँ मनाने का। नृत्य-गान
महफिल सजाइये। आतिश बाजी से बगदाद को रोशन कीजिए। आज ह
निकाह मृत्यु से होगा।' और इतना कहकर अपने ही हाथों अपनी ही तलव
वह अपनी गर्दन काट लेती है।

इस तरह परमाल एक सच्ची देशभक्त महिला है। उसे साहसिक का
किसी भी प्रकार का परहेज नहीं है। वह हमेशा दुराचार से लोहा लेने के
तैयार रहने वाली रक्तरेखा नाटक की एक प्रख्यात महिला पात्र है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सफलता सोपान

काव्यसंकलन-व्याख्यात्मक भाग

साखी

(१) सतगुरु---सब अंग।।

संदर्भ– यह पद्य काव्य संकलन के **'साखी'** शीर्षक से अवतरित है। इस पद्य के प्रणेता कबीर दास जी हैं।

इस पद्य में इन्होंनें आचार्य की कृपा का महत्त्व बतलाया है। मानव जीवन का तब तक कल्याण संभव नहीं है जब तक उस पर आचार्य की कृपा न हो। आचार्य ही कृपा करके मानव को ज्ञान का उपदेश देते हैं, जिससे जीव संसार के बंधन से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

भावार्थ– श्री कबीर दास जी कहते हैं कि जब हमारे सद्गुरु हम पर प्रसन्न हुए तो हम को एक ऐसे ज्ञान का उपदेश दिए कि, हमारे जीवन में परमात्मा के प्रति प्रेम का संचार हो गया। मेरे तत्त्वज्ञानं विहीन नीरस जीवन में परमात्म-प्रेम रूपी सरसता का संचार हो गया। मेरा सम्पूर्ण शरीर परमात्म-प्रेम से परिपूर्ण हो गया।

(२) रामनाम के पटतरे---------------------------------मन माँहि।।

सन्दर्भ– प्रस्तुत पद्य काव्य संकलन के साखी शीर्षक से गृहीत है। इसके प्रणेता सन्त कबीरदास जी हैं।

प्रसंग– इस पद्य में कबीर दास जी ने श्रीराम नाम की महिमा को बतलाया है। तत्त्वज्ञान तो गुरु से ही संभव है गुरु की कृपा के बिना तत्त्व ज्ञान नीरस हो सकता। आचार्य ही प्रसन्न होकर राम-नाम का उपदेश देते हैं।

भावार्थ– कबीरदास जी कहते हैं कि श्रीराम-नाम का उपदेश सद्गुरु ही देतें हैं; किन्तु संसार की कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है जिसे आचार्य द्वारा दिये गए उपदेश के बदले में दिया जा सके। गुरु तो परम् संतोषी होते हैं। वे इसके बदले में कुछ लेना भी नहीं चाहते हैं। किन्तु हमारे मन में इस प्रकार की भावना बनी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहती है कि इस आचार्योपदेश के बदले में उन्हें मैं क्या दूँ? यों तो रामनाम एक अनमोल वस्तु है। उसका मूल्य नहीं आँका जा सकता।

विशेष— इस दोहे में सन्त कबीर ने (१) रामनाम की महिमा बतलाया है (२) सद्गुरु को परम संतोषी और शिष्य का कल्याणकारी बतलाया है। (३) इसमें दोहा छन्द है।

(३) ज्ञान प्रकास्या-------------------------------मिलिया जाइ।।३

सन्दर्भ— यह पद्य काव्य-संकलन के **'साखी'** शीर्षक से अवतीर्ण है। इस पद्य के रचयिता भाषा के शाहँशाह सन्त कबीर हैं।

प्रसंग— इस पद्य में वे इस बात को स्पष्ट करते हैं कि सद्गुरु की प्राप्ति मानव को अपने पुरुषार्थ से नहीं संभव है। जब परमात्मा की कृपा होती है तब सद्गुरु की उपलब्धि होती है। सद्गुरु ही अपने उपदेश के द्वारा शिष्यों के ज्ञान को प्रकाशित करने में समर्थ होते हैं।

भावार्थ— कबीरदास जी कहतें हैं कि ऐसा गुरु जो शिष्य के ज्ञान को प्रकाशित करने में समर्थ हो उसको कभी भी भूलना नहीं चाहिए। जब जीवन का परम् कल्याण होता है तब ही सद्गुरु की प्राप्ति होती है। जब परमात्मा जीव के ऊपर कृपा करता है तब कहीं जाकर सद्गुरु की प्राप्ति होती है। परमात्मा की कृपा के बिना सद्गुरु नहीं मिल पाते।

विशेष— इस पद्य में, (१) सद्गुरु की प्राप्ति की परमात्मा की कृपा से संभव बतलाया गया है, (२) इसमें दोहा छन्द है तथा (३) इस दोहे की भाषा सधुक्कड़ी है।

(४) माया दीपक-------------------------------उबरंत।।४

सन्दर्भ— यह पद्य काव्य-संकलन नामक ग्रंथ के **'साखी'** शीर्षक से उद्धृत है। इस पद्य के प्रणेता भाषा के शाहनशाह सन्त कबीर हैं।

प्रसंग— इस पद्य में कबीर ने एक लौकिक उदाहरण के द्वारा गुरू की महिमा का वर्णन किया है। लोक में देखा जाता है कि जब दीपक जलता है तो पतंगे की उड़-उड़ कर उसी पर आते हैं और जलकर मर जाते हैं। उसी तरह मानव एक पतंगें के समान है। वह माया के भोग का लालची होता है। विषयोपभोग की प्रत्याशा में बार-बार माया के जाल में फंसता है। जिस पर आचार्य कृपा करते हैं वही जीव उस माया के आकर्षण से बच पाता है।

भावार्थ— माया एक दीपक के समान है और विषयोपभोग करने का आदी मानव एक कीड़े के समान है। जिस तरह कीड़े घूम-घूम कर दीपक पर ही गिर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहते हैं। वे यह नहीं जानते हैं कि मैं इस दीपक पर गिरने से जलकर मर जाऊंगा, उसी प्रकार मानव भी बार-बार अन्यान्य विषयों का भोग करने के लिए उसकी ओर बार-बार- प्रवृत्त होता रहता है। वह विषय के दोषों को नहीं जानने के कारण उसी में अपना जीवन विनष्ट करता रहता है। वह मानव जीवन के परम् उद्देश्य को नहीं जान पाता है। हाँ जिन जीवों को गुरु का ज्ञान प्राप्त हो जाता है ऐसे एकाध ही जीव हैं जो माया के जाल से बच पाते हैं।

विशेष— इस पद्य में (१) दोहा छन्द (२) दृष्टान्तालंकार तथा (३) आचार्य की कृपा का वर्णन है।

(५) गुरु गोविन्द तो एक हैं------------------------------करतार।।

सन्दर्भ— यह पद्य काव्य संकलन के **'साखी'** शीर्षक कविता से उद्धृत है। इस पद्य के प्रणेता निर्गुणवादी सन्त क़बीर दास जी हैं।

प्रसंग— इस पद्य में निर्गुवादी सन्त कबीर, सद्गुरु तथा परमात्मा में अभेद का प्रतिपादन करतें हैं। श्वेताश्वरोपनिषद में भी कहा है-**'यथा देवे तथा गुरौ'** अर्थात परामात्मा तथा गुरु दोनों में एक समान भक्ति करनी चाहिए। अन्यत्र भी गुरू को ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तथा परब्रह्म बतलाया गया है-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।

भावार्थ— निर्गुणवादी सन्त कबीरदास जी कहते हैं कि परमात्मा तथा सदगुरु दोनों एक ही तत्त्व हैं। दोनों में कोई तात्त्विक भेद नहीं है। इनमें यदि भेद है तो केवल आकार का है। गुरु और परमात्मा दोनों मानव के अहँकार को मिटाने का प्रयास करते। मनुष्य का जब अहंकार मिट जाता है तो वह जीवित रहकर ही इस संसार के लिए मर जाता है। उसका संसार और संसार के विषयों के प्रति आकर्षण समाप्त हो जाता है। वह सबों से अपने को हीन समझने लगता है। जो मनुष्य इस तरह का निरहँकारी हो जाता है, वही परमात्मा को प्राप्त करने का सच्चा अधिकारी होता है।

(६) भगति भजन हरि--------------------------सुमिरण सार।।

सन्दर्भ— यह पद्य काव्यसंकलन नामक ग्रन्थ के **'साखी'** शीर्षक से अनुगृहीत है। इस पद्य के प्रणेता निर्गुण रामभक्त सन्त कबीर हैं।

प्रसंग— इस पद्य में कबीरदास जी संसार के सार तथा असार, सुखद एवं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुःखद वस्तुओं का उल्लेख करते हैं। मानव जीवन का सार है परमात्मा की भक्ति उसका सतत चिन्तन। उसी से मानव जीवन का कल्याण संभव है। अन्य सारी बातें तो दुख देने वाली ही हैं।

भावार्थ— कबीरदास जी कहते हैं कि इस संसार में दो प्रकार की वस्तुएँ हैं सुखद एवं दुखद। परमात्मा की भक्ति परमात्मा का भजन तथा परमात्मा का नामस्मरण ये तीनों चीजें सुखद हैं। इनसे ही वास्तविक सुख की प्राप्ति संभव है। इन सबों से भिन्न जो रूप, रस, गन्ध, एवं स्पर्श एवं शब्द से जिस सुख की प्रतीति होती है, वह तो सुखाभास है। वस्तुतः उन सब से अनेक प्रकार के दुःख ही मिलते हैं। इसलिए कल्याण चाहने वाले मनुष्य को चाहिए कि वह मन, कर्म और वाणी तीनों से परमात्मा की भक्ति करे, उसका भजन करे तथा उसके नाम का स्मरण करे। कबीर दास जी कहते हैं कि परमात्मा के भजन का यही सार है।

(७) कबीर चित्त चमंकिया------------------------लेहु बुझाइ ।।७।।

सन्दर्भ— यह पद्य काव्य संकलन ग्रंथ के **'साखी'** शीर्षक से अवतरित है। इस पद्य के रचयिता ज्ञानमार्गी सन्त कबीर दास जी हैं।

प्रसंग— इस पद्य में ज्ञानमार्गी सन्त कबीर दास जी कहते हैं कि संसार तो एक वन के सदृश है। जिस तरह से वन में दावाग्नि फैल जाया करती है, उसी तरह से इस संसार रूपी वन में तापत्रय की दावाग्नि फैली है। इस तापत्रय की दावाग्नि से छुटकारा पाने के लिए एकमात्र साधन परमात्म स्मरण है और वह सबके लिए सुलभ है। किसी के लिए वह दुर्लभ नहीं है। अतएव सबसे बड़ी बुद्धिमानी यही है परमात्म स्मरण रूपी साधन के द्वारा मनुष्य अपने चारों ओर फैली हुई तापत्रय की दावाग्नि को बुझा ले।

भावार्थ— कबीर दास जी कहतें हैं कि ज्ञान के प्रकाश के द्वारा मेरा चित्त (अन्तःकरण) प्रकाशित हो गया है और इस ज्ञान के प्रकाश में मै देख रहा हूँ कि सभी जीवों के चारों ओर दुःखों की आग लगी हुई है। उसकी चपेट में सबके सब हैं। उससे मुक्ति पाने का साधन सबके पास है। वह है परमात्मा का स्मरण। वह हाथ मे विद्यमान जल के घड़े के समान है। जिस तरह के घड़े से आग बुझाई जा सकती है। अतएव सब लोगों को शीघ्र यह काम करना चाहिए।

विशेष— इस पद्य में रूपकालंकार है।

(८) अंखड़ियाँ झाई-------------------- --पुकारि-पुकारि

सन्दर्भ— यह पद्य काव्य संकलन नामक पुस्तक के **'साखी'** शीर्षक कवि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से उद्धृत है। इसके प्रणेत निर्गुण प्रेमपंथ के पथिक संत कबीर है।

प्रसंग–इस पद्य में सन्त कबीर अपने अन्तः करण की भावना को व्यक्त कर रहे हैं। इनके भीतर परमात्मा की प्राप्ति के लिए एक तीव्र बेचैनी है। वे जानते हैं कि मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि परमात्मा की प्राप्ति है।

भावार्थ— श्री कबीर दास जी कहते हैं कि श्रीराम मुझे मिलेंगे, यह न जाने कबसे मैं आशा लगाए बैठा हूँ। वे अवश्य एक दिन हमारे सन्निकट आयेंगें और हमें अपना लेंगे। अपना बना लेंगे। इसी आशा में मै उनके आने का रास्ता देख रहा हूँ। रास्ता देखते-देखते मेरी आँखों में झांई पड़ गयी है। वे काली हो गयी हैं। मैं रात-दिन राम-राम रट रहा हूँ। यह रट लगाते-लगाते मेंरी जीभ में छाले पड़ गये हैं किन्तु आज भी मेरे राम मुझ तक नहीं आए।

(९) सुखिया सब संसार है- ------ ---------- - - - अरु रोवे।। ९।।

सन्दर्भ— यह पद्य काव्य संकलन नामक ग्रन्थ के **'साखी'** शीर्षक से उद्धृत है। इस पद्य के प्रणेता सन्त कबीर है।

प्रसंग— इस पद्य में सन्त कबीर का कहना है कि इस संसारी जीवन से मेरी स्थिति बिल्कुल विपरीत है। मुझसे संसार का स्वंभाव मेल नहीं खाता। इस संसार के सभी जीव इस संसार में सुखी हैं। वे केवल भोजन करके सोना जानते हैं। मेरी स्थिति ठीक इसके विपरीत है। मुझे तो रोना ही रोना आता है।

भावार्थ— कबीर दास जी कहते हैं कि इस संसार के सभी अज्ञानी जीव संसार के विषयोपभोग को ही अपने जीवन की चरमोपलब्धि मानते हैं। वे केवल भोजन करना और सोना जानते हैं। यहाँ पर खाने का अभिप्राय विषयों के उपयोग से है। और सोने का अभिप्राय जीवन के प्रति लापरवाही से है। किन्तु मैं तो अपने जीवन के प्रति सांवधान हूँ। मुझे पता है कि मैं परमात्मा से बिछड़ा हुआ हूँ। इस संसार में मैं जग रहा हूँ परमात्मा के वियोग में रो रहा हूँ।

रामचरितमानस में भी कहा गया है—

यहि जग जामिनि जागहिं जोगी।

गीत में भी कहा गया है–

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१०) जब मैं था तब हरि नहीं-----------------------------------माँहि।

सन्दर्भ— यह पंक्ति काव्य संकलन नामक पुस्तक के 'साखी' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता सन्त कबीर दास जी हैं।

प्रसंग— इस पद्य में कबीर दास जी कहते हैं कि जब तक उपासक के मन में अहंकार की भावना बनी रहती है तब तक उसको परमात्मा की प्राप्ति असंभव है। परमात्मा की सच्ची भक्ति के लिए अहंकार का त्याग आवश्यक है।

भावार्थ— कबीर दास जी कहते हैं कि जब तक मेरे भीतर अहंकार की भावना थी तब तक मुझे न तो परमात्मा का ज्ञान था और न तो मुझेमें परमात्मा का निवास था। जब से मुझे परमात्मा का ज्ञान हो गया है तब से मेरा अहंकार समाप्त हो गया है। अब तो सर्वत्र मुझे परमात्मा ही दिखायी देता है। मेरा सम्पूर्ण अज्ञान रूपी अंधकार मिट गया है। ज्ञान रूपी दीपक के प्रकाश में मुझे सब कुछ राममय ही दिखायी देता है।

(११) यह तन कांचा कुंभ-----------------------------------आया हाथ।

सन्दर्भ— यह पद्य काव्य संकलन नामक पुस्तक के 'साखी' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके प्रणेता सन्त कबीर दास जी हैं।

प्रसंग— इस पद्य में भाषा के तानाशाह कबीर दास जी शरीर की नश्वरता का वर्णन करते हैं। शरीर क्षण भंगुर है, कब कहां पर तथा कैसे विनष्ट हो जायगा, इस बात को कोई भी नहीं जानता है अतएव शरीर का कोई भी भरोसा नहीं है, उस पर घमंड करना मूर्खता मात्र है।

भावार्थ— कबीर दास जी कहते हैं कि यह शरीर कच्चे घड़े के समान अस्थाई एवं कमजोर पदार्थ है। किन्तु जब तक मुझे इसके स्वरूप का ज्ञान नहीं था तब तक मैं इस पर ही गुमान करता था। जिस तरह धक्का लगते ही कच्चा घड़ा टूट जाता है, उसी तरह से काल के छोटे से भी प्रहार को यह बर्दास्त नहीं कर सका और विनष्ट हो गया। उस शरीराभिमान का कोई भी मुझे अच्छा परिणाम नहीं मिला। अतएव समस्त कल्याणकामी पुरुषों को शरीराभिमान त्याग कर परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए।

(१२) ऐसी बानी बोलिए-----------------------------------सुख होइ।

सन्दर्भ— यह पद्य काव्य संकलन नामक ग्रंथ के 'साखी' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके प्रणेता सन्त कबीर दास जी हैं।

प्रसंग— इस दोहे में सन्त कबीर कहते हैं कि मनुष्य को कोई भी ऐसी बात

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं करनी चाहिए जिसको सुनकर किसी के मन में उद्वेग हो।

भावार्थ— कबीर दास जी कहते हैं कि मनुष्य को कोई भी बात कहने के पहले अपने मन में रहने वाली धन, बल, विद्या आदि के अहंकार का त्याग कर देना चाहिए। अहंकार की भावना से रहित होकर कही गयी बात अन्य लोगों को तो प्रसन्न करती ही है, कहने वाले के भी मन में सन्तोष और प्रसन्नता की अनुभूति कराती है।

(१३) जिहिं घर साधु------------------------------तिन माँहि।।

सन्दर्भ— यह पद्य काव्य संकलन नामक ग्रंथ के **'साखी'** शीर्षक कविता से अनुगृहीत है। इसके रचयिता सन्त कबीर दास जी हैं।

प्रसंग— इस पद्य में सन्त कबीर दास जी कहते हैं कि किसी भी घर की उत्तमता यही है कि उसमें भगवान की आराधना हो तो सन्तो की सेवा हो। जहां न तो सन्तों की और न तो भगवान की पूजा, वह घर तो श्मशान के समान है। उसमें रहने वाले लोग भूत के समान हैं।

भावार्थ— सन्त कबीर कहतें हैं कि जिस घर में सन्तों की न तो पूजा होती है और न तो श्री भगवान की सेवा ही की जाती है, वह घर तो एक श्मशान के समान है। जिस तरह श्मशान में भूतों का निवास होता है उसी तरह उस घर में रहने वाले भूत के समान हैं।

विशेष— इस पद्य में कबीर दास जी ने सन्तों की पूजा को ही श्री हरि की सेवा बतलाया है। जो जीव परमात्मा की व्यापकता तथा सर्वशक्तिमत्ता में विश्वास करते हैं वे ही सन्त हैं। उपनिषद् कहती है- **अस्ति ब्रह्मेतिचेद्वेद सन्तमेंनन्ततो** विदुः।' उस सन्त की पूजा ही परमात्मा की सच्ची सेवा है।

इस पद्य में उपमालंकार है।

(१४) कस्तूरी कुण्डलि------------------------------देखै नाहि।।

सन्दर्भ— प्रस्तुत पद्य काव्य संकलन नामक ग्रन्थ के **'साखी'** शीर्षक कविता से उद्धृत है। इस पद्य के प्रणेता सन्त कबीर दास जी हैं।

प्रसंग— इस पद्य में कबीर दास जी सम्पूर्ण जगत में श्री राम की व्यापकता का प्रतिपादन करते हैं। वे इस बात को एक रूपक के मध्य से स्पष्ट करते हैं।

भावार्थ— कबीर दास जी कहते हैं कि कस्तूरी तो कस्तूरीमृग की नाभि में ही रहती है; किन्तु उसकी गन्ध से आकृष्ट होकर वह मृग उसे पाने के लिए व्याकुल घूमता रहता है और समझ नहीं पाता है कि वह कस्तूरी तो मेरे शरीर में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। इस तरह परमात्मा राम को पाने के लिए साधक दर-दर भटकते रहते हैं। वे यह नहीं जान पाते हैं कि परमात्मा का निवास तो हर जीव के हृदय में है। वह सबों का अन्तर्यामी है। जिस समय वह इस बात को जान लेता है, उसी समय वह परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

इस पद्य में अर्थानान्तरन्यास नामक अलंकार है।

सबद

(१) हरि जननी मैं बालक तेरा---------------------------------महतारी

सन्दर्भ— यह पद काव्यसंकलन नामक ग्रंथ के **'सबद'** नामक शीर्षक से उद्धृत है। इसके प्रणेता सन्त कबीर दास जी हैं।

प्रसंग— इस पद में सन्त कबीर दास जीव और परमात्मा के बीच माता-पुत्र सम्बन्ध की चर्चा करते हुए परमात्मा के वात्सल्य नामक गुण की चर्चा करते हैं।

भावार्थ— इस पद में सन्त कबीर दास जी कहते हैं कि हे हरे मैं तो आपका बालक हूँ और आप मेरी माँ। वह माँ जिसकी गोद में बालक निश्चिन्त होकर सोता है, जो कभी भी अपने दोषी बालक के दोषों की ओर अपने वात्सल्य नामक गुण से प्रेरित होकर ध्यान नहीं देती है। अतएव आप भी मेरे अपराधों पर ध्यान न देकर अपने वात्सल्य का पात्र मुझे बनायेंगे। पुत्र तो दिन भर अपराध ही करता रहता है। किन्तु माँ अपने पुत्र के अपराधों पर ध्यान ही नहीं देती है। यदि बालक माँ का बाल पकड़कर उसको मारता भी है तो भी माँ उसे अपनी गोद से नहीं उतारती है। कबीर दास जी कहते हैं कि मुझे तो यही समझ में आता है कि माँ का दुख और सुख अपने बेटे के सुख और दुख में ही रहता है। बेटे के दुखी हो जाने पर माँ भी दुखी हो जाती है। अतएव मुझको दुखी देखकर आप कैसे सुखी रह सकेंगे। **कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति।**

(२) का मांगू कछू---------------------------------------जुबारी

सन्दर्भ— यह पद काव्य संकलन नामक ग्रन्थ के **'सबद'** शीर्षक से उद्धृत है। इसके प्रणेता सन्त कबीर दास जी हैं।

प्रसंग— इस पद में कबीर दास जी संसार की अस्थिरता और नश्वरता का वर्णन करते हुए उसकी त्याज्यता का प्रतिपादन करतें हैं।

भावार्थ— इस पद में सन्त कबीर कहते हैं संसार की किसी भी वस्तु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

याचना करना व्यर्थ है। संसार की सभी वस्तुएँ नश्वर हैं अतएव उनकी प्राप्ति की कामना करना व्यर्थ है। मैं देख रहा हूँ कि मेरी आँखों के आगे से ही संसार विनष्ट होता जा रहा है। रावण के विषय में कहा जाता है कि उसके एक लाख पुत्र और सवा लाख नाती थे। उसका विशाल परिवार था, विपुल सम्पत्ति थी। एक वह भी दिन आया जबकि रावण सपरिवार मारा गया और उसके खानदान में कोई दीपक भी जलाने वाला नहीं बचा। उसकी लंका जैसी नगरी थी, उसकी रक्षा के लिए चारों ओर समुद्र जैसी खाई थी; किन्तु वह भी रावण काल के गले से नहीं बच सका। आज उसका कहीं भी अता-पता नहीं है। जीव को तो इस संसार में आना भी अकेले ही पड़ता है और जाना भी अकेले ही। बीच में थोड़े दिन के लिए वह अपने घर में हाथी ही बाँध ले तो उससे उसको कौन सा लाभ हुआ। उस पर चढ़कर इस संसार से जाते समय वह जायेगा क्या ? कबीर दास जी कहते हैं कि अन्त में तो सबको उसी तरह खाली हाथ जाना पड़ता है, जिस तरह कोई जुआरी पुरुष सब कुछ हारकर हाथ झाड़ते हुए अपने घर पछताता हुआ चला जाता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि सम्पूर्ण लौकिकता से विमुख होकर परमात्मा का चिन्तन किया जाय।

(३) डग मग छाडि रे मन------------------------------चढि ऊँचा।

सन्दर्भ— यह पद काव्यसंकलन नामक ग्रन्थ के **'सबद'** नामक शीर्षक से उद्धृत है। इसके रचयिता सन्त कबीर दास जी हैं।

प्रसंग— इस पद में सन्त कबीर जीवात्मा और परमात्मा के बीच पति और पत्नी के संबन्ध को सूचित करते हैं।

भावार्थ— इस पद में वे अपने मन को समझाते हैं कि हे मन अब तो तुम दृढ़ संकल्प हो जाओ। सांसारिकता की आशा का त्याग करके परमात्मा की प्राप्ति के साधन के पथ पर चलते रहो। जीव तो परमात्मा की पतिव्रता पत्नी है। वह पत्नी जो एकमात्र अपने पति के लिए ही होती है। वह अपने पति के प्राणान्त हो जाने पर अपने हाथ में सिन्दूर पात्र लेकर उसी के साथ जलने के लिए चल पड़ती है। उसी में उसका नाम है कि वह उसी के साथ जल मरे। उसी तरह से तुम संसार की परवाह किए बिना मगन होकर परमात्मा के प्रेम में नृत्य करो। संसार के लोगों लोभ, मोह, तथा भ्रम का परित्याग कर दो। जो सच्चा वीर होता है वह मरने से नहीं डरता। जो सच्ची पतिव्रता होती है वह जलने से नहीं डरती है। वह अपने घर के पात्रों को सजोने की परवाह नहीं करती है। लोक और वेद में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सांसारिक नियमों की मर्यादा है वही भक्तों में गले की फाँसी है। लौकिक एवं वैदिक मर्यादाएँ तो संसारी जीवों के लिए आवश्यक हैं, मौलिक पंथ तो इन सब से निराला है। अब तो तुम भक्ति के रास्ते पर चल पड़े हो। अब यदि तुम पुनः संसार की ओर मुड़ते हो तो उससे तुम्हारी हँसी ही होगी। यह सारा संसार अपवित्र है केवल राम का नाम पवित्र है। कबीर दास जी अपने मन से कहते हैं कि तुम किसी भी हालत में परमात्मा का नाम लेना मत छोड़ो। किसी प्रकार से भी इस उन्नति के मार्ग पर चलते ही रहना है और जीवन की ऊँचाई को छूना ही है।

पद (सूरदास)

(१) चरन कमल बंदौ--------------------------------तिहिं पाइ॥

सन्दर्भ— प्रस्तुत पद काव्य संकलन नामक ग्रन्थ के 'पद' शीर्षक से उद्धृत है। इस पद के प्रणेता श्री सूरदास जी हैं।

प्रसंग— व्रजभाषा के विश्वविश्रुत गायक कवि सूरदास इस पद में श्री भगवान की वन्दना करते हुए उनकी सर्वशक्तिमत्ता का वर्णन करते हैं।

भावार्थ— श्री सूरदास जी कहते है कि श्री भगवान ही सम्पूर्ण जगत् के स्वामी हैं। मैं उनके चरण कमलों की वन्दना करता हूँ। उनकी कृपा का ऐसा प्रभाव है कि एक लंगड़ा व्यक्ति भी पर्वत को पार कर लेता है और अन्धे को भी सब कुछ दिखायी देने लगता है। बहरा आदमी भी सुनने लगता है तथा गूँगा भी बोलने लगता है। यही नहीं उनकी कृपा के बल को पाकर एक दरिद्र भी अपने सिर पर छत्र धारण करके चलता है। वह राजा हो जाता है। श्री सूरदास जी कहते हैं कि श्री भगवान ही हमारे स्वामी हैं। वे करुणासागर है। मैं बार-बार उनके चरणों की वन्दना करता हूँ।

(२) अविगत गति--------------------------------सगुन पद गावै॥

सन्दर्भ— यह पद काव्य संकलन नामक ग्रन्थ के 'पद' शीर्षक से उद्धृत है। इसके रचयिता महाकवि सूरदास जी हैं।

प्रसंग— इस पद में सूरदास जी परमात्मा के सगुण रूप की सुलभता का वर्णन करते हैं। वे बतलाते हैं कि परमात्मा के दो रूप स्वीकार किए जाते हैं निर्गुण एवं सगुण। निगुर्ण रूप की अपेक्षा सगुण रूप अधिक सुलभ है। अतएव परमात्मा के सगुण रूप का ही वर्णन करता हूँ।

भावार्थ— सूरदास जी कहते हैं कि परमात्मा के जिस निर्गुण रूप को जान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जा सकता है, उसका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। बिना जानी हुई वस्तु का वर्णन कैसे किया जा सकता है? जैसे कोई गूंगा व्यक्ति किसी मीठे फल का स्वयं आस्वाद ले सकता है किन्तु वह उसका वर्णन नहीं कर सकता है। उस फल का अत्यन्त सुन्दर स्वाद सबको परम संतोष दे सकता है। उसी तरह से निर्गुण ब्रस्म का ज्ञान ब्रस्मज्ञ के लिए अनुभव करने की चीज है। उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। इसीलिए तो निर्गुणवादी ब्रस्म को अनिर्वचनीय कहा करते हैं। 'यतो वाचो निवर्तन्ते' इत्यादि श्रुतियों के अनुसार वह वाणी और मन का विषय नहीं बनता है। अर्थात् न तो उसका वर्णन किया जा सकता है और न तो मन में उसके स्वरूप को जाना जा सकता है। उसको तो वही जान सकता है; जिसको वह ब्रस्म मिल जाय। उसका न तो कोई रूप है न रेखा है। वह निर्गुण है। उसकी कोई भी जाति नहीं है। उसको किसी प्रकार के तर्क के द्वारा भी नहीं जाना जा सकता है। उसका कोई भी आधार नहीं है, वही सबों का आधार है। उपनिषद् कहती है कि वह अपनी ही महिमा में प्रतिष्ठित है। स्वे महिम्नि प्रतिष्ठितः। अतएव उसको पता कैसे लगाया जा सकता है? इस तरह से मैने हर प्रकार से विचार करके जान लिया है कि ब्रस्म तो एक अगम अगोचर है। इसीलिए मैं (सूरदास) श्री भगवान के सगुण रूप विषयकपद का गान करता हूँ।

(३) किलकत कान्ह-----------------------------------पियावत।

सन्दर्भ— यह पद काव्य संकलन नामक ग्रन्थ के 'पद' शीर्षक से उद्धृत है। इसके रचयिता श्रीकृष्णभक्त कवि सूरदास जी हैं।

प्रसंग— इस पद में सूरदास जी भगवान की बाललीला का वर्णन करते हैं। अब भगवान के दो दाँत निकाल चुके हैं। वे बाबा नन्द के आंगन में अनेक प्रकार की बाल-क्रीडा करते हैं जैसे कोई प्राकृत बालक करता है।

भावार्थ— सूरदास जी कहते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण अब अपने घुटनों के बल चलने लगे हैं। अपने घुटनों पर चलकर आ रहे हैं और किलकारी मार रहे हैं। बाबा नन्द का आंगन तो सुवर्ण का बना हुआ है और उसमें स्थान-स्थान पर मणियां लगी हैं। उसमें पड़ने वाली वस्तु की छाया को पकड़ने के लिए वे इधर से उधर दौड़ रहे हैं । कभी-कभी तो भगवान अपनी ही छाया को देखकर उसे अपने हाथों पकड़ना चाहते हैं; किन्तु ऐसा कर नहीं पाते हैं। अपनी ही छाया अपने हाथों तो पकड़ी नहीं जा सकती है। जब वे कभी किलकारी देकर हँसते हैं तो उनके दोनों दूध के दाँत चमकने लगते हैं। वे बार-बार अपने हाथों अपनी छाया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को पकड़ते हैं। भगवान श्रीकृष्ण के हाथ-पैर कमल के समान मनोहर हैं। वे जब पृथ्वी पर पड़ते है तो ऐसा लगता है, जैसे प्रत्येक मणि पर कमल रखकर पृथ्वी भगवान श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था का अनुभव करके महारानी यशोदा उसे देखने के लिए नन्द जी को बुलाती हैं। वे भगवान श्रीकृष्ण को अपने आँचल के नीचे छिपाकर उन्हें दूध पिलाती हैं।

इस पद में उपमा अलंकार है। इसमें सूरदास जी ने बाल जीवन का सजीव चित्रण किया है।

(४) जसुदा कहाँ लौ-----------------------------------काढत पानि।

सन्दर्भ– यह पद काव्य संकलन नामक ग्रन्थ के 'पद' शीर्षक से उद्धृत है। इसके रचयिता ब्रज भाषा के विश्वविख्यात कवि सूरदास जी हैं।

प्रसंग– इस पद में भगवान् श्रीकृष्ण की बाल लीला का वर्णन किया गया है। बालक श्रीकृष्ण के बाल सुलभ उत्पातों से ऊबकर कोई गोपी माता यशोदा से श्रीकृष्ण के विषय में शिकायत कर रही है।

भावार्थ– कोई गोपी माता यशोदा से बालक श्रीकृष्ण के विषय में शिकायत करती हुई कहती है कि हम कहाँ तक संकोच करें। प्रतिदिन दूध-दहि-की-क्षति कैसे बर्दास्त की जा सकती है। तुम अपने उस छोटे बालक की करनी तो देखो। यह घर में प्रवेश करके स्वयं तो दूध पी लेता है, उससे जो बचता है उसे दूसरे लड़कों को पिला देता है और अंत में दूध के वर्तन को फोड़कर भाग जाता है। मैंने दही मथ कर उससे माखन निकालकर अपने घर के कोने में एकान्त में रख दिया। यह जो आपका लड़का है वह मेरे घर में घुसकर उस माखन रखने की जगह को जान लिया। यद्यपि यह जानता था कि मैं अपने घर में हूँ किन्तु जानकर भी वह थोड़ा सा भी नहीं डरा; घर में घुस गया और माखन निकालने लगा। जब मैंने पूछा कि यह क्या कर रहे हो तो उसने उत्तर दिया कि माखन में चींटी पड़ गयी थी, उसे मैं निकाल रहा था। इस तरह का यह उत्पात करता रहता है।

(५) सांवरेहि वरजति क्यों-----------------------फिरति वही।।५।।

सन्दर्भ– यह पद काव्य संकलन नामक ग्रन्थ के 'पद' शीर्षक से उद्धृत है। इस पद के रचयिता ब्रजभाषा के कवि सूरदास जी हैं।

प्रसंग– इस पद में ब्रजभाषा के विश्वविख्यात महाकवि सूरदास जी श्रीकृष्ण के बाल सुलभ औतपातिक चरित्रों का वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ– भगवान श्रीकृष्ण के उत्पात से ऊबकर कोई ग्वालिन माता यशोदा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के सन्निकट में आकर श्रीकृष्ण के उत्पातों के विषय में उलाहना देती हुई कहती है कि आप अपने इस कृष्ण को डाँटती क्यों नही हैं? इसके प्रतिदिन का उत्पात अब असह्य हो गया है। नहीं सहा जा रहा है। यह माखन तो खा लेता है, दूध को गिरा देता है और अपनी देह में दही को लपेट लेता है। इसको इस तरह का उत्पात करते देखकर हमारे घर के भी लड़के बिगड़े जा रहे हैं। वे सब क्या करते हैं कि घर का छाँछ छिड़क डालते हैं और इसके पीछे-पीछे भाग जाते हैं। हम जो कुछ भी इससे छिपाकर ऐसी जगह रख देतें है कि इसे श्रीकृष्ण नहीं जाने, उस वस्तु को भा यह जान लेता है और वहाँ तक पहुँच जाता है।

मालकिन आप मेरी बात सुनिए। हम आपके इस लड़के से तो हार चुके हैं। यह चोरी करने के साथ-साथ बहुत अधिक चालाकी जान गया है। इसके चरित्र का वर्णन नहीं किया जा रहा है। सूरदास कह रहे हैं कि गोपियाँ कह रही हैं कि उसके बाद यह गाय के बछड़ों को खोल देता है और वे वन में भटकते-फिरते हैं।

(६) मैं अपनी सब------------------------------प्रात जान मैं देहौं।

सन्दर्भ– यह पद काव्य संकलन नामक ग्रन्थ के **'पद'** शीर्षक से उद्धृत है। इसके प्रणेता महाकवि सूरदास जी हैं।

प्रसंग– इस पद में महाकवि भगवान के बाल हठ का वर्णन कर रहे हैं। भगवान अपनी माता यशोदा से कहते हैं कि अब मैं भी अपनी सभी गायों को चराने के लिए ले जाऊँगा। सब लोग अपनी-अपनी गाय चरायें और मैं अपने घर में बैठा रहूँ, यह कभी भी नहीं हो सकता।

भावार्थ– भगवान श्रीकृष्ण अपने बाल सुलभ हठ के कारण अपनी माता यशोदा से कहते हैं कि अब मैं भी अपनी सभी गायों को चराने के लिए जाया करूँगा। सबेरा होते ही मैं बलदेव के साथ गाय चराने जाऊँगा। तुम्हारे रोकने से मैं घर में नहीं बैठा रहूँगा।

ग्वाल बालों के बीच में मुझे थोड़ा सा भी डर नहीं लगता है। बाबा नन्द की दुहाई है कि आज मैं रात को सोऊँगा ही नहीं, रात भर जागते रहूँगा। यह क्या बात है कि सभी ग्वाल बाल तो गाय चरायें और मैं घर में चुपचाप बैठा रहूँ ? मुझे गाय चराने को मिलता ही नहीं। सूरदास जी कह रहे हैं कि भगवान श्री कृष्ण की इस तरह की बातों को सुनकर माता यशोदा उनसे कहती हैं कि अब तुम सो जाओ। प्रातःकाल मैं तुमको गाय चराने जानें दूँगी, मैं तुमको जाने से नहीं रोकूँगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(७) मैया हौं न चरैहौं गाई---------------------------------ताहि रिंगाइ ।।७।।

सन्दर्भ— यह पद काव्य संकलन नामक ग्रन्थ के 'पद' शीर्षक से लिया गया है। इस पद के प्रणेता बाल मनोविज्ञान के सर्वश्रेष्ठ गायक व्रजभाषा के विश्वविख्यात महाकवि सूरदास जी हैं।

प्रसंग— इस पद में महाकवि बालक श्री कृष्ण की उस मनोदशा का वर्णन कर रहे हैं जब कि श्रीकृष्ण यह अनुभव कर रहे हैं कि सभी ग्वाल मुझको परेशान करते हैं। अतएव अब मैं गाय चराने जाऊँगा ही नहीं।

भावार्थ— ग्वालों के व्यवहार से तंग आकर बालक श्रीकृष्ण माता यशोदा से उन सबों की शिकायत करते हुए कहते हैं कि माँ; अब मैं गायों को चराने के लिए जाऊँगा ही नहीं। जितने भी ग्वाल हैं वे सब के सब अपनी-अपनी गायों की रखवाली स्वयं नहीं करते। सभी गायों को मुझको ही दौड़ाकर ही घिरवाते है। इस से मेरे पैर में दर्द होने लगता है। यदि तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नही हो तो अपनी कसम खिलाकर बलदेव से ही पूछ लो कि यह बात सच है कि नहीं।

बालक श्रीकृष्ण की इस बात को सुनकर माता यशोदा क्रुद्ध होकर सभी ग्वालों को गाली देती हैं और कहती हैं कि मैं तो अपने बेटे को इसलिए भेजती हूँ वह भी अपना मन बहला आए। भगवान के भक्त सूरदास जी कहते हैं कि यशोदा जी कहती हैं कि मेरा यह बच्चा बहुत छोटा है और ये सब ग्वाल उस को दौड़ा-दौड़ा कर मारे जा रहे हैं।

(८) स्याम कर मुरली---------------------------------मुनि सब मोहति ।।८।।

सन्दर्भ— यह पद काव्य संकलन नामक ग्रन्थ के 'पद' शीर्षक कविता से अवतरित है। इसके रचयिता ब्रजभाषा के महान कवि श्री सूरदास जी हैं।

प्रसंग— इस पद में महाकवि मुरली मनोहर भगवान श्री कृष्ण के अतिलौकिक सौन्दर्य का यथार्थ चित्रण कर रहे हैं।

भावार्थ— श्री सूरदास जी कहते हैं कि श्याम सुन्दर भगवान श्रीकृष्ण के हाथों में रहने वाली मुरली बड़ी ही अच्छी लगती है। वह भगवान् के अधरों का स्पर्श करके अपनी ध्वनि के माध्यम से मानो अमृत की वर्षा करती है। वह श्रोत्रपेय मधुर-मधुर सुर में बजती रहती है। मुरली को बजाते समय चूंकि भगवान त्रिभंगी मुद्रा में खड़े होते हैं, अतएव उनका मुकुट कुछ लटक सा जाता है। उनकी भौहों की सुन्दरता मटकती-सी है। उनकी आँखों के ईशारे बड़े ही सुन्दर लगते हैं। गले को झुकाकर वे अपनी आँखों को बंशी पर टिकाये रखते हैं। इस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करोड़ों काम की सुन्दरता फीकी पड़ जाती है। उनके गालों पर चंचल कुँडल सुशोभित होते हैं। श्री भगवान के इस सौन्दर्य की उपमा कुछ इस प्रकार दी जा सकती है कि जैसे-दो मकर (घड़ियाल) अमृत के रस में क्रीडा कर रहे हों तथा परस्पर में वे एक दूसरे से अनुराग (स्नेह) करते हों।

इस प्रकार से नंदनंदन भगवान् श्रीकृष्ण श्री वृन्दावन में विहार कर रहे हैं और अपने बाल सखाओं के साथ सुशोभित होते रहते हैं। महाकवि सूरदास जी कहते हैं कि भगवान् श्रीकृष्ण की इस सुन्दरता को देखकर देवता, मनुष्य, तथा मुनि जन सब के सब उन पर मोहित हो जाते हैं।

(९) सखी री मुरली लीजै चोरि----------------राग की डोरि।। ९।।

सन्दर्भ— यह पद काव्य संकलन नामक ग्रन्थ के **'पद'** शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके प्रणेता महाकवि सूरदासजी हैं।

प्रसंग— इस पद में महाकवि मुरलीधर श्याम श्रीकृष्ण के विषय में गोपियों की भावनाओं का सरस चित्रण कर रहे हैं। गोपियों का मानना है कि मुरली तो श्री कृष्ण को इतनी प्यारी हो गयी है कि इसके सामने श्रीकृष्ण किसी गोपी पर ध्यान नहीं देते हैं। वे गोपियों की ओर से उदास हो गये हैं। इनका तो सब कुछ मुरली ही हो गयी है। इसलिए यही अच्छा होगा कि इनकी इस मुरली को चुरा लिया जाय। जिससे कि इनका ध्यान हटे।

भावार्थ— मुरली के प्रति श्रीकृष्ण का अत्यन्त आदर देखकर उनकी मुरली से ईर्ष्या करने वाली कोई गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि सखी, यह सबसे अच्छा है कि तुम इनकी मुरली को चुरा लो। लगता है कि इसने गोपाल का सबों से प्रेम छुड़ाकर, उनको अपना वशवर्ती बना लिया है। चाहें श्रीकृष्ण घर में रहें या बाहर, दिन हो या रात्रि, ये एक क्षण के लिए भी मुरली को अपने से अलग नहीं रखते हैं। वे सदा उसे अपने साथ लिए रहते हैं। जिस तरह से कोई नायक अपनी प्राणप्रेयसी को हर क्षण अपने साथ लिए रहता है। वह अपने से उसका कभी भी विप्रयोग नहीं होंने देता है। वे कभी तो उसे अपने हाथ में लिए रहते हैं, कभी उसे अपने अधरों से लगाए रखते, हैं तो कभी अपने कमर में खोंस लेते हैं। लगता है कि इस मुरली ने श्रीकृष्ण पर किसी प्रकार की मोहिनी विद्या कर रखा है जिसके कारण भगवान् श्रीकृष्ण के समस्त अंग उससे मोहित हो गए हैं। हे सखी इसने तो अपने स्नेह के बन्धन में भगवान् श्रीकृष्ण के मन को बिलकुल बांध लिया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१०) कहत कान्ह जननी-------------------मोहि लगौ बजाइ।। १०।।

सन्दर्भ— यह पद काव्य संकलन नामक ग्रन्थ के **'पद'** शीर्षक से अवतीर्ण है। इस पद के रचयिता महाकवि सूरदास जी हैं।

प्रसंग— इस पद में माता यशोदा श्रीकृष्ण को समझा रही हैं कि तुम अपने खिलौनों के प्रति असावधान रहने लगे हो। राधा अब प्रतिदिन यहाँ आने लगी है; कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हारा खिलौना ही चुरा ले जाय।

भावार्थ— माता यशोदा श्रीकृष्ण को समझाकर कह रही हैं कि तुम अपने खिलौनों के विषय में असावधान रहते हो। उन सबों को इधर-उधर फेंके रहते हो। ऐसा न हो कि राधा आए और तुम्हारे खिलौनों को चुरा ले जाय। राधा तो अब शाम सबेरे हमेशा इधर आने लगी है और वह हमेशा तुम्हारी मुरली को ही देखती रहती है। उसका मन तुम्हारी मुरली में ही लगा रहता है। माता यशोदा की इस बात को सुनकर भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि माँ इस मुरली में ही मेंरा प्राण रहता है। अर्थात् यह मुरली मुझको अत्यन्त प्यारी है और तुमको यह मेरी मुरली बिल्कुल अच्छी नहीं लगती है। इसको कहीं पर छिपा कर रख दो जिससे कि इसका किसी को पता न चले। बलदेव का भी इस विषय में कोई विश्वास नहीं करना चाहिये। वे भी मेंरी मुरली चुरा सकते हैं।

सूरदास जी कहते हैं कि, इस मुरली रूपी बलाय को कौन लेगा? इसकी किसी को कौन सी आवश्यकता है?

(११) संदेशो देवकी सो कहियो-------------ह्वैहैं करत संकोच।। ११।।

सन्दर्भ— यह पद काव्यसंकलन नामक पुस्तक के **'पद'** शीर्षक' से अवतरित है। इसके प्रणेता महाकवि सूरदास जी हैं।

प्रसंग— भगवान श्रीकृष्ण अब मथुरा चले गये हैं और वे वहीं निवास करने लगे हैं। कंस को मारने के पश्चात् भगवान् अपनी माता देवकी के ही साथ रहने लगे है। माता यशोदा श्रीकृष्ण के विरह में व्यथित हैं। उनका वात्सल्य उन्हें रुलाता रहता है। वे पथिकों द्वारा देवकी के पास इस पद के माध्यम से संदेश भेजती हैं-

भावार्थ— माता यशोदा श्रीकृष्ण के विषय में श्री देवकी जी के पास पथिकों से संदेश भेजती हुई कहती हैं, मेरा यह संदेश देवकी से जाकर कह देना कि मैं तो आपके पुत्र श्रीकृष्ण की धाई ही हूँ, किन्तु आप मुझे भूल मत जाइयेगा, स्नेह बनाये रखियेगा। यद्यपि आप श्रीकृष्ण की टेक को जानती ही होंगी; फिर भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपनी ओर से कह रही हूँ कि, सबेरा होते ही मेरे प्यारे बच्चे, माखन, और रोटी जाते हैं। वे तेल, उबटन और गर्म जल देखते हैं तो भाग जाते हैं। वो जो-जो मांगते हैं, मैं वही-वही वस्तु देती हूँ, वे एक के बाद दूसरे क्रम से नहाते हैं। सूरदास जी कहते हैं कि माता-यशोदा पथिकों से कहती है कि मुझे दिन-रात इस बात की सोच बनी रहती है कि श्री कृष्ण तो मेरे अत्यन्त प्यारे थे। वे मथुरा में बहुत संकोच करते होंगे? वे स्वभाव से ही अत्यन्त संकोची हैं। आप उनकी इच्छाओं का ध्यान अवश्य रखियेगा। श्रीकृश्ण को किसी प्रकार का कष्ट न होने पाये। अपने मन की बात को वे संकोच के कारण जल्दी कह भी नहीं पाते हैं।

(१२) उधौ मन न भये दस-बीस--------------------नही जगदीस।।

सन्दर्भ— यह पद काव्य संकलन नामक पुस्तक के 'पद' शीर्षक से लिया गया है। इसके रचयिता श्री कृष्ण भक्त महाकवि सूरदासजी हैं।

प्रसंग— इस पद में महाकवि ने उस स्थिति का वर्णन किया है, जब श्री कृष्ण मथुरा में रहने लगे थे। श्री कृष्ण के विरह में व्याकुल गोपियों के लिए सान्त्वना का संदेश लेकर श्रीकृष्ण के मित्र उद्धव गोकुल आए और उन्होंने गोपियों को बतलाया कि उन्हें निर्गुण निराकार ब्रह्म में अपने मन को लगाना चाहिए। उद्धव के उपदेश को नकारती हुई गोपियों ने कहा कि हम तो श्रीकृष्ण की हैं और रहेगें भी उनकी है। अब हममें परिवर्तन होना असंभव है।

भावार्थ— गोपियाँ उद्धव जी से कहतीं हैं कि प्रत्येक आदमी के पास मन तो एक ही होता है। हमारा मन तो पहले ही श्याम से लग चुका है और जब श्याम यहाँ से मथुरा गए तो हमारा मन भी उन्ही के साथ मथुरा चला गया। अब हमारे पास हमारा मन तो रहा नहीं। आराधना तो मन से ही की जा सकती है। जब हमारे मन हमारे पास हैं ही नहीं तो हम आपके द्वारा उपदिष्ट हंस (निर्गुण ब्रह्म) की आराधना किस साधन से करें? श्याम के अभाव में हमारी इन्द्रियाँ शिथिल हो गयी हैं। जिस तरह आत्मा के अभाव में सिर हिलता-डुलता भी नहीं है। शिथिल हो जाता है, उसी प्रकार हमारे शरीर में जो श्वांस चल रही है, वह इसी आशा से कि श्याम किसी न किसी दिन अवश्य हमें मिलेंगे। हम तो यही मानते हैं कि श्याम सुखी रहें उनकी आयु लाखों वर्ष की हो जाय। आप तो श्याम सुन्दर के मित्र हैं और समस्त प्रकार के योगों के स्वामी हैं। जानकार हैं। यहाँ पर गोपियाँ उद्धव का एक प्रकार से उपहास भी करती हैं कि एक तुम श्याम के मित्र हो कि उनको छोड़कर योग की आराधना करते हो और दूसरी तरफ हम गोपियाँ हैं कि हम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

याम सुन्दर की हो गयीं। अब किसी दूसरे की आराधना नहीं कर सकतीं। कितनी घटिया किस्म की तुम्हारी मित्रता है ? सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ कहती हैं कि श्याम को छोड़कर हम किसी भी दूसरे परमात्मा को नहीं मानती हैं। हम लोग उनकी ही आराधना करती रहेंगी।

(१३) उधौ मन नहिं हाथ हमारे------------कही करेंगी सोई ।।१३।।

सन्दर्भ– यह पद काव्यसंकलन नामक पुस्तक के 'पद' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

प्रसंग– इस पद में महाकवि गोपियों की विवशता का वर्णन कर रहे हैं। गोपियाँ श्रीकृष्ण की भक्ता हैं। उनका मन श्रीकृष्ण के ही साथ मथुरा चला गया। अब वे निर्गुण की योगसाधना कर ही नहीं सकती हैं।

भावार्थ– भगवान श्रीकृष्ण का संदेश लेकर गोकुल आए हुए उद्धव जी से गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव हमारा मन हमारे हाथ में नहीं है। श्याम जब यहाँ से मथुरा जा रहे थे उसी समय वे अपने ही साथ हमारे मन को भी अपने साथ रथ पर चढाकर मथुरा ले गए। यदि ऐसा नहीं होता तो हमारा मन हमारे साथ रहता तो हम लोग आपके द्वारा दी गयी योग की शिक्षा को अवश्य अपनाते, क्योंकि आपके लिए वह अत्यन्त रुचिकर है, निःस्पृहता पर बल देती है। हम तो श्याम सुन्दर के क्रिया कलाप को लेकर झंख रहे हैं कि उन्होंने हमारा मन तो ले लिया और अब उसके बदले में वे मथुरा से हम लोगों के लिए योग भेज दिए हैं, गोपियों तुम लोग अब योग करो ? योग किस साधन से हम करें? हमारा मन तो उन्हीं के पास है। बिना मन के योग साधना हो सकती है क्या? यदि आज भी हम अपना मन पा जायँ तो जो तुम कहो वही हम करने के लिए तैयार हो जायेंगी। श्याम की करोड़-करोड़ शपथ खाकर हम पूछतें हैं कि यदि हमारा मन हमारे पास हो तो हम वही करेंगे जो श्याम सखा आप कहेंगे।

(१४) उधौ जाहु तुमहि हम जानें----------------नेकहुँ मुसकाने।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– यह पद काव्य संकलन के सूरदास प्रणीत 'पद' शीर्षक से अवतरित है। इसमें मथुरा से गोपियों को उपदेश देने के लिए आए हुए उद्धव को नकारती हुई गोपियाँ कहती हैं कि लगता है कि आपको श्याम ने कहीं दूसरी जगह भेजा था और आप रास्ता भूल कर यहाँ चले आए हैं।

भावार्थ– गोपियाँ कहती हैं कि उद्धव जी आप लौट जाइये, हमलोग समझ गयी हैं कि श्याम ने आपको यहाँ नहीं भेजा होगा। आप रास्ता भूलकर यहाँ चले

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आए हैं। ब्रज की नारियों को योग का उपदेश देते समय आपको लज्जा नहीं आती है क्या? आप बड़े हो गए हैं आपको विवेक नहीं है, इतने अज्ञानी हो गए हैं आप ? हम से आप ने जो कुछ, कहा हम कुछ सोच-समझ कर वर्दास्त कर लेते हैं। कहाँ तो नारियाँ और कहां दिगम्बर (नग्न) रहने की दशा? अब भी तो आप चुप हो जाइये। आप सत्य कहिये। आपको हमारी कसम है। हम लोग यह जानना चाहती हैं कि श्याम जब आपको यहाँ भेज रहे थे तो थोड़ा सा भी मुस्काये भी थे क्या? वे ऐसा अवश्य कहे होंगे। आप उनके अभिप्राय को समझे नहीं। उन्होंने आपसे मजाक किया होगा और आप सचमुच चले आये।

(१५) निरगुन कौन देस को बासी------------------मति नासी।।१५।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह पद काव्य संकलन ग्रन्थ के सूरदास प्रणीत **'पद'** शीर्षक से उद्धृत है। गोपियाँ निर्गुण ब्रह्म का उपहास करती हुई कहती हैं कि हमें आप निर्गुण का कुछ परिचय बतलाइये।

भावार्थ— गोपियाँ कहती हैं कि हे मधुकर ! भला बतलाओ तो निर्गुण कहाँ का रहने वाला है ? हम तुमसे जानना चाहते हैं, हँसी नहीं कर रहे हैं ? उसके पिता माता कौन हैं ? उसकी पत्नी और दासी के नाम क्या हैं? उसके रूप तथा वेश क्या हैं ? वह किस रस को अधिक पसंद करता है ? यदि आपने कोई छल किया तो आप अपनी करनी का फल पाओगे। गोपियों की बात सुनकर उद्धव तो ठगाल जैसे बनकर मौन ही रह गए। कोई भी उत्तर नहीं दे सके।

(१६) यह गोकुल गोपाल उपासी-----------------गुनरासी।।१६।।

सन्दर्भ प्रसंग— यह पद काव्यसंकलन के सूरदास रचित **'पद'** शीर्षक से उद्धृत है। इस पद में गोपियाँ उद्धव जी से कहती हैं कि यहाँ आपके निर्गुण का कोई भी ग्राहक नहीं है।

भावार्थ— गोपियाँ कहती हैं कि गोकुल में तो सब लोग गोपाल की उपासना करने वाले हैं। जो लोग निर्गुण के उपासक हैं वे लोग काशी में निवास करते हैं यहां नहीं। यद्यपि श्रीकृष्ण ने हमें त्याग दिया है फिर भी हम उन्हीं के चरणों के सेवक हैं। यदि चन्द्रमा में राहु का ग्रास लग जाता है तो उससे चन्द्रमा क्या अपनी शीतलता त्याग देता है? हमारा क्या अपराध है कि श्याम हमारे लिए योग के उपदेश का सन्देश भेजते हैं और हमें अपने प्रेम और भक्ति से उदास बनाये रखना चाहते हैं ? सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ कहती हैं कि ऐसी कौन सी विरहिणी होगी जो मुक्ति को लेकर गुण के सागर श्री भगवान का त्याग कर दे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(१७) ब्रज के विरही लोग दुखारे---------------------------ज्यों तारे।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पद काव्यसंकलन के सूरदास प्रणीत 'पद' शीर्षक से उद्धृत है। इसमें महाकवि भगवान श्री कृष्ण के विरह में व्याकुल ब्रज के लोगों की दीन दशा का वर्णन किया गया है।

भावार्थ— भगवान श्रीकृष्ण के बिना ब्रज के लोग उनकी विरह-व्यथा से दुखी हैं। गोपाल के अभाव में सदा किंकर्तव्यविमूढ से बने रहते हैं। उनके शरीर काले हो गए हैं। नन्द और यशोदा प्रतिदिन सायंकाल और प्रातःकाल श्री कृष्ण के आने का रास्ता देखते रहते हैं। उन्हें विश्वास है कि एक दिन श्रीकृष्ण यहाँ आयेंगे। वे चारों तरफ कान्हाँ-कान्हाँ कहकर श्रीकृष्ण को पुकारते हैं। उनकी आँखों से आँसुओं की धारा बहती रहती है। श्रीकृष्ण के वियोग में गोपियाँ ग्वाले, गाय, तथा बछड़े सब के सब अत्यन्त दुखी हैं। सूरदास जी कहते हैं कि श्री कृष्ण के बिना ये सब ऐसे दिखायी पड़तें हैं जैसे चन्द्रमा के बिना तारे फीके और उदास प्रतीत होते हैं।

(१८) उधौ मोहि ब्रज बिसरत नाहि-----------हित जदु तात।।१८।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह पद काव्यसंकलन के सूरदास प्रणीत 'पद' शीर्षक से उद्धृत है। इस पद में भगवान श्रीकृष्ण की उस मनोदशा का वर्णन किया गया है जिसके अनुसार भगवान श्रीकृष्ण भी ब्रजवासियों के वियोग में उदास रहते हैं।

भावार्थ— भगवान श्री कृष्ण अपने मित्र उद्धव से कहते हैं कि उद्धव मुझे ब्रज की याद नहीं भूलती है। वृन्दावन, गोकुल, वहाँ के वन तथा उपवन, वहाँ के सघन कुंज तथा उसकी सान्द्र शीतल छाया, इन सबों की यादगारी मुझे बनी रहती है। प्रातः काल माता यशोदा और नन्द बाबा यह सब कुछ देखकर बहुत प्रसन्न होते थे। वे दोनों हम को अपने साथ ही माखन, रोटी तथा सजाव दही खिलाते थे। वहाँ पर जब हम थे तो गोपी तथा ग्वाल-बालों के साथ हँसते-हँसाते दिन बीत जाता था। सूरदास जी कहते हैं कि ब्रजवासी धन्य हैं जिनके मित्र भगवान श्री कृष्ण हैं।

जनकपुर में राम

(१) मुनि पद कमल बंदि-----------------------------सकल सुवेश

सन्दर्भ प्रसंग— प्रस्तुत काव्यांश काव्य संकलन के 'जनकपुर में राम लक्ष्मण'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीर्षक से अवतरित है। इस काव्य खण्ड में गोस्वामी तुलसी दास जी जनकपुर देखने के लिए जाते हुए श्रीराम और लक्ष्मण के शारीरिक दिव्य सौन्दर्य का वर्णन करते हैं।

भावार्थ— मुनि श्री विश्वामित्र के चरणों की वन्दना करके श्री राम और लक्ष्मण दोनों भाई जो सभी लोगों के नैनों का सुख देने वाले हैं, जनकपुर देखने के लिए चल पड़े। दोनों भाईयों की अत्यन्त सुन्दरता को देखकर बालकों का समूह उनके साथ चल पड़ा। सबके मन में दोनों भाईयों के रूप को देखने का लोभ था। उनका कमर में बांधने का वस्त्र पीला था पीठ पर तरकस लटक रहा था। हाथ में मनोहर धनुष बाण सुशोभित हो रहे थे। शरीर के अनुकूल वे चन्दन का तिलक लगाए हुए थे। श्रीराम लक्ष्मण की अत्यन्त मनोहर जोी र्थ। सिंह के समान उनके कंधे थे और भुजाएं लम्बी थीं। हृदय पर नागमणि की मनोहर माला सुशोभित होती थी। उनके कान सुन्दर थे और उनके कमल के समान मनोहर नेत्र थे। उनका मुख चन्द्र दैहिक, दैविक और भौतिक इन तीनों प्रकार के तापों को विनष्ट कर देने वाला था। कानों में कर्णफूल शोभता था। वे जिस को देखते उसके मानो मन को ही चुरा लेते थे। उनकी देखने की कला बड़ी ही मनोहर थी और भौहें अत्यन्त सुन्दर थीं। उनके तिलक की रेखा ऐसी लगती थी जैसे मानों वह सौन्दर्य की सीमा बना दी गयी हो। उनके सिर पर पीली चौतनी (टोपी) थी और काले घुंघराले केश थे। वे दोनों भाई नख से लेकर शिखा पर्यन्त अत्यन्त सुन्दर थे। उनके प्रत्येक अंग बड़े ही सुन्दर थे।

(२) देखन नगरु भूप सुत---------------------कोटि-कोटि सत काम।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत काव्यांश काव्यसंकलन के 'जनकपुर में राम लक्ष्मण' शीर्षक से उद्धृत है। इस काव्यांश में जनक पुर देखने के लिए आए श्री राम को देखने के लिए वहाँ के समस्त नरनारियों के उत्कण्ठातिशय्या तथा उनकी भावनाओं का सजीव वर्णन है।

भावार्थ— जब जनकपुर नगर के निवासियों को यह समाचार मिला कि जनक की नगरी को देखने के लिए श्री राम और लक्ष्मण आए हैं, तो वे अपने समस्त कामों तथा गृह को छोड़कर श्रीराम और लक्ष्मण को देखने के लिए उसी तरह से दौड़ पड़े; जैसे कोई दरिद्र खजाना लूटने के लिए दौड़ पड़ा हो। वे स्वाभाविक रूप से सुन्दर थे। दोनों भाईयों वे श्रीराम और लक्ष्मण को देखकर अपने नेत्र प्राप्त करने के फल को प्राप्त करके सुखी होते थे। युवतियाँ अपने गृहों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के झरोखों से श्री राम के रूप को प्रेम पूर्वक देखने लगीं और अपनी सखियों से प्रेम पूर्वक कहने लगीं कि इन दोनों भाईयों की सुन्दरता तो करोंड़ो कामदेवों की सुन्दरता से भी अधिक है। किसी भी देवता, मनुष्य, असुर, नाग अथवा मुनि की इस प्रकार की सुन्दरता नहीं सुनायी पड़ती है, जैसी सुन्दरता इनकी है। विष्णु सुन्दर हैं; किन्तु उनकी चार भुजाएँ हैं, ब्रह्मा के चार मुख हैं, शंकर जी के पाँच मुख हैं और उनका वेष भी भयंकर है। इन तीनों देवताओं को छोड़कर कोई भी ऐसा देवता नहीं है, जिसके सौन्दर्य की तुलना इनके सौन्दर्य के साथ की जा सके।

इनकी किशोरावस्था है, ये सौन्दर्य के खजाना हैं। इनके प्रत्येक अंग पर करोंड़ो कामदेव की शोभा को न्योछावर किया जा सकता है।

विशेष— इस खण्ड में उपमा, रूपक तथा उत्प्रेक्षा ये तीनों अलंकार है।

(३) कहहु सखी अस को तनु धारी------------------हरषीं सब नारि॥

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत काव्यांश काव्य संकलन के **'जनकपुर में श्री राम लक्ष्मण'** शीर्षक से उद्धृत है। इस काव्यांश में गोस्वामी तुलसीदास जी ने जनकपुर की नारियों द्वारा सुषमा सागर श्री राम के विषय में चर्चा का उल्लेख किया है।

भावार्थ— जनकपुरी की शोभा देखने के लिए निकले हुए श्री राम और लक्ष्मण को देखकर आपस में बातें करती हुई युवतियाँ कहती हैं, सखी बतलाओ कौन ऐसा जीव होगा जो श्री राम के इस सौन्दर्य माधुरी को देखकर मोहित न हो जाए। कोई युवती प्रेम पूर्वक कहने लगती है कि मैंने जो इनके विषय में सुना है उसे तुम सुनो, बाल हंसों की जोड़ी के समान मनोहर इन दोनों राजकुमारों ने मुनि के यज्ञ की रक्षा युद्ध में राक्षसों को मार कर किया।

श्याम वर्ण के शरीर वाले तथा कमल के समान नेत्र वाले श्रीराम मारीचं की भुजाओं का गर्व दूर करने वाले हैं। ये कौसल्या के पुत्र तथा सुख के खान हैं, उनका नाम श्री राम है। किशोरावस्था वाले गौरवर्ण के, सुन्दर वेष वाले, हाथ में धनुष, बाण लिए हुए जो श्री राम के पीछे-पीछे चल रहे हैं, वे श्री राम के छोटे भाई हैं। इनका नाम लक्ष्मण है। इनकी माता का नाम सुमित्रा है।

ये दोनों भाई मुनि विश्वामित्र का कार्य करके तथा रास्ते में गौतम मुनि की पत्नी अहल्या का उद्धार करके, इस धनुर्यज्ञ को देखने के लिए आये हुए हैं। उस युवती की बातों को सुनकर अन्य युवतियों को बड़ी प्रसन्नता हुई।

(४) देखि राम छवि कोउ एक कहई------------पुन्य पुराकृत भूरि॥

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह काव्यांश 'काव्य संकलन' के 'जनकपुर में श्री राम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लक्ष्मण' शीर्षक से अवतीर्ण है। इस काव्यांश में गोस्वामी तुलसीदासजी जनकपुर की नारियों की इस भावना का चित्रण कर रहें हैं कि श्री राम ही जानकी को वर के रूप में प्राप्त होंऍं।

भावार्थ— श्री राम के सौन्दर्य को देखकर कोई एक युवती कहने लगी कि श्री जानकी के योग्य तो यही वर है। सखि मेरा तो कहना है कि इन दोनों भाइयों को देखकर यदि महाराज अपना प्रण त्याग दें, और राम सीता का विवाह कर दें तो बड़ी ही अच्छी बात होगी। कोई युवती कहने लगी कि महाराज जनक ने इनको पहचान लिया है तथा मुनि विश्वामित्र के साथ ही इनका भी उन्होंने सम्मान किया है। दूसरी नारी कहती है कि सखि महाराज जनक अपने प्रण का परित्याग नहीं कर सकते ऐसा ही हमारा भाग्य है कि महाराज जनक अविवेक को ही अपनाये हुए हैं। किसी युवती ने कहा कि यदि विधाता ठीक रहता है तो वह सबों को उचित फल प्रदान करता है। यदि ऐसी बात है तो जानकी को श्री राम ही पति के रूप में मिलेंगे इसमें कोई भी सन्देह नहीं है। यदि भाग्यवश ऐसा संयोग बन जाय, तो सब लोग कृतकृत्य हो जायँ। सखि! हमको तो इसी बात की चिन्ता है कि इसी बहाने श्री राम पुनः जनकपुरी में कभी आयेंगे। नहीं तो सखी इनका दर्शन पुनः प्राप्त होना असम्भव है और ऐसा तब ही संभव है, जब हम लोगों के पूर्वजन्म का अधिक पुण्य होगा।

(५) बोली अपर कहे सखि नीका-------------------तँह तँह परमानंद।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह अवतरण काव्य संकलन के **'जनकपुर में राम लक्ष्मण'** शीर्षक से अवतरित है। इसके प्रणेता गोस्वामी तुलसीदास जी ने जनकपुरी को देखने के लिए निकले हुए श्री राम लक्ष्मण के रूप माधुरी को देखकर समस्त युवतियों के परस्पर में बातों का वर्णन इस अवतरण में किया है।

भावार्थ— दूसरी युवती कहने लगी कि सखि! तुमने बहुत अच्छा कहा है। श्री राम और जानकी का विवाह सबों के लिए परम कल्याणकारी है। किसी युवती ने कहा कि शंकर जी का धनुष अत्यन्त कठोर है, और श्याम वर्ण वाले श्री राम का शरीर कोमल है। इनकी किशोरावस्था है। इस तरह यह बड़ी असमंजस की पड़ी है कि क्या होगा? यह सुनकर किसी युवती ने कहा कि सखि! इनके विषय में कुछ लोग यह कहते हैं कि इनका प्रभाव बहुत बड़ा है। इनके चरण कमलों की धूलि के स्पर्श मात्र से महापापिनी अहल्या का भी उद्धार हो गया। इस प्रकार के श्री राम शिवजी का धनुष अवश्य तोड़ेंगे। आप यह विश्वास रखिये। जिस ब्रह्मा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने इतनी सुन्दरी सीता का सोच-विचार कर निर्माण किया है, उसने ही उसके लिए यह श्याम वर्ण का वर भी बनाया है। उस युवती की बात को सुनकर सभी युवतियाँ प्रसन्न हो गयीं और कहने लगीं कि ऐसा अवश्य ही होगा।

मन में प्रसन्न हो-होकर सुन्दर मुख तथा नेत्रों वाली युवतियाँ पुष्पों की वर्षा करती थीं और दोनों भाई जहाँ-जहाँ जाते थे वहाँ-वहाँ परमानन्द का अनुभव होता था।

पद

(१) मन पछितैहैं अवसर बीते-------------------विषयभोग बहुधीते।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत अवतरण काव्य संकलन के गोस्वामी तुलसीदास प्रणीत **'विनय के पद'** शीर्षक से अवतीर्ण है। इस पद में गोस्वामी तुलसीदास जी अपने मन को ही समझा रहे हैं कि तुम अनादि काल से सांसारिक विषयभोग की वासना में लिप्त हो, इस बार मानव जीवन मिला है, यदि इस जीवन में तुमने श्रीराम की भक्ति कर ली तब तो इस जीवन की सफलता है, अन्यथा यह दुर्लभ मानव देह विनष्ट हो जाने पर केवल पछताना ही हाथ लगेगा।

भावार्थ— गोस्वामी तुलसीदास जी कहते है कि हे मन समय बीत जाने पर तो केवल तुम पछिताओगे ही, कोई मौका नहीं मिल पायेगा। यह मानव शरीर दुर्लभ शरीर है। इस जीवन में मन, वचन और कर्म इन तीनों साधनों से श्री भगवान के चरणों का भजन करो। इस संसार में काल सबसे बली है। वह सबको मार देता है। इस काल ने ही सहस्रबाहु तथा रावण को भी मार डाला। अहंकार की भावना से भरकर के इन दोनों ने धन और गृह को सँवारा था किन्तु अन्तिम समय में कुछ भी इन लोगों के साथ नहीं गया। ये दोनों खाली हाथ ही इस संसार से चले गए। पुत्र, पत्नी, आदि तो अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए तुम्हारे साथ लगे हैं, इन सबों से प्रेम करना छोड़ दो।

हे मेरे मूर्ख मन! अन्त में ये सब के सब तुमको त्याग देंगे, यह निश्चित है इसलिए यही अच्छा है कि इसी समय से तुम ही इन सबों का त्याग कर दो। जड़ मन! अब तक तो तुम संसार की मोहिनी वासना में सोए थे, अब तो जागो! सबके स्वामी श्री राम से अनुराग करो। मन की दुराशाओं का त्याग करो। सांसारिक कामनाओं की आग तब तक बुझ नही सकती है जब तक इसमें विषय रूपी घी की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आहूति पड़ती रहेगी। अतएव विषयों के उपभोग से विरक्त होओ। संसार की सारी कामनाओं का त्याग करो।

विशेष— इस अवतरण की अन्तिम पंक्ति में रूपक अलंकार है।

(२) ऐसो को उदार जग मांही-------------------करै कृपानिधि तेरो।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत अवतरण काव्य संकलन के गोस्वामी तुलसीदास प्रणीत विनय के पद से अवतीर्ण है। इसमें गोस्वामी जी भगवान श्री राम की उदारता का सोदाहरण वर्णन करते हैं।

भावार्थ— गोस्वामी तुलसीदासजी इस विनय पत्रिका के पद के माध्यम से अपने मन को समझा रहे हैं कि संसार में इतना उदार कौन है? जो बिना किसी प्रकार की सेवा के ही दीनों पर कृपा करे ? इस प्रकार भगवान राम को छोड़कर कोई भी दूसरा नहीं है। योगीजन एवं मुनिजन योग और विराग के द्वारा जिस गति को प्राप्त करने में असमर्थ रह जाते हैं, उसी गति को गीध, जटायू तथा शबरी को प्रदान करके भगवान् श्री राम ने अपने मन में यह नहीं सोचा कि इन सबों को मैंने बहुत अधिक प्रदान कर दिया है। रावण भगवान् शंकर को अपने दसों सिरों को समर्पित करके जिस सम्पत्ति को प्राप्त किया था उसी सम्पत्ति को भगवान् श्रीराम ने विभीषणजी को अत्यन्त संकोच के साथ प्रदान किया। उनके मन में हो रहा था कि शरणागत विभीषण को मैं क्या यह छोटी सी लंका का राज्य दे रहा हूँ? गोस्वामी तुलसीदासजी अपने मन से कहते हैं कि ऐ मेरे मन ! यदि तुम इस प्रकार से सुख प्राप्त करना चाहते हो तो भगवान् श्री राम का भजन करो। वे कृपानिधि हैं, वे तुम्हारी सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण कर देंगे।

(३) जाऊँ कहाँ तजि चरन तिहारे-----------------------अपनपौ हारे?

सन्दर्भ प्रसंग— यह अवतरण काव्य संकलन के गोस्वामी तुलसीदास प्रणीत विनय के पद शीर्षक से अवतरित है। इसमें गोस्वामीजी श्री भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवन्। आपको छोड़कर मेरी रक्षा करने वाला कौन है। अतएव आपके चरणों की शरण को छोड़कर मैं किसी दूसरे देवी-देवता के दरवाजे को नहीं खटखटाऊँगा।

भावार्थ— गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि भगवन्! आपके चरणों को छोड़कर मैं कहाँ जाऊँ। मेरा दूसरा कौन रक्षक हो सकता है ? संसार में कौन ऐसा देवता है जिसको पतित पावन कहा जाता हो ? किसको दीन दुखिया जीव अत्यन्त प्रिय हों ? कौन ऐसा देवता है जो अपने सुयस की परवाह किए बिना जबर्दस्ती-अध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ाम जीवों का उद्धार करता हो ? कौन ऐसा देवता है जो गीध जैसे पक्षी, गजेन्द्र जैसे पशु, व्याध, अहिल्या जैसी शिला, पेड़ आदि जिस किसी भी यमलार्जुन जैसे दीन दुखिया को मुक्ति प्रदान किया हो ? आपको छोड़कर जितने भी देवता, दैत्य, मुनि, नाग, तथा मनुष्य हैं, वे सब के सब माया के वशवर्ती हैं, ऐसे देवता किसी का माया से उद्धार क्या करेंगे ? वे तो स्वयं माया के जाल में फँसे हैं। आप माया हैं, अतएव आप ही माया के जाल से उद्धार करने में समर्थ हैं।

वन पथ पर

(१) पुर ते निकसी रघुवीर-वधू------------------चारु चलीं जल च्वै॥

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह पद्य काव्यसंकलन के **'वन पथ'** पर शीर्षक से उद्धृत है। यह रचना गोस्वामी तुलसीदासजी की है। इसमें वन के लिए चलती हुई सीताजी की सुकुमारता तथा अतुरता का वर्णन किया गया है।

भावार्थ— चौदह वर्षों के लिए वनवास में श्री राम और लक्ष्मण के साथ चलती हुई श्री सीता जी अयोध्या नगरी से निकलकर अभी दो चार ही डग चली थीं कि वे श्रान्त हो गयीं। उनके माथे पर पसीने की बूंदें झलकने लगीं और लाल-लाल ओठों के पुट सूख गये। इसके पश्चात् वे अपने प्रियतम श्री रामजी से पूछीं कि प्रभो अभी कितना दूर चलना बाकी है ? आप कहाँ पर पर्णकुटी का निर्माण करेंगे ? सीताजी की इस प्रकार की आतुरता को देखकर करुणा सागर श्री राम के आँखों में आँसू भर गए। वे सोचने लग गए कि इतनी सुकुमारी सीता को मेरे साथ बनवास में जाना पड़ रहा है, यह मेरा कितना बड़ा दुर्भाग्य है?

विशेष— कवितावली के इस छन्द में सीताजी की अतिलौकिक सुकुमारता का वर्णन है।

(२) जल को गए लक्खन हैं लरिका----------------वारि विलोचन बाढ़ै॥

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत कविता काव्यसंकलन के **'वन के पथ पर'** शीर्षक से उद्धृत है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदासजी भगवान् श्री राम और सीताजी के परस्पर के स्नेह का वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ— भगवान् राम लक्ष्मण और सीता तीनों जंगल में चल रहे थे। प्यास लगने पर लक्ष्मण जी पानी लाने के लिए चले गए। भगवान् राम आगे बढ़ रहे थे तो श्री सीताजी ने भगवान् से कहा-जल लाने के लिए गए हुए श्री लक्ष्मण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लड़के हैं, अतएव आगे बढना ठीक नहीं है। हे प्रिय! वृक्ष की छाया में घड़ी भर खड़ा होकर आप उनके आने की प्रतीक्षा कर लीजिए। मैं तब तक आपके पसीने को पोंछ दूं। जलती हुई धूल में पैर जल रहे होंगे। सीताज़ी की उपर्युक्त बातों को सुनकर भगवान् राम ने समझ लिया कि सीताजी थक गयी हैं। वे बैठ गये और देर तक अपने पैरों के काँटे निकालते रहे। सीताजी भी इस बात को समझ गयीं कि श्री राम के पैरों में काँटा नहीं गड़ा है, वे मुझे सुस्ताने के लिए देर तक काँटा काढ़ने का बहाना कर रहे हैं। अपने प्रियतम के इस प्रकार के प्रेम को देखकर श्री जानकी जी का सम्पूर्ण शरीर रोमाञ्चित हो गया और आँखों से प्रेम के आँसू बहने लगे।

विशेष— इस पंक्ति में गोस्वामी जी ने श्री राम और सीता के परस्पर के सात्त्विक स्नेह का वर्णन किया है।

(३) साँवरे गोरे सलोने सुभाय------------------सकुचात हियो है।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत कवित्त काव्य संकलन के 'वन पथ पर' शीर्षक से उद्धृत है। इस कवित्त छन्द के प्रणेता गोस्वामी तुलसीदासजी हैं। वन में जाते हुए श्रीराम सीता और लक्ष्मण को देखकर मार्ग के लोगों के मन की भावना तथा उनकी परस्पर की बातों का मनोहर वर्णन इस कवित्त में किया गया है।

भावार्थ— वन में जाते हुए श्री राम लक्ष्मण और जानकी को देखकर ग्रामवासी आपस में बातें करते हुए कहते हैं; ये दोनों श्री राम और लक्ष्मण श्याम और गौर वर्ण के हैं। इनकी सुन्दरता कामदेव से भी अधिक है। इनके शरीर पर धनुष बाण और तरकस सुशोभित हो रहे हैं, जिस पर जटा बनाये रखने के कारण इन लोगों ने मुनि का वेष बना लिया है। इन दोनों के साथ ऐसी नारी है जिस का मुख मण्डल चन्द्रमा के समान मनोहर है; उसके रूप के सामने कामदेव की पत्नी रति का रूप फीका लगता है; किन्तु दुःख की बात यह है कि इनके पैरों में जूते भी नहीं हैं। ये पैदल वन में चल रहे हैं। ये कैसे चल रहे हैं? यह सोचकर मन में बड़ा संकोच होता है।

(४) रानी मैं जानी अयानी----------------------बनवास दियो है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रकृत अवतरण 'काव्य संकलन' के 'वन पथ पर' शीर्षक से उद्धृत है। इस कवित्त छन्द में महाकवि गोस्वामी तुलसीदासजी ने ग्रामवासियों द्वारा वन में जाते हुए श्री राम, लक्ष्मण और सीता को देखकर कैकयी को दो वरदान दिये जाने का वर्णन किया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावार्थ— श्री राम लक्ष्मण और जानकी को रानी कैकयी ने चौदह वर्षों के लिए वनवास में भिजवाया है। इस बात को जब ग्राम बधुएँ जान गयीं तो उन सबों ने कहा कि मैं समझती हूँ कि रानी महा अज्ञानी है। उसका हृदय तो वज्र और पत्थर से भी कठोर हे। वह राज के कार्य की होने वाली क्षति को भी नहीं समझ पाती है! वह तो नारियों के नाम पर कलंक जैसी है। इस प्रकार के मनोहर शरीर वाले श्री राम, लक्ष्मण, और सीता के; अपने से विछुड़ जाने पर इनके जो प्रेमी लोग हैं, वे कैसे जीवित रहते होंगे। हे सखि! यो लोग तो अपनी आँखों में वसा लिए जाने के योग्य हैं। जी चाहता है कि इन सबों को सदा देखते ही रहें। इन लोगों को किस लिए रानी ने बनवास दिया यह समझ में नहीं आता है। इसमें मैं तो रानी का केवल अज्ञान ही कारण प्रतीत होता है।

(५) सीस जटा, उर बाहु बिसाल-----------------सखि रावरे को हैं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह कविता 'काव्य संकलन' के **'वन पथ पर'** शीर्षक से उद्धृत है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदासजी हैं। वन मार्ग में चलते हुए राम, लक्ष्मण और सीताजी को देखकर, श्री राम के अतिलौकिक सौन्दर्य से प्रभावित ग्राम नारियाँ सीताजी से उनके संबन्ध के विषय में पूछती हैं।

भावार्थ— सीताजी से मार्ग की ग्राम नारियाँ पूछती हैं कि जिनके सिर पर जटा है, जिनकी भुजाएँ लम्बी और विस्तृत (चौड़ी) छाती है, नेत्र लाल हैं और भौहें तिरछी सी हैं; जो तरकस, धनुष, एवं बाण धारण किए हुए हैं। इस प्रकार से जो वन मार्ग में बहुत अधिक सुशोभित हो रहे हैं। तुम अपने स्वाभाविक ढंग से जिन्हें बारम्बार देखती हो, इससे हम लोगों के मन में भी बड़ी प्रसन्नता होता है। सखि ! ये साँवले वर्ण के जो पुरुष हैं तुम्हारे कौन लगते हैं?

(६) सुनि सुन्दर बैन------------------------------मंजुल कंज कली।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह कवित छन्द 'काव्य संकलन' के **'वन पथ पर'** शीर्षक से उद्धृत है। इस कवित्त में गोस्वामी तुलसीदास ने वर्णन किया है कि श्री सीताजी ने अपने ईशारे और मन्द मुसुकान के द्वारा ही ग्राम बधुओं को बतला दिया कि श्याम वर्ण के श्री राम उनके प्राण प्रियतम हैं।

भावार्थ— ग्राम वधुओं ने बड़े ही प्रेम पूर्वक सीताजी से पूछा था कि श्याम वर्ण के पुरुष तुम्हारे कौन लगते हैं ? ग्राम नारियों की वह वाणी इतनी मधुर थी कि जैसे वह अमृत के रस में सानी गयी हो। अर्थात् उसमें बड़ी ही मधुरता थी। उस बात को सुनकर चतुर श्री जानकी ने आँखों के इशारे और मधुर मुसुकान के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वारा वे श्याम वर्ण के श्री राम हमारे प्राण स्वरूप हमारे पतिदेव हैं, बतला दिया और वे अपने मार्ग पर आगे बढ गयीं। तुलसीदासजी कहते हैं कि उस समय उनको खड़ा होकर देखने वाली नारियाँ ऐसी लग रही थीं जैसे अनुराग रूपी सरोवर में सूर्यदेव के प्रकाशित होने पर सबों के मन रूपी कमल की कलियाँ विकसित हो गयी हों।

विशेष— इस छन्द की अन्तिम पंक्ति में रूपक एवं उत्प्रेक्षा अलंकारों की संसृष्टि है।

मीरा बाई-पदावली

(१) बसो मेरे नैनन में---------------------------भक्त वच्छल गोपाल।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह पद काव्यसंकलन ग्रन्थ के **'मीराबाई पदावली'** शीर्षक से उद्धृत है। इसमें मीराबाई श्री भगवान् से अपने नेत्रों में निवास करने के लिए प्रार्थना करती हैं। इसमें उन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण के अपने मनोनुकूल रूप का वर्णन किया है।

भावार्थ— मीराबाई इस पद में भगवान् श्री कृष्ण से प्रार्थना करती हैं कि हे नंदलाल आप मेरे नेत्रों में नित्य निवास करें। अर्थात् मैं आपका हमेशा दर्शन करती रहूँ। आपके सिर पर मोर का मुकुट है, मकराकृति कुण्डल है तथा ललाट पर आप लाल तिलक लगाए हुए हैं। आपकी मूर्ति प्यारी है, वर्ण आपका साँवला है तथा नेत्र बड़े-बड़े हैं। सुधा के रस से परिपूर्ण आपके ओष्ठों पर मुरली सुशोभित हो रही है। हृदय पर बैजयन्ती की माला लटक रही है। आपके कमर में छोटी-छोटी घंटी लगी है और आपके नूपुर के शब्द अत्यन्त सुखप्रद हैं। मीराबाई कह रही हैं कि प्रभु श्रीकृष्ण संतों को सुख देने वाले है। वे स्वभावतः भक्त वत्सल हैं।

(२) पायो जी म्हैं तो---------------------------हरख-हरख जग गायो।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पद काव्यसंकलन नामक पुस्तक के मीराबाई के 'पदावली' शीर्षक से लिया गया है। इसकी गायिका मीराबाई हैं। इस पद में वे बतलाती हैं कि मेरे सद्गुरु ने रामनाम के उपदेश रुपी अनमोल रत्न को मुझे प्रदान कर दिया है।

भावार्थ— मीराबाई इस पद में बतला रहीं हैं कि मैनें रामनाम रूपी अनमोल रत्न को प्राप्त कर लिया है। यह एक ऐसा रत्न है जिसका मूल्य कोई आँक ही नहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सकता है। मेरे सद्गुरु ने मुझ पर कृपा की और मुझे अपना लिया फिर उन्होंने इस राम-नाम रुपी अनमोल रत्न को प्रदान किया। संसार के लोग तो यहाँ आकर अपनी पूर्व जन्म की पूँजी गवाँ बैठेते हैं। किन्तु सद्गुरु की कृपा से मैंने अपने अनेक जन्म की पूँजी प्राप्त कर ली है। यदि इसको खर्च किया जाय तो घटता नहीं है, इसको कोई चोर भी नहीं चुरा सकता है। यह तो प्रतिदिन सवा गुना बढता ही जाता है। मेरे लिए सत्य ही नाव है, इस नाव को पार लगाने वाले सद्गुरु हैं। इस नाव के माध्यम से भवसागर को पार किया जा सकता है। मीराबाई कह रही हैं कि मेरे तो एकमात्र स्वामी श्री गिरधर नागर हैं। मै खूब खुश होकर बारम्बार उनके यश का गान करती हूँ।

विशेष— इस पद में रूपक अलंकार है।

(३) माई री मैं तो लियो------------------------पूरब जनम को कौल।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पद काव्यसंकलन के मीराबाई प्रणीत 'पदावली' से लिया गया है। इस पद में मीराबाई कह रही हैं कि मैंने तो गोविन्द को अपनी भक्ति के बल पर खरीद लिया है।

भावार्थ— मीराबाई कहती हैं कि मैंने तो गोविन्द भगवान् श्री कृष्ण को खरीद लिया है। कोई तो कहता है कि मीरा ने गोविन्द को प्रकट रूप से अपना लिया है, तो कोई कहता है कि यह काम मीरा ने चुपके-चुपके किया है। किन्तु मैंने तो ढिंढोरा पीटकर इस काम को किया है। कोइ़ मेरे इस सौदे को महँगा बतलाता है तो कोई सस्ता बतलाता है। चाहे जैसा हो मैंने तो भक्ति के बदले में गोविन्द को तराजु के पलड़े पर तौल कर ले लिया है। कोई गोविन्द को काला बतलाता है तो कोई गोरा; किन्तु मेरे लिए तो गोविन्द अमोल हैं; उनको मैंने खरीदा है। मेरा यह काम किसी से छिपा नहीं है। मैंने इस काम को खूब सोच-समझकर किया है, और सबों को जनाकर किया है। मीराबाई कहती हैं कि श्रीकृष्ण ने पूर्व जन्म में ही मुझे दर्शन देने की प्रतिज्ञा की थी; अतएव इस जन्म में उन्होंने मुझे दर्शन दिया है।

(४) हरी तुम हरौ जन की भीर--------------------कँवल पे सीर।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह पद काव्यसंकलन नामक ग्रन्थ के मीराबाई प्रणीत 'पदावली' शीर्षक से उद्धृत है। इस पद में मीरा श्री भगवान् से प्रार्थना करती है कि हे भगवन् आप ही अपने भक्तों की लाज रखने वाले हैं।

भावार्थ— मीराबाई कहती हैं कि हे हरे ! भक्तों के ऊपर आयी हुयी विपत्ति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का निवारण करने वाले केवल आप ही हैं। आपने द्रौपदी की रक्षा उनके वस्त्रों को बढ़ाकर किया। उनके वस्त्रों को बढ़ाने में आपने थोड़ी सी भी देर नहीं की। अपने भक्त प्रह्लाद के लिए आपने नरसिंह रूप धारण किया तथा हिरण्यकशिपु को मारने में आपने थोड़ी सी भी देर नहीं की। जिस समय ग्राह से ग्रस्त होकर गजराज पानी में डूबा जा रहा था, उसको बचाने वाला कोई भी नहीं था, उस समय आपने गजराज को बचा लिया और उसे पानी से बाहर निकाला। मैं तो आपकी दासी हूँ, आपकी शरणागत हूँ। आपके चरण कमल पर मैंने अपना सिर रख दिया है, मेरी लाज अब आपके ही हाथ में है। आप उसे अवश्य बचायेंगे यह मुझे विश्वास है।

(५) हे री मैं तो प्रेम दिवाणी------------------------सँवलिया होय।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह पद काव्यसंकलन के मीराबाई पाठ के 'पदावली' शीर्षक से अवतीर्ण है। इस में मीराबाई अपनी मानसिक व्यथा को अभिव्यक्त करती हैं।

भावार्थ— मीराबाई कहती हैं कि मैं तो श्री हरि के प्रेम में पागल हो गयी हूँ। मेरे मन में अपने प्रियतम प्रभु को पाने की जो उत्कट इच्छा है, उसे कोई भी नहीं समझ रहा है। मेरे प्रियतम की शयृया तो शूली के ऊपर बिछी हुई है, उनके साथ मैं कैसे सोऊँ यह मुझे नहीं समझ में आता है। मेरे प्रियतम की शयृया सन्निकट भी नहीं है, वह आकाशमण्डल में है, उनसे किस तरह मैं मिलूँ यही मैं भी नहीं समझ पाती हूँ। किसी घायल की मनोदशा को तो वही समझ सकता है जो स्वयं घायल हुआ हो, अथवा जिसके हृदय में स्नेह की आग धधक रही हो, वही उस प्रेम में घायल मनवाले की स्थिति को जान सकता है। किसी जौहरी की मनःस्थिति को कोई जौहरी ही जान सकता है अथवा जो स्वयम् जौहर हो वह उसे समझ सकता है; कोई सामान्य व्यक्ति उसे नहीं समझ सकता।

मैं तो अपने प्रियतम के वियोग व्यथा में चारो तरफ कष्ट से त्राण पाने के लिए भटक रही हूँ; उसे कोई नहीं सूझाता है। मेरे कष्ट को दूर ही करने वाला कोई भी वैद्य नहीं मिलता है। मीराबाई कह रही हैं कि मेरा कष्ट तो तब दूर हो सकता है, जब मेरे लिए वैद्य बनकर स्वयम् मेरे प्रियतम भगवान् श्री कृष्ण मिल जायँ। उनके बिना मेरी इस वेदना की शान्ति नहीं हो सकती है।

(६) मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो--------------------तारो अब मोई।।

सन्दर्भ प्रसंग— प्रस्तुत पद काव्यसंकलन ग्रन्थ के मीराबाई पाठ के 'पदावली'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीर्षक से अवतीर्ण है। इस पद में मीराबाई बतला रही हैं कि मेरा एकमात्र संबन्ध भगवान् श्री कृष्ण से है। उनको छोड़कर कोई भी दूसरा व्यक्ति मेरा अपना नहीं है मैं केवल उन्हीं को अपना मानती हूँ।

भावार्थ— मीराबाई कहती हैं कि मेरा तो एकमात्र; अपना व्यक्ति गोवर्धन धारी भगवान् गोपाल ही हैं, उनको छोड़कर मेरा अपना कोई भी व्यक्ति नहीं है, जिनके सिर पर मोर के पंखों का बना हुआ मुकुट है; वे भगवान् श्री कृष्ण ही मेरे पति हैं। जितने भी माता, पिता, भाई बन्धु इत्यादि हैं ये सब के सब पराये हैं, इनको मैं अपना नहीं मानती हूँ। अब तो मैंने अपनी कुल की मर्यादा का परित्याग कर दिया है। कोई भी मेरा क्या बिगाड़ लेगा ?

सन्तो के सन्निकट में बैठ-बैठकर मैंने लोक की लाज गँवा दी है। आँसू के जल से सींच-सींच कर भगवान् के साथ किए गए प्रेम की लता को मैंने बोया है और अब भगवत् प्रेम की लता चारो ओंर फैल गयी है। उससे आनन्द रूपी फल की प्राप्ति हो रही है। जब मैं भगवद् भक्तों को देखती हूँ; तो मेरे मन में प्रसन्नता होती है और जब मैं संसारी जीवों को देखती हूँ तो मुझे रुलाई आती है, उससे कष्ट ही होता है। मैं तो गिरधर लाल की दासी हूँ, अब मेंरा उद्धार वे ही कर सकते हैं। उनको छोड़कर मेरा उद्धार करने वाला कोई भी दूसरा नहीं है।

विशेष— इस पद में रूपक अलंकार है।

(६) नहि ऐसो जनम बारम्बार——————————जीवणा दिन चार

सन्दर्भ प्रसंग— यह पद काव्यसंकलन के मीराबाई पाठ के **'पदावली'** शीर्षक से अवतीर्ण है। इस पद में मीराबाई बतला रही हैं कि मानव जीवन बड़ा ही दुर्लभ है। इसकी सफलता यही है कि इसी जन्म में भगवान् की भक्ति करके संसार सागर को पार कर लिया जाय।

भावार्थ— मीराबाई बतला रही हैं कि मनुष्य का जन्म बार-बार नहीं मिलता है। जब जीव का बहुत बड़ा पुण्य प्रकट होता है तो उसे मनुष्य का जन्म मिलता है। देखने में तो यह शरीर प्रत्येक क्षण बढता जाता है, किन्तु बढने के साथ-साथ यह घटता भी जाता है। अवस्था ज्यों-ज्यों बढ़ती है आयु उसी क्रम से घटती जाती है। जिस तरह वृक्ष का जो पत्ता टूट जाता है, वह फिर उस वृक्ष में जाकर नही जूटता। उसी तरह जीवन का जो दिन बीत जाता है वह फिर जीवन में लौटकर नहीं आने वाला है। यह संसार-सागर अत्यन्त जोर-शोर से लहरा रहा है, इसकी धारा विषम तथा गहरी है। यदि तुम चाहते हो कि इस संसार-समुद्र के पार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाऊँ तो राम नाम का बेड़ा बाँध लो। ऐसा करके तुम भव सागर के पार उतर जाओगे।

संसार रूपी चौराहे पर ज्ञान की चौपड़ बिछी हुई है। इस चौपड़ में यदि तुम जीतना चाहते हो तो परमात्मा की सूरत (ध्यान) रूपी पासे का खेल-खेलो। यदि तुम ऐसा करते हो तो फिर इस दुनिया में जीत जाओगे। तुम हार नहीं सकते। इस जगत के जितने भी साधु, सन्त, महन्त, तथा ज्ञानी पुरुष हैं वे केवल इसी बात का उपदेश देते हैं। मीराबाई तो गिरधर लाल की ही दासी है। इस संसार में दो-चार दिन ही जीना है। अतएव इस संसार से विरक्त होकर श्री कृष्ण की आराधना में लीन हो जाओ।

विशेष— इस पद में रूपक अलंकार है।

नरोत्तमदास सुदामाचरित

(१) सिच्छक हौं सिगरे जग को----------------------केवल भिक्षा।

सन्दर्भ प्रसंग— यह कवित्त छन्द काव्यसंकलन के नरोत्तमदास प्रणीत 'सुदामाचरित' शीर्षक से उद्धृत है। दारिद्र्य दोष से व्याकुल ब्राह्मण सुदामा जी की पत्नी ने भगवान श्रीकृष्ण से कुछ सम्पत्ति माँगने के लिए उन्हें द्वारकापुरी जाने की बार-बार कहा तो सुदामा जी कहते हैं, कि मैं तो ब्राह्मण हूँ, विद्वान हूँ, भिक्षचर्या ही हमारी सम्पत्ति है।

भावार्थ— सुदामा जी अपनी पत्नी से कहते हैं कि मैं तो ब्राह्मण हूँ, सम्पूर्ण जगत् को शिक्षा देता हूँ, किन्तु आज तुम मुझे ही शिक्षा दे रही हो। ब्राह्मणों का यह स्वभाव होता है कि वे तपस्या करके अपने परलोक को बनाने के लिए सदा सचेष्ट रहते हैं, उनको सम्पत्ति प्राप्त करने की इच्छा नहीं रहती है। मेरे हृदय में श्री भगवान् के चरण कमलों का निवास है। यदि तुम्हें विश्वास नहीं होता हो तो तुम मेरी बार-बार इस विषय में परीक्षा ले सकती हो। अरे बावरी (वेवकूफ) तुम को यह समझना चाहिए कि धन तो और लोगों को चाहिए, ब्राह्मणों की सम्पत्ति तो उसकी भिक्षा ही होती है। भिक्षान्न से ही वह अपना जीवन यापन करते हुए परमात्माराधन करता है।

(२) कोदो सवाँ जुरतो भरपेट-------------------------फूटी कठौती।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पद्य काव्यसंकलन के नरोत्तमदास रचित 'सुदामा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चरित' से उद्धृत है। इस पद्य में सुदामाजी की पत्नी बतला रही है कि मेरी कुछ वेवशियाँ है, जिनके कारण मैं आपको द्वारका भेज रही हूँ, भगवान् श्री कृष्ण के पास।

भावार्थ–सुदामाजी की पत्नी कहती हैं कि यदि मुझे खाने के लिए प्रतिदिन कोदो तथा साँवा का ही भात भरपेट मिल जाता तो मैं आपसे कभी दूध, दही और मिठाई नहीं माँगती। जाड़े के दिन में काँपते-काँपते सारा जाड़ा बीत जाता है। यदि हमारे पास जाड़े में ओढ़ने के लिए वस्त्र भी होता तो मैं हठ करके आपको द्वारका नहीं भेजती। मैं यह भी नहीं जानती कि श्री हरि भगवान् श्री कृष्ण आपके मित्र हैं तो भी मैं आपको द्वारका भेजने का हठ नहीं करती। चूंकि हमें कभी भरपेट भोजन भी नहीं मिला। हम बिना ओढ़ना के ही जाड़ा बिताते हैं और आपके मित्र द्वारका के नाथ भगवान् श्री कृष्ण हैं; इसीलिए मैं आपको द्वारका जाने के लिए प्रेरित करती हूँ। हे प्रियतम! यद्यपि हमारा तवा टूट गया है और आँटा सानने की कठौत फूट गयी है। अब कष्ट सहा नहीं जाता है, इसीलिए मैं आपको द्वारका जाने की बात कहती हूँ।

विशेष– इस कविता में सुदामा जी की पत्नी ने अपनी दीनता की पराकाष्ठा का सजीव वर्णन किया है।

(३) द्वारका जाहुँ जू द्वारका जाहुँ जू-------------चारि न चाँवरि मेरे।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– यह पद्य काव्यसंकलन के नरोत्तमदास प्रणीत 'सुदामा चरित' शीर्षक से लिया गया है। इस पद्य में सुदामा जी अपनी पत्नी से कहते हैं कि तुम सदा मुझे द्वारिका जाने की बात तो कहती हो, किन्तु क्या तुम्हारे पास उनको भेंट देने के लिए कुछ चावल इत्यादि है?

भावार्थ– सुदामा जी अपनी पत्नी से कहते हैं कि तुम तो रात दिन मुझे द्वारका ही जाने के लिए कहती रहती हो। तुमको तो झक सवार है। यदि तुम्हारी बात न मानूँ तो तुमको बड़ा कष्ट होता है। किन्तु तुम यह तो विचार करो, कि वहाँ जाने के लायक क्या मेरी स्थिति है? उनके द्वार पर छड़ी धारी द्वारपाल खड़े रहते हैं। बड़े-बड़े राजा तो श्री भगवान् से मिल ही नहीं पाते हैं, हमारी क्या बात है। यदि मैं वहां जाऊंगा तो उनको देने के लिए कुछ न कुछ मेरे पास चाहिए? किन्तु पाँच सुपारी की बात मैं क्या करूँ। मेरे पास तो चार चावल भी नहीं है कि उन्हें मैं भेंट में दे पाऊँगा। क्या भगवान् के पास खाली हाथ जाऊँ?

विशेष– इस पद्य में सुदामा की अत्यन्त दीनता का वर्णन है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) सीस पगा न झगा तन में------------------आपनो नाम सुदामा।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत पद्य काव्यसंकलन के 'नरोत्तमदास' प्रणीत 'सुदामा चरित' शीर्षक से लिया गया है। इस पद्य में सुदामा जी की दीन-हीनता का वर्णन-भगवान् श्री कृष्ण का द्वारपाल कर रहा है।

भावार्थ– सुदामा जी अपनी पत्नी के आग्रह को स्वीकार करके द्वारकापुरी चले गए। वहाँ पर द्वारपाल से अपना नाम भगवान् श्री कृष्ण से बतलाने के लिए उन्होंने कहा। द्वारपाल आकर भगवान् श्री कृष्ण से कहता है कि भगवन् राजद्वार पर एक दुर्बल ब्राह्मण आकर खड़ा है। उसके सिर पर न तो पगडी है और न तो शरीर में कुर्ता ही है। भगवन् न जाने वह ब्राह्मण किस ग्राम में रहता है ? उसकी धोती फटी हुई है और दुपट्टा बिल्कुल बदहाल है। उसको पैर में जूता पहनने का तो सामर्थ्य है ही नहीं। इस प्रकार का वह द्वार पर खड़ा दुर्बल ब्राह्मण यहाँ की सुन्दरता को देखकर चकित है। वह आप दीन दयाल को पूछ रहा है और अपना नाम सुदामा बता रहा है।

विशेष– इस पद्य में अनुप्रास अलंकार है।

(५) बोल्यो द्वारपालक 'सुदामा' नाम-------------दीनन सो माने को ?

भावार्थ एवं प्रसंग– यह पद्य काव्यसंकलन के नरोत्तमदास प्रणीत सुदामा चरित नामक शीर्षक से अवतीर्ण है। द्वारपालक के मुख से यह सुनकर कि सुदामा जी मुझसे मिलने आये हैं भगवान् सारा राज्य का कार्य छोड़कर दौड़ पड़े और सुदामा जी को प्रणाम कर उनके गले से लिपट गए।

भावार्थ- द्वारपालक के मुख से 'सुदामा पांडे' इस नाम को सुनते ही श्री भगवान् राज्य का सारा कार्य छोड़ दिए। इस प्रकार से भक्तों के मन की गति को श्री भगवान् को छोड़कर दूसरा कौन जान सकता है? द्वारका के स्वामी भगवान् दौड़कर सुदामा जी को हाथ जोड़े औरे उनके पैर पकड़ लिए। इसके पश्चात् उन्होंने सुदामा जी को अपनी छाती से लगा लिया। सुदामा जी तो दुख से सताये गये थे; किन्तु भगवान् ने उन्हें गले से लगाया। श्री भगवान् के नेत्रों में आँसू भर गए। उनसे कुशलक्षेम पूछने लगे। श्री भगवान् के स्नेह और समादर को देखकर सुदामा जी ने श्री भगवान् से कहा कि भगवन् ! विपत्ति में कौन किसको पहचानता है? हे दया के सागर! आपने जिस तरह का सम्मान जनक व्यवहार किया, उस तरह का व्यवहार कौन कर सकता है ? हे दीनबन्धु ! दीन-दुखियों से इस प्रकार का प्रेम दूसरा कौन कर सकता है ?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(६) ऐसो बेहाल बिवाइन सों पग------------------जल सों पग धोए।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– ये पंक्तियाँ काव्यसंकलन के 'नरोत्तमदास' रचित 'सुदामा चरित' शीर्षक से ली गयी हैं। इन पंक्तियों में भगवान् श्री कृष्ण सुदामा जी की दीन-दशा को देखकर अफसोस करते हैं।

भावार्थ– भगवान् श्री कृष्ण सुदामा जी से कहते हैं कि मित्र ! आपके पैर तो बेवाइ से इस प्रकार से बेहाल हो गए हैं। अर्थात् आपके पैरों में तो अत्यधिक बेवाइ फट गयी है। आपके सारे पैर में कांटे ही कांटे चुभे हैं। मित्र आपने बहुत अधिक कष्ट भोगा है। आप आज तक हमारे पास नही आए। न जाने कितने दिन आपने कष्ट में ही बिता दिया। अपने मित्र सुदामा की दीन-दशा को देखकर करुणा के सागर श्री भगवान् करुणा से भर गए और रोने लगे। श्री भगवान् अपने मित्र की दीन दशा पर इतना रोए कि वे जल को छुए तक नहीं अपितु उन्होंने अपने आँसुओं के ही जल से सुदामा जी के पैर धो दिया।

विशेष– इस पद्य में श्री भगवान् की करुणा का वर्णन है तथा अन्तिम पंक्ति में अशियोक्ति अलंकार है।

(७) हाथ गह्यो प्रभु को कमला------------------------होन भिखारी।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– यह पद्य काव्यसंकलन के नरोत्तमदास प्रणीत 'सुदामा चरित' नामक शीर्षक से उद्धृत है। इस पद्य में बतलाया गया है कि श्री भगवान् ने सुदामा जी की पोटली के चावल के दो मुट्ठी खा लिए। जब वे तीसरी मुट्ठी खाना चाहते थे तो लक्ष्मी जी ने उनका हाथ पकड़ लिया और उन्हें खाने से रोक दिया।

भावार्थ– नरोत्तमदास जी कहते हैं कि भगवान् जब चावल की तीसरी मुट्ठी खाना चाहते थे तो लक्ष्मी जी ने श्री भगवान् का हाथ पकड़ लिया और कहा कि प्रभो! आज आपके मन में क्या आ गया है? आपने चावल की दो मुट्ठी को खाकर तो सुदामा जी को दो लोकों की सम्पदा प्रदान कर दी। यदि आप तीसरी मुट्ठी खाना चाहते हैं तो आप स्वयम् कहां रहेंगे ? आपको अपने भी रहने का तो कुछ ठिकाना चाहिए। आपने आज दरिद्र सुदामा को तो दो लोकों की सम्पदा प्रदान करके अपने ही समान बना दिया और तीसरी मुट्ठी खाकर क्या स्वयं भिखारी बनना चाहते हैं?

विशेष– इस पद्य में श्री भगवान् की उदारता का वर्णन किया गया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहीम (दोहा)

(१) जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि------------------------भुजंग।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह दोहा काव्यसंकलन 'के रहीम के दोहों' से लिया ा है। इसमें रहीम कवि बतलातें हैं कि उत्तम प्रकृति के पुरुषों पर कुसंग का प्रभाव नहीं होता।।

भावार्थ— रहीम कवि कहते हैं कि जो उत्तम प्रकृति के पुरुष होते हैं उन पर संग का प्रभाव नहीं पड़ता है। चन्दन में विषैले सांप लिपटे रहते हैं किन्तु चन्दन विष नहीं फैलता है।

विशेष— इस दोहे में अर्थान्तरन्यास नामक अलंकार है।

(२) टूटे सुजन सराहिए------------------------टूटे मुक्ताहार।।

प्रसंग— इस दोहे में रहीम कवि बतलाते हैं कि सज्जन पुरुष बार-बार कर भी जुड जाते हैं क्योंकि वे सात्त्विक प्रकृति के होते हैं।

भावार्थ— टूटे अर्थात् विछड़े हुए भी सज्जन की सराहना करनी चाहिए। वे सैकडों बार भी टूटें विछड़ जायँ तो भी उनकी सराहना करनी चाहिए। मोती की माला बार-बार टूटती है और बार-बार जोड़ी जाती है।

विशेष— इस दोहे में दृष्टान्तालंकार है तथा अर्थगाम्भीर्य का सद्भाव है।

(३) रहिमन अँसुआ---------------------------भेद कहि देइ।

प्रसंग— इस दोहो में रहीम कवि कहते हैं कि जिसको घर से निकाल दिया ता है वह घर के रहस्यों को सबों के समक्ष खोल देता है।

भावार्थ— रहीम कवि कहते हैं कि आँसू नेत्रों से बाहर निकाल कर हृदय में द्यमान दुख को प्रकट करता है। यदि किसी को घर से बाहर निकाल दिया जाय वह घर के रहस्यों को क्यों नहीं बतला देगा?

(४) रहिमन निज मन की---------------------------------कोय।

प्रसंग— इस दोहे में रहीम कवि यह बतलाते हैं कि अपना दुख अपने ही ने की कोशिश करनी चाहिए दूसरे लोग तो सुनकर मजाक ही उड़ायेंगे।

भावार्थ— रहीम कवि कहते हैं कि अपने मन में विद्यमान कष्ट को अपने में ही छिपाकर रखना चाहिए। दूसरों से नहीं कहना चाहिए, क्योंकि उसे कर दूसरे लोग तो हँसी भर करेंगे। कोई उस दुःख में हिस्सा, नहीं बँटायेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(५) रहिमन धागा प्रेम का---------------------------जुरै गाँठ परि जाय॥

प्रसंग— इस दोहे में रहीम कवि बतलाते हैं कि कभी भी स्नेह विच्छिन्न सूत्रों को कभी करना चाहिए। स्नेह में कटुता तथा विच्छेद होने पर तो उसमें पुनः वह बात नहीं आती है जो पहले रहती है।

भावार्थ— रहीम कवि कहते हैं कि कभी भी प्रेम के सूत्र को तोड़ना नहीं चाहिए क्योंकि दो प्रमियों का मन जब टूटता है तो वह जल्दी जुटता नहीं है, और यदि किसी भी तरह जुट भी गया तो उसमें उसी तरह से शंका की गांठ पड़ जाती है जिस तरह से टूटे हुए धागे को जोड़ने पर उसमें गांठ पड़ जाती है।

विशेष— इस दोहे में प्रेम को धागे के समान बतलाया गया है। इसमें अर्थान्तरन्यासालंकार है।

(६) रहिमन रहिला की भली---------------------------मैदा जरि जाय॥

प्रसंग— इस दोहे में रहीम कवि यह बतला रहे हैं कि प्रेमपूर्वक यदि कोई छोटी भी वस्तु मिल जाय तो अच्छी है, और यदि बिना प्रेम की अच्छी वस्तु भी बुरी होती है।

भावार्थ— रहीम कवि कहते हैं कि प्रेमपूर्वक यदि कोई चने की ही रोटी दे देता है तो वह अच्छा है। किन्तु यदि मन में बुरी भावना रखकर कोई मैदे की भी रोंटी देता है तो वह रोटी नहीं लेनी चाहिए। क्योंकि उसमें भाव की गंदगी बनी रहती है।

(७) तरुवर फल नहिं---------------------------संचहि सुजान॥

प्रसंग— इस दोहे में रहीम कवि कहते हैं कि सज्जन पुरुष परोपकार के लिए ही संपत्ति का संचय करते हैं।

भावार्थ— रहीम कवि कहते हैं कि पेड़ स्वयम् अपना फल नहीं खाते हैं और न तो सरोवर स्वयम् अपना जल पीते हैं। इसी तरह जो सज्जन पुरुष होते हैं, वे परोपकार करने के लिए संपत्ति का संचय करते हैं। केवल अपने स्वार्थ की सिद्धि धन का प्रयोजन नहीं होता है।

(८) यों रहीम सुख होत हैं-----------------आँखिन को सुख होत॥

प्रसंग— इस दोहे में रहीम कवि बतलाते हैं कि अपने वंश की वृद्धि सबको अच्छी लगती है।

भावार्थ— रहीम कवि कहते हैं कि अपने बढ़ते हुए गोत्र को देखकर उसी तरह से सब को सुख मिलता है जिस तरह से जब किसी प्रेमी अथवा प्रेमिका की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बड़ी-बड़ी आँखों को देखकर आँखों को ही सुख मिलता है।

(९) रहिमन वे नर मर---------------------------नाहिं।

प्रसंग— इस कविता में रहीम कवि कहते हैं कि माँगना तो निकृष्ट कर्म है ही किन्तु माँगने वाले को देने से इन्कार करना उससे भी निकृष्ट कर्म है।

भावर्थ— रहीम कवि कहते हैं कि जो व्यक्ति किसी से कोई याचना करने जाता है, वह उस याचना करने से पूर्व ही मर जाता हैं। उसका अपना स्वाभिमान समाप्त हो जाता है। किन्तु इस माँगने वाले से वह आदमी अधिक निकृष्ट है जो याचना करने वाले को देने से इनकार कर देता है।

(१०) रहिमन ओछे नरन ते--------------------दुहूं भाँति विपरीत।।

प्रसंग— इस दोहे में रहीम कवि यह बतलाते हैं कि छोटे विचार के लोगों से किसी भी प्रकार का संबन्ध न रखें यह सब से अच्छी बात है।

भावार्थ— रहीम कवि कहते हैं कि छोटे विचार वाले लोगों से न तो प्रेम करना ठीक है और न बैर करना ही। ऐसे लोगों से बैर और प्रीति दोनों छोड़ देना चाहिए। कुत्ता यदि काट ले तो भी बुरा होता है और यदि चाट ले तो भी।

विशेष- इस दोहे में अर्थान्तरन्यासालंकार है।

रसखान सवैया

(१) मानुष हों तो वही रसखानि----------------कदम्ब की डारन।।

सन्दर्भ— प्रस्तुत सवैया काव्य संकलन के रसखान के सवैया शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग— इस सवैया में रसखान कवि कहते हैं कि मेरा चाहे जिस योनि में जन्म हो किन्तु हो तो वृन्दावन और गोकुल में ही।

भावार्थ— रसखान कवि कहते हैं कि यदि मेरा जन्म मनुष्य योनि में हो तो मेरा निवास स्थान व्रज एवं गोकुल के गाँवों के ग्वालों के बीच बने। यदि मैं पशु योनि में जन्म लूँ तो मेरा वश चले तो सदा नन्दबाबा के गायों के बीच में ही चरा करूँ। यदि अपने कर्म के अनुसार मैं पत्थर ही हो जाऊँ तो फिर उसी पर्वत का पत्थर होऊँ जिस पर्वत को भगवान श्रीकृष्ण ने इन्द्र के उत्पात के कारण अपने हाथ का छाता बनाया था। यदि मैं पक्षी ही होऊँ तो में पक्षियों के साथ मिलकर यमुना के तट पर लगे हुए कदम्ब वृक्षों की डालियों पर ही निवास करूँ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष— इस सवैया-छन्द में रसखान कवि ने उस पौराणिक आख्यान को निर्देश कया है, जिसके अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण ने गोपों द्वारा प्रतिवर्ष की जाने वाली इन्द्र पूजा को रोक कर गोवर्धन पर्वत की पूजा करवाया था। नाराज होकर इन्द्र ने गोकुल को विनष्ट कर देने की इच्छा से सात दिन तक लगातार वर्षा की। किन्तु भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने एक हाथ पर गोवर्धन पर्वत को उठाकर गोकुल और ग्वालों की रक्षा की।

(२) धूरि भरै अति सोभित श्याम जू-----------------माखन रोटी।

प्रसंग— इस सवैया छन्द में रसखान कवि ने भगवान श्रीकृष्ण के बाल सौन्दर्य का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया है।

भावार्थ— रसखान कवि कहते हैं कि भगवान् श्री कृष्ण बाल क्रीड़ा करते समय धूल से धूसरित हो जाने पर भी अत्यन्त सुन्दर लगते हैं। उनके सिर पर बनी हुई बालों की चोटी भी अत्यन्त सुन्दर लगती है। वे खेलते हुए और खाते हुए जब आँगन में चलते हैं तो उनके पैरों की नूपुर सुन्दर आवाज करती है और वे पीला कच्छा पहने हुए हैं। रसखान कवि कहते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण के इस सौन्दर्य को देखकर कामदेव अपनी करोड़ों कलाओं को भी तुच्छ समझते हैं। उस कौए का भाग्य कितना बड़ा है कि, खाते हुए श्री भगवान के हाथ से माखन और रोटी लेकर भाग गया।

विशेष— इस सवैया में अनुप्रासालंकार है।

(३) जा दिन ते वह नंद का छोहरा-----------------बिकाइ गयो है।

प्रसंग— इस सवैया छन्द में रसखान कवि भगवान् श्रीकृष्ण के मनोमोहक सौन्दर्य का वर्णन करते हैं।

भावार्थ— रसखान कवि कहते हैं कि जिस दिन से वे नन्दजी के पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण इस वन में गायों को चराकर चले गये हैं, उस दिन से तो हृदय में कुछ टोना सा समा गया है। लगता है कि श्रीकृष्ण हमें टोना करके चले गए। गायों को चराते समय वे अपनी मोहिनी मुरली पर तान बजाते और गाते थे एवं गायों को रिझाने का काम करते थे। उस दिन से कोई भी किसी की परवाह नहीं करता। लगता है कि सम्पूर्ण व्रज के लोग उस श्रीकृष्ण के हाथों बिक गए हैं। सबों को सदा श्री कृष्ण की ही याद बनी रहती है।

विशेष— इस सवैया छन्द में अनुप्रासालंकार है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कान्ह भये बस बाँसुरी के-------------------बस बाँसुरी रहिहै।

प्रसंग-- इस सवैया छन्द में रसखान कवि गोपियों की मनोदशा का वर्णन कर रहे हैं। गोपियों के मन में है कि बाँसुरी ही हम लोगों की सौतन है। श्रीकृष्ण इसके ही बस में रहते हैं।

भावार्थ-- गोपियाँ आपस में बातें कर रही हैं कि अब तो श्रीकृष्ण बाँसुरी के ही वश में हो गए हैं। वह रात-दिन श्री कृष्ण के संग लगी रहती है। कभी उसका साथ श्रीकृष्ण छोड़ते ही नहीं। हम लोगों से उस सौत का संताप नहीं सहा जा रहा है। जिस बाँसुरी ने सबों के मन को मोह लेने वाले श्रीकृष्ण के भी मन को मोह लिया है, वह तो हमं लोगों को रात-दिन संतप्त करती ही रहेगी। आओ हम सब लोग व्रज छोड़कर यहाँ से भाग चलें। अब तो इस व्रज में अकेली बाँसुरी ही श्रीकृष्ण के साथ रहेगी। यहाँ हम लोगों की कौन सी आवश्यकता है? यह बाँसुरी हम लोगों को उसी तरह से अधिक दुःख दे रही है, जिस तरह से कोई भी सौतन अपनी सौतन को अनेक प्रकार से कष्ट देती रहती है।

विशेष-- इस सवैया छन्द में बाँसुरी में नायिकात्व की प्रतीति व्यंजित होती है।

(५) मोर पखा सिर ऊपर-------------------अधरा न धरौंगी।।

प्रसंग-- इस सवैया छन्द में रसखान कवि एक गोपी की बात का अनुवाद करते हैं। वह कहती है कि मैंश्री कृष्ण के सम्पूर्ण स्वांग को तो बना लूँगी, किन्तु उनकी मुरली को अपने अधरों पर नहीं रख सकती, क्योंकि वह तो हमारी सौत बन गयी है और सौत को इस तरह से समादृत नहीं किया जा सकता है।

भावार्थ-- रसखान कवि कहते हैं कि गोपी कहती है कि हे सखी, मैं अपने सिर पर मोर का पंख रख लूँगी, गले में गूँजे की माला भी श्रीकृष्ण के समान पहन लूँगी, मैं पीताम्बर ओढ़कर और लकुटी (लाठी) हाथ में लेकर वन में गोधन तथा ग्वालों के साथ चलती रहूँगी जो श्रीकृष्ण को अच्छा लगता है उस सम्पूर्ण स्वांग को बना लूँगी, किन्तु श्रीकृष्ण की उस मुरली को जिसे श्रीकृष्ण ने अपने अधरों से लगाया है, उसको अपने अधरों से नहीं लगा सकती। वह हमारी सौत है। वही श्रीकृष्ण को अपने माया जाल में फुसलाकर उनको हमलोगों से सदा अलग किये रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिहारी लाल-भक्ति

(१) मेरी भव बाधा हरौ-----------------------------दुति होय॥

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहे में बिहारी कवि श्री राधाजी की स्तुति करते हैं।

भावार्थ— मेरी संसार रूपी बाधा को वे ही राधाजी दूर करें जिनके शरीर की छाया पड़ने से भगवान् श्यामसुन्दर के शरीर की कान्ति हरी-हरी सी प्रतीत होने लगती है। इस दोहे के माध्यम से कवि ने श्री राधाजी को संसार से पार करने वाली बतलाया है।

(२) सोहत ओढै पीत पट-----------------------------पर्यो प्रभात।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— (१) यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहे में बिहारी लाल जी पीताम्बरीधारी श्रीकृष्ण भगवान् की अत्यन्त मनोहर शोभा का वर्णन करते हैं।

भावार्थ— अपने श्यामसुन्दर शरीर पर पीताम्बर धारी भगवान् श्री कृष्ण की शोभा उस तरह प्रतीत होती है जैसे मानो नीलमणि पर्वत के ऊपर प्रातः कालीन सूर्य की पीली-पीली किरणें छिटक गयी हों।

विशेष- इस दोहे में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(३) अधर धरत हरि के-----------------------इन्द्रधनुष रंग होति।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहे में बिहारी लाल जी भगवान श्रीकृष्ण के हरे बाँस की बाँसुरी के वादन काल की शोभा का वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ— जिस समय भगवान हरे बाँस की बाँसुरी को बजाने के लिए अपने लाल-लाल ओठों पर रखते हैं, उस समय उस हरी बाँस की बाँसुरी पर उनके ओष्ठों, नेत्रों, पीताम्बर तथा शरीर इन सबों की कान्ति मिल जाती है और हरी बाँसुरी का रंग इन्द्रधनुषी हो जाता है। जिस तरह इन्द्र धनुष में अनेक रंगों का संयोग होता है उसी तरह इस बाँसुरी में भी अनेक रंग सक्रान्त हो जाते हैं।

(४) या अनुरागी चित्त की-----------------------उज्जलु होइ॥

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहे में बिहारी लाल जी भगवान श्याम सुन्दर के अनुराग के रंग में रंगे हुए अन्तःकरण का वर्णन कर रहे हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावार्थ— मेरे इस श्याम सुन्दर के अनुराग में रंगे हुए मन की स्थिति को कोई समझ नहीं पाता है। वह ज्यों-ज्यों श्याम सुन्दर के अनुराग के रंग में डूबता जाता है त्यों-त्यों उजला होता है। अर्थात् श्रीकृष्ण प्रेम में पागल मन की सारी वासनाएँ रूपी कालिमा घुल जाती है और अन्तःकरण सात्त्विक हो जाता है।

विशेष— इस दोहे में विरोधाभास अलंकार है।

(५) जगत् जनायो जिहिं सकल----------------------देखी जांहि।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहा में बिहारी कवि कहते हैं कि परमात्मा ही सम्पूर्ण ज्ञानों का साधन है, किन्तु उसे सामान्य ज्ञान के द्वारा जानना कठिन है।

भावार्थ— जिस परमात्मा ने सम्पूर्ण जगत् को ज्ञान प्रदान किया है। जीव अपने सांसारिक माया जाल में फंसकर उस परमात्मा की ओर से पराङ्मुख हो जाता है। उसे नहीं जान पाता है। उदाहरणार्थ मनुष्य आँखों के द्वारा ही समस्त वस्तुओं को देखता है किन्तु वह अपनी आँख को स्वयं नहीं देख पाता है। उसको देखने के लिए तो दर्पण रूपी साधन की आवश्यकता होती है। उसी तरह से परमात्मा को जानने के लिए गुरू रूपी साधन की आवश्यकता होती है।

विशेष— इस दोहे में अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

(६) सीस मुकुट कटि काछनी-----------------------बिहारी लाल।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहे में बिहारी कवि अपने मनोनुकूल श्री कृष्ण भगवान के रूप का निर्देश करते हैं।

भावार्थ— बिहारी कवि कहते हैं कि हे भगवन् ! श्रीकृष्ण ! आप जिस रूप से मेरे मन में सदा निवास करें वह यह है कि आपके सिर पर मुकुट हो, कमर में काछनी आप पहने हों, आपके हाथ में मुरली हो और हृदय पर माला लटक रही हो, इसी रूप में आप मेरे मन में सदा बिहार करते रहें।

(७) जप माला छापा---------------------------साँचे राँचे राम।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहे में बिहारी कवि कह रहे हैं कि परमात्मा दिखावे से नहीं बल्कि भक्ति की वास्तविकता से प्रसन्न होता है।

भावार्थ— बिहारी कवि कहते हैं कि जपमाला लिए रहने, छाप लगाने, अथवा तिलक लगाने से कोई भी काम नहीं बनने वाला है। इन बाह्याडम्बरों से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परमात्मा की प्राप्ति असंभव है। जब तक मन कच्चा है परमात्मा में अटल विश्वास नहीं है तब तक ये सारी दिखावे की चीजें व्यर्थ हैं। साँचे मन से ही आराधना करने से परमात्मा की प्राप्ति संभव है।

(८) चटक न छाड़त घटत हूँ------------------------चोल रंग चीर।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहें में बिहारी कवि कहते हैं कि सज्जनों का स्नेह घट जाने पर भी विकृत नहीं होता है उसमें वास्तविकता तथा सात्त्विकता बनी रहती है।

भावार्थ— बिहारी कवि कहते हैं कि सज्जनों का स्नेह यदि घटने भी लगता है, तो भी उसमें किसी भी प्रकार का विकार नहीं आता। उसकी पवित्रता पूर्ववत् बनी रहती है। सज्जन पुरुष कभी भी स्नेहास्पद का अपकार नहीं सोचते हैं क्योंकि सज्जनों का स्नेह गंभीर होता है। जिस तरह गेरुआ रंग में रंगा गया वस्त्र फुट जाता है किन्तु उसका रंग ज्यों का त्यों बना रहता है।

विशेष— इस दोहे में अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

(९) दुसह दुराज प्रजानु की------------------------------रवि चंदु।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहे में बिहारी कवि बतलाते हैं कि कुवासना से प्रजाओं का दुख-दर्द बढ़ जाता है।

भावार्थ— बिहारी कवि कहते हैं कि यदि राज्य का राजा दुष्ट हो जाता है तो वह प्रजाओं के लिए दुःसह हो जाता है। प्रजाओं का परस्पर में दुःख एवं द्वेष बढ़ जाता है। यह उसी तरह से हो जाता है जिस तरह जब अमावस्या के दिन सूर्य और चन्द्रमा एक साथ हो जाते हैं उस दिन और अन्धेरा अधिक बढ़ जाता है।

विशेष— इस दोहे में अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

(१०) संगति सुमति न-----------------------------न होइ सुगन्ध।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहे में बिहारी कवि बतलाते हैं कि कुसंग में पड़े व्यक्ति में सुमति को होना असंभव है।

भावार्थ— बिहारी कवि कहते हैं कि जो व्यक्ति कुमति के जाल में फँस जाता है वह अच्छी संगति में पड़ने पर भी नहीं सुधर पाता है। उदाहरण के लिए यदि हींग को कपूर के साथ रख दिया जाय तो भी उसमें कपूर की सुगंध नहीं आ सकती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(११) नर की अरु नल नीर की-----------------------ऊँचो होय।।

सन्दर्भ— यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहे में कवि ने मानव तथा जल के स्वभाव की समता बतलाया है।

प्रसंग— बिहारी कवि कहते हैं कि मानव मन और नल के जल की एक ही प्रकार की स्थिति होती है। नल का जल जितना ही नीचे की ओर जाता है उतना ही अधिक बढता जाता है। उसी तरह जो मनुष्य जितना ही झुक कर (विनम्र होकर) चलता है उसकी उतनी ही अधिक उन्नति होती है।

(१२) जो चाहत, चटक न घटै-------------------नेह चीकने चित्त।।

सन्दर्भ— यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति से शीर्षक उद्धृत है। इस दोहे में बिहारी कवि बतलाते हैं कि मित्रता में रजोगुण का संसर्ग नहीं होना चाहिए। सात्त्विक भावना से भूषित मित्रता चिरस्थायी होती है।

भावार्थ— बिहारी कवि कहते हैं कि यदि तुम यह चाहते हो कि तुम्हारी मित्रता में तरोताजगी हमेशा बनी रहे, वह कभी धूमिल न हो, तो उसमें कभी भी रजोगुण रूपी रज (धूलि) को न छुवाइये। ऐसा करने से स्नेह पूरित अन्तःकरण चिकना बना रहेगा। उसमें किसी भी प्रकार की गन्दगी नहीं आयेगी।

विशेष— इस दोहे में रूपक अलंकार है।

(१३) कहै यहै श्रुति सुमत्यौ-------------------------राजा रोग।

सन्दर्भ— यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहे में कवि कहते हैं कि पाप, राजा और रोग ये तीनों सदा दबाने की ही कोशिश करते हैं।

भावार्थ— बिहारी कवि कहते हैं कि श्रुतियाँ, स्मृतियाँ तथा ज्ञानी पुरुष यही कहते हैं कि पाप पापी को ,राजा अपने शत्रु को, या कमजोर राजा को, तथा रोग रोगी का हमेशा दबाये रहते हैं।

(१४) गंधी गंध गुलाब---------------------------गाहकु कौन।।

सन्दर्भ— यह दोहा काव्य संकलन में संगृहीत बिहारी कवि के भक्ति शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहे में बिहारी कवि कहते हैं कि अनभिज्ञ लोगों के बीच में अच्छी वस्तु का कोई महत्त्व नहीं होता।

भावार्थ— बिहारी कवि कहते हैं कि किसी गुलाब के इत्र बेचने वाले के इत्र को गाँव के लोगों ने हाथ में लेकर उसकी खूब सराहना की; सूँघा और अन्त में चुप हो गए। किसी ने उसे खरीदा नहीं। गाँव के लोग तो हींग के ही गंध के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्धभक्त होते हैं, वहाँ पर गुलाब की सुगन्धि को खरीदने वाला कौन होगा अर्थात् उन लोगों के बीच गुलाब की सुगन्धि का कोई भी महत्त्व नहीं होता है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र– प्रेम माधुरी

(१) यह संग में लागियै डोलै---------------दुखिया नहीं मानती हैं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– यह सवैया छन्द काव्य संकलन के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र प्रणीत **'प्रेममाधुरी'** शीर्षक से उद्धृत है। इसमें कवि ने गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम माधुर्य का वर्णन किया है।

भावार्थ– गोपियाँ कहती हैं कि हमारी ये श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए प्यासी आँखें सदा हमारे साथ-साथ लगी रहती हैं। वे श्रीकृष्ण को देखे बिना नहीं मानतीं। अर्थात् यदि हम श्रीकृष्ण को नहीं भी देखें तो भी ये हमारी आँखें बरबस उन्हें देख ही लेती हैं। हरिश्चन्द्र कवि कहते हैं कि श्रीकृष्ण का यदि क्षणभर का भी विप्रयोग होता है तो इन आँखों में आँसुओं की प्रलय कालीन बाढ़ आ जाती है। लगता है कि इन आँखों ने श्रीकृष्ण के प्रेम का शराब पी लिया है, ये कभी बंद होती ही नहीं, सदा खुली रहती हैं। इन आँखों को मानों पलकों में समाना आता ही नहीं है प्रियतम श्री कृष्ण ! तुम्हें देखे बिना हमारी ये दुखी आँखें मानती ही नहीं हैं।

(२) पहिले बहु भाँति भरोसो दियो---------------आपुहि धावति हैं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– यह सवैया छन्द काव्य संकलन के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र प्रणीत **'प्रेममाधुरी'** शीर्षक से उद्धृत है। इस सवैया छन्द में कोई सखी अपनी दूसरी सखी को उलाहना देती हुई कहती है–

भावार्थ– कोई गोपी अपनी सखी से कहती है कि सखी! तुमने तो पहले मुझे भरोसा दिलाया कि अभी-अभी मैं श्रीकृष्ण को लाकर तुमसे मिलाती हूँ। अब वही तुम आकर मुझे समझा रही हो। हरिश्चन्द्र कवि कहते हैं कि गोपी कहती है कि अब तक तो मैं तुम्हारे ही भरोसे बैठी थी। अब वहीं तुम हमसे अलग हो गयी और आकर मुझे समझाने का काम कर रही हो। पहले तो तुमने मेरे हृदय में श्रीकृष्ण मिलन के चाह की आग लगा दी और अब उस आग को बुझाने के लिए जल लेने के लिए दौड़ रही हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(३) उधौ जु सूधौ गहौ वह मारग------------------मॉंग परी है।।

सन्दर्भ— यह सवैया छन्द काव्य संकलन के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र प्रणीत 'प्रेममाधुरी' शीर्षक से उद्धृत है। इस सवैया छन्द में गोपियाँ उद्धव जी से कहती हैं कि यहाँ पर तो सब के सब श्रीकृष्ण-प्रेम में पागल लोग हैं, यहाँ पर आपकी ज्ञान की कथा कौन सुनेगा?

भावार्थ— गोपियाँ उद्धव जी से कहती हैं कि आपको यहाँ पर उपदेश करने की कोई आवश्यकता नहीं हैं। आपको तो सीधे ही अपने ज्ञान गुदड़ी का ही रास्ता पकड़ लेना चाहिए था। यहाँ तो सब के सब श्रीकृष्ण के प्रेम में पागल हैं, यहाँ पर आपके उपदेश को कौन सुनेगा ? यहाँ तो पूरी व्रजबालाओं की मण्डली ही एक समान बिगड़ चुकी है। यदि कोई एक गोपी श्रीकृष्ण-प्रेम में पागल होती तो उसे समझाया भी जा सकता था किन्तु यहाँ के तो कुँए में ही भाँग पड़ी है। सब के सब श्रीकृष्ण-प्रेम में पागल हैं।

मातृभाषा

(१) निज भाषा उन्नति अहै-------------------मिटै न हिय को सूल।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह सवैया छन्द काव्य संकलन के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 'मातृभाषा' शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहे में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी बतला रहे हैं कि अपनी मातृभाषा की उन्नति से ही सभी प्रकार की उन्नति संभव है।

भावार्थ— अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का साधन है। जब तक अपनी भाषा का ज्ञान नहीं होता तब तक अन्य भाषाओं का ज्ञान होने पर भी हृदय में विद्यमान दुःख का अन्त नहीं होता। अपनी मातृभाषा का ज्ञान आवश्यक है। उसी से सभी प्रकार की सुख-शान्ति संभव है।

(२) इक भाषा इक जीव इक-----------------------------सोग।

सन्दर्भ— यह सवैया छन्द काव्य संकलन के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र प्रणीत 'मातृभाषा' शीर्षक से उद्धृत है। इस दोहे में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी सबों की भाषा की एकता पर बल दे रहे हैं। सम्पूर्ण देशवासियों की भाषा की एकता से ही सभी प्रकार के सद्भाव संभव हैं।

भावार्थ— जब सम्पूर्ण देश की भाषा एक होगी तो उनका जीवन भी एक समान होगा, और देश के सब लोग एक ही दिशा में सोचेंगे भी। ऐसी स्थिति में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सभी लोगों में प्रेम व्यवहार होगा ऐसा करने से देश के अज्ञान तथा कष्ट विनष्ट हो जायेंगे।

काश्मीर सुषमा

(१) प्रकृति यहाँ--------------------------------तन मन वारति।

प्रसंग– इस पद्य में कवि श्रीधर पाठक ने स्वर्ग कश्मीर के प्राकृतिक सौन्दर्य को चित्रित किया है। उन्होंने प्रकृति को एक सुन्दरी के रूप में देखा है।

अर्थ– कवि कहते हैं कि प्रकृति सन्दरी मानों एकान्त में बैठकर अपना रूप संवारती है। वह प्रतिपल अपना परिधान बदलती रहती है तथा प्रतिक्षण अपना सुन्दर शरीर सजाती रहती है। वह स्वच्छ सरोवर रूपी दर्पण में अपने मुख के प्रतिबिम्ब को देखती है तथा अपने सौन्दर्य पर स्वयं मोहित होकर अपना सर्वस्व निछावर करती रहती है।

(२) सजति सजावति--------------------------------बनि ठनि।

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण 'काव्य संकलन' के काश्मीर सुषमा नामक शीर्षक से उद्धृत है। इसके प्रणेता कवि श्रीधर पाठक हैं।

अर्थ– कश्मीर में प्रकृति रूपी सुन्दरी सरा सजती है और इस धरती को सजाती रहती है। यह अपने रूप पर शरमाती है और प्रसन्न होती है। यह बड़ी प्यारी दिखाई देती है। प्रकृति सुन्दरी काश्मीर रूपी सुन्दर चित्रशाला को प्राप्त करके अपने भाग्य की बार-बार सराहना करती है। यह आनन्द और यौवन के मद से परिपूर्ण होकर चारों ओर बिहार करती है, लचकती अनेक प्रकार के विलाँसा को करती हुई देखती है तथा बन-ठनकर थिरकती है।

विशेष– इस अवतरण में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है।

उत्तर (३)– मधुर मंजु छवि-------------------------- तरुवर तृन।

सन्दर्भ– प्रस्तुत अवतरण 'काव्य संकलन' के काश्मीर सुषमा नामक शीर्षक से उद्धृत है इसके प्रणेता कवि श्रीधर पाठक हैं।

अर्थ– कश्मीर में प्रकृति रूपी सुन्दरी चारों ओर कमल के वन में माधुर्यमयी सौन्दर्य पुञ्ज शोभा को बिखेरती रहती है। यह चारों ओर देखती है। देखने वालों को रिझाती है, हंसती है, मुस्कराती है तथा लोगों के मन को मोह लेती है। यहाँ पर सुन्दरी अनेक प्रकार का शृंगार करके सरोवरों, नदियों, पर्वतों, शिख, आकाश,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ड्ढे, पेड़ तथा घास-फूँस को सजाया करती है।

प्रकृति वर्णन

(१) जेठ के दारुण आतप से------------------------चलौ तो भलो।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— इस अवतरण में कवि श्रीधर पाठक ने ग्रीष्म ऋतु की भयंकरतामय सौन्दर्य का वर्णन किया है। यह अवतरण काव्य संकलन के श्रीधर पाठक प्रणीत **'प्रकृति वर्णन'** से संगृहीत है।

भावार्थ— नायिका अपने प्रियतम से कह रही है कि हे प्रियतम! इस ज्येष्ठ मास के दुःखद धूप से सारी पृथिवी जली जा रही है। आकाश मण्डल में मरुस्थल के समान धूल छा गयी है। अपने सम्पूर्ण सहायकों के साथ आँधी चली आ रही है। सभी जलाशयों के जल से रहित हो जाने से प्यास से पशु-पक्षी व्याकुल हो रहे हैं, और सूर्य की किरणें प्रचण्ड हो गयी हैं। प्रियतम अच्छा होगा कि हमलोग किसी कानन-कुञ्ज में चलकर विश्राम करें।

(२) काली घटा का घमण्ड घटा-----------------समलंकृत कैसे भले।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह अवतरण काव्य संकलन के श्रीधर पाठक प्रणीत 'प्रकृति वर्णन' से उद्धृत है। इस पद्य में कवि श्रीधर पाठक शरद ऋतु का मनोज्ञ वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ— नायक शारदीय सौष्ठव का वर्णन करते हुए कहता है कि इस शरद ऋतु में अब आकाश में बादलों की काली घटा नहीं दिखायी देती है। आकाश में तारों का समूह छिटक गया है। सम्पूर्ण पृथिवी पुष्पों एवं फलों से सुशोभित हो रही है। वन के रास्ते साफ-सुथरे हो गए हैं पेड़ों के पत्ते मानों चाँदनी से धुल गए हैं। देखो न ! यह वन किस प्रकार शरद् ऋतु की चन्द्रिका रूपी चादर को ओढ़कर सुसज्जित हुआ-सा कितना सुन्दर लग रहा है ?

विशेष— इस पद्य में रूपक अलंकार है।

श्री कृष्ण सौन्दर्य

१- जब हुए----------------------------------गोकुल ग्राम को।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पद्य काव्यसंकलन के श्रीकृष्ण-सौन्दर्य शीर्षक से उद्धृत है। इसमें भगवान् श्रीकृष्ण के सौन्दर्य का वर्णन हरिऔध जी ने किया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावार्थ— सांयकाल होते समय जब धीरे-धीरे सभी ग्वालों एवं गायों का समूह एकत्रित हुआ तो वे सब ब्रजभूषण श्री कृष्ण भगवान् को साथ लेकर अत्यन्त सुन्दर गोकुल धाम की ओर चल पड़े।

(२) ककुभ सोभित गोरज-------------------------नलिनीश हैं।

सन्दर्भ— प्रस्तुत अवतरण काव्य संकलन के अयोध्या प्रसाद सिंह 'हरिऔध' प्रणीत **'श्री कृष्ण सौन्दर्य'** शीर्षक से उदृधृत है। इस पद्य में हरिऔध जी कृष्ण के सायंकाल गौ चराकर लौटते समय की शोभा का वर्णन करते हैं।

भावार्थ— सायंकाल भगवान् श्री कृष्ण गायों एवं ग्वालों के साथ गोकुल में आ रहे थे। गायों के खुर से उड़ी हुई धूलि से दिशाएँ सुशोभित हो रही थीं। उसके बीच से निकलते हुए श्री कृष्ण ऐसे लगते थे जैसे दिशाओं के अन्धेरे को चीर कर आकाश में सूर्य सुशोभित होता है।

विशेष— इस पद्य में शिखरिणी छन्द और उपमा अलंकार है।

(३) अतसि पुष्प अलंकृतकारिणी---------------------कलकान्ति थी।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पद्य 'काव्यसंकलन' के श्री हरिऔध प्रणीत **'श्रीकृष्ण सौन्दर्य'** से लिया गया है। इस पद्य में कवि भगवान् श्रीकृष्ण के शारीरिक सौन्दर्य का वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ— अतसी (तीसी) के पुष्प को भी सुशोभित करने वाली अर्थात् अतसी पुष्प से भी सुन्दर, शरद् ऋतु के नीलकमल से भी अधिक सुन्दर, भगवान् श्रीकृष्ण के नवीन,सुन्दर तथा श्यामवर्ण के शरीर की मनोहर कान्ति जल से भरे हुए बादल की कान्ति के समान थी।

विशेष— इस पद्य में विपर्यय तथा उपमा अलंकार की संसृष्टि है। यह पद्य शिखरिणी छन्द में निविद्ध है।

(४) अति समुन्नत अंग समूह था---------------प्रतिविम्वित हो रही।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत अवतरण काव्यसंकलन के अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' प्रणीत **'श्रीकृष्ण सौन्दर्य'** से उद्धृत है। इस पद्य में कवि ने भगवान् श्रीकृष्ण के शारीरिक सौन्दर्य का वर्णन किया है।

भावार्थ— हरिऔधजी श्री भगवान के अंगों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उनके सभी अंग अत्यन्त सौन्दर्य युक्त, समुन्नत तथा उत्तम कोटि के थे। वे दर्पण के समान स्वच्छ और मनामोहक थे। उन सभी अंगों में सुकुमारता बनी हुई थी और सरसता प्रतिबिम्बित हो रही थी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष— इस पद्य में शिखरिणी छन्द और उपमा अलंकार है।

(५) विलसता कटि में पटपीत था----------------------स्कंध था।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पद्य काव्यसंकलन के श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' प्रणीत श्रीकृष्ण सौन्दर्य से उद्‌धृत है। श्रीकृष्ण जब गायों को चराकर लौट रहे थे, उस समय भगवान् के वस्त्राभूषणों का वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ— हरिऔध जी कह रहे हैं कि भगवान् श्रीकृष्ण जब गायों को चराकर लौट रहे थे, तो उस समय उनके कमर में पीताम्बर शोभा दे रहा था। उनका शरीर मनोहर वस्त्रों से सुशोभित हो रहा था। उनके हृदय पर वनमाला शोभा दे हो रही थी तथा मनोहर दुपट्टों से उनके स्कन्ध सुशोभित हो रहे थे।

विशेष— इस पद्य में शिखरिणी छन्द है।

(६) मकरकेतन के कलकेतु से----------------------अलकावली।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पद्य काव्यसंकलन के अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' प्रणीत **'श्रीकृष्ण सौन्दर्य'** शीर्षक से उद्‌धृत है। इस पद्य में हरिऔध जी भगवान् श्रीकृष्ण के कुण्डल तथा काले घुँघराले बालों की शोभा का वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ— गोचारण करके लौटते हुए श्रीकृष्ण भगवान् के कानों में उत्तम कुण्डल कामदेव की मनोहर पताका के समान शोभित थे। उन कुण्डलों के ऊपर अनेक भावों से भरपूर उनके काले घुँघराले बाल लटक रहे थे।

विशेष— उपमालंकार और शिखरिणी छन्द इस पद्य में है।

(७) छलकती मुख की छबि पुञ्जता-----------क्षणदा कर कान्ति सी।।

सन्दर्भ- यह पद्य काव्य संकलन के अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' प्रणीत **'श्रीकृष्ण सौन्दर्य'** से उद्‌धृत है।

प्रसंग— इस पद्य में हरिऔध जी भगवान् श्री कृष्ण के सम्पूर्ण शरीर की शोभा का वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ— भगवान् श्रीकृष्ण की मुख शोभा का समूह है ऐसा प्रतीत होता था कि उनके शरीर का सौन्दर्य पृथिवी को छूकर छिटक रहा है। उनके शरीर का श्रेष्ठ तेज दिशाओं के अन्त तक फैल रहा है लग रहा था जैसे क्षितिज से चन्द्रमा की किरणें निकल रही हैं।

विशेष— इस पद्य में उत्प्रेक्षा अलंकार तथा शिखरिणी छन्द है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पंचवटी

(१) चारु चन्द्र की चंचल किरणें----------------पवन के झोंकों से।

सन्दर्भ– यह अवतरण काव्य संकलन के मैथिलीशरण गुप्त प्रणीत 'पंचवटी' शीर्षक से अवतीर्ण है।

प्रसंग– इस अवतरण में गुप्तजी ने प्राकृति का मनोज्ञ चित्र अंकित किया है।

भावार्थ– चन्द्रमा की मनोहर एवं चंचल किरणें मानों पृथ्वी तथा जल में खेल रही हैं। पृथ्वी और आकाश में जैसे स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है। हरी-हरी घासों की नोकों के माध्यम से पृथ्वी मानो पुलकित हो रही है, लगता है कि धीरे-धीरे चलती हुई वायु के झोंकों से पेड़ भी झूम रहे हैं।

विशेष– इस अवतरण के प्रत्येक पाद् में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(२) पंचवटी की छाया में है--------------------दृष्टिगत होता है।

सन्दर्भ– यह अवतरण काव्य संकलन के मैथिलीशरण गुप्त प्रणीत 'पंचवटी' शीर्षक से अवतीर्ण है।

प्रसंग– इस पद्य में कवि श्रीसीताराम की कुटी का लक्ष्मण जी द्वारा रात्रिभर जगकर पहरा देने का वर्णन करते हैं।

भावार्थ– पञ्चवटी की छाया में सुन्दर पर्णकुटी बनी हुई है। उस कुटी के सामने स्वच्छ शिला के उपर एक धनुर्धारी धीर, वीर एवं गम्भीर पुरुष रात्रि में जाग रहा है। इस रात्रि की बेला में जब कि सारी दुनियाँ सोती है, यह पुरुष जग रहा है। यह कामदेव के सामने भोगी होकर भी योगी सा लग रहा है। कवि पूछ रहे हैं कि यह कौन-सा पुरुष है?

(३) किस व्रत में है व्रती वीर--------------------------जीवन है।

सन्दर्भ– यह अवतरण काव्य संकलन के मैथिलीशरण गुप्त प्रणीत 'पंचवटी' शीर्षक से अवतीर्ण है।

प्रसंग– इस पद्य में कवि श्रीसीताराम की कुटी का लक्ष्मण जी द्वारा रात्रिभर जगकर पहरा देने का वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ– पञ्चवटी में बनी पर्णकुटी की रक्षा में संलग्न लक्ष्मण जी को देखकर कवि पूछ रहे हैं कि यह वीर व्रती किस व्रत की पूर्णता के लिए इस प्रकार से अपनी नींद को त्याग दिया है ? आज यह राज्य का सुख भोगने के लायक है किन्तु वन में वैराग्य लेकर बैठा हुआ है। यह वीर जिस कुटी की रखवाली करता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है उसमें कौन सी सम्पत्ति है? जिस सम्पत्ति की रक्षा यह तन, मन एवं जीवन की बाजी लगाए हुए कर रहा है ?

(४) मर्त्यलोक मालिन्य मिटाने---------------------------माया ठहरी।।

सन्दर्भ— यह अवतरण काव्यसंकलन के मैथिलीशण गुप्त प्रणीत **'पंचवटी'** शीर्षक से अवतीर्ण है।

प्रसंग— इस पद्य में कवि श्रीसीताराम की कुटी का लक्ष्मण जी द्वारा रात्रिभर जगकर पहरा देने का वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ— इस पद्य में कवि बतला रहे हैं कि— श्री सीता जी स्वयं तीनों लोकों की स्वामिनी हैं। ये मर्त्यलोक की मलीनता को मिटाने के लिए अपने पति श्रीरम के साथ वन में आकर इस कुटी को अपना निवास बनायी हैं।

वे वीर वंश की लाज हैं, अतएव उस कुटी का रक्षक यह वीर बना है।

इस स्थान में कोई दूसरा नहीं रहता, एकान्त स्थान है, रात्रि की बेला है और ऐसे काल तथा स्थान में निशाचर अपनी माया जाल फैलाते हैं, इसीलिए श्री लक्ष्मण जी इतनी सावधानी से इस कुटी की रक्षा कर रहे हैं।

(५) क्या ही स्वच्छ चाँदनी है यह-------------------शान्त और चुपचाप।।

सन्दर्भ— यह अवतरण काव्यसंकलन के मैथिलीशरण गुप्त प्रणीत **'पंचवटी'** शीर्षक से अवतीर्ण है।

प्रसंग— इस पद्य में कवि श्रीसीताराम की कुटी का लक्ष्मण जी द्वारा रात्रिभर जगकर पहरा देने का वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ— श्री मैथिलीशरण गुप्त जी कहते हैं कि इस रात्रि की बेला में स्वच्छ चाँदनी विछीं हुई हैं, रात्रि निस्तब्ध है, कही से कोई भी आवाज नहीं आती। धीरे-धीरे स्वच्छन्द वायु बह रही है; सभी दिशाओं में आनन्द ही आनन्द है; किन्तु इस समय भी नियति रूपी नटी अपने कार्य-कलापों को कर रही है, उसमें कोई भी रुकावट नहीं है। वह अत्यन्त एकान्त भाव से चुपचापं समस्त कार्यों को करती चली जा रही है।

विशेष— इस पद्य में रूपक एवं अनुप्रास अलंकार हैं।

(६) है बिखेर देती वसुन्धरा---------------------------रूप झलकता है।

सन्दर्भ— यह अवतरण काव्य संकलन के मैथिलीशरण गुप्त प्रणीत **'पंचवटी'** शीर्षक से अवतीर्ण है।

प्रसंग— इन पंक्तियों में कविवर मैथिलीशरण गुप्त प्रकृति के अहर्निश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चलते कार्यकलापों का वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ— गुप्त जी कह रहे हैं कि— रात्रि में जब सब लोग सो जाते हैं तो पृथिवी ओस कणों के माध्यम से सर्वत्र मानों मोती बिखेर देती हैं। जब प्रातः काल होता है तो सूर्य पृथिवी के द्वारा बिखेरी गयी मोतियों को अपनी किरणों के माध्यम से बटोर लेता है। जाते जाते सूर्य सब को विश्राम देने वाली सन्ध्या प्रदान कर जाता है जिसके शरीर की अभिव्यक्ति शून्य श्याम रात्रि के रूप में होती है।

विशेष— इन पंक्तियों में रूपक एवं उत्प्रेक्षा अलंकार हैं।

जयशंकर प्रसाद–आस्वान गीत

(१) हिमाद्रि तुंग शृंग से———————————बढ़े चलो–बढ़े चलो।।

सन्दर्भ— ये पंक्तियाँ काव्य संकलन के जयशंकर प्रसाद प्रणीत **'आस्वान गीत'** से ली गयी हैं।

प्रसंग— इसमें स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आह्वान देश की पुत्री अलका अपने सैनिकों का उत्साहवर्धन करती हुई कहती है कि स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना ही तुम्हारा कर्त्तव्य है।

भावार्थ— हिमालय की ऊँची-ऊँची चोटी से ज्ञानमयी वाणी में स्वयमप्रकाश तथा देदीप्यमान स्वतंत्रता पुकारकर कह रही है कि तुम अमर वीरों के पुत्र हो, तुम दृढ़ प्रतिज्ञ होकर सोच लो कि यही सह्पे अच्छा एवं विस्तृत पवित्र मार्ग है, आत्मकल्याण के लिए इससे बढ़कर कोई दूसरा मार्ग नहीं है। इसीलिए तुम आगे की ओर बढ़ते रहो।

विशेष— इन पंक्तियों में स्वतंत्रता का मानवीकरण किया गया है।

(२) असंख्य कीर्ति रश्मियाँ———————————बढ़े चलो।।

सन्दर्भ— ये पंक्तियाँ काव्य संकलन के जयशंकर प्रसाद प्रणीत **'आह्वान गीत'** से ली गयी है।

प्रसंग— इसमें स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आह्वान देश की पुत्री अलका अपने सैनिकों का उत्साहवर्धन करती हुई कहती है कि स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना ही तुम्हारा कर्त्तव्य है।

भावार्थ— दिव्य अग्नि के समान तुम्हारी असंख्य यश कीं कान्तियाँ फैली हुई हैं। ऐ मातृभूमि के वीर तथा साहसी सपूतों तुम रुको मत। शत्रुओं की सेना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पी समुद्र को सोख लेने के लिए तुम बाडवाग्नि के समान प्रदीप्त होओ, तुम त्तम वीर बनकर विजयी बनो और आगे की ओर बढ़ते रहो।

विशेष— इस पद्य में रूपक एवं उपमा दोनों अलंकार हैं।

वसन्त की प्रतीक्षा

(१) परिश्रम करता हूँ दिन रात-------------------------वसन्त।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— ये पंक्तियाँ काव्यसंकलन के जयशंकर प्रसाद प्रणीत 'झरना' कविता से अवतरित **'वसन्त की प्रतीक्षा'** से उद्धृत की गयी है।

भावार्थ— कवि कहता मैं लगातार परिश्रम करके क्यारी और कुञ्ज को ना रहा हूँ। मैं आनन्द पूर्वक इसे नेत्रों के जल से सींचता हूँ। इस आशा से कि भी इसमें जूही के फूल खिलेंगे। इस काम को करते समय यदि काँटे ही गड़ते हैं मैं उनकी परवाह नहीं करता हूँ। प्रयास पूर्वक मैं इस कुञ्ज को सजाये रखता । सोचता हूँ कि कभी तो इसमें फूल खिलेंगे और मेरा प्रयास सफल होगा। सको देखकर कभी तो मधुर रजनी इठलाती हुई मधुर मुसकान करेगी। इस ञ्ज में कभी अचानक फूल खिल उठेंगे और इस कुञ्ज में चन्दन का आवास गा। कभी तो समय आयेगा जब इसकी नयी कोपलों के बीच से कोकिल की कूक नायी देगी और तुम भी मेरे पास बैठकर मुझे मादक मदिरा का मकरन्द पिला गे। कवि कहता है कि मैं चाहता हूँ कि कभी मदमत्त ममता मूक हो जाय और स कुञ्ज के पुष्पों से अनन्त विश्व विकसित हो जाय। चेतना ही धैर्य रहित लिन्द (उपवन) बन जाय कितनी प्रसन्नता होगी जब कि उस स्वच्छ वसन्त का ागमन होगा।

विशेष— इन पंक्तियों में रूपक अलंकार है। कवि की मनोहर कामना का नोज्ञ वर्णन है।

दान

(१) मैंने झुक नीचे को देखा-------------------------श्रेष्ठ मानव।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— ये पंक्तियाँ काव्य संकलन के 'दान' शीर्षक से अनुगृहीत । इसके प्रणेता महाप्राण निराला हैं। इन पंक्तियों में कवि किसी दानी पुरुष का र्णन कर रहे हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावार्थ— कवि कहीं पर भ्रम करते एक पुल पर आए जहाँ पर एक दिन दुर्बल ब्राह्मण भिखारी बैठा था। फिर उन्होंने नीचे झुककर देखा तो उसे एक आशा की रेखा दिखायी दी। कोई ब्राह्मण स्नान करके शिवजी पर जल, दूर्वादल, चावल तथा तिल चढ़ाकर अपनी झोली लिए हुए ऊपर आ रहे थे। उनको देखकर उनके सामने कुछ बानर आ गए। राम की भक्ति पाने की इच्छा वाले रामभक्त, ब्राह्मण बारहो मास शिवजी की आराधना करते थे। रामायण का पाठ करते थे, श्रीमन्नारायण का जय करते थे। जब कभी वे दुख पाते तो बन्दरों से हाथ जोड़कर प्रार्थना करते थे। वे मेरे पड़ोसी थे प्रतिदिन नदी में स्नान करते थे। उन्होंने झोले से पुए निकाल लिए बन्दरों के हाथ में दे दिए। जिस तरफ वह भिखारी असहाय बैठा था उस तरफ उन्होंने देखा भी नहीं। जब उसने पुए माँगे तो उन रामभक्तों ने कहा भगो राक्षस कहीं के। कवि को यह देखकर तरस आयी और वह कहने लगा धन्य है तू सृष्टि का श्रेष्ठ जीव मानव तू कितना असहाय है ? और कितना निर्हर्थ ?

तोड़ती पत्थर

(१) तोड़ती पत्थर------------------------------मैं तोड़ती पत्थर

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पद्य काव्य संकलन के 'वह तोड़ती पत्थर' शीर्षक से उद्धृत है। इसके रचयिता महाप्राण निराला हैं। इस कविता में निराला जी किसी पत्थर तोड़ने वाली महिला का वर्णन कर रहे हैं।

भावार्थ— निराला जी कहते हैं कि उस महिला को पत्थर तोड़ते हुए इलाहाबाद के मार्ग पर देखा था। उसके सन्निकट में कोई छायादार पेड़ नहीं था जिसके नीचे बैठकर वह पत्थर तोड़े। वह युवती थी और उसका शरीर साँवला था उसके नेत्र झुके थे और उसका मन अपना काम करने में संलग्न था। हाथ में भारी हथौड़ा लेकर वह बार-बार प्रहार करती थी। उसके सामने मल्लिका का पेड़, अट्टालिका और चहरदिवारी थी।

गर्मियों के दिन में धूप बढ़ती जा रही थी दिन प्रखर होता जा रहा था फिर लू चलने लगी और पृथिवी रुई के समान जलने लगी। चिनगारी के समान धूप फैल गयी, इस तरह दोपहर की बेला हो गयी। किन्तु वह पत्थर तोड़ने वाली पत्थर तोड़ती रही।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसके इस कार्य को मैं देख रहा था। मुझे देखते हुए उसने एक बार मुझे खा। अपना काम बन्द करके उसने उस सामने वाले भवन की ओर देखा। उसने खा कि कोई नहीं है, तो उसनें फिर मुझे उस दृष्टि से एक बार पुनः देखा जो ष्टि मार खाकर रो न सकी हो। अर्थात् अत्यन्त कातर दृष्टि सें उसने मुझे खा। मेरे लिए तो मानो स्वाभाविक रूप से सितार ही सज गया,हो। मुझे उसके थौड़े की आवाज से वह झंकार सुनायी दी जिसे मैंने कभी सुना नहीं था। एक ण के बाद वह सुन्दरी काँप उठी, उसके माथे से पसीने की बूँदें गिर पड़ीं। फिर पने काम में लगकर उसने मानो यह कह दिया कि मैं पत्थर तोड़ती हूँ।

विशेष— यह अतुकान्त तथा छन्द के बन्धन से रहित कविता है। इसमें हाप्राण निराला ने दीन-हीन महिला की वेवशी का मार्मिक चित्रण किया है।

हिमालय से

(१) हे चिर महान !---------------------------------पर रागहीन।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह कविता काव्यसंकलन के 'हिमालय से' शीर्षक से द्धृत है। इसकी रचयिता सुश्री महादेवी वर्मा हैं। इस पद्यांश में महादेवी ने मालय का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है।

भावार्थ— इस पद्यांश में महादेवी वर्मा हिमालय को सम्बोधित करती हुई हती हैं कि हिमालय तुम तो चिरकाल से महान हो। तुम्हारी बर्फ से ढंकी उजली ोटियों पर प्रातःकाल की जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो लगता है कि जैसे सूर्य की किरणों ने तुम्हारे उन्नतभाल पर अपनी रंगीन हंसी विखेर दी हो। इन्द्रधनुष तुम्हारे हार के समान प्रतीत होता है और वायु तुम्हारे ऊपर सुगन्धि फैला जाती है। किन्तु हे हिम के खजाने के समान हिमालय ! तुम इन सबों से रागहीन ही बने रहते हो। उदास बने रहते हो। लगता है स्वभाव से ही उदासीन।

विशेष— इस पद्यांश में उत्प्रेक्षा और उपमा अलंकार हैं। हिमालय के समान ही महादेवी का मन भी सांसारिक रंगीनियों से उदास रहता है।

(२) नभ में गर्वित------------------कितने मृदु कितने कठिन प्राण।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह कविता काव्यसंकलन के 'हिमालय से' शीर्षक से द्धृत है। इसकी रचयिता सुश्री महादेवी वर्मा हैं। इस पद्यांश में महादेवी ने मालय का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावार्थ– इस पद्यांश में कवियित्री कहती हैं कि तुम्हारा गर्व से मण्डित शिर आकाश में उठा हुआ है। यह कभी भी नहीं झुकता है। तुम अपने स्वाभिमान की रक्षा स्वयम् करते हो। किन्तु तुम में दयालुता इतनी है कि तुम अपनी गोद में धूल को बसाये हुए हो। विनयानवत विश्व को देखकर तुम्हारा मन बर्फ के बहाने गल जाता है। तुम अपने शरीर पर वज्र का भी प्रहार सह लेते हो। तुम कितने कोमल हो तथा कितना सहनशील हो।

(३) टूटी है तेरी कब समाधि----------------------दुःख में समान।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– यह कविता काव्यसंकलन के **'हिमालय से'** शीर्षक से उद्धृत है। इसकी रचयिता सुश्री महादेवी वर्मा हैं। इस पद्यांश में महादेवी ने हिमालय का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है।

भावार्थ– महादेवी कहती हैं कि तुम से बार-बार टकराकर तीव्र वायु का झोंका हार मान कर बैठ जाता है, किन्तु तुम्हारी सुदृढ समाधि कभी भंग नहीं होती। जब तुम पृथ्वी के जलते हुए कणों की पुकार सुनते हो तो तुम्हारे नेत्रों से जल की धारा प्रवाहित होने लगती है। तुम्हारी सुख में कोई भी आसक्ति नहीं है और साथ ही तुम दुख में एक समान ही बने रहते हो।

वर्षा सुन्दरी के प्रति

(१) रूपसि तेरा घन केश पाश----------------------घन केश पाश।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– यह पद्य काव्यसंकलन के महादेवी वर्मा प्रणीत **'वर्षा सुन्दरी के प्रति'** शीर्षक से उद्धृत है। इस पद्य में कवयित्री ने वर्षा का चित्रण एक सुन्दरी के रूप में किया है।

भावार्थ– वर्षा सुन्दरी का चित्रण करती हुई महादेवी जी कहती हैं कि हे सुन्दरी वर्षा बादल ही तेरे कोमल तथा काले-काले सुगन्धित एवं लहराते हुए केश पाश हैं। क्या रात्रि में तू अपने इन बालों को आकाश गंगा की चाँदनी जैसी स्वच्छ जल धारा में धोकर आयी है ? जल भरे तेरे अंग काँप रहे हैं, तुम्हारा सद्यः स्नात शरीर सिहरा सा प्रतीत होता है। तेरे भींगे हुए बादल रूपी बालों की छोरों से, अनेक प्रकार की लास (नृत्य) करती हुई जल की बूँदें चू रही हैं। ऐ सुन्दरी बादल ही तेरे केश-कलाप हैं।

विशेष– इस पद्यांश में साङ्गरूपक अलंकार है। वर्षा का मानवीकरण किया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

या है और उसका एक सद्यः स्नात सुन्दरी के रूप में चित्रण किया गया है।

(२) सौरभ झीना गीला------------------रूपसि तेरा घन-केश-पाश।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह पद्य काव्यसंकलन के महादेवी वर्मा प्रणीत **'वर्षा न्दरी के प्रति'** शीर्षक से उद्धृत है। इस पद्य में कवयित्री ने वर्षा का चित्रण एक न्दरी के रूप में किया है।

भावार्थ— कवयित्री कहती हैं कि हे वर्षा सुन्दरी ! तुम्हारे शरीर पर पतला था सुगन्धित एवं गीला गीला काला काला कोमल वस्त्र लिपटा हुआ है। तुम्हारे चल आँचल से रास्ते में झर-झर जुगुनूरूपी फूल झरते हैं। तेरे कटाक्षपात का न्दर्य दीपक के समान बार-बार विजृम्भित होता है। ऐ वर्षा सुन्दरी ! मेघ ही रे केश पाश हैं।

विशेष— इस पद्य में साङ्गरूपक अलंकार है; वर्षा का सुन्दरी के रूप में नवीकरण किया गया है।

(३) उच्छ्वसित वक्ष पर------------------------------केशपाश।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह पद्य काव्यसंकलन के महादेवी वर्मा प्रणीत **'वर्षा न्दरी के प्रति'** शीर्षक से उद्धृत है। इस पद्य में कवयित्री ने वर्षा का चित्रण एक न्दरी के रूप में किया है।

भावार्थ— तुम्हारे उच्छ्वासों से उल्लसित वक्षस्थल पर उजले कमल के समान जली वकपंक्ति का हार शोभा दे रहा है। तुम्हारी निःश्वासें पृथिवी को छूकर लयानिल बन जाती हैं। मयूरी की मधुर ध्वनि तेरे नूपुर की झंकार हे, उसको नकर पृथिवी की मूक प्यास जग जाती है। सुन्दरी मेघ ही तेरे केश पाश हैं।

विशेष— इस पद्य में रूपक एवं उपमा अलंकार हैं तथा वर्षा का मनोज्ञ न्दरी के रूप में मानवीकरण किया गया है।

(४) इन स्निग्ध लटों से छादे तन----------------------घन-केश-पाश।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह पद्य काव्यसंकलन के **'वर्षा सुन्दरी के प्रति'** शीर्षक उद्धृत है। इस पद्य में कवयित्री ने वर्षा का वर्णन एक मनोज्ञ सुन्दरी के रूप में या है।

भावार्थ— कवयित्री वर्षा सुन्दरी से कहती हैं कि तुम्हारा संसार रूपी शिशु दास है, अपने इन कोमल लटों से तुम उसको ढंक दो, और अपने रोमाञ्चित द में बिठा लो, झुककर तुम अपने स्मितपूर्ण चुम्बन के द्वारा इसके ललाट को म लो, इसको तुम दुलरा एवं बहला देना, जिससे कि तुम्हारे इस संसार रूपी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिशु की उदासी मिट जाय। हे सुन्दरी मेघ ही तेरा केश कलाप है।

विशेष– (१) इस पद्यांश में रूपक अलंकार है, तथा वर्षा का जगन्माता के रूप में मानवीकरण किया गया है।

निर्झर से

(१) अरे निर्जन के———————————जिसे खोजते हो वन–वन।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण काव्यसंकलन के रामकुमार वर्मा प्रणीत **'निर्झर से'** शीर्षक से लिया गया है। इस अवतरण में नीचे की ओर निरन्तर बहते हुए झरने को देखकर कवि उससे प्रश्न करता है कि उसके इस अधः अवतरण का लक्ष्य क्या है ?

भावार्थ– कवि कहता है कि ऐ निर्जन वन के निर्मल झरने तुम एकान्त स्थल के प्रांगण में किसको अपना सुमधुर गीत सुना रहे हो ? तुम अपना ऊँचा स्थान छोड़कर नीचे क्यों गिर रहे हो ? तुम्हारा वह कौन सा प्रेमी है जिसे तुम वनों में खोज रहे हो ?

(२) विरह में अश्रु बहाकर———————————गति खोकर।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण काव्यसंकलन के रामकुमार वर्मा प्रणीत **'निर्झर से'** नामक शीर्षक से लिया गया है। इस अवतरण में नीचे की ओर निरन्तर बहते हुए झरने को देखकर कवि उससे प्रश्न करता है कि उसके इस अधः अवतरण का लक्ष्य क्या है। ?

भावार्थ– कवि निर्झर से कहता है कि किसकी विरह–व्यथा में आँसू बहाते–बहाते तुम अपना सारा शरीर जलमय किए जा रहे हो ? अथवा अपने किस अज्ञात प्रेमी के चरणों की धूलि धोने के लिए इतनी शीर्घता से आगे बढे जा रहे हो। पाषाण के छोटे–छोटे टुकड़े भी तुमको ठोकर मारते हैं और क्षण भर के लिए तुम विचलित होते हो, तुम्हारी गति रुकती सी है, और तुम अपने धुन में उसकी परवाह किए बिना किस धुन में आगे बढते जाते हो ?

(३) लघु लहरों से कम्पित कर से———————————कातर निर्झर।।

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण काव्यसंकलन के रामकुमार वर्मा प्रणीत **'निर्झर से'** शीर्षक से लिया गया है। इस अवतरण में नीचे की ओर बहते हुए झरने को देखकर कवि, उससे प्रश्न करता है कि उसके इस अधः का लक्ष्य क्या है ?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावार्थ— तुम अपनी छोटी-छोटी लहर रूपी बाहों से उत्सुकता पूर्वक ालिंगन करते हो। तुम्हें तुम्हारे मार्ग का निर्देश कौन करता है ? ये सभी पेड़ तो न हैं। ये तो तुम्हें मार्ग बतलाते नहीं। स्थिर पलकों से जल भरे अविचल पलकों जल कल-कल स्वर में पर्वत पर गिराकर मैं चाहता हूँ कि मेरी जीवात्मा रूपी र्झर की मधुर ध्वनि मेरे प्रियतम परमात्मा के अन्तर्मन में गूँजती रहे।

क्या गाऊँ

(१) प्रियतम भूले मैं------------------------------ क्या गाऊँ।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत पद्यांश काव्यसंकलन के रामकुमार वर्मा प्रणीत या गाऊँ' शीर्षक से अवतीर्ण है। इस पद्य में कवि परमात्मा को ही अपना यतम मानकर जीव का उससे विप्रयोग अनुभव करता है।

भावार्थ— इस कविता में कवि कहते हैं कि हे प्रियतम ! अब तो आप ही पको भूल गए हैं। आपके विप्रयोग में मैं कैसे जी सकता हूँ। गीत तो खुशियों का ृगार होता है। मेरी जिस ध्वनि में आपका निवास है, उसे मैं संसार के कणों में से विखेर सकता हूँ ? इस समय मेरे शब्दों के द्वार पूर्ण रूप से नहीं खुले हैं। वे धखुले हैं। अधखुले द्वार से ध्वनियाँ नहीं निकल पाती हैं। उच्छ्वासों के छोटे-छोटे र्ग पर चलती हुई इच्छाएँ थक जाती हैं। मेरे पास समस्या यह है कि स्वप्न के केतों से मैं आपको अपने पास किस तरह बुला सकता हूँ।

जुही की सुगन्धित भरी वायु के एक झोंके से ही कान्ति श्रीहत गयी है और रे डूब गसे हैं, किन्तु आँसुओं के जल में बार-बार डूबकर भी मेरी आँखों के रे हारे नहीं हैं। दुःख ही जगा है। उस स्थिति में आपको जगाकर मैं किस प्रकार सुख पा सकता हूँ। प्रियतम आप तो मुझे भूल चुके हैं, मैं किस प्रकार गीत ऊँ ?

विशेष— यह रहस्यवादी कविता है। कवि एक अव्यक्त सत्ता परमात्मा से र करता है।

पुष्प की अभिलाषा

(१) चाह नहीं मैं सुर बाला के-------------------------वीर अनेक।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत अवतरण काव्यसंकलन के श्री माखनलाल चतुर्वेदी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रचित **'पुष्प की अभिलाषा'** शीर्षक से लिया गया है। इस कविता में कवि ने पुष्प की अभिलाषा के माध्यम से अपनी देशभक्ति की भावना को अभिव्यक्त किया है।

भावार्थ- पुष्प कहता हैं कि हे वनमाली मैं यह नहीं चाहता हूँ कि मैं किसी देवी के गहने में गूँथा जाऊँ, मैं यह भी नहीं चाहता हूँ कि किसी प्रेमी की माला में गूँथकर मैं उसकी प्रेमिका को उसकी ओर आकृष्ट करूँ, मैं यह भी नहीं चाहता कि मुझे सम्राटों के केश पर चढ़ाया जाय और न तो मैं यह ही चाहता हूँ कि मुझे देवताओं के सिर पर चढाया जाय और मुझे को देवताओं के सिर चढाये जाने का अभिमान हो। वनमाली तुम मुझे तोड़कर उस मार्ग पर चढ़ा देना जिस रास्ते से अपनी मातृभूमि पर अपना शिर चढ़ा देने के लिए मातृभूमि भक्त वीर जाते हों।

विशेष- इस कविता की देशभक्ति की भावना अभिव्यक्त हुई है।

जवानी

(१) प्राण अन्तर में लिए ये पागल------------------उठरी जवानी।

सन्दर्भ एवं प्रसंग-- यह पद्यांश काव्यसंकलन के श्री माखनलाल चतुर्वेदी प्रणीत **'जवानी'** शीर्षक से उद्धृत है। कविता का अभिप्राय है कि जवानी उस अवस्था विशेष का नाम है जिसमें हर पल नया जोश, विश्वास तथा असंभव को भी संभव करके दिखला देने की उमंग होती है।

भावार्थ-- कवि देश के जवानों को संबोधित करते हुए कहता है कि अपने भीतर प्राणों को सजोए हुए तुम तो हमेशा पागल बनी रहने वाली हो। तुम अपनी इज्जत गवाँ कर विधवा हो गयी हो। घड़ियाँ, आकाश के तारे, नदियाँ, हिमालय के हिमखण्ड, शरीर के भीतर श्वाँस, ये सब के सब सतत गतिमान हैं; ऐसी स्थिति में तुम ही क्यों ठहर जायेगी ? इन सबों के ही समान तुम्हें भी निरन्तर आगे बढ़ते रहना है। यदि तुम रुक जाओगी तो ये सब के सब तुम्हारे पीछे रूक जायेंगे। तुम नरमुण्ड की माला पहन लो और उस माला में तुम्हारा स्थान सुमेरु के समन शीर्ष स्थान पर होना चाहिए। तुम पृथिवी के ही समान धानी वेश धारण करलो। प्राण तुम्हारा साथ देने के लिए उद्यत है। अतएव तुम चुपचाप बैठी न रहो, उठो और देश के लिए अपना बलिदान करने के लिए तैयार हो जाओ।

विशेष-- इस कविता में कवि की देशभक्ति के भाव की अभिव्यक्ति हुई है। इस कविता के माध्यम से वे देश की जवानी को संबोधित करते हुए उन्हें देशरक्षार्थ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपना बलिदान देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

(२) श्वान के सिर हो--------------------------मस्तानी जवानी।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— यह पद्यांश काव्यसंकलन के श्री माखनलाल चतुर्वेदी प्रणीत 'जवानी' शीर्षक से उद्धृत है। कवि का अभिप्राय है कि जवानी उस अवस्था विशेष का नाम है जिसमें हर पल जोश, विश्वास तथा असंभव को भी संभव करके दिखला देने की उमंग होती है।

भावार्थ— कवि अपनी और सम्पूर्ण देश की जवानी को ललकार कर कह रहा है, यदि कुत्ते के सिर पर पैर रख दिया जाय तो वह उसको चाटने का काम करता है, दूसरों को वह भोंकता भी है। किन्तु उसमें इतना साहस नहीं होता कि वह सिंह को भी डाँट ले। उसको देखते ही वह अपनी जान बचाकर भागता है। कुत्ता तो रोटी खाता है न कि वह साहस खाता है। साहस का पुतला तो सिंह ही होता है। यद्यपि वह भी प्राणी है, किन्तु उसके प्राण का कोई भी महत्त्व नहीं है। वह जीते ही मरा हुआ है। इसी तरह जो कायर हैं, विदेशियों के चाटुकार हैं, वे तो ठीक कुत्ते की जिन्दगी जीते हैं। यह देश की जवानी उनकी परवाह नहीं करती है। उन चाटुकार ग्राम सिहों (कुत्तों) के बीच अपनी क्रीड़ा करो विश्व का स्वाभिमान जो मदमस्त जवानी से सुरक्षित होता है। वही जवानी है जो अपनी मातृभूमि के लिए मर मिटना जानती है।

हिन्दूस्तान हमारा है

(१) कोटि-कोटि कण्ठों से----------------हिन्दूस्तान हमारा है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग- प्रस्तुत अवतरण काव्यसंकलन के 'बालकृष्ण शर्मा' प्रणीत 'हिन्दूस्तान हमारा है' शीर्षक से गृहीत है। इस पद्यांश में कवि का अभिप्रायं है कि यह हिन्दूस्तान हम भारतवासियों का है। इस देश पर किसी दूसरे का अधिकार नहीं होना चाहिए। यदि कोई इस पर अधिकार करता है तो वह उसका अवैध है और उसके उस कार्य को हमें कभी भी नहीं सहना चाहिए।

भावार्थ— करोडों कण्ठों से आज यहीं स्वर निकल रहा है कि हिन्दूस्तान हमारा है। जिस दिन से नयी सृष्टि प्रारम्भ हुई, जिस दिन से देश तथा काल इन दोनों के पृथक्-पृथक् दो तम्बू ताने गए, जिस दिन आकाश में सर्वप्रथम तारे, सूर्य एवं चन्द्रमा उदित हुए, उसी दिन से यह भारत वर्ष हमारा है, यह हम

सं०पू०द्वि० १२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारतवासियों का स्वाभिमान है।

(२) सतलज, व्यास, चिनाव------------------हिन्दूस्तान हमारा है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत अवतरण काव्यसंकलन के 'बालकृष्णशर्मा' प्रणीत 'हिन्दूस्तान हमारा है' शीर्षक से गृहीत है। इस पद्यांश में कवि का अभिप्राय है कि यह हिन्दूस्तान हम भारतवासियों का हैं इस देशपर किसी दूसरे का अधिकार नहीं होना चाहिए। यदि कोई इस पर अधिकार करता है तो वह उसका अवैध कार्य है और उस कार्य को हमें कभी भीं नहीं सहना चाहिए।

भावार्थ— कवि कहता है कि इस मेरे देश के भीतर, सतलज, व्यास, चिनाव, वितस्ता, रावी, सिन्धु आदि नदियाँ बहती हैं। इस देश की अत्यन्त पवित्र दो नदियाँ हैं गंगा माता और यमुना। ब्रह्मपुत्र, कृष्णा तथा कावेरी आदि नदियों का वात्सलय भरा गोद भारतवासियों को ही आप्यायित करता रहता है। ये समस्त नदियाँ हमारे इस देश भारतवर्ष को सींचती रहती हैं। हमारा यह देश रस का खजाना है। इस प्रकार का यह हिन्दूस्तान हमारा है। इस पर किसी दूसरे का अधिकर नहीं हो सकता है।

(३) है आसन्नभूत अति उज्ज्वल---------------हिन्दूस्तान हमारा है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत अवतरण काव्यसंकलन के 'बालकृष्णशर्मा' प्रणीत 'हिन्दूस्तान हमारा है' शीर्षक से गृहीत है। इस पद्यांश में कवि का अभिप्राय यह है कि यह हिन्दुस्तान हम भारतवासियों का है इस देश पर किसी दूसरे का अधिकार नहीं होना चाहिए। यदि कोई इस पर अधिकार करता है तो वह उसका अवैध कार्य है और उस कार्य को हमें कभी भी सहना नहीं चाहिए।

भावार्थ— कवि कहता है कि हमारे इस भारतवर्ष का अतीत गौरवशाली रहा है। इस देश का असन्नभूत भी उज्ज्वल रहा है। वर्तमान काल में यद्यपि यह देश कुछ दिन से परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ गया है। किन्तु इस देश का वर्तमान भीं देशभक्तों के खून से रंगने लग गया है और सद्यः समुपलब्ध होने वाली स्वतन्त्रता के बिहान का उषाकाल आ गया है। चारों तरफ उसकी लालिमा बिखर गयी है। हमारा यह नियम है कि हम मानव को मुक्त करें। यह भारतवर्ष हमारा है और यह हमारा ही बनकर रहेगा।

(४) गरज उठे चालीस कोटि जन--------------हिन्दूस्तान हमारा है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग— प्रस्तुत अवतरण काव्यसंकलन के बालकृष्णशर्मा प्रणीत 'हिन्दुस्तान हमारा है' शीर्षक से गृहीत है। इस पद्यांश में कवि का यह अभिप्राय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है कि यह हिन्दूस्तान हम भारतवासियों का है। इस पर किसी दूसरे देश का अधिकार नहीं होना चाहिए। यदि कोई इस पर अधिकार करता है तो वह उसका अवैध कार्य है और उसके इस कार्य को हमें कभी भी नहीं सहना चाहिए।

भावार्थ— कवि बालकृष्ण शर्मा ने उत्साह भरे स्वतंत्रता का गीत गाया। उस गीत को सुनकर उत्साह भरी भारत की चालीस करोड़ जनता गरजने लगी, अपना अधिकार पाने के लिए विदेशियों को भगाने के लिए। उस गर्जना को सुनकर विरोधियों के हृदय काँप गये। आज एक नये युग का प्रारम्भ हो गया है। सभी देशवासियों के आँखों से जैसे आग की चिनगारी छिटक रही है।

❑

पद्यसंकलन-परिचयात्मक भाग

प्रश्न १— कबीरदास का संक्षिप्त जीवन-परिचय प्रस्तुत करते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर— मध्यकाल के अन्य कवियों की भाँति कबीरदास के जीवन के सम्बन्ध में भी किसी निश्चित मत का अभाव है । कबीरदास ने स्वयं अपने बारे में कुछ नहीं लिखा है । उनके जीवन के सम्बन्ध में अनेक विसंगतियों एवं किंवदन्तियों के दर्शन होते हैं । अस्तु उनके जीवन के बारे में निश्चित रूप से कुछ भी नही कहा जा सकता है।

जन्म-तिथि— कबीर के जन्म-काल के बारे में चर्चा करते हुए पाश्चात्य विद्वान् हंटर ने संवत् १४३७ में कबीर का जन्म स्वीकार किया है। वेस्टकट ने कबीर का जन्म संवत् १४४७ में तथा मृत्यु १५७५ में स्वीकारा है। कबीरपंथियों के अनुसार कबीर का जन्म संवत् १४५६ और मृत्यु १५७५ में हुई। मिश्रबन्धुओं ने कबीर की जन्म-तिथि संवत् १४५५ की ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा माना है। आचार्य शुक्ल ने कबीर का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा संवत् १५५६ स्वीकार किया है । अधिकांश विद्वान् १५५५ को ही मानते हैं।

जाति एवं वंश— कबीर सच्चे अर्थों में एक महान् सन्त थे और सन्त का सम्बन्ध किसी जाति विशेष से नहीं होता। सन्त तो वह होता है जिसने सत्य का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साक्षात्कार कर लिया हो । इस बात को कबीर ने स्वयं भी स्वीकारा है—

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ग्यान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे समीक्षक को यह कहना पड़ा कि, हिन्दी साहित्य के हजारों वर्षों के इतिहास में कोई ऐसा प्रमाण नहीं है कि कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न हुआ हो। महिमा के विषय में वह व्यक्तित्व केवल एक ही प्रतिद्वन्द्वी को जानता है, तुलसीदास को ।

कहा जाता है कि कबीर का जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था जिससे लोक-लज्जा के भय से इनको लहरतारा नामक तालाब के किनारे फेंक दिया गया था। ऐसी मान्यता है कि आचार्य रामानन्द के आशीर्वाद के परिणामस्वरूप कबीर का जन्म हुआ था। इनका पालन-पोषण नीरू और नीमा नामक जुलाहे-दम्पति ने किया था। हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के प्रति कबीर की श्रद्धा भावना इस बात को पुष्ट करती है।

कबीर की वंशपरम्परा को देखने से ज्ञात होता है कि इनकी पत्नी का नाम लोई था जिससे कमाल और निहाल दो पुत्र तथा कमाली और निहाली दो पुत्रियां थीं, किन्तु उनकी जीवित सन्तानों में कमाल का ही उल्लेख प्राप्त होता है—

बूडा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल।
हरि का सुमिरन छाडि कै घर लै आया माल।।

जन्म-स्थान तथा शिक्षा-दीक्षा— कबीर के जन्मस्थान के सम्बन्ध में अनेक मत सामने आते हैं। पं० परशुराम चतुर्वेदी काशी को कबीर का जन्म स्थान स्वीकार करते हैं। 'बनारस गजेटियर' के अनुसार कबीर का जन्म आजमगढ़ जिले के 'बेलहरा' नामक गाँव में हुआ था। इस मत की पुष्टि में पं० चन्द्रवली पाण्डेय ने लिखा है कि 'आज भी पटवारी के कागजों में 'बेलहरा' उर्फ 'बेलहरा पोखर' लिखा मिलता है। जहाँ तक कबीर की शिक्षा का प्रश्न है इस बात को कबीर ने स्पष्ट शब्दों में घोषित किया है कि—

'मसि कागद छुयौ नहीं, कलम गही नहि हाथ।
चारिउ जुग को महातम, मुखहिं जनाई बात।।

अतः कबीर पढे-लिखे नहीं थे। उनके शिष्यों ने उनकी वाणी को लिपिबद्ध किया। चूँकि कबीर एक सच्चे समाज सुधारक थे और साधना के लिए एक योग्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रु की आवश्यकता पड़ती है। वे काशी के तत्कालीन प्रसिद्ध महात्मा रामानन्द का शिष्यत्व ग्रहण किये।

नाभादास ने अपने 'भक्तमाल' में कबीर को रामानन्द के २२ शिष्यों में से एक स्वीकारा है।

व्यक्तित्त्व— कबीरदास जी एक विलक्षण व्यक्तित्व लेकर आये थे। वे स्वयं कपड़ा बुनने का कार्य करते थे, परन्तु उन्होंने अपना सारा जीवन सामाजिक कुंठाओं, धार्मिक आडम्बरों ओर मिथ्या विश्वासों के विरूद्ध संघर्ष में लगा दिया। उनके हिन्दी केवल सन्त कवियों में ही नहीं अपितु पूरे हिन्दी साहित्य में बेजोड़ है। हिन्दी साहित्य के लगभग बारह सौ वर्षों के इतिहास में तुलसीदास को छोड़कर इतना प्रभावशाली और महिमा - मण्डित व्यक्तित्व दूसरे कवि का नहीं है। वह हिन्दुओं के लिए 'वैष्णव भक्त, मुसलमानों के लिए 'पीर' सिक्खों के लिए 'भगत', कबीरपंथियों के लिए 'अवतार', आधुनिक राष्ट्रवादियों के लिए 'हिन्दु मुस्लिम ऐक्य विधायक', नव वेदान्तियों के लिए 'विश्व धर्म-प्रवर्तक' प्रगतिशील तत्त्वों की दृष्टि में 'समाज सुधारक', जातिगत श्रेष्ठता के विरोधी, सामाजिक दृष्टि से कमजोर वर्ग के पक्षधर, क्रान्तिकारी और समता, बन्धुत्व- भावना, न्याय तथा एकता के प्रतिपादक रूप में मान्य हैं।"

रचनायें— यद्यपि कबीर नें अपनी सफाई में साफ कह दिया है कि **'मसि कागद छुयौ नहीं, कलम गही नहीं हाथ।'** किन्तु उनके काव्य-संग्रह प्राप्त होते हैं। इसका कारण यह है कि वे उच्चकोटि के ज्ञानी, प्रचारक और सन्त थे। परिणामतः उनके शिष्यों की संख्या अधिक थी। वे जो कुछ भी बोलते अथवा उपदेश देते थे, उसे उनके शिष्यों द्वारा लिपिबद्ध कर लिया जाता था। कबीर स्वभाव से मनमौजी और फक्कड़ थे जो उनकी रचनाओं में लक्षित होता है। यही कारण है कि डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी को कहना पड़ा कि "यद्यपि कबीर नें कहीं काव्य लिखने की प्रतिज्ञा नहीं की तथापि उनकी आध्यात्मिक रस की गगरी से झलके हुए रस से काव्य की कटोरी में भी कम रस नहीं इकट्ठा हुआ है।

अतः कबीर की रचनाओं को तीन भागों में बाँटा गया है।

(१) **साखी**— साखी शब्द संस्कृत साक्षी का तद्भव रूप है जिसका अभिप्राय होता है 'गवाह'। अर्थात किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा व्यापार को अपनी आँखों से देखा हो, उसे साखी कहते हैं। कबीर स्वयं आँखों की देखी घटना में विश्वास करते थे। उन्होनें स्पष्ट कहा है कि—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"तू कहता कागज की लेखी।
मैं कहता आखों की देखी ।

(२) **सबद**— सबद संस्कृत भाषा के 'शब्द का तद्भव रूप है। शब्द का एक अर्थ ब्रह्म भी होता है । अर्थात् ब्रह्मविषयक मान्यताओं का संकलन 'सबद' के अन्तर्गत हुआ है । सबद के अन्तर्गत सभी पद गेयता से सम्पुष्ट हैं।

(३) **रमैनी**— रमैनियों की रचना दोहा-चौपाई शैली में हुई है। सात-सात चौपाइयों के बाद एक दोहा का प्रयोग रमैनी के अन्तर्गत देखा जाता है । 'बीजक' में रमैनी का विशिष्ट कोटि का महत्त्व है, जबकि कबीर ग्रन्थावली में इसे उतना महत्त्व नहीं मिला है ।

प्रश्न २— जायसी का संक्षिप्त जीवन-परिचय प्रस्तुत करते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

जायसी के जीवन, व्यक्तित्व और कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर— मलिक मुहम्मद जायसी भक्तिकाल की रचनाओं की निर्गुणपन्थी काव्यधारा की प्रेममार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि थे। जायसी के जीवन-परिचय के बारे में डॉ० जनार्दन उपाध्याय ने लिखा है कि- "भक्तिकाल की इस प्रेममार्गी काव्यधारा के सर्वोत्कृष्ट कवि मलिक मुहम्मद जायसी के जीवन-परिचय के बारे में उतना मत वैभिन्य नही पाया जाता जितना भक्तिकाल की अन्य धाराओं के प्रसिद्ध कवियों के बारे में मिलता है।

यद्यपि जायसी के पद्मावत में उनके समय की राजनैतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक स्थिति का स्पष्ट चित्र दृष्टिगोचर होता है और उससे उनके जीवन-वृत्त तथा उनके साहित्यक क्षेत्र में आविर्भाव का अनुमान लगाया जा सकता है। फिर भी निश्चित रूप से कोई भी प्रमाण प्रस्तुत नही किया जा सकता। अस्तु, जायसी की रचनाओं एवं आचार्य शुक्ल के कथनों के आधार पर उनके जीवन-परिचय सम्बन्धी तथ्यों का प्रकाशन करना समीचीन होगा—

जन्मतिथि— जायसी ने अपनी रचना 'पदमावत' में शाहेवक्त के रूप में शेरशाह का उल्लेख किया है तथा 'आखिरी कलाम' में बाबर का उल्लेख किया है। 'आखिरी कलाम' में उन्होंने अपनें जन्म के सम्बन्ध में लिखा है ।

भा अवतार मोर नव सदी। तीस बरस ऊपर कवि बदी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि 'नव सदी' का अर्थ 'नवीं सदी' मान लिया जाय तो जायसी की जन्म तिथि सन् ९०० हिजरी के आस-पास होनी चाहिए। जायसी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ पद्मावत के रचना-काल का उल्लेख करते हुए लिखा है–

'सन नौ सै सत्ताइस अहा ।
कथा अरम्भ बैन कवि कहा ।।

नौ सौ सत्ताइस हिजरी वर्ष सन् १५२० ई० के आस-पास पड़ता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल सन् ९०० हिजरी अर्थात् सन् १४९२ ई० को जायसी की जन्म तिथि स्वीकारा है। जबकि डॉ० रामपूजन तिवारी ने जायसी की जन्म-तिथि को सन् ८७० हिजरी अर्थात् सन् १४६४ ई० माना है। इसी क्रम में डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने जायसी की जन्मतिथि ८०० से ९०० हिजरी के बीच कभी भी स्वीकार किया है।

जन्मस्थान– जायसी ने अपने ग्रन्थों की भाषा अवधी बताया है जिससे यह स्पष्ट होता है कि जायसी अवध क्षेत्र के रहने वाले थे। किन्तु इनका जन्म किस स्थान पर हुआ था इसे प्रामाणिक तौर पर नहीं कहा जा सकता। 'जायसी' शब्द को लेकर कुछ विद्वान् उनका जन्म रायबरेली जिले के 'जायसनगर' नामक स्थान स्वीकारते हैं। 'पद्मावत' में जायसी ने स्वयं भी लिखा है कि–

'जायस नगर धरम अस्थानू। तहाँ आइ कवि कीन्ह बखानू।।'

अवध प्रान्त में प्रचलित जनश्रुतियों के अनुसार जायसी का जन्म गाजीपुर जनपद में एक निर्धन मुसलमान परिवार में हुआ था। अतः जायसी के जन्म-स्थान के विषय में भी किसी निश्चित मत का अभाव है, किन्तु यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि जायसी की जन्म-भूमि 'जायसनगर' भले ही न हो वह उनकी पर कर्मभूमि अवश्य रही होगी।

व्यक्तित्व– विद्वानों का मानना है कि जायसी शारीरिक रूप से 'कुरूप, असुन्दर और काने थे। कुछ विद्वान् कहते हैं कि जायसी जन्म से काने नहीं थे बल्कि शीतला के प्रकोप से उनकी एक आँख खराब हो गयी थी और उनका सुन्दर शरीर विकृत हो गया था।

परिवार– जायसी के पिता का नाम मलिक शेख मुमरेज था। इनके पिताजी के नाम से यह बात साफ हो जाती है कि मलिक शब्द 'सरनाम' के रूप में इनकी परम्परा में प्रचलित था, इनका ननिहाल मनकपुर में था। शेख अलहदाद इनके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाना थे । इनके पिताजी छोटी उम्र में ही मर चुके थे, चेचक की बीमारी में इनकी माता भी मनकपुर के मनकशाह की मनौती मानकर अपने नन्हे बालक को रोगी अवस्था में ही अनाथ छोड़कर चल बसीं। जायसी की माता का नाम प्राप्त नही होता। कहा जाता है कि जायसी एक गृहस्थ किसान के रूप में जायस में रहते थे। इनके छः पुत्र थे जो मकान की छत के नीचे दबकर मर गये। इस संतति वियोग के कारण उन्हें संसार से विरक्ति हो गयी और वे अध्यात्मवादी होकर फकीर बन गयें। वे स्वभाव के बहुत उदार थे।

गुरुपरम्परा— जायसी के गुरु का नाम मुहिउद्दीन था। वे निजामुद्दीन औलिया की शिष्य-परम्परा से सम्बन्धित थे।

मृत्यु-तिथि— जायसी की जन्म तिथि की ही तरह मृत्यु तिथि भी विवादित है। अवध के नवाब शुजाउद्दौला के काजी नसरूद्दीन हुसैन ने जायसी का मृत्यु काल ४ रजब ६४९ हिजरी माना है। इसके अनुसार जायसी की आयु ४९ वर्ष ही ठहरती है। परन्तु जायसी ने पदमावत के उपसंहार में अपनी वृद्धावस्था का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया है जिससे उपरोक्त तिथि संदिग्ध लगती है। उनकी मृत्यु के विषय में दूसरी मान्यता सन् १६४२ ई० की है। किन्तु निश्चित रूप से कुछ भी नही कहा जा सकता।

प्रश्न ३— महात्मा सूरदास का संक्षिप्त जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

सूरदास के व्यक्तित्त्व एवं कृतियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर— हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की सगुण मार्गीय शाखा के कृष्णाश्रयी कवियों में महात्मा सूरदास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी साहित्य में ही नही संस्कृत साहित्य का भी अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि बड़े-बड़े कवियों ने अपने जीवन-परिचय के विषय में कहीं भी कुछ भी नही लिखा है। भारतीय वे कवियों की यह परम्परा रही है कि स्व का प्रकाशन नहीं करना चाहते थे, वे अपने को अधम, नीच तथा भगवान का सेवक आदि कहकर शान्त हो गये हैं। कहीं पर भी उन्होंने अपने जन्म, जाति, जन्म-स्थान तथा परिवार आदि का उल्लेख नही किया है। यही कारण है कि हम किसी भी कवि के बारे में निर्विवाद रूप से कुछ नही कह सकते। महात्मा सूरदास का जीवन-परिचय भी कुछ इसी प्रकार का है। उनके जीवन के सम्बन्ध में किसी भी सर्वमान्य तथ्य का सर्वथा अभाव है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म-काल— सूरदास की जन्म-तिथि निश्चित करने के लिए अन्तस्साक्ष्य के रूप में 'सूरसारावली' तथा 'साहित्य लहरी' के एक-एक पदों का आधार लिया जाता है। 'सूरसारावली' में सूरदास ने लिखा है कि—

गुरु परसाद होत यह दरसन बरस प्रबीन ।
शिव विधान तप कियो बहुत दिन, तऊ पार नहि लीन ।।

इस पद में सूरदास ने 'सूरसारावली' की रचना के समय अपनी आयु ६७ वर्ष की बतायी है। पुष्टिमार्ग की मान्यतानुसार सूरदासजी बल्लभाचार्य से १० दिन छोटे थे। गोकुलनाथ जी ने 'निजवार्ता में लिखा है—

सो श्रीनाथ आचार्य जी सो दस दिन छोटे हुते।'

वल्लभाचार्य जी का जन्म सन् १५३५ वैशाख कृष्ण १५ को हुआ था, ऐसा विश्वास प्रचलित है। इसमें से १० दिन कम करने पर सूर की जन्म-तिथि वैशाख शुक्ल ५ गुरूवार सं० १५३५ ठहरती है। पुष्टि-सम्प्रदाय में भी किसी निश्चित मत का अभाव है। इनके जन्म-स्थान को ले करके विद्वानों में दो वर्ग दिखायी देता है। विद्वानों का एक वर्ग इनका जन्म आगरे के निकट 'रूनकता' नामक गाँव स्वीकारता है, जिसके समर्थक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तथा डा० श्यामसुन्दरदास आदि विद्वान हैं। विद्वानों का दूसरा समूह उनका जन्म दिल्ली के निकट 'सीही नामक गाँव स्वीकारता है, जिसके समर्थक विद्वानों में डॉ० प्रमुख हैं डा० हरवंशलाल शर्मा तथा डा० ब्रजेश्वर ।

परिवार— सूरदासजी की वंशावली विवाद ग्रस्त होने के कारण इनके पिता का नाम भी विवादग्रस्त है। वैसे 'साहित्यलहरी' के एक पद में सूर क़ी पूरी वंशावली का उल्लेख है। उसके अनुसार सूरदास चन्दवरदाई के वंशज हैं। इसमें सूादास का नाम सूरजदास बताया गया है। इतना तो निर्विवाद सत्य है कि सूरदास का जन्म ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उपरोक्त वंशावली में सूर के छः भाइयों के नामों का भी उल्लेख हुआ है जो क्रमशः इस प्रकार है- कृष्णचन्द, उदारचन्द, रूपचन्द, प्रकाशचन्द, बुद्धिचन्द, देवचन्द तथा सातवें स्वयं सूरचन्द (सूरदास) थे।

अन्धत्व— सूरदास के अन्धत्व के बारे में भी विद्वानों में मतैक्य का अभाव है। वार्त्ता साहित्य तथा सूर के सम्बन्ध में प्रचलित जनश्रुतियों के अनुसार सूरदास जन्मान्ध थे। अन्तस्साक्ष्य के रूप में सूर ने स्वयं भी लिखा है—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'सूर कूर आँधरो मैं द्वार पर्यो गाऊं'
'सूरदास अन्ध अपराधी सो काहै विसरायौ'

प्रारम्भिक जीवन तथा गुरु-दीक्षा— सूरदास के प्रारम्भिक जीवन के विषय में उनकी वंशावली के आधार पर यह कहा गया है कि उनके छः भाई मुसलमानों के आक्रमण में मारे गये तब उनके वृद्ध पिता निराश होकर किसी दरबार में मुसाहिब बने। इन्हीं कारणों से सूर की वैराग्य-भावना जागृत हुई और उन्होंने गृहत्याग कर दिया।

मृत्यु-तिथि— सूरदास की मृत्यु-तिथि भी जन्म-तिथि की भाँति विवादित है। कुछ पुष्टिमार्गीय विद्वानों ने उनका निधन सं० १६२० माना है, परन्तु श्री प्रभुदयाल मीतल तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आदि विद्वानों का अभिमत है कि सूरदास की मृत्यु सं० १६४० में हुई थी। अतः सं० १६४० वाला मत ही अधिक प्रामाणिक और समीचीन प्रतीत होता है।

सूर की रचनायें— सूरदास की प्रमुख रचनाओं में उनकी तीन रचनाओं का उल्लेख किया जाता है 'सूरसागर,' सूरसारावली' तथा 'साहित्यलहरी'। इन तीनों रचनाओं में से 'सूरसागर' उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण कृति है।

प्रश्न ४— तुलसीदास का संक्षिप्त जीवन-परिचय बताइये।

अथवा

तुलसी के जीवनवृत्त पर प्रकाश डालिए।

उत्तर— हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल की सगुणभक्ति धारा की रामाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि तुलसी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिस प्रकार भक्तिकाल के अन्य कवियों का जीवन वृत्त विवादित है उसी प्रकार महाकवि तुलसी का जीवन भी विवाद की परिधि में आता है । प्रायः सभी भक्त कवियों के जीवन-वृत्त के बारे में देखा जाय तो ज्ञात होता है कि, इन लोगों ने अपने बारे में अपने ग्रन्थ में कहीं कुछ भी नहीं लिखा है जिसे अन्तस्साक्ष्य के रूप में प्रमाण मान करके उनके जीवन-वृत्त के विषय में कुछ निश्चितता पूर्वक कहा जा सके।

जन्म-तिथि— तुलसी के जन्म-काल के विषय में उनके किसी भी ग्रन्थ में कोई संकेत नहीं प्राप्त होता है। इनकी जन्म तिथि को लेकर विद्वानों में भी किसी निश्चित मत का अभाव है। भिन्न-भिन्न विद्वानों ने इनकी जन्म-तिथि को भिन्न - भिन्न रूप में स्वीकार किया है। पाश्चात्य विद्वान् डा० ग्रियर्सन ने तुलसी की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म-तिथि सम्वत् १५८९ स्वीकार किया है। इस तिथि को मानने वाले विद्वानों में डा० माताप्रसाद गुप्त, डा० विमलकुमार जैन, तथा डा० गुलाबराय आदि प्रमुख हैं। बाबा वेणीमाधवदास ने तुलसी की जन्म-तिथि सं० १५५४ स्वीकारा है।

जन्म-स्थान— तुलसी के जन्म-स्थान के बारे में भी अनेक मत प्रचलित हैं। विद्वानों का एक समूह तुलसी का जन्म-स्थान बाँदापुर जिले का राजापुर ग्राम स्वीकार करता है। इस मत को मानने वाले विद्वानों में गार्सा-द- तासी, विल्सन, शिव सिंह 'सेंगर' पं० रामगुलाम द्विवेदी तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आदि प्रमुख हैं।

विद्वानों का दूसरा वर्ग इनका जन्म-स्थान एटा जनपद का 'सोरो' नामक स्थान स्वीकार करता है। तुलसी का जन्म-स्थान 'सोरो मानने वाले विद्वानों में पं० गोविन्दवल्लभ पन्त, पं० भद्रदत्त शर्मा तथा पं० देवव्रत शर्मा आदि के नाम प्रमुख हैं।

माता-पिता एवं परिवार— तुलसीदास के माता-पिता के विषय में भी थोडा. बहुत मतभेद की स्थिति है, किन्तु कुल मिलाकर ठीक है। तुलसी की माता का नाम हुलसी था तथा पिता का नाम आत्माराम दूबे था। राजापुर से प्राप्त सामग्री के अनुसार उनके पिता का नाम आत्माराम दूबे था तथा सोरो से प्राप्त साम्रग्री के अनुसार उनके पिता का नाम आत्माराम शुक्ल था। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में स्वयं लिखा है कि—

'रामहि प्रिय पावन तुलसी-सी। तुलसीदास हित हिय हुलसी सी।।'

इनकी माता के नाम के सम्बन्ध में एक दोहा भी उपलब्ध होता है जिसके उत्तरार्द्ध की रचना कविवर रहीम ने किया है, जो इस प्रकार है—

सुरतिय नरतिय नागतिय, सब जानत अस होय।
गोद लिए हुलसी फिरैं, तुलसी सो सुत होय ।।

जाति और कुल— तुलसीदास की जाति के बारे में किसी भी प्रकार की संदेहास्पद स्थिति नहीं है। हाँ इतना अवश्य है कि इनके गोत्र के बारे में मतवैभिन्य है। राजापुर से सम्प्राप्त होने वाली सामग्री के आधर पर तुलसीदास जी सरयूपारीण दूबे ब्राह्मण थे तथा सोरो से प्राप्त सामग्री के अनुसार तुलसीदास जी शुक्ल थे, जो सनाढ्य ब्राह्मणों की एक कोटि है।

गुरू और शिक्षा— तुलसीदास के गुरु के विषय में भी मतभेद है। सारो से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्त सामग्री के अनुसार तुलसीदास नंददास के बड़े भाई थे और इनके गुरु नरसिंह थे। नरसिंह मंदिर के निकट सोरो में ही उनकी पाठशाला थी। जहाँ उन्होने शिक्षा ग्रहण की थी।

बाल्यकाल गार्हस्थ्य तथा वैराग्य— जन्म के समय तुलसी के मुख से राम नाम उच्चरित होने के कारण अशुभ एवं अमंगलकारी जानकर हुलसी ने उन्हें चुनिया दासी को दे दिया। एक दूसरी जनश्रुति है कि तुलसी पैदा होते ही पाँच वर्ष के बालक की तरह थे, उनके मुख में दाँत निकले हुए थे और उनका जन्म अभुक्त मूल नक्षत्र में हुआ था जिससे इनके माता-पिता ने इनका परित्याग कर दिया। जनश्रुतियों के आधार पर ऐसा कहा जाता है कि यमुना पार के बदरिका ग्राम निवासी दीनबन्धु पाठक की कन्या रत्नावली के साथ इनका पाणिग्रहण संस्कार भी हुआ।

लगभग १५ वर्ष तक इनका सुखमय दाम्पत्य-जीवन बीता। एक दिन रत्नावली अप्रत्याशित ढ़ंग से अपने भाई के साथ मायके चली गयीं। तुलसी रत्नावली को अपने प्राणों से भी अधिक मानते थे, अतः उसका एक पल का भी वियोग उनके लिए असह्य था। रात्रि का गहन अंधकार था, मार्ग में उफनती हुई नदी थी जिसे पार करना अत्यन्त दुष्कर कार्य था, परन्तु स्त्री-प्रेम में दिवाना तुलसी इन बाधाओं को कब मानने वाले था ? मिलन की सुखद कल्पनाओं में डुबते-उतरते तुलसी रत्नावली के पास पहुँच गये। परन्तु रत्नावली को उनका इस प्रकार आना अच्छा नहीं लगा। वह लज्जित हुई और उन्हे धिक्कारती हुई बोली—

लाज न आवत आपको, दौरे आयउ साथ ।
धिक-धिक ऐसे प्रेम को, कहा कहौं मैं नाथ ।।
अस्थि चर्ममय देह मय, तामें ऐसी प्रीति ।
होती जो कहूँ राम में, होती न तौ भवभीति ।।

पत्नी की यह फटकार तुलसी के लिए प्रबोधन बन गयी, तत्काल उनके मन में वैराग्य की लहर दौड़ पड़ी और उनके चरण रामभक्ति के पथ पर बढने लगे। तत्पश्चात् वर्तमान सामाजिक स्थिति के समाधानार्थ उन्होंने 'रामचरितमानस' की रचना किया और इसके बाद अनेक अमूल्य रचनाओं का सर्जन तुलसी ने किया।

मृत्यु-तिथि— तुलसी की मृत्यु के सम्बन्ध में तीन प्रकार का मत सामने आता है। पहले मत के अनुसार तुलसीदास की मृत्यु के संवत् १६८० श्रावण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्ल सप्तमी को हुई थी।

दूसरे मत के अनुसार तुलसी की मृत्यु सम्वत् १६८० श्रावण कृष्ण तृतीया को हुई थी। इस मत के समर्थक दोहे को आधार मानते हैं—

इनके मृत्यु के सम्बन्ध में तीसरा मत सम्वत् १६८० श्रावण कृष्ण तृतीया को इनकी मृत्यु मानता है।

प्रश्न ५— मीराबाई का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर— मीराबाई का जन्म सन् १४६८ ई० के लगभग राजस्थान में मेड़ता के पास चौकड़ी ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम रत्न सिंह था। उदयपुर के राणा साँगा के पुत्र भोजराज के साथ इनका विवाह हुआ था। विवाह के कुछ ही समय बाद इनके पति की मृत्यु हो गयी। मीरा की मृत्यु सन् १५४६ के आस- पास मानी जाती है।

मीरा बचपन से ही कृष्ण की भक्ता थीं। गोपियों की भाँति मीरा माधुर्य भाव से कृष्ण की उपासना करती थीं। वे कृष्ण को ही अपना पति कहती थीं और लोक- लाज खोकर कृधण के प्रेम में लीन रहती थीं। बचपन से ही ये अपना अधिक समय संत महात्माओं के सत्संग में व्यतीत करती थीं। मंदिर में जाकर अपने आराध्य की प्रतिमा के समक्ष ये आनन्द विह्वल होकर नृत्य करतीं थीं। इनका इस प्रकार का व्यवहार उदयपुर की राजमर्यादा के प्रतिकूल था। अतः परिवार के लोग इनसे रुष्ट रहते थे।

नरसी जी का मायरा, रागगोबिन्द, राग सोरठ के पद तथा गीत- गोविन्द की टीका मीरा की रचनाएँ है।

मीरा ने गीत काव्य की रचना की और कृष्ण भक्त कवियों की परम्परागत पद शैली में प्रियतम के समक्ष गाया। सभी पद संगीत के स्वरों में बँधे हुए हैं। इनके गीतों में आवेशपूर्ण आत्माभिव्यक्ति मिलती है। प्रियतम के समक्ष आत्म-समर्पण की भावना तथा तन्मयता ने इनके काव्य को मार्मिक तथा प्रभावोत्पादक बना दिया है। कृष्ण के प्रति प्रेमभाव की व्यंजना ही इनकी कविता का उद्देश्य रहा है। जीवन भर मीरा कृष्ण की वियोगिनी बनी रहीं। इनके काव्य में हृदय की आवेशपूर्ण विह्वलता देखने का मिलती है।

मीरा की काव्य भाषा शुद्ध साहित्यिक एवं ब्रज- भाषा के सन्निकट है तथा उस पर राजस्थानी, गुजराती, पश्चिमी हिन्दी और पंजाबी का प्रभाव दुष्टिगोचर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है। इनकी काव्य भाषा अत्यन्त मधुर, सरस, और प्रभावपूर्ण है।

प्रश्न ६— सुदामाचरित के प्रणेता नरोत्तमदास जी का जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर— नरोत्तमदास का जन्म सन् १४९३ ई० के लगभग सीतापुर जिले के बाड़ी ग्राम में हुआ था। इनका लिखा हुआ केवल एक छोटा सा खंडकाव्य 'सुदामा चरित' उपलब्ध है। यह ग्रंथ इतना सुंदर और भावपूर्ण है कि इसी के कारण नरोत्तमदास का नाम काव्य-जगत् में अमर हो गया है।

'सुदामा चरित' में नरोत्तमदास ने कृष्ण और सुदाम्मा की आदर्श मित्रता का वर्णन किया है। इस काव्य में कवि को कथा के वर्णन में जैसी सफलता मिली है वैसी ही सफलता मार्मिक मनोभावों के चित्रण में भी मिली है। नरोत्तमदास ने जहाँ दरिद्रता में व्यतीत होने- वाले सुदामा के जीवन एवं पारिवारिक परिस्थितियों का तथा ऐश्वर्य और वैभव से सम्पन्न कृष्ण की द्वारिकापुरी का सजीव वर्णन किया है। वहाँ इन्होंने मित्र की दुर्दशा देखकर कृष्ण के हृदय में उमड़ी करुणा का तथा सुदामा के आत्म- सम्मान की भावनाओं का भी हृदय स्पर्शी चित्रण किया है; सुदामा तथा उनकी पत्नी के बीच होने वाले कथोपकथन में भारतीय दाम्पत्य जीवन का मार्मिक तथा सजीव रूप व्यक्त हुआ है।

स्वाभाविक चित्रण नरोत्तमदास के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें उपमा, रूपक, अनुप्रास आदि के प्रयोग से काव्य- सौन्दर्य का उत्कर्ष हुआ है। नरोत्तमदास ने मुख्यतः कवित्त सवैया का और कहीं पर दोहा छन्द का भी प्रयोग किया है। इनके छन्दों में कथा का स्वाभाविक प्रवाह मिलता है। इनकी भाषा व्रजभषा है। भाषा की स्वच्छता, सरलता तथा सजीवता इनके काव्य की लोकप्रियता का प्रमुख कारण है। इनकी भषा में परिस्थितियों को साकार रूप देने की अद्भुत क्षमता है।

प्रश्न ७— रहीम का जीवनवृत्त लिखिए।

उत्तर— रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। इनका जन्म सन् १५५५ ई० के लगभग लाहौर नगर (अब पाकिस्तान में) में हुआ था। ये अकबर के संरक्षक बैरम खाँ के पुत्र थे। रहीम अकबर के दरबार के नवरत्नों में से थे। ये अकबर के प्रधान सेनापति और मंत्री भी थे। ये वीर योद्धा थे और बड़े कौशल से सेना का संचालन करते थे। इनकी दानशीलता की अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं। सन् १६२७ में इनकी मृत्यु हो गयी।

अरबी, तुरकी, फारसी तथा संस्कृत के ये पंडित थे। हिन्दी काव्य के ये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मर्मज्ञ थे और हिन्दी कवियों का बड़ा सम्मान करते थे। गोस्वामी तुलसीदास से भी इनका परिचय तथा स्नेह-पूर्ण सम्बन्ध था।

रहीम-सतसई, शृंगार-सतसई , मदनाष्टक, रासपंचाध्यायी, रहीम रत्नावली तथा बरवै नायिका भेद वर्णन इनकी रचनाएँ हैं। इन्होंने फारसी भाषा में भी ग्रंथों की रचना की है। इनकी रचनाओं का पूर्ण संग्रह रहीम रत्नावली के नाम से प्रकाशित हुआ है।

रहीम बड़े लोकप्रिय कवि थे। इनके नीति के दोहे तो सर्वसाधारण की जिस्वा पर रहते हैं। इनके दोहों में कोरी नीति की नीरसता नहीं है; उनमें मार्मिकता तथा कवि-हृदय की सच्ची संवेदना भी मिलती है। दैनिक जीवन की अनुभूतियों पर आधारित दृष्टांतों के माध्यम से इनका कथन सीधे हृदय पर चोट करता है। इनकी रचना में नीति के अतिरिक्त भक्ति शृंगार की भी सुन्दर अभिव्यंजना हुई है।

रहीम जनसाधारण में अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध हैं, पर इन्होंने कवित्त सवैया, सोरठा, तथा बरवै छन्दों में भी सफल काव्य- रचना की है। रहीम का ब्रज और अवधी भाषाओं पर समान रूप से अधिकार था। इनकी भाषा सरल, स्पष्ट तथा प्रभावपूर्ण है।

प्रश्न— रसखान का साहित्यिक जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर ८— रसखान सगुण काव्य धारा की कृष्ण- भक्ति- शाखा के कवि थे। इनका नाम सैयद इब्राहिम था। ये दिल्ली के पाठान सरदार थे। इनका जन्म सन् १५५५ ई० के लगभग हुआ था। ये गुसाईं विट्ठलनाथ के शिष्य हो गये थे। सन् १६१८ ई० के लगभग इनकी मृत्यु हुई।

रसखान रीतिकालीन कवि हैं परन्तु इनकी रचना कृष्ण-भक्ति काव्यधारा की परम्परा में है। रसखान आरम्भ से ही बड़े प्रेमी व्यक्ति थे। इनका लौकिक प्रेम भगवान कृष्ण के प्रति अलौकिक प्रेम-भाव में परिवर्तित हो गया था। ये जितना कृष्ण के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध थे उतना ही उनकी लीला-भूमि ब्रज के प्राकृतिक सौन्दर्य पर भी। कृष्ण के प्रति इनके प्रेम-भाव में बड़ी तीव्रता, गहनता और आवेशपूर्ण तन्मयता मिलती है। इसी कारण इनकी रचनाएँ हृदय पर मार्मिक प्रभाव डालती हैं। अपनी भाव सबलता तथा सरलता के कारण इनकी रचनाएँ बड़ी लोकप्रिय हो गयीं। इनकी लिखी दो पुस्तकें प्रसिद्ध है, **'सुजान रसखान'** और **'प्रेमवाटिका'**।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुजान रसखान की रचना कवित्त और सवैया छन्दों में हुई है तथा 'प्रेमवाटिका' की रचना दोहा छन्दों में। अन्य कृष्णभक्त कवियों की भाँति इन्होंने परम्परागत पद शैली का अनुसरण नहीं किया। इनकी मुक्तक छंद शैली की परम्परा रीतिकाल तक चलती रही।

रसखान ने ब्रजभाषा में काव्य रचना की। इनकी भाषा मधुर एवं सरल है। उसका स्वभाविक प्रवाह ही इनके काव्य को आकर्षक बना देता है। इन्होंने कहीं-कहीं पर यमक तथा अनुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग किया है जिससे भाषा-सौन्दर्य के साथ भाव की भी वृद्धि हुई है।

प्रश्न ९— भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर— भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जन्म सन् १८५० ई० में काशी के एक सम्भ्रान्त वैश्य परिवार में हुआ था। इनके पिता 'गिरधर दास' उपनाम से ब्रज भाषा में कविता करते थे। भारतेन्दु जी ने पाँच वर्ष की अवस्था में ही एक दोहा रचकर अपने पिता से सुकवि होने का आशीर्वाद पाया था। दुर्भाग्य से इनकी स्कूली शिक्षा भली प्रकार न हो सकी। स्वाध्याय से ही इन्होंने हिन्दी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं का अच्छा प्राप्त किया। सन् १८८५ में इनका निधन हो गया।

भारतेन्दु जी एक प्रतिभावान कवि थे। निबन्ध, नाटक, उपन्यास, आलोचना, पत्रकारिता कविता आदि सभी क्षेत्रों में इन्होंने युगान्तर उपस्थित किया। यही कारण है कि उस काल का नामकरण **'भारतेन्दु युग'** हुआ।

भारतेन्दुजी को हिन्दी का प्रथम राष्ट्र कवि निस्संकोच कहा जा सकता है क्योंकि सर्वप्रथम इनके ही साहित्य में राष्ट्रीयता, समाज सुधार, राष्ट्र-भक्ति और देश-प्रेम के व्यापक रूप के दर्शन होते हैं। इन्होंने भक्ति एवं रीतिकालीन कवियों की भाँति भक्ति और शृंगार की सरस एवं मार्मिक कविताएँ भी लिखा है। इनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ-**प्रेम-माधुरी, प्रबोधिनी, प्रेम-सरोवर, प्रेम-फुलवारी, सतसई-शृंगार, भक्तमाल, विनय प्रेम पचासा** आदि हैं। भारतेन्दु ग्रंथावली भाग १, २ तथा ३ में इनका सम्पूर्ण साहित्य संगृहीत है।

भारतेन्दु जी खड़ी बोली गद्य के आविष्कर्ता माने जाते हैं। इन्होंने कविता ब्रजभाषा में ही की। ब्रजभाषा का रूढ़िमुक्त रूप भारतेन्दु ने अपनाया। लोकोक्तियों और मुहावरों का भी इन्होंने प्रयोग अनोखे ढंग से किया है। इन्होंने कवित्त, कुण्डलिया, सवैया, छप्पय, दोहा आदि छंदों में कविता की।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी साहित्य में भारतेन्दुजी का योगदान अविस्मरणीय और प्रेरणाप्रद रहेगा।

प्रश्न १०— श्रीधर पाठक का साहित्यिक जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर— श्रीधर पाठक जी का जन्म सन् १८५९ ई० में आगरा जिले के जौधरी गाँव में हुआ था। सन् १९२८ ई० में इनकी मृत्यु हो गयी।

पाठकजी हिन्दी, संस्कृत, उर्दू फारसी तथा अंग्रेजी भाषा के प्रकाण्ड पंडित थे। इनकी रचनाओं को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है- अनूदित रचनायें तथा मौलिक रचनायें इस प्रकार हैं-

वे इस प्रकार हैं-

अनूदित रचनाएँ— 'एकान्तवासी योगी' (गोल्डस्मिथ के 'हरमिट' का अनुवाद), 'श्रान्त पथिक' (ट्रैवेलर का अनुवाद) 'ऊजाड़ ग्राम' (डेजर्टेड विलेज का अनुवाद) 'ऋतु संहार' (कालिदास के ऋतुसंहार का अनुवाद) '

मौलिक रचनाएँ— जगत सच्चाईसार, कश्मीर सुषमा, भारतगीत, मनोविनोद वन विजय, गुनवन्त, हेमन्त, वनाष्टक, देहरादून, गोखले गुणाष्टक, गोखले प्रशस्ति, गोपिका गीत तथा स्वर्गीय वीणा और तिलस्माती सुन्दरी।

पाठकजी स्वदेशप्रेम और समाज-सुधार की भावनाओं के प्रतिनिधि कवि हैं। प्रकृति वर्णन में आपकी स्वच्छन्द प्रतिभा के दर्शन किये जा सकते हैं। आपकी कविता का विषय एक ओर राष्ट्रीयता और स्वदेश-गान है तो दूसरी ओर शिक्षा-प्रसार और विधवाओं की व्यथा जैसे सामाजिक विषय हैं।

भाषा की दृष्टि से पाठकजी ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में कविता लिखते थे। सच तो यह है कि इनकी ब्रजभाषा की कविताओं में अगाध माधुर्य है, सरसता है और काव्य-सौन्दर्य का अतुल सन्निवेश है, किन्तु खड़ी बोली की इनकी कविताएँ ऐतिहासिक महत्त्व रखती हैं। हिन्दी में अतुकान्त कविता लिखने का सम्भवतः सवप्रथम प्रयास पाठकजी ने ही प्रारम्भ किया था।

प्रश्न ११— अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का साहित्यिक जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर— खड़ी-बोली को काव्य-भाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने वालों में अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का नाम सर्वोपरि है। इनका जन्म जिला आजमगढ़ जिला के निजामाबाद नामक ग्राम में पर सन् १८६५ ई० में हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित भोला सिंह था। सन् १४४५ ई० में हरिऔध जी का निधन हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरिऔधजी द्विवेदी युग की विभूति थे, किन्तु ये छायावादी युग तक निरन्तर साहित्य-साधना करते रहे। इन्होंने साहित्य के विविध अंगों पर लिखा है। खड़ी बोली और ब्रजभाषा दोनों पर हरिऔधजी का अधिकार था। इनकी प्रमुख कृतियां हैं---**प्रिय-प्रवास, वैदेही-वनवास, चौखे-चौपदे, चुभते- चौपदे, रसकलश।**

प्रिय-प्रवास में कवि ने सरल हिन्दी और समासयुक्त पदावली का प्रयोग कर खड़ी बोली के एक नवीन रूप को प्रस्तुत किया। उसमें राधा तथा कृष्ण के परम्परागत शृंगारी रूप को त्याग कर उनके चरित्र में लोक-कल्याण के आदर्शों का सन्निवेश किया गया है और उन्हें लोक-रक्षक, महा-मानव के पद पर प्रतिष्ठित किया गया है। इस ग्रंथ में कवि ने संस्कृत वर्णवृत्तों का प्रयोग कर हिन्दी भाषा और साहित्य की अपूर्व सेवा की है।

हरिऔधजी ने अपनी रचनाओं में प्रकृति-चित्रण के विशिष्ट रूपों का प्रयोग कर हिन्दी कविता को नयी दिशा प्रदान की है।

इनकी चौखे चौपदे, चुभते चौपदे आदि पुस्तकें खड़ी बोली में हैं। इनमें सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं पर मीठी चुटकियां हैं और भाषा मुहावरेदार है। ये दोनों ही रचनाएँ हरिऔधजी के ऐतिहासिक महत्त्व को स्थापित करने के लिए पर्याप्त हैं। हरिऔधजी को इनके जीवन-काल में पर्याप्त सम्मान प्राप्त हुआ था। सन् १९२४ ई० में इन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान पद को सुशोभित किया। प्रिय प्रवास पर मंगला प्रसाद पारितोषिक भी प्राप्त हुआ था।

प्रश्न १२— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त का साहित्यिक जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर— राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हिन्दी-काव्य-जगत के अनुपम रत्न हैं। इनका जन्म सन् १८८६ ई० में चिरगाँव (झाँसी) में हुआ था और मृत्यु सन् १९६४ ई० में हुई। गुप्तजी के पिता का नाम सेठ रामचरण था। वे कविता के प्रेमी, निष्ठावान भारतीय थे। पिता के संस्कार पुत्र को पूरी तरह प्राप्त थे।

गुप्तजी ने मौलिक तथा अनूदित लगभग चालीस पुस्तकें लिखी है। उनमें से प्रमुख है: **रंग में भंग, जयद्रथ वध, पंचवटी, अनघ, हिन्दू, गुरुकुल, झंकार, साकेत, यशोधरा, मंगल घट, नहुष, कुणाल गीत, द्वापर, विष्णुप्रिया, दिवोदास, मेघनाद, बिरहिणी-ब्रजांगना** आदि।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से 'साकेत' महाकाव्य पर मंगलाप्रसाद पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुप्तजी ने अपनी रचनाओं खड़ी बोली के शुद्ध परिष्कृत और तत्सम-बहुल रूप को ही अपनाया है। गुप्तजी की भाषा भावों के अनुकूल है। गुप्तजी के काव्यों में अलंकारों का सहज एवं स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।

हिन्दी की आधुनिक युग की समस्त काव्य-धाराओं को गुप्तजी ने अपने साहित्य में स्थान दिया है- प्रबन्ध-काव्य, खंड-काव्य, गीतनाट्य और छायावादी शैली के गीत।

गुप्तजी खड़ी बोली के उन्नायकों में प्रधान हैं, इन्होंने खड़ी बोली को काव्य के अनुकूल भी बनाया और जनरुचि को भी उसकी ओर प्रवृत्त किया।

मैथिलीशरण गुप्त भारतीय संस्कृति के अमर गायक, उद्‌भट प्रस्तोता और सामाजिक चेतना के प्रतिनिधि कवि थे। इन्हें राष्ट्रकवि होने का गौरव प्राप्त है। गुप्तजी बारह वर्ष तक राज्य-सभा के मनोनीत सदस्य भी रहे।

प्रश्न १२— श्री जयशंकर 'प्रसाद' का साहित्यिक जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर— जयशंकर 'प्रसाद' का जन्म वाराणसी में 'सुंघनी साहु' नाम से प्रसिद्ध एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में सन् १८९० ई० में हुआ था। 'प्रसाद' के पिता बाबू देवी प्रसाद की मृत्यु इनके बाल्यकाल में ही हो गयी थी। 'प्रसाद' की शिक्षा स्कूल में केवल आठवें दर्जे तक हुई थी, किन्तु घर पर इन्हें अंग्रजी, हिन्दी, उर्दू, और संस्कृत की अच्छी शिक्षा मिली। संस्कृत-साहित्य के प्रति इनका गहन अनुराग था। इन्होंने वेद और उपनिषदों के साथ-साथ इतिहास और दर्शन का भी गंभीर अध्ययन किया। काशी के अच्छे कवियों की संगति इन्हें बाल्यकाल से ही प्राप्त हो गयी, जिससे बचपन से ही इनकी रुचि प्रणयन के प्रति जागृत हो गयी। इनका जीवन बड़ा संघर्षपूर्ण रहा तथा अनेक पारिवारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सन् १९३७ ई० में क्षय-रोग से इनका देहावसान हो गया।

पन्द्रह वर्ष की आयु से ही 'प्रसाद' जी ने लिखना आरम्भ किया था। वे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कलाकार थे। इन्होंने काव्य, कहानी, नाटक, उपन्यास तथा निबन्ध सभी प्रकार की साहित्य प्रणयन किया है। किन्तु 'प्रसाद' मूलतः कवि है। आपके प्रमुख काव्य ग्रंथ हैं—

लहर, झरना, प्रेम-पथिक, करुणालय, कानन-कुसुम, आँसू तथा कामायनी। अनेक विद्वानों की राय में कामायनी आधुनिक हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। इसमें मानव-सभ्यता के विकास की कथा रूपक के माध्यम से प्रस्तुत की गयी है। **'कामायनी' को मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित किया गया है।**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वस्तुतः हिन्दी में नवीन युग का द्वार 'प्रसाद' ने ही खोला। अनेक विद्वान् एक स्वर से इन्हें छायावाद का प्रवर्तक और उसका श्रेष्ठ कवि मानते हैं। निश्चय ही ये युग-प्रवर्तक साहित्य-स्रष्टा थे। इतिहास, दर्शन और कला के मणि- कांचन संयोग ने इनके काव्य को अपूर्व गरिमा प्रदान की है। **छायावादी शैली-शिल्प का प्रौढ़तम रूप इनकी कविता में उपलब्ध होता है।**

प्रश्न १४— श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का साहित्यिक जीवन परिचय अपने शब्दों में दीजिए।

उत्तर— सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् १८९७ ई० में बंगाल के महिषादल राज्य में हुआ था। इनके पिता उत्तर-प्रदेश के उन्नाव जिले के निवासी थे, किन्तु आजीविका के लिए बंगाल चले गये थे। ढाई वर्ष की अवस्था में इन्हें माता की गोद से वंचित होना पड़ा और इनके लालन-पालन का भार इनके पिता के कंधों पर आ पड़ा। 'निराला' की प्रारम्भिक शिक्षा महिषादल में हुई। संस्कृत, बंगला और अंग्रेजी का अध्ययन इन्होंने घर पर ही किया। सन् १९६१ ई० में इनका देहावसान हो गया।

'निराला' बहुमुखी प्रतिभा वाले साहित्यकार थे। कविता के अतिरिक्त इन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, आलोचना और संस्मरण भी लिखा हैं। इनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं- **परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, अपरा, बेला, नये पत्ते, आराधना, अर्चना** आदि। मुख्यतः ये कवि थे और छायावाद के प्रमुख प्रर्वतकों में से एक थे। इनकी कविता में विषय की विविधता और नवीन प्रयोगों की बहुलता है। शृंगार, रहस्यवाद, राष्ट्र-प्रेम, प्रकृति-वर्णन के अतिरिक्त शोषण और भेदभाव के विरूद्ध विद्रोह, शोषित एवं दीन-हीन जन के प्रति सहानुभूति तथा पाखण्ड और प्रदर्शन के प्रति व्यंग्य इनके काव्य की विशेषताएँ हैं।

'निराला' का मुक्त एवं क्रान्तिकारी स्वभाव परम्परागत छन्द विधान को स्वीकार नहीं कर पाया और इन्होंने छन्द का विकास किया। 'निराला' की दो शैलियाँ स्पष्ट हैं---एक उत्कृष्ट छायावादी गीतों में प्रयुक्त, लम्बी, समस्त पदावली युक्त, तत्सम बहुल, गहन विचार से ओत-प्रोत शैली और दूसरी सरल, प्रवाहपू प्रचलित उर्दू के शब्द लिये व्यंग्यपूर्ण और चुटीली शैली।

इनकी रचनाओं में आग है, पौरुष है और है सड़ी-गली परम्पराओं विद्रोह। कुल मिलाकर निराला हिन्दी के क्रान्तिकारी कवि हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न १५— श्री सुमित्रानन्दन पन्त का साहित्यिक जीवन परिचय लिखिये।

उत्तर— सूमित्रानन्दन पन्त का जन्म सन् १९०० ई में अल्मोड़ा के निकट कौसाम्बी ग्राम में हुआ था। जन्म के छः घण्टे बाद ही इनकी माता का शरीरान्त हो गया। इनका लालन-पालन प्रकृति की गोद में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम की पाठशाला में हुई। हाई स्कूल की परीक्षा वाराणसी से पास करके पन्त जी प्रयाग के म्योर सेण्ट्रल कालेज में प्रविष्ट हुए, किन्तु सन् १९२१ ई० में असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ होने पर इन्होंने कालेज छोड़ दिया और साहित्य साधना में प्रवृत्त हो गए इन्होंने दीर्घकाल तक हिन्दी साहित्य की निरन्तर सेवा की । २८ दिसम्बर १९७७ को इनका देहावसान हो गया। साहित्य अकादमी ने इनकी विशिष्ट साहित्य सेवा के लिए पुरस्कृत किया तथा भारत-सरकार ने इन्हें **'पद्मभूषण'** के अलंकार से सम्मानित किया। इनकी कृति **'चिदम्बरा'** पर इन्हें भारतीय ज्ञानपीठ का एक लाख रूपये का पुरस्कार प्रदान किया गया।

इनकी प्रमुख रचनाएँ— वीणा ग्रन्थि, पल्लव , पल्लविनी, अतिसा, गुंजन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, उत्तरा, कला और बूढ़ा चाँद, युगपथ, शिल्पी, चिदम्बरा, ऋता, लोकायतन, रश्मिबन्ध, आदि हैं।

'प्रसाद और 'निराला' की भाँति पन्त भी छायावाद के आधार-स्तम्भ हैं। छायावाद अपने पूरे सौन्दर्य और समृद्धि के साथ पन्त के काव्य में अभिव्यक्त हुआ है। पन्त जी प्रकृति के सुन्दर, सजीव, मनोरम दृश्य अंकित करने में सिद्धहस्त कवि हैं। इन्हें प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है।

पन्त के काव्य-जीवन की यात्रा के स्पष्टतः तीन सोपान माने जा सकते हैं।

१- छायावादी काव्य रचनाएँ, २- प्रगतिवादी काव्य तथा ३- श्री अरविन्द के दर्शन से प्रभावित होने के पश्चात् की अन्तश्चेतनावादी, आध्यात्मिक कविताएँ जहां ये मानवतावाद के सच्चे समर्थक के रूप में प्रकट हुए हैं।

पन्त के काव्य में मानवता के प्रति सहज आस्था है। वे एक नवीन, सुन्दर, एवं सुखी समाज की सृष्टि के प्रति आशवान हैं। विश्व-बंधुत्व और भ्रातृत्व के प्रति यह आशावादी स्वर ही उनके काव्य को उदात्त बनाता है। काव्य-कला के प्रति पन्त जी विशेष रूप से सचेष्ट हैं। इनकी भाषा चित्रमयी एवं अलंकृत है तथा स्पष्ट, सशक्त बिम्ब-योजना ने उसे अत्यन्त प्रभावमयी बना दिया है। संक्षेप में सुन्दर, सुकुमार भावों के चतुर-चितेरे पन्त ने खड़ी बोली को ब्रजभाषा जैसा माधुर्य एवं सरसता प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। पन्त जी एक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गम्भीर विचारक हैं, उत्कृष्ट कवि हैं मानवता के सहज आस्थावान कुशल शिल्पी, हैं; जो नवीन सृष्टि के अभ्युदय का स्वप्न देखने में तल्लीन हैं।

प्रश्न १६— सुश्री महादेवी वर्मा का साहित्यिक जीवन परिचय लिखें।

उत्तर— महादेवी वर्मा का जन्म सन् १६०७ ई० में होली के दिन फर्रूखाबाद (उ० प्र०) में हुआ था। इनके पिता श्री गोविन्दसहाय वर्मा इन्दौर के एक कालेज में आध्यापक थे तथा माता सरल हृदया, धर्म-परायण महिला थीं। महादेवी एक कुशाग्रबुद्धि बालिका थीं और बचपन से ही माँ से रामायण-महाभारत की कथाएँ सुनते रहने के कारण इनके मन में साहित्य के प्रति आकर्षण उत्पन्न हो गया था; फलतः मौलिक काव्य-रचना इन्होंने बहुत छोटी आयु से आरम्भ कर दी थी। इन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम० ए० किया। दर्शन, संगीत तथा चित्रकला में इनकी विशेष अभिरुचि है। भारत- सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' के अलंकार से सम्मानित किया है।

महादेवीजी आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माताओं में महत्त्वपूर्ण स्थान की अधिकारिणी हैं। प्रसाद, पन्त, निराला तथा महादेवी छायायुग के इन चार महान कवियों को **बृहत चतुष्टयी** के नाम से जाना जाता है।

इनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं-**नीहार, रश्मि, नीरज, सांध्यगीत, दीपशिखा, सप्तपर्णा तथा हिमालय।**

साहित्य को इनका योगदान मुख्यतः कवि के रूप में प्राप्त है; किन्तु इन्होंने प्रौढ़ गद्य-लेखन द्वारा हिन्दी भाषा को सजाने-सँवारने तथा अर्थ-गाम्भीर्य प्रदान करने में जो प्रयत्न किया है, वह अत्यन्त प्रशंसनीय है।

महादेवीजी ने सरस गीतों की रचना की है, जिनमें वेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। अपने गीतों में इन्होंने असीम, अगोचर, परोक्ष प्रिय (ईश्वर, ब्रह्म) के प्रति प्रेम का निवेदन किया है। बौद्धों के दुःखवाद तथा करुणावाद का इन पर गहरा प्रभाव है। इन्होंने अपने गीतों में स्निग्ध और सरल, तत्सम प्रधान खड़ी बोली का प्रयोग किया है। साहित्य तथा संगीत के मणि-कांचन संयोग द्वारा 'गीत' की विधा को विकास की चरम सीमा तक पहुँचा देने का श्रेय महादेवी वर्मा को ही है।

प्रश्न १७— श्री रामकुमार वर्मा का साहित्यिक जीवन परिचय लिखें।

उत्तर— रामकुमार वर्मा का जन्म सागर (मध्य प्रदेश) जनपद के गोपालगंज ग्राम में सन् १६०५ ई० में हुआ था। राबर्टसन कालेज जबलपुर तथा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रयाग-विश्वविद्यालय में इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। सन् १६२६ ई० में प्रयाग-विश्वविद्यालय की एम० ए० (हिन्दी) परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर इन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रयाग-विश्वविद्यालय में ये अध्यापन कार्य करते रहे। सन् १६४० ई० में नागपुर विश्वविद्यालय ने इन्हें डाक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि प्रदान की। हिन्दी के प्रोफेसर होकर ये सोवियत यूनियन और श्रीलंका भी गये। भारत-सरकार ने इन्हें **'पद्मभूषण'** की उपधि से और हिन्दी-साहित्य सम्मेलन ने **'साहित्य वाचस्पति'** की उपाधि से सम्मानित किया। **इन्होने देव-पुरस्कार** तथा **कालिदास-पुरस्कार** भी प्राप्त किये। सन् १६६६ ई० में प्रयाग-विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के पद से इन्होंने अवकाश ग्रहण किया।

चित्ररेखा, चन्द्रकिरण, संकेत, आकाश गंगा, इनके काव्य-संग्रह हैं तथा एकलव्य और उत्तरायण प्रबंधकाव्य हैं।

भारतीय संस्कृति के प्रति वर्माजी की विशेष आस्था है। प्रकृति का सौन्दर्य भी वर्माजी को सदैव आकर्षित करता है। इनकी रचनाओं में प्रकृति के बड़े मार्मिक चित्र मिलते हैं। प्रकृति सौन्दर्य से इन्हें आध्यात्मिक साधना की प्रेरणा मिलती रही। इनके गीत संगीतात्मकता की और चरम सीमा पर पहुँचे भावों के आवेश से पूर्ण है। इनका अलंकार-विधान नवीन तथा भावानुकूल है। नवीन उपमाओं का प्रयोग, चित्रात्मकता, कोमलकान्त पदावली तथा भाषा की स्वच्छता एवं स्पष्टता इनकी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

प्रश्न १८— श्री रामनरेश त्रिपाठी जी का साहित्यिक जीवन परिचय लिखिए।

उत्तर— श्री रामनरेश त्रिपाठी जी का जन्म सन्१८८६ ई० में जिला जौनपुर (उ० प्र०) के अन्तर्गत कोइरीपुर ग्राम में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। केवल नवीं कक्षा तक स्कूल में पढ़ने के पश्चात् इनकी पढ़ाई छूट गयी। बाद में इन्होंने स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया तथा साहित्य-साधना को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। सन् १६६२ ई० में इनका स्वर्गवास हो गया।

त्रिपाठीजी मननशील, विद्वान् तथा परिश्रमी पुरुष थे। काव्य, कहानी, नाटक, निबन्ध, आलोचना तथा लोक-साहित्य आदि विषयों पर आपका पूर्ण अधिकार था। आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं- **पथिक, मिलन और स्वप्न,** (खण्डकाव्य), **मानसी** (स्फुट कविता संग्रह), **कविता-कौमुदी, ग्राम्य-गीत,** (सम्पादित), **गोस्वामी तुलसीदास और उनकी कविता** (आलोचना)। त्रिपाठीजी आदर्शवादी कवि थे। इनकी रचनाओं में नवीन आदर्शों और नवयुग का संकेत है। इनके द्वारा रचित **'पथिक'** और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'मिलन' नामक खण्डकाव्य अत्यन्त लोकप्रिय हुए। इनकी रचनाओं की विशेषता यह है कि उनमें राष्ट्र-प्रेम तथा मानव-सेवा की उत्कृट भावनाऐं बड़े सुन्दर ढ़ंग से चित्रित हुई हैं। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष की प्राकृतिक सुषमा और पवित्र-प्रेम के सुन्दर चित्र भी इन्होंने अपनी कल्पनाओं में चित्रित किये है।

त्रिपाठीजी की भाषा सरल एवं सरस खड़ी बोली से सम्पन्न है। उसमें माधुर्य और ओज है। शैली अत्यन्त प्रवाहपूर्ण है।

प्रश्न १६— श्री माखनलाल चतुर्वेदी जी का साहित्यिक जीवन परिचय अपने शब्दों में लिखिये।

उत्तर— माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् १८८८ ई० में मध्य प्रदेश में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० नन्दलाल चतुर्वेदी था। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आपने घर पर ही रहकर संस्कृत, बंगला, गुजराती, एवं अंग्रेजी, आदि विषयों का अध्ययन किया। इन्होंने कुछ दिन अध्यापन कार्य भी किया। सन् १६१३ ई० में ये सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'प्रभा' के सम्पादक नियुक्त हुए। श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की प्रेरणा तथा साहचर्य के कारण आप राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने लगे। आपको कई बार जेल यात्रा भी करनी पड़ी। पंडित जी सन् १६४३ ई० में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अध्यक्ष हुए। ८० वर्ष की अवस्था में ३० जनवरी, १६६८ को आपका स्वर्गवास हो गया।

पंडित जी के निम्नलिखित कविता-संग्रह हैं- **हिम किरीटिनी, हिमतरंगिणी, माता, युगचरण, समर्पण, वेणु, लो गूंजे धरा,** इत्यादि। इसके अतिरिक्त चतुर्वेदी जी ने नाटक कहानी, निबन्ध तथा संस्मरण भी लिखा है। इनके भाषणों के **'चिन्तक की लाचारी' तथा 'आत्म दीक्षा'** नामक संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं।

चतुर्वेदी जी की प्रसिद्धि कवि के रूप में ही अधिक है, किन्तु ये एक पत्रकार, समर्थ निबन्धकार, और सिद्धहस्त सम्पादक भी थे। इनका **'साहित्य-देवता' गद्य-काव्य की एक अमर कृति है।**

इनके काव्य का मूल स्वर राष्ट्रवादी है, जिसमें त्याग, बलिदान, कर्त्तव्य, भावना और समर्पण के भाव हैं। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को स्वर देने वालों में चतुर्वेदीजी का प्रमुख स्थान रहा है। इनकी कविता में यदि कहीं ज्वालामुखी की तरह धधकता हुआ अन्तर्मन है तो कहीं पौरुष की हुंकार और कहीं करुणा से भरी मनुहार। इनकी भाषा में बोल-चाल के शब्दों के साथ-साथ उर्दू-फारसी के शब्द भी हैं। उसमें एक विचित्र प्रकार की मिठास है। इनकी छन्द-योजना में भी नवीनता है। चतुर्वेदी जी की कविता में भाव-पक्ष पूर्ण रूप से विद्यमान है।

हिन्दी की साहित्य-सेवा के उपलक्ष्य में सागर, विश्वविद्यालय ने इन्हें मानद डी० लिट् तथा भारत-सरकार ने 'पद्‌भूषण' की उपाधियों से इन्हें अलंकृत किया। ☐

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्व मध्यमा द्वितीय वर्ष

'ख' वर्ग हिन्दी : पञ्चम पत्र

द्वितीय भाग

लघु प्रश्न तथा उत्तर

प्रश्न १— गद्य साहित्य के उद्भव तथा विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर— गद्य साहित्य का उद्भव तथा विकास— रीतिकाल के अवसान के बाद सं० १९०० वि० से गद्य साहित्य प्रारम्भ हुआ। इस गद्य साहित्य का प्रथम सूत्रपात लल्लू लाल, सदल मिश्र, मुंशी सदा सुखलाल तथा ईंशा अल्ला खाँ की लेखनी द्वारा हुआ, जिसे हम गद्य साहित्य की शैशवावस्था कह सकते हैं।

तदनन्तर गद्य-साहित्य धीरे-धीरे अपनी शैशवावस्था को पार कर राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द' तथा राजा लक्ष्मण सिंह के हाथों में पड़ा।

हिन्दी-साहित्य की प्रगति के साथ-साथ हिन्दी साहित्य का भविष्य उज्ज्वल दिखाई देने लगा और उसके कर्णधार बने-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

हिन्दी-साहित्य की प्रगति एवं विकास दोनों साथ-साथ हुआ। इस प्रकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के हाथों में पड़कर हिन्दी साहित्य का भविष्य चमक उठा।

हिन्दी का गद्य-साहित्य नाटक, निबन्ध, कहानी तथा आलोचना अनेक विध ाओं में विकसित होने लगा एवं वर्तमान समय में भी पुष्पित एवं पल्लवित हो रहा है।

प्रश्न २— निबन्ध के उद्भव तथा विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर— निबन्ध का उद्भव तथा विकास— गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं में निबन्ध एक प्रमुख विधा है इसके जन्मदाता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं।

निबन्ध के विकास को हृदयंगम करने के लिए सुविधा की दृष्टि से हम उसे ४ युगों में विभक्त कर सकते हैं—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१- भारतेन्दु युग, २- द्विवेदी युग
३- शुक्ल युग ४- शुक्लोत्तर युग

प्रश्न ३– भारतेन्दु युग के निबन्धकारो का वर्णन कीजिए।

उत्तर– भारतेन्दु युग के निबन्धकार– इस युग का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। भारतेन्दु जी स्वयं निबन्धकार थे। अत: उन्होंने एक मण्डल स्थापित किया, जो 'भारतेन्दु मण्डल' के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसमें इनके समकालीन अनेक लेखक सम्मिलित थे। इन लेखकों मे बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी, बाल मुकुन्द गुप्त तथा राधा चरण गोस्वामी मुख्य थे।

भारतेन्दु जी ने स्वयं निबन्ध लिखकर इन लेखकों को भी भिन्न-भिन्न विषयों पर निबन्ध लिखने के लिए प्रेरित किया।

भारतेन्दुकालीन लेखकों ने अपनी-अपनी रूचि के अनुसार अनेक निबन्ध लिखे।

इस युग में स्वयं भारतेन्दु तथा इनके मण्डल के लेखकों ने भिन्न-भिन्न पत्रिकाएँ भी प्रकाशित कीं, जिनमें इनके लेख प्रकाशित होते थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पत्रिका का नाम 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', बालकृष्ण भट्ट की पत्रिका का नाम 'ब्राह्मण' था।

भारतेन्दु युग निबन्ध की शैशवावस्था थी। अत: उसमें भाषा की सरसता नहीं थी, बल्कि ग्रामीणता तथा व्याकरण की अशुद्धियाँ अधिक थीं।

प्रश्न ४– द्विवेदी युग के निबन्धकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर– द्विवेदी युग के निबन्धकार– भारतेन्दु युग के पश्चात् द्विवेदी युग प्रारम्भ होता है। इसके प्रवर्तक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी थे। इन्होंने विद्वान् लेखकों की एक मण्डली स्थापित की, जो 'द्विवेदी मण्डल' के नाम से विख्यात हुआ। इस मण्डल में आने वाले लेखकों में रायकृष्णदास, पद्म सिंह शर्मा तथा श्याम सुन्दर दास मुख्य थे। द्विवेदी जी ने अनेक विषयों पर निबन्ध लिखकर अपने मण्डल के लेखकों को भी अनेक प्रकार की सुरुचिपूर्ण निबन्ध लिखने की प्रेरणा प्रदान की।

इन्होंने 'सरस्वती' नामक पत्रिका का भी सम्पादन किया, जिसमें वे स्वयं अपने निबन्ध तथा लेखकों के भी निबन्ध प्रकाशित करते थे।

द्विवेदी युग में भारतेन्दु युग की अनस्थिर शैली स्थिर हुई और भाषा व्याकरण के नियमों से आबद्ध होकर परिष्कृत हो गई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न ५— शुक्ल जी के निबन्धकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर— **शुक्ल युग के निबन्धकार—** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल से शुक्ल युग का प्रारम्भ होता है। यद्यपि ये द्विवेदी युग के ही निबन्धकार हैं, परन्तु इनके निबन्धों की विशिष्टता होने के कारण यह युग शुक्ल युग के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस युग में विषयों के वैविध्य के साथ-साथ निबन्ध की भाषा में भी प्रौढ़ता तथा गम्भीरता आई।

आचार्य शुक्ल जी से प्रेरित इस युग के प्रौढ़, निबन्धकारों में बाबू गुलाबराय, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, माखनलाल चतुर्वेदी, वियोगी हरि तथा डॉ० रघुबीर सिंह मुख्य हैं।

प्रश्न ६— शुक्लोत्तर युग (वर्तमान युग) के निबन्धकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर— **शुक्लोत्तर युग या वर्तमान युग के निबन्धकार—** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बाद शुक्लोत्तर युग का वर्तमान युग प्रारम्भ हुआ। इस युग में व्यक्तिनिष्ठ एवं ललित निबन्धों की विशेष रचना हुई और हो रही है। इस प्रकार के निबन्धकारों में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी मुख्य थे।

इस युग में इस परम्परा को चलाने वाले प्रौढ़ लेखकों में डॉ० विद्यानिवास मिश्र का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है, जो अपने ललित निबन्धों के कारण विशेष प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न ७— एकांकी नाटकों के उद्भव तथा विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर— **एकांकी नाटकों का उद्भव तथा विकास—** गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं में एकांकी नाटक भी एक प्रमुख विद्या है। एकांकी शब्द एक + अंक शब्द के योग से बना है। एकांकी का तात्पर्य छोटे नाटक से है, जिसमें एक ही अंक हो। इस प्रकार के नाटकों की सम्पूर्ण घटनाएँ ... पूर्ण होती हैं। एकांकी के तत्व प्राय: वही होते हैं, ... कथावस्तु, कथोपकथन, चरित्र चित्रण, देश काल, भाषा-शै... तत्वों के अतिरिक्त रंग मञ्च की उपयोगिता इसका ...

हिन्दी के एकांकी नाटकों का श्री गणेश भारतेन्दु हरि... है। इसके बाद जयशंकर प्रसाद, डॉ० रामकुमार वर्मा, भु... भट्ट, उपेन्द्र नाथ 'अश्क', सेठ गोविन्ददास, जगदीश चन्द... नारायण मिश्र इत्यादि लेखकों ने अनेक एकांकी नाटकों ... प्रकार एकांकी नाटक पल्लवित एवं पुष्पित हो रहा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीय भाग

अति लघु प्रश्न तथा उत्तर

प्रश्न १— 'बात' नामक निबन्ध के लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर— 'बात' नामक निबन्ध के लेखक का नाम श्री प्रताप नारायण मिश्र है।

प्रश्न २— 'कर्त्तव्य और सत्यता' नामक निबन्ध के लेखक का नाम लिखिए?

उत्तर— 'कर्त्तव्य और सत्यता' नामक निबन्ध के लेखक का नाम डॉ० श्यामसुन्दर दास है।

प्रश्न ३— 'मित्रता' नामक निबन्ध के लेखक का नाम लिखिए?

उत्तर— 'मित्रता' नामक निबन्ध के लेखक का नाम आचार्य रामचन्द्र शुक्ल है।

प्रश्न ४— 'मंत्र' नामक कहानी के लेखक का नाम लिखिए?

उत्तर— 'मंत्र' नामक कहानी के लेखक का नाम श्री प्रेमचन्द है।

प्रश्न ५— 'विश्व मन्दिर' नामक निबन्ध के लेखक का नाम लिखिए?

उत्तर— 'विश्व मन्दिर' नामक निबन्ध के लेखक का नाम श्री वियोगी हरि है।

प्रश्न ६— 'आचार्य द्विवेदी जी' नामक निबन्ध के लेखक का नाम लिखिए?

उत्तर— 'आचार्य द्विवेदी जी' नामक निबन्ध के लेखक का नाम श्री हरिभाऊ उपाध्याय है।

प्रश्न ७— 'ममता' नामक कहानी के लेखक का नाम लिखिए?

पश्चात्
से विख्यात हुआ। नामक कहानी के लेखक का नाम श्री जयशंकर प्रसाद है।
सिंह शर्मा तथा श्या लिखूँ' नामक निबन्ध के लेखक का नाम लिखिए?
निबन्ध लिखकर अ लिखूँ' नामक निबन्ध के लेखक का नाम श्री पदुमलाल
निबन्ध लिखने की
इन्होंने 'सरद र से नारायण' निबन्ध के लेखक का नाम लिखिए?
अपने निबन्ध त से नारायण' निबन्ध के लेखक का नाम श्री गुलाबराय है।
द्विवेदी यु 'भारतीय संस्कृति' निबन्ध के लेखक का नाम लिखिए?
व्याकरण के निय तीय संस्कृति' निबन्ध के लेखक का नाम डॉ० राजेन्द्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh